अल-मसीह

की

हयाते-अक़दस

आर. बख़्त

अल-मसीह

की

हयाते-अक़दस

almasīh kī hayāt-e aqdas

The Life of al-Maseeh

by R. Becht

(Urdu—Hindi script)

© 2021 MIK
published and printed by
Good Word Communication Services Pvt. Ltd.
New Delhi, INDIA

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

बैतुल-मुक़द्दस में हैरतअंगेज़ वाक़ियात

“ओह! आख़िर यरूशलम के फाटकों तक आ ही पहुँचे।” इफ़राईम बिन सुलेमान ने गाड़ी के साथ टेक लगाते हुए सुख का साँस लिया। गाड़ी खड़खड़ाती हुई क़दीम शहर में दाख़िल हुई। वह हिचकोले खाती गर्दो-ग़ुबार के बादल उड़ा रही थी। बाज़ार में बेपनाह हुजूम था। सड़क पर खेलते बच्चे-बाले दौड़ दौड़कर गाड़ी के रास्ते से हटने लगे। थका-माँदा मुसाफ़िर तरह तरह की चीज़ें बेचनेवालों को देखने लगा। वह मिठाइयों और फलों की छाबड़ियाँ सजाए हाँक पर हाँक लगा रहे थे। लज़ीज़ और मसालेदार चटपटे खाने पक रहे थे। उनकी ख़ुशबू ने मुसाफ़िर की भूक को चमका दिया। तवील कारोबारी सफ़र के बाद घर लौटने में कितनी राहत होती है! वह कई बार सोचता था कि शिमाल में कफ़र्नहूम में रिहाइश इख़्तियार करना ज़्यादा फ़ायदामंद रहेगा, क्योंकि वह शहर क़ाफ़िलों और कारवानों की शाहराह पर वाक़े है। बात माक़ूल तो थी मगर वह इस पर अमल करने पर मायल न हो सका था। उसका दिल

तो बैतुल-मुक़द्दस में अटका हुआ था। उसके यार-दोस्त वहाँ थे, और वह वहाँ की समाजी ज़िंदगी का एक हिस्सा था। फिर सबसे बढ़कर यह कि बैतुल-मुक़द्दस[1] वहाँ थी जो हर यहूदी को हर वक़्त याद दिलाती थी कि ख़ुदा हमारे दरमियान सुकूनत करता है।

इफ़राईम ज़ोर ज़ोर से हाथ मलते हुए सोचने लगा, "मेरे जैसे नौजवान के लिए शिमाल की तरफ़ कभी कभी यह तवील सफ़र कोई बड़ी बात नहीं। ख़ुदा का शुक्र है कि मैं अपनी उम्र के उरूज पर हूँ।" उसका दिल ख़ुशी से उछलने लगा। चंद लमहों में वह अपने दिल के सरूर यानी अपनी बीवी रिबक़ा से मिलने को था। उसकी याद उसे सता रही थी। उसके बग़ैर ज़िंदगी बेलुत्फ़ थी। कफ़र्नहूम में उसके नौकर-चाकर तो उसकी ख़िदमत पर हर दम कमरबस्ता रहते थे लेकिन वह उसकी शीरीन आवाज़ और हसीन सरापे की याद नहीं भुला सकता था। कफ़र्नहूम में उसका शानदार और पुरआसाइश मकान रिबक़ा के बग़ैर बिलकुल बेजान मालूम होता था। इफ़राईम ने ठंडी आह भरी। काश रब ने हमें एक बच्चा अता किया होता! शादी को तीन साल बीत चुके थे लेकिन वह अभी तक बच्चे की नेमत से महरूम थे। मगर उसने फ़ैसला कर रखा था कि बीवी पर अपनी मायूसी ज़ाहिर नहीं होने दूँगा। उसे इल्म था कि रिबक़ा भी इसी कमी को बुरी तरह महसूस करती है। वह अकसर सोचती कि शायद रब मुझे किसी गुनाह की सज़ा दे रहा हो।

1 पुराने ज़माने में यहूदियों की अहमतरीन इबादतगाह।

मगर ज्यों-ज्यों गाड़ी आगे बढ़ती गई उसकी बेचैनी में इज़ाफ़ा होता गया। इधर-उधर लोग टोलियों में खड़े थे। साफ़ मालूम था कि किसी अहम बात का चर्चा हो रहा है। उसने सोचा कि जो अफ़वाहें मैंने शिमाली इलाक़ों में सुनीं वह ज़रूर यरूशलम तक भी पहुँच गई होंगी। यानी यह कि बैत-लहम में बहुत पुरअसरार वाक़ियात रूनुमा हुए हैं। चंद चरवाहे दावा करते फिर रहे हैं कि हम पर फ़रिश्तों का एक बड़ा गुरोह ज़ाहिर हुआ जिन्होंने फ़रमाया कि जिस नजातदहिंदे का वादा अल्लाह ने किया है वह पैदा हो चुका है। लेकिन सबसे हैरतअंगेज़ बात यह थी कि फ़रिश्तों ने फ़रमाया कि तुम्हें यह अज़ीम नजातदहिंदा बैत-लहम की एक चरनी में मिलेगा। चरवाहों का कहना था कि हमने सचमुच उसे पाकर देखा है, बिलकुल जैसे फ़रिश्तों ने बताया था।

इफ़राईम सोचने लगा कि कैसी मज़हकाख़ेज़ बात है! क्या अल-मसीह की पैदाइश की ख़बर सबसे पहले ऐसे जाहिल और उजड चरवाहों को दी जाएगी जिन्हें सब लोग हक़ीर जानते हैं! लेकिन उसने सुना था कि चरवाहे अपने ईमान और दावा पर चटान की तरह क़ायम हैं। फ़रिश्तों की मुलाक़ात से उनके दिल उम्मीद और ख़ुशी से भर गए थे। “नजातदहिंदा सचमुच आ चुका है। अल्लाह ने हम पर बेइंतहा फ़ज़ल किया है। नजातदहिंदा हमारे दरमियान मौजूद है। अब एक नया और अजीब दौर शुरू होनेवाला है।”

इफ़राईम सोचने लगा, "यह तो वक़्त ही बताएगा कि यह बात सच है कि नहीं।" वह गली-कूचों में लोगों को बातें करते देखकर इस नतीजे पर पहुँचा कि अफ़वाहों ने यरूशलम को झँझोड़ा ही नहीं बल्कि लोगों में ख़ौफ़ो-हिरास भी फैला दिया है। फिर उसने शहर में जगह जगह फ़ौजियों को खड़ा देखा जैसे किसी हंगामे का अंदेशा हो। "क्या हेरोदेस मरने के क़रीब है? वह सत्तर साल का तो है और दर्दनाक मरज़ में मुब्तला है। अब तो वैसे भी सूखकर काँटा हो गया है। लगता ही नहीं कि यह वही रोबदार और तनोमंद हेरोदेस है। वह हमारी क़ौम को पुरअमन रखने में कामयाब रहा है, और इसी अमन की वजह से मुल्क में हर तरफ़ ख़ुशहाली का दौर-दौरा है। कुछ भी हो, एक भी आँख, हेरोदेस के लिए आँसू नहीं बहाएगी। ज़ालिम बेइंतहा ख़ून बहाता रहा है।"

अब यह थका-माँदा मुसाफ़िर सुकून महसूस करने लगा क्योंकि अपने घर के पास आ पहुँचा था। पुरशोर बाज़ार और उसकी तरह तरह की ख़ुशबुएँ पीछे रह गई थीं। उसने बड़े मुसर्रत और उम्मीद के साथ अपने बापदादा के मकान पर नज़र डाली। गाड़ी एक झटके के साथ रुक गई। दो मज़बूत दरबानों ने गेट खोला और मालिक की ताज़ीम में झुक गए। "ख़ुशआमदीद आक़ा! आपको सलामती हो।" उनकी आँखों में इफ़राईम के लिए सच्ची अक़ीदत झलक रही थी। किसी वक़्त वह ग़ुलाम थे मगर अब उनके आक़ा ने उनकी इज़्ज़त और आज़ादी उन्हें

लौटा दी थी। अब वह आज़ाद इनसानों की तरह उसकी ख़िदमत करते और तनख़ाह पाते थे।

इफ़राईम ने बड़ी शफ़क़त से सर को जुंबिश दी। "तुम सब पर बरकत हो। क्या सब ख़ैरियत है?" इस बात की तसल्ली कर लेने के बाद वह थके थके क़दमों से घर की तरफ़ बढ़ा।

बैतुल-मुक़द्दस से चाँदी के नरसिंगों की आवाज़ बुलंद हुई। शाम की क़ुरबानी गुज़राने का वक़्त हो गया था। यह आवाज़ शाम की दुआ के लिए भी पुकार थी। बैतुल-मुक़द्दस के सहनों में इबादतगुज़ारों का हुजूम हो जाने को था। वह ख़ुदा का शुक्र अदा करेंगे कि वह हमारे दरमियान सुकूनत करता, हमारी क़ुरबानियाँ क़बूल करता और गुनाहों को बख़्श देता है।

शाम का धुँधलका बढ़ रहा था। नौकर-चाकर सारे घर में मशालें जला रहे थे। उनकी धीमी धीमी रौशनी संगेमरमर के हॉल को रौशन कर रही थी। फूलों की भीनी भीनी ख़ुशबू ने उसका इस्तिक़बाल किया। लेकिन इफ़राईम को उनकी तरफ़ तवज्जुह देने की फ़ुरसत न थी। सामने उनकी बीवी आ रही थी।

"ख़ुशआमदीद, मेरे सरताज!" वह इस्तिक़बाल करती हुई बोली, "मैं आपको किस क़दर याद किया करती थी!"

इफ़राईम ने मुहब्बत से उसका हाथ थाम लिया। "तुम शारून के गुलाब से भी हसीन हो," उसने तारीफ़ की। वह हैरान था कि मेरी बीवी क्यों ख़ुशी से फूले नहीं समा रही।

रिबक़ा ने उसे ज़्यादा देर शक में नहीं रहने दिया बल्कि मुसर्रत भरी आवाज़ में कहने लगी :"रब हमें बच्चे से नवाज़नेवाला है।"

इफ़राईम ने उसे अपनी बाँहों में समेट लिया और बड़े जज़बाती अंदाज़ में बोला, "आज का दिन मेरी ज़िंदगी का सबसे मुसर्रत भरा दिन है।"

हँसते हँसते रिबक़ा के आँसू उमड आए। यकायक उसे अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास हुआ। अपने ख़ावंद की बाँहों से निकलते हुए वह कहने लगी, "माफ़ करना। आप बहुत थक गए होंगे। ग़ुस्ल करके ताज़ादम हो लें, फिर खाना खाएँ। और हाँ! आपके वालिद आपसे मिलने के लिए बेचैन हैं। बेचारे दिन बदिन कमज़ोर होते जा रहे हैं।"

इफ़राईम ने मुहब्बत भरी नज़र रिबक़ा पर डाली। "तू कितनी हसीन है! तेरी स्याह आँखें मेरी मुहब्बत से सरशार हैं। तेरा चेहरा काली काली ज़ुल्फ़ों के हलक़े में कितना दिलकश लगता है। कैसी प्यारी माँ बनेगी!"

रात को इफ़राईम अपने उम्ररसीदा बाप सुलेमान की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। उसने अपने दुबले-पतले कमज़ोर बाज़ू फैलाते हुए बेटे को दुआ दी, "तुम्हारी सलामती हो, सलामती हो।"

इफ़राईम ने बड़ी चाहत से बाप को गले लगाया। बोला, "अब्बू जी, अल्लाह आपको सलामत रखे ... अब्बू जी, यह आजकल यरूशलम

में क्या हो रहा है? किसी ख़ास ख़बर ने शहर में हलचल पैदा कर दी है।" और फिर मुसकराते हुए कहा, "और अब्बू जी! देख रहा हूँ कि आपके अंदर भी हलचल मची हुई है।"

बाप की कमज़ोर आँखों में जोश और वलवला था। उस की आवाज़ काँपने लगी। "बेटा। यक़ीनन कुछ हुआ है। मैं सोच रहा हूँ कि शायद अल्लाह की बरगुज़ीदा उम्मत को अमन और सलामती मिलनेवाली है। लेकिन पिछले चंद दिनों में ऐसे वाक़ियात पेश आए हैं जिनसे ऐसा लग रहा है कि शायद इब्राहीम की बेवफ़ा नसल पर ख़ुदा की लाठी पड़नेवाली है।" चंद लमहों के तवक़्क़ुफ़ के बाद वह आहिस्ता आहिस्ता बोलने लगा जैसे कि अपने आपसे बातें कर रहा हो, "क्या अल-मसीह आ गया है या उफ़ुक़ पर जंग और क़त्लो-ग़ारत के तारीक बादल मँडलाने लगे हैं? इन वाक़ियात ने तो बूढ़े बादशाह को भी परेशान कर रखा है। उसकी नींदें उड़ गई हैं। उसमें फिर से जान आ गई है और वह तख़्त पर बैठ गया ताकि सबको मालूम हो जाए कि वही बादशाह है और किसी को सर उठाने की जुर्रत ही न हो।"

इफ़राईम की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। उसने कहा, "क्या बैत-लहम की ख़बरों ने हुकूमत को इतना किया है?"

सुलेमान की नज़रें अपने बेटे पर गड़ गईं, "सिर्फ़ बैत-लहम ही में अजीब बातें नहीं हुईं, यहाँ भी ऐसे हैरतनाक वाक़ियात हुए हैं कि लोगों में हलचल मची हुई है। इन दिनों में एक कारवान आया था। चंद मुअज़्ज़ज़

और दाना आदमी उसके सरदार थे। वह पूछने लगे कि यहूदियों का बादशाह जो पैदा हुआ है वह कहाँ है? सब लोग हैरान हो गए और बेहद डर गए। वह सोचने लगे कि जब हेरोदेसे-आज़म एक हरीफ़ बादशाह की ख़बर सुनेगा तो क्या करेगा? तुम तो जानते हो कि वह बूढ़ा है। ग़ुस्से में न जाने क्या कर गुज़रे। लेकिन हेरोदेस ने बड़ी सियासत से काम लिया। उसने उन मजूसियों को फ़ौरन शरफ़े-बारयाबी बख़्शा। उन पर एहसान करने के लिए नहीं बल्कि नौमौलूद बादशाह के बारे में सारी मालूमात हासिल करने के लिए। बज़ाहिर वह कामयाब भी रहा क्योंकि मजूसियों के रवाना होने के थोड़े ही दिनों बाद बैत-लहम में बड़ा मातम हुआ। चूँकि वह अजनबी इस बच्चे की तलाश में वहीं गए थे इसलिए हेरोदेस के सिपाहियों ने बैत-लहम में दो साल तक की उम्र के हर बच्चे को तलवार के घाट उतार दिया।"

इफ़राईम ने लंबी आह भरी। "कितना संगदिल इनसान! कोई इमकान बाक़ी नहीं छोड़ता। अब्बू जी! अगर वह बच्चा सचमुच नजात-दहिंदा अल-मसीह है तो हेरोदेस के हाथ से कैसे बच सकता है?"

मगर बुज़ुर्ग आदमी ने जवाब दिया, "क़ादिरे-मुतलक़ बड़े अजीब तरीक़े से काम करता है बेटा। वह अपने चुने हुए की हिफ़ाज़त करने पर क़ादिर है। तुम मेरे दोस्त, शरीअत के आलिम मुहतरम याक़ूब के पास क्यों नहीं जाते? मैंने सुना है कि जब वह अजनबी हेरोदेस के दरबार में गए थे तो तौरेत और सहायफ़ के माहिरीन के साथ याक़ूब को भी तलब

किया गया था। जाकर मालूम करो कि क्या हो रहा है?” उसकी धुँधली आँखों में एक बड़ी आरज़ू झिलमिला रही थी। “अल्लाह ने तक़रीबन एक हज़ार साल पहले हमारे बुज़ुर्ग दाऊद बादशाह से वादा किया था कि ‘जब तू बूढ़ा होकर कूच कर जाएगा और अपने बापदादा के साथ आराम करेगा तो मैं तेरी जगह तेरे बेटों में से एक को तख़्त पर बिठा दूँगा। उसकी बादशाही को मैं मज़बूत बना दूँगा। वही मेरे नाम के लिए घर तामीर करेगा, और मैं उसकी बादशाही का तख़्त अबद तक क़ायम रखूँगा। मैं उसका बाप हूँगा, और वह मेरा बेटा होगा।’”[1]

सुलेमान धीरे धीरे कहने लगा जैसे अपने आपसे कह रहा हो, “हम दाऊद बादशाह के बेटों से बहुत मायूस हो गए थे क्योंकि उसका पूरा घराना आहिस्ता आहिस्ता बिलकुल ज़वालपज़ीर हो गया।” लेकिन बुज़ुर्ग सुलेमान का चेहरा फिर रौशन हो गया। “बेटा! कोई सात सौ साल हुए जब हमारे बापदादा बिलकुल मायूस और ना-उम्मीद हो चुके थे तो अल्लाह ने यसायाह नबी को बरपा किया। उसने हमारी क़ौम को नई रौशनी बख़्शी और रब पर ईमान रखने में उनकी हौसलाअफ़्ज़ाई की। उसने तसल्ली दिलाई कि वक़्त आने पर ख़ुदा दाऊद के साथ किए हुए वादे को ज़रूर पूरा करेगा। दाऊद बादशाह के ख़ानदान के मुढ में से कोंपल फूट निकलेगी, और उसकी बची हुई जड़ों से शाख़ निकलकर फल लाएगी। रब का रूह उस पर ठहरेगा यानी हिकमत और समझ

---

1 2 समुएल 7:12-14

का रूह, मशवरत और क़ुव्वत का रूह, इरफ़ान और रब के ख़ौफ़ का रूह।”[1]

बूढ़े ने आह भरी। “हमारे बुज़ुर्ग बड़ी बड़ी मुसीबतों में से गुज़रे। बड़े बड़े तारीक दौर देखे मगर उनमें अल-मसीह नजातदहिंदे के आने की उम्मीद हमेशा रौशन रही। मैं भी सारी उम्र इसी नजातदहिंदे का इंतज़ार करता आया हूँ। अगर वह सचमुच आ गया है तो मैं भी उसका दीदार हासिल करना चाहता हूँ। बेटा! सलामत जाओ। हमारे बापदादा का ख़ुदा हमें अपना नूर बख़्शे।”

जल्द ही इफ़राईम की परदों से ढकी हुई पालकी घर से निकलकर बल खाती तंगो-तारीक गलियों में से गुज़रने लगी। उसने ऊनी परदों को पीछे सरका दिया ताकि शाम की फ़रहतबख़्श हवा अंदर आ सके। बड़े इतमीनान के साथ उसने अपने वफ़ादार कहारों पर नज़र डाली। बढ़ते हुए अंधेरे में उनके धुँधले धुँधले जिस्म मुश्किल से नज़र आ रहे थे। अचानक उनके क़दम रुक गए और उन्होंने पालकी नीचे रख दी। वह शरीअत के आलिम याक़ूब के यहाँ पहुँच गए थे। कहार अदब से झुक गए। इफ़राईम बाहर निकला। उसका लिबास हवा में लहरा रहा था। वह मकान में दाख़िल होते ही याक़ूब के बेटे नीकुदेमुस से टकराते टकराते बचा। वह ख़ूबसूरत जवान था और शरीअत की तालीम हासिल कर रहा था। नीकुदेमुस ने फ़ौरन माज़रत की। दोनों अभी अलैक-सलैक

1 यसायाह 11:1-2

कर ही रहे थे कि याक़ूब की बेटी अबीशाग मेहमान के इस्तिक़बाल को पहुँची। भाई-बहन दोनों ही इफ़राईम को बहुत चाहते थे। जब वह छोटे छोटे थे तो ख़ूब मिलकर खेला-कूदा करते थे। इफ़राईम को बहुत अजीब लग रहा था कि वही अबीशाग अब घर की मालिका की तरह इधर-उधर आ-जा रही थी। "रिबक़ा बता रही थी कि बहुत जल्द सुहाग की ढोलक बजनेवाली है, क्यों अबीशाग?" उसने छेड़ने के अंदाज़ में कहा। "तुम्हारा दूल्हा बहुत ख़ुशक़िसमत है!"

अबीशाग शरमाकर बोली, "शुक्रिया! लेकिन अब सियासी मामलात ने शादी की बातों से तवज्जुह हटा दी है। मेरे वालिद और भाई घंटों इन्हीं बातों पर तबादलाए-ख़याल करते रहते हैं।" उसके लहजे से तअस्सुफ़ झलक रहा था।

नीकुदेमुस ने हँसते हुए इफ़राईम का बाज़ू थामा और अपने बाप के मुतालए के कमरे की तरफ़ ले चला। बूढ़े आलिम की ज़ीरक आँखें उसे देखकर ख़ुशी से चमक उठीं। उसने तूमार[1] एक तरफ़ रख दिया और उठकर मेहमान का इस्तिक़बाल किया। इफ़राईम को पहली बार एहसास हुआ कि उसके बाल कितने सफ़ेद हो रहे हैं। वह बैठे तो याक़ूब यों मुसकराया जैसे बहुत कुछ जानता हो। कहने लगा, "तो तुमने बहुत-सी अफ़वाहें सुनी हैं और अब मुझसे उनकी तशरीह पूछने आए हो?"

1 पुराने ज़माने की किताब

इफ़राईम ने सर हिलाया। "आपका अंदाज़ा बिलकुल दुरुस्त है। मैं और मुहतरम वालिद साहब इन पुरअसरार वाक़ियात के बारे में आपकी राय की बेहद क़दर करते हैं। बुज़ुर्गवार! हमने सुना है कि आपको शाही दरबार में तलब किया गया था!"

शरीअत के आलिम की आँखों में गहरी सोचें लहराने लगीं। वह टिकटिकी बाँधकर यों सामने देखने लगा जैसे वह फिर से दरबार में पहुँच गया हो। "हाँ, दूसरों के साथ मुझे भी हेरोदेस के पास बुलाया गया था। हेरोदेस लानती अदोमी है। लेकिन जब मैंने उस बुढ़े के रंग-ढंग देखे तो दाद दिए बग़ैर न रह सका। उसके दिमाग़ में ख़यालात किलबिला रहे थे। याद रखो, जैसे ही उसे पता चला कि यह मजूसी किस क़िस्म के शाही बच्चे की तलाश में हैं, उसने फ़ौरन अंदाज़ा लगा लिया कि वह वादा किए हुए अल-मसीह के अलावा और कोई नहीं हो सकता। और मेरा अंदाज़ा है कि वह सारी उम्र उससे ख़ौफ़ खाता रहेगा।"

इफ़राईम ने सर हिलाया, "यह बात समझकर उसने शरीअत के आलिमों और फ़रीसियों[1] को बुलवाया, क्योंकि वह पाक सहायफ़ को अच्छी तरह जानते और समझते हैं। और फिर आप लोगों से उसने आनेवाले नजातदहिंदे के मुताल्लिक़ सारी मालूमात हासिल कीं। क्यों, ठीक है ना?"

1 यहूदियों का रासिख़ुल-एतक़ाद फ़िरक़ा

“हाँ, हमने उसे बताया कि वह दाऊद बादशाह के शहर बैत-लहम में पैदा होगा। सात सौ साल पेशतर मीकाह नबी ने नबुव्वत की थी कि ‘तू, ऐ बैत-लहम इफ़राता, जो यहूदाह के दीगर ख़ानदानों की निसबत छोटा है, तुझमें से वह निकलेगा जो इसराईल का हुक्मरान होगा और जो क़दीम ज़माने बल्कि अज़ल से सादिर हुआ है।’[1] बाक़ी तुम ख़ुद अंदाज़ा लगा सकते हो। हेरोदेस ने मजूसियों को हिदायत की कि वहाँ जाएँ, बच्चे को तलाश करें और वापस आकर उसे ख़बर दें। और यह भी कहा कि मैं ख़ुद जाकर इस बच्चे को सिजदा करूँगा।”

इफ़राईम कहने लगा, “अगर यह मजूसी सचमुच क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा की हिदायत से आए थे तो उसने उन्हें हेरोदेस के पास वापस आने की इजाज़त हरगिज़ नहीं दी होगी!”

याक़ूब ने सर हिलाया। “बिलकुल दुरुस्त। वह बादशाह के पास वापस नहीं आए। लेकिन हेरोदेस से बाज़ी ले जाना भी आसान नहीं। वह ख़ूब जानता है कि अवाम को किस तरह क़ाबू में रखा जाता है। उसे यह भी इल्म है कि अगर वह यहूदियों को क़ाबू में न रख सका तो रोम से कोई और हुक्मरान भेज दिया जाएगा। इसलिए वह किसी और लीडर के सर उठाने का कोई ख़तरा मोल नहीं लेता। और यह बूढ़ा हेरोदेस है भी बहुत ख़ुदग़रज़। तख़्त में किसी और की शिराकत बरदाश्त नहीं कर सकता, चाहे वह अल-मसीह ही क्यों न हो। अगर ज़रूरत पड़े तो

1 मीकाह 5:2

वह अल्लाह से लड़ने को भी तैयार हो जाएगा। नतीजे में बैत-लहम में बच्चों का हौलनाक क़त्ल भी करवाया गया। मक्कार बादशाह समझता था कि इस तरह अल-मसीह के बच निकलने की कोई सूरत नहीं होगी। मगर ख़ुदा अपने बरगुज़ीदों को बचा लेना जानता है।”

इस दौरान अबीशाग उनके लिए शरबत ले आई थी और अब नीकुदेमुस की बारी थी कि हैरान होकर सर हिलाए। “इस सारे मामले में कुछ भेद ज़रूर है। किसी नन्हे बच्चे की पैदाइश पर इतना हंगामा कभी नहीं हुआ। मुमकिन है कि अल-मसीह यही हो और इसी लिए शैतान इस बच्चे का काम तमाम करने को एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा रहा है। इसके अलावा एक और हैरतअफ़्ज़ा वाक़िया भी पेश आया। चंद हफ़ते हुए मैं बैतुल-मुक़द्दस में था। एक नौजवान औरत और उसका शौहर अपने नन्हे बच्चे को मख़सूस कराने के लिए वहाँ लाए। बाद में मुझे पता चला कि उनके नाम मरियम और यूसुफ़ हैं, और कि वह दाऊद बादशाह के ख़ानदान से हैं। शमाऊन नामी एक बुज़ुर्ग भी वहाँ मौजूद था जिसने अपनी ज़िंदगी बैतुल-मुक़द्दस के लिए वक़्फ़ कर रखी है। वह दिन-रात दुआएँ माँगता और अल-मसीह का इंतज़ार करता रहा। रब ने उससे वादा कर रखा था कि ‘जब तक तू मेरी नजात न देख लेगा, मरेगा नहीं।’ जब मरियम और यूसुफ़ इस बच्चे को बैतुल-मुक़द्दस में लाए तो यही शमाऊन बड़ी ख़ुशी और गरमजोशी से उनके पास आया। उसने बच्चे को अपनी गोद में ले लिया और दुआ माँगने लगा :

‘ऐ आक़ा, अब तू अपने बंदे को इजाज़त देता है कि वह सलामती से रेहलत कर जाए, जिस तरह तूने फ़रमाया है। क्योंकि मैंने अपनी आँखों से तेरी उस नजात का मुशाहदा कर लिया है जो तूने तमाम क़ौमों की मौजूदगी में तैयार की है। यह एक ऐसी रौशनी है जिससे ग़ैरयहूदियों की आँखें खुल जाएँगी और तेरी क़ौम इसराईल को जलाल हासिल होगा।’[1]

“मैं और वहाँ मौजूद सारे लोग शमाऊन की बातों पर हैरान हो रहे थे कि मुहतरम बुज़ुर्ग ख़ातून हन्ना भी वहाँ आ गई। वह भी सारा वक़्त बैतुल-मुक़द्दस में गुज़ारती और रोज़े रख रखकर और दुआएँ माँग माँगकर अल्लाह की हम्दो-सताइश करती और नजातदहिंदे का इंतज़ार करती रहती है। इस बुज़ुर्ग हन्ना ने भी उस बच्चे को नजातदहिंदे के तौर पर सलाम किया। उसी दिन से यह दोनों बुज़ुर्ग हर किसी को यह ख़ुशख़बरी सुनाते रहते हैं कि नजातदहिंदा अल-मसीह आ गया है। अब मैं आपसे पूछता हूँ कि क्या इन जैसे ख़ुदापरस्त और नबियों जैसी सूझ-बूझ रखनेवाले अफ़राद ऐसी ज़बरदस्त ग़लती कर सकते हैं? इनको ऐसी झूठी अफ़वाहें फैलाने से क्या फ़ायदा हो सकता है!”

याक़ूब की निगाहें बड़ी चौकस लग रही थीं। “यसायाह नबी ने नबुव्वत की थी कि ‘कुँवारी उम्मीद से हो जाएगी। जब बेटा पैदा होगा तो उसका नाम इम्मानुएल रखेगी।’”[2] फिर उसने इसकी तशरीह करते हुए

1 लूक़ा 2:29-32
2 यसायाह 7:14

कहा, “अल-मसीह दाऊद की नसल से पैदा होगा। वह बड़ा पुरअसरार होगा, क्योंकि इनसान होते हुए भी अल्लाह उसके वसीले से हमारे दरमियान सुकूनत करेगा। इम्मानुएल का मतलब भी यही है कि ‘ख़ुदा हमारे साथ।’ तब ही तो यसायाह नबी ने यह पेशगोई की थी कि ‘हमारे हाँ बच्चा पैदा हुआ, हमें बेटा बख़्शा गया है। उसके कंधों पर हुकूमत का इख़्तियार ठहरा रहेगा। वह अनोखा मुशीर, क़वी ख़ुदा, अबदी बाप और सुलह-सलामती का शहज़ादा कहलाएगा।’”[1]

इस पर नीकुदेमुस बोल पड़ा, “मैं अकसर सोचता हूँ कि हमने अल-मसीह की जो तस्वीर अपने ज़हन में बना रखी है, शायद वह बिलकुल ग़लत हो। हम एक ऐसे शख़्स के मुंतज़िर रहे हैं जो बड़े रोब और दबदबे और क़ुव्वत का मालिक होकर रोम की ताक़त को मलियामेट कर देगा। वह दाऊद बादशाह के ख़ानदान की हुकूमत को बहाल करेगा, और क़ौम को दुबारा इज़्ज़तो-दौलत हासिल होगी। लेकिन अगर नजातदहिंदा ऐसी ग़रीबाना हालत में पैदा हो तो जो ख़ाब हम देख रहे थे उसकी ताबीर ग़लत निकलेगी।”

याक़ूब ने बड़े एतमाद से जवाब दिया, “यह तो मुस्तक़बिल ही बताएगा कि यह बच्चा अल-मसीह है कि नहीं। उसका कलाम और काम इस बात को साबित कर देंगे। अगर वह मौऊदा नजातदहिंदा है तो क़ादिरे-मुतलक़ तसदीक़ कर देगा कि यही मेरा चुना हुआ शख़्स है।

1 यसायाह 9:7

वह अपनी मोहर उस पर लगा देगा ताकि हम उसे पहचान सकें। लेकिन फ़िलहाल ज़रूरी है कि हम इस बच्चे पर निगाहें जमाकर इंतज़ार करें कि आया वह अल्लाह की तरफ़ से है कि नहीं।”

शरीअत के बूढ़े आलिम ने अपने माथे पर हाथ फेरा। वह थक गया था। “उस वक़्त तक मैं अपने बापदादा से जा मिलूँगा।” उसने एक ठंडी आह भरी। “और इब्राहीम की गोद में हूँगा। मगर तुम ख़याल रखना कि तुम्हारी ज़िंदगी साफ़-सुथरी और पाक हो ताकि जब उसका सामना हो तो तुम्हारी आँखों पर गुनाह के परदे न छाए हों, बल्कि तुम उसे पहचान सको। मैं तुम्हें इससे अच्छी नसीहत नहीं कर सकता। अल्लाह अपने ही तरीक़ों से उसे ज़ाहिर करेगा।”

उम्मीद की किरण

तीस साल बीत चुके थे। सर्दियों का मौसम था। भारी बारिशें ख़त्म हो चुकी थीं लेकिन फिर भी कभी कभी तेज़ बारिश हो जाती थी। जनवरी की उस सर्द सुबह को शाहराह के किनारे वाक़े सराय पर सूरज तेज़ी से चमक रहा था। इफ़राईम बिन सुलेमान अपने दोनों बेटों के साथ इस सराय में ठहर गया था। वह कफ़र्नहूम को जा रहे थे। कुछ सुस्ताकर ताज़ादम होने के लिए उन्हें यह सराय मौज़ूँ नज़र आई। वह बाग़ के अंदर साय में बैठे बारिश से धुली हुई दुनिया का नज़ारा कर रहे थे। हर तरफ़ शोख़ रंग बहार दिखा रहे थे लेकिन इस सारे हुस्न और दिलकशी के बावुजूद वह ग़मगीन-से थे। दरअसल वह एक दोस्त के जनाज़े से वापस आ रहे थे। इफ़राईम जज़बाती अंदाज़ में कहने लगा, “तुम्हारी प्यारी माँ को अपने बापदादा से जा मिले कितने बरस हो चुके हैं! मेरे वालिद सुलेमान भी अबदी आराम में दाख़िल हो चुके हैं। इनसानी ज़िंदगी तो बुखारात जैसी है, अभी हैं, अभी ग़ायब हो गए। जल्द ही मेरी बारी भी

आनेवाली है। मुझे अपनी उम्र का एहसास होने लगता है। ख़ुसूसन जब इन ऊँची-नीची सड़कों पर सफ़र करता हूँ।” उसने मुसकराकर अपने बेटे यशुअ की तरफ़ देखा। वह अब तीस साल का हो गया था। शादी भी हो चुकी थी और कारोबार में भी कामयाब था। “जब मेरा वक़्त पूरा हो जाएगा तो इतमीनान से मरूँगा क्योंकि कारोबार क़ाबिल हाथों में छोड़ रहा हूँ।”

यशुअ बहुत ख़ुश दिखाई दे रहा था। मगर उसका भाई दाऊद बैठा बैठा बेताबी से करवटें बदल रहा था। वह ज़ेलोतेस[1] था। उसे अपने मुल्क की सियासी सूरते-हाल की ज़्यादा फ़िकर रहती थी। अगरचे वह बाईस साल का हो चुका था लेकिन वह शादी का नाम भी नहीं सुनना चाहता था बल्कि वह अपनी तमाम क़ुव्वतें अपनी क़ौम के लिए सर्फ़ करना चाहता था। वह ख़ासे ग़ुस्से से बोला, “अब्बू जी, हमें सिर्फ़ अपने मामलात और कारोबार का ही ख़याल नहीं होना चाहिए जबकि हमारा वतन ग़ैरों के दबाव में है और हर तरफ़ से इसका ख़ून रिस रहा है।”

इसी लमहे सराय का मालिक उनका खाना लेकर आ गया। उनकी आमद को वह अपनी इज़्ज़तअफ़्ज़ाई समझता था। अपने ख़ुसूसी सरपरस्तों को देखकर उसने अपने फूले हुए पेट के ऊपर नया एप्रन बाँध लिया था। क़दरे मैले से झाड़न से उसने जल्दी जल्दी से मेज़ पोंछी। सारी चीज़ों का क़रीने से मेज़ पर रखते हुए वह बड़े इश्तयाक़ से

---

1 यहूदी क़ौमपरस्तों का एक गुरोह जो अपने मुल्क को तलवार के ज़ोर से रोमियों की ग़ुलामी से आज़ाद कराना चाहते थे।

बोला, “लगता है अल्लाह ने एक बड़ा नबी भेज दिया है। शायद जनाब ने भी सुना हो! चंद महीनों से यहया नामी एक आदमी दरियाए-यरदन के किनारे मुनादी करते और तौबा करनेवालों को बपतिस्मा[1] भी देते हैं। सारी दुनिया उनकी बातें सुनने खींची चली जाती है। कोई शक नहीं कि वह बड़े नबी हैं। उम्मीद है कि बहुत जल्द वह ख़ुदा की मदद से अपनी क़ौम को आज़ाद कराने के लिए रोम का जुआ उतार फेंकेंगे। अवाम में बहुत जोशो-ख़ुरोश है। उनका कहना है कि आख़िर अल्लाह ने हमारी मदद को अपना बाज़ू नंगा किया है। यह नबी यहया इस बात का खुला सबूत हैं। सैंकड़ों साल से कोई नबी बरपा ही नहीं हुआ।”

तीनों के सामने भुना गोश्त, ताज़ा रोटियाँ और नमकीन पानी में ज़ैतून का फल चुन दिया गया। उनकी भूक और चमक उठी। वह बड़ी रग़बत से खाने लगे। वाह! अंगूरों का ठंडा शरबत कैसी फ़रहत देता है! इफ़राईम ने सराय के मालिक को मुख़ातिब करते हुए पूछा, “यह यहया क्या मुनादी करते हैं? मैंने उनके बारे में बस थोड़ा ही सुना है।”

सराय के मालिक ने देखा कि वह तीनों उसके खाने को बहुत पसंद कर रहे हैं तो उसका चेहरा खिल उठा। “हाँ जनाब! यहया की बड़ी बात उनकी मुनादी है।” वह ऐसे अंदाज़ में बोलने लगा जैसे बहुत अहमियत रखता हो। “कहते हैं कि अल-मसीह आने ही वाला है, बल्कि ज़ोर देकर

---

1 यहूदियों और ईसाइयों में ग़स्ल की रस्म जो उस वक़्त अदा की जाती है जब कोई अपने गुनाहों से तौबा करके सीरते-मुस्तक़ीम पर चलने के लिए तैयार हो जाता है।

कहते हैं कि अभी वह हमारे दरमियान मौजूद है। दावा करते हैं कि मेरे आने का मक़सद ही यह है कि क़ौम को अल-मसीह के ज़ुहूर के लिए तैयार करूँ। वह लोगों के गुनाहों पर शेर की तरह गरजते हैं। और साथ ही उनको बताते हैं कि वह तौबा करें। कहते हैं कि मज़हब लफ़्ज़ों का नहीं बल्कि अमल का नाम है। साफ़ साफ़ फ़रमाते कि अगर हम अल्लाह से मुहब्बत रखते हैं तो लाज़िमी बात है कि यह मुहब्बत हमारी ज़िंदगियों से ज़ाहिर हो। वह इस बात पर ज़ोर देते हैं कि अगर हमारा ख़ुदा पर ईमान है और हम उससे मुहब्बत करने का दावा करते हैं मगर ख़ुदग़रज़ हैं और भाइयों से बदसुलूकी करते हैं तो हमारी दीनी ज़िंदगी में कीड़ा है।"

इफ़राईम ने सर हिलाया। उसे उस बच्चे का ख़याल आया जो तीस साल पहले पैदा हुआ था और जिसकी पैदाइश ने कई दिलों में उम्मीद की शमाएं रौशन कर दी थीं। मगर बाद में उसकी मज़ीद कोई बात सुनने में न आई थी। लेकिन ठहरो। क्या वही बच्चा बारह साल की उम्र में बैतुल-मुक़द्दस में नहीं देखा गया था? और क्या उसके हिकमत और दानिश भरे सवालो-जवाब से शरीअत के आलिम और फ़रीसी दंग न रह गए थे? उसने ख़ुदा के बारे में कितनी हिकमत से जवाब दिए थे। नीकुदेमुस यह माजरा अपनी आँखों से देखकर शशदर रह गया था। उसने वालिदैन को भी पहचान लिया था। यह वही थे जिन्हें उसने उस

वक़्त देखा था जब वह बच्चे को मख़सूस कराने के लिए बैतुल-मुक़द्दस में लाए थे। वह लड़का ईसा अब तो पूरा जवान हो चुका होगा।

दाऊद ने अपने बाप को चौंका दिया, और वह सोच की दुनिया से निकलकर हक़ीक़त की दुनिया में आ गया। चमकती आँखों के साथ वह कहने लगा, “बड़ी अच्छी बात है कि एक बार फिर हमारी क़ौम को कोई नबी नसीब हुआ है। मगर मैं कहता हूँ कि हमारे छुटकारे के लिए सिर्फ़ बातों की नहीं बल्कि कुछ और करने की ज़रूरत है। ऐसे लीडर की ज़रूरत है जो लोगों को अमली तौर पर कुछ करने पर उभारे। तब कहीं रोमियों से ख़लासी मिलेगी। क्या हम अल्लाह की उम्मत नहीं हैं? उसके चुने हुए लोग? तो फिर यह रोमी कुत्ते हमारे साथ ग़ुलामों जैसा सुलूक क्यों करते हैं?”

सराय के मालिक ने भी हाँ में सर हिलाया। लेकिन इफ़राईम ने उसे तसल्ली दिलाने वाले लहजे में जवाब दिया, “यह न भूलो कि रोमियों में अच्छे लोग भी हैं जैसे कि हमारी क़ौम में भी बुरे लोग हैं।”

दाऊद ने बड़ी बाग़ियाना नज़रों से बाप को देखा। “इससे हमारे मसायल तो हल नहीं होते। हाँ, आपकी यह अच्छे और बुरे लोगोंवाली बात से मैं इत्तफ़ाक़ करता हूँ मगर ...”

यशुअ जो सोच-समझकर बोला करता था, उसने बात काटी, “मेरे ख़याल में हमारी क़ौम की यह सोच सरासर ग़लत है कि चूँकि हम इब्राहीम की नसल से हैं इसलिए हम ख़ुसूसी हुक़ूक़ रखते हैं। उनका

ख़याल है कि एक यहूदी को ख़ाहमख़ाह जन्नत में दाख़िला मिल जाएगा चाहे वह परले दर्जे का धोकेबाज़ हो या छुटा हुआ बदमाश।”

इफ़राईम ने इस बात से इत्तफ़ाक़ करते हुए कहा, “इस ग़लतफ़हमी ने लोगों को ग़लत एहसासे-तहफ़्फ़ुज़ में मुब्तला कर रखा है। और वह ख़ुदा का हुक्म मानने में मग़रूर और सुस्त हो गए हैं बल्कि अल्लाह के बारे में उनके दिल बेहद सख़्त हो चुके हैं।” फिर दाऊद से मुख़ातिब होकर उसने बात जारी रखी, “रोम का यह जुआ ख़ुदा की तरफ़ से सज़ा है। हमें इस बात को अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए। बहुत अरसे पहले ही अल्लाह ने ख़बरदार कर दिया था कि अगर मुझे छोड़ दोगे और अपनी राहों पर चलने लगोगे तो दूसरी क़ौमें तुम पर हुक्मरान होंगी और तुमको दुख देंगी। यह रोमी जुआ उस वक़्त तक क़ौम की गरदन पर रहेगा जब तक वह पूरे दिल से ख़ुदा की तालिब न होगी। मेरी बात पल्ले बाँध लो।”

उसी लमहे उन्होंने घोड़े की टापों की आवाज़ सुनी। एक रोमी अफ़सर बाग़ में दाख़िल हुआ और बड़े रोब से पुकारा, “भठियारे। ओ भठियारे!”

सराय का मालिक जल्दी से मुड़ा और दौड़कर उसके पास पहुँचा, “फ़रमाइए! मैं क्या ख़िदमत कर सकता हूँ?”

“एक गिलास अंगूर का शरबत, रोटी और पनीर। यही काफ़ी होगा। मैं इस अंजीर के दरख़्त के साय में बेंच पर बैठा हूँ।”

“अभी हाज़िर करता हूँ, जनाब सूबेदार साहब।”

वह फ़ौजी की तरह रोब से चलता हुआ रोमी अफ़सर अंजीर के दरख़्त की तरफ़ बढ़ गया। यशुअ उसको बड़े ग़ौर से देखता रहा। “पता है यह कौन है? मुझे पक्का यक़ीन है कि सूबेदार प्रिस्कस है। कफ़र्नहूम का क़िला इसी की कमान में है।”

इफ़राईम ने तसदीक़ की, “हाँ, तुम ठीक ही कह रहे हो। यह नेक आदमी है। इसके दिल में हमारी क़ौम के लिए जगह है। इसने कफ़र्नहूम में इबादतख़ाना भी बनवाया है। सब इसकी तारीफ़ करते हैं।”

अभी वह रोमी बैठा ही था कि एक और अफ़सर भी आ गया। वह प्रिस्कस को पहचानकर बहुत ख़ुश हुआ। “प्रिस्कस! कितनी मुद्दत के बाद हमारी मुलाक़ात हुई है!”

“फ़लादियुस! तुम से मिलकर बहुत ख़ुशी हुई। बताओ, क्या अपने सिपाहियों को बाहर मेरे सिपाहियों के पास छोड़ आए हो? फिर तो वह भी पुरानी यादें ख़ूब ताज़ा करेंगे। आओ, कहाँ से आ रहे हो?”

फ़लादियुस ने शिकायत भरे लहजे में जवाब दिया, “मेरा तक़र्रुर तो ग़ज़्ज़ा में है जिसे कोई भूले से भी याद नहीं करता। मुझे उस जगह से सख़्त नफ़रत है! हम इस शिमाली इलाक़े में ख़ास मुहिम पर आए थे। अब ग़ज़्ज़ा को वापस जा रहे हैं।”

प्रिस्कस ने अपने दोस्त को दावत दी कि रात उसके पास कफ़र्नहूम के क़िले में बसर कर ले। यह दावत बख़ुशी क़बूल कर ली गई।

अब फ़लादियुस ज़रा धीमी आवाज़ में माज़ी को याद करने लगा, “पिछली बार हम इस वक़्त उठे थे जब वैरस की कमान में गलील के बाग़ी यहूदाह के ख़िलाफ़ लड़ रहे थे।”

सूबेदार प्रिस्कस बोला, “वह एक ऐसी लड़ाई थी जिसको मैं याद करना नहीं चाहता। जिन नौजवानों से हम लड़ रहे थे वह क़ौमी मुहब्बत से सरशार और मुस्तक़बिल के लिए एक रोया रखते थे। उनका अंजाम कैसा अफ़सोसनाक था। मैदाने-जंग लाशों से अटा गया था। और जिनको सूली चढ़ाया गया, उनका हाल तो और भी बुरा हुआ था। दो हज़ार लाशें उन सूलियों पर कई दिनों तक गलती-सड़ती रहीं ताकि बाक़ी यहूदियों को इबरत हो। और वह दुबारा बग़ावत का सोच भी न सकें। लेकिन मेरा ख़याल यह है जो मौत से बच निकला उनकी हालत भी कोई बेहतर न थी, क्योंकि उनको क़ैद करके ग़ुलाम बनाने के लिए ले गए थे।”

उसके दोस्त ने सर हिलाया, “भाई, हम तो सिर्फ़ अपना फ़र्ज़ अदा कर रहे थे। फ़ौजी का काम तो सिर्फ़ हुक्म की तामील है।”

जब रोमी उठकर चले गए तो इन तीनों की गुफ़्तगू में फिर जान आ गई। अब दाऊद की आँखें बेज़ारी से चमक रही थीं। “यही है जो हमें इन ज़ालिमों से मिलता है। यह भी न भूलें कि दस साल बाद क़त्लो-ग़ारत का एक और बाज़ार गरम हुआ था। उस वक़्त प्रोकोंसल कोपोनियुस ने रोमी तलवारों के बल-बूते से बग़ावत को दबाया था। गलील के बड़े

शहर सेफ़ोरिस और इस इलाक़े के बहुत-से देहात को आग से फूँक दिया गया।”

यशुअ ने ताईद की, “और नासरत का छोटा-सा गाँव इन हौलनाक वाक़ियात को क़रीब से देखता रहा है। और हम जो यरूशलम में रहते हैं, हमें भी तो हमारा हिस्सा मिलता रहता है। ठीक है ना, अब्बा जान!”

इफ़राईम ने भी तसदीक़ की, “हाँ। रोमी गवर्नर पीलातुस ने भी हमारी मुसीबतों में इज़ाफ़ा किया है।”

सराय का मालिक बरतन उठाने उनकी मेज़ पर आया। “माफ़ कीजिए जनाब! आप शायद उस क़त्लो-ग़ारत की बात कर रहे हैं जो बैतुल-मुक़द्दस के सहन में हुआ था। पीलातुस के ज़ुल्मो-सितम से हमारे ख़ानदान पर भी ग़म का पहाड़ टूट पड़ा था। मेरा भाई भी उसका शिकार हो गया।”

इफ़राईम सारे वाकिये को दोहराने लगा। “पीलातुस ने फ़ैसला किया था कि यरूशलम के लिए पानी की फ़राहमी का नया निज़ाम ज़रूरी है। इस मनसूबे की तकमील के लिए उसने बैतुल-मुक़द्दस के ख़ज़ाने से रुपया तलब किया। इस पर लोग आग-बगूला हुए। एहतजाज के लिए एक हुजूम बैतुल-मुक़द्दस में जमा हो गया। उन्हें ख़बर न थी कि पीलातुस ने सादा कपड़ों में अपने फ़ौजी उनके दरमियान भेज दिए थे। वह बाग़ियों को गाजर-मूली की तरह काट फेंकने के लिए सिर्फ़ इशारे के मुंतज़िर थे।”

इफ़राईम ने मुलायम आवाज़ में सराय के मालिक से कहा, "मुझे याद है कि जिस वक़्त क़त्ले-आम शुरू हुआ तो कुछ गलीली आदमी वहाँ क़ुरबानी चढ़ा रहे थे। तुम्हारा भाई भी उनमें मौजूद था?"

सराय के मालिक ने बड़े ग़म से इस बात की तसदीक़ की, "सबके सब मारे गए। इन आदमियों का ख़ून क़ुरबानी के जानवरों के ख़ून से मिल गया। अल्लाह उनकी ज़ालिमाना मौत का बदला ले। हम लोग तो पीलातुस का नाम सुनकर ही मुश्तइल हो जाते हैं।"

तीनों बाप-बेटे सराय के मालिक से हाथ मिलाने के बाद रवाना हुए। जब वह अपनी घोड़ागाड़ी की तरफ़ जा रहे थे तो दाऊद ग़ुस्से से बुड़बुड़ाने लगा, "जो कुछ मैंने सुना है उसने मेरी बातों की तसदीक़ कर दी है। हमारी क़ौम को दिलकश बातों की नहीं बल्कि अमल की ज़रूरत है। जब हमारे लोग इन ज़ालिमों के दबाव से छूटेंगे तो नेकी और दियानतदारी की तरफ़ रुजू करेंगे। उन्हें इनका वक़ार और इज़्ज़ते-नफ़स लौटा दिया जाए तो यह एक ख़ुदातरस क़ौम बन जाएँगे।"

उनका कोचवान बाहर ही खाना खाकर ताज़ादम हो चुका था। उन्हें आता देखकर वह जल्दी से खड़ा हो गया। उसने गाड़ी का दरवाज़ा खोल दिया और तीनों उसकी चरचराती निशस्तों पर बैठ गए। कफ़र्नहूम की तरफ़ सफ़र शुरू हुआ। यशुअ ने गुफ़्तगू का सिलसिला जारी रखा, "दाऊद भाई! तुम ने अभी अभी जो बात कही थी, मैं इससे मुत्तफ़िक़ नहीं। तुम ने नेक लोगों के बारे में जो नज़रिया पेश किया है, हमारी

क़ौम की तारीख़ इसकी तसदीक़ नहीं करती। क्या यह हक़ीक़त नहीं कि हमारी क़ौम ख़ुशहाली के ज़माने में, जब उसे हर चीज़ मुयस्सर होती थी अख़लाक़ी तौर से बुरी तरह गिर जाती थी? वजह क्या थी? ख़ुदग़रज़ी। उन्हें क़ादिरे-मुतलक़ की ज़रा भी परवा न रहती थी। ख़ुदग़रज़ी और मुहब्बत का फ़ुक़दान, यही दो बड़े गुनाह थे जिनके बाइस क़ौमें बदआमालियों का शिकार होती रही हैं। आज हमें जिस चीज़ की सबसे ज़्यादा ज़रूरत है, वह है एक ऐसा नजातदहिंदा जो हमारे गुनाहों के ज़ोर को तोड़े ताकि मुहब्बत की हुक्मरानी हो। ख़ुदा से प्यार हो। इनसान से प्यार हो। यहीं से हर चीज़ में तबदीली आएगी।"

इफ़राईम ने ताईद में सर हिलाया। वह सोचने लगा कि दाऊद अपने दादा सुलेमान की तरह अक़्लमंद है। लेकिन बेचारे दाऊद की तेज़ तबीयत किसी दिन कोई मुसीबत खड़ी कर देगी। "ऐ इब्राहीम के ख़ुदा! मेरे इस ग़ैरतमंद और तेज़तबीयत बच्चे को तबाही से बचा।" उसे अपनी बेटी रूत की याद भी सता रही थी। वह बिलकुल अपनी माँ की तरह थी। अभी उसकी उम्र सिर्फ़ बीस बरस थी कि बेवा भी हो गई थी। मगर वह समझता था कि इसका मेरे पास वापस आ जाना भी ख़ुशक़िस्मती की बात है। यह ख़याल ही राहत का बाइस था कि वह हमारा इंतज़ार कर रही होगी।

दाऊद बहुत बेज़ारी महसूस कर रहा था। वह हिक़ारत से सोचने लगा, हमारी क़ौम के यह मज़हबी लोग इतने बुज़दिल हैं कि रोमियों के ज़ुल्मो-

सितम के ख़िलाफ़ उँगली भी नहीं हिला सकते। उन्हें तो बस ख़याल और उम्मीद है एक नजातदहिंदे की कि वही आए और सारा काम कर दे। लेकिन हम कब तक इंतज़ार करते रहें! इतनी मुद्दत हो गई है। मगर हम ज़ेलोतेस वतन की ग़ैरत रखते हैं। हमें अपना मक़सद हासिल करने के लिए बहुत-से लोगों की ज़रूरत है। शमाऊन जैसे लोग। कैसा दिलगुरदेवाला शख़्स है। उसने अगले ख़ुफ़िया इजलास में शामिल होने का वादा भी कर रखा है। दाऊद को यक़ीन था कि शमाऊन दिलो-जान से हमारा साथ देगा।

दाऊद को अपने वतन के नौजवानों पर रह रहकर ग़ुस्सा आ रहा था। मसलन यहूदाह के इलाक़े का एक और समझदार नौजवान था जिसका नाम यहूदाह इस्करियोती था। कितना बुलंद हौसला रखता था। उसके अंदर गोया आग लगी हुई थी कि यह रोमी कल के जाते आज ही जाएँ। पता नहीं वह हममें क्यों शामिल नहीं हो रहा है। आजकल तो मुनादी करनेवाले यहया नबी के आगे-पीछे फिर रहा है।

आख़िर सफ़र ख़त्म हुआ। रूत ने आगे बढ़कर गरमजोशी से उनका इस्तिक़बाल किया। "ख़ुशआमदीद! आपकी सलामती हो! अब्बा जान, टैक्स लेनेवालों का सरदार मत्ती बिन हलफ़ई आया था। किसी कारोबार के सिलसिले में आपसे मिलना चाहता था।"

दाऊद तिनककर बड़ी हिक़ारत से कहने लगा, “वह है तो यहूदी लेकिन है बड़ा बदमाश। रोमी हुकूमत का पिठू। मुझे तो एक आँख नहीं भाता।”

इफ़राईम संजीदगी से बोला, “बेटे! हमारे और मत्ती के ख़ानदान के दरमियान हमेशा एहतराम और मुहब्बत के ताल्लुक़ात रहे हैं। मुझे कभी नहीं भूलता कि एक बार जब मैं कफ़र्नहूम जा रहा था तो रास्ते में डाकुओं ने मुझ पर हमला कर दिया। मत्ती मेरे साथ था। उसने अपनी जान ख़तरे में डालकर मुझे बचाया। आदमी तो अच्छा है। ख़ैर उसमें कुछ ख़ामियाँ भी हैं। सबसे बड़ी ख़ामी तो यह है कि वह पैसे से बड़ी मुहब्बत करता है और इसी लिए उसने टैक्स की चौकी का ठेका भी लिया है।”

रूत ने दाऊद को ख़ुसूसी गरमजोशी से ख़ुशआमदीद कहा। उसे अपने इस आतिशमिज़ाज और क़ौमपरस्त भाई से बहुत मुहब्बत थी। वह उसके सच्चे जज़बात को समझती थी। कई बार उसकी सलामती की फ़िकर भी करती थी। काश उसे पता होता कि किस तरह अपने भाई की मदद करे। उसने ऐसी आवाज़ में जो सिर्फ़ दाऊद के लिए थी बात की, “दाऊद! तुम्हारी ग़ैरहाज़िरी में कोई यह चिट्ठी दे गया था। जब से यह चिट्ठी घर में आई है मुझे तुम्हारी सलामती की फ़िकर लगी है। प्यारे भाई, फूँक फूँककर क़दम रखना। तुम हम सबकी आँख का तारा हो।” दाऊद ने प्यार से उसकी पेशानी चूम ली। उसे भी इस प्यार का

पूरा पूरा एहसास था। लेकिन नौजवान ख़ातून ने दुखी दिल से महसूस किया कि उसने कोई वादा नहीं किया। कुछ भी हो, वह अपना मक़सद हासिल करने के लिए सब कुछ क़ुरबान करने पर तुला हुआ है।

रात के खाने के दौरान पूरे ख़ानदान पर बोझल-सी ख़ामोशी छाई हुई थी। दाऊद ने खाने से माज़रत कर ली थी। उसे किसी हंगामी इजलास में जाना था। हर किसी को अंदेशा था कि लड़के को कोई ख़तरा पेश आनेवाला है। "रब के फ़रिश्ते उसकी निगहबानी करें," रूत ने दिलसोज़ी से आह भरी। उसने देखा कि अच्छा-भला लज़ीज़ खाना ज़ाया हो रहा है। किसी ने मुश्किल ही से दो नवाले खाए। सारा खाना वापस बावरचीख़ाने ले जाया गया। नरम गरम बिस्तरों के बावुजूद फ़िकर के बाइस किसी को नींद न आई। सबके कान दाऊद के वापस आने की आवाज़ पर लगे हुए थे। आख़िर सुबह के कोई दो बजे एक चौकीदार ने इफ़राईम के कमरे का दरवाज़ा खटखटाया, "आलीजाह! फाटक पर एक आदमी ज़रूरी पैग़ाम ले आया है। लगता है कि छोटे मालिक दाऊद पर कोई मुसीबत आ पड़ी है।"

"उसे बैठक में ले चलो।" इफ़राईम की आवाज़ में कपकपाहट थी। वह जल्दी जल्दी उस आदमी से मिलने को चला।

यह पैग़ंबर एक नौजवान, डरावनी आँखोंवाला यहूदी था। लिबास फटा हुआ था। जिस्म के कई हिस्सों से ख़ून रिस रहा था। "जनाब! आपकी सलामती हो," उसने रुक रुककर कहना शुरू किया। "मैं अपने

हुलिये के लिए माज़रत चाहता हूँ। मैं बुरी ख़बर लाया हूँ। आलीजाह, एक सदमे के लिए तैयार हो जाएँ। हम ज़ेलोतेस पहाड़ियों में एक गोरिल्ला इजलास कर रहे थे। रोमी सिपाहियों ने हमारा इजलास दरहम-बरहम कर दिया। हमारा लीडर बर-अब्बा बचकर निकल गया। उसके ख़ास साथी शेबा और अकीम भी बचकर निकल गए। कितने ही ज़ेलोतेस मारे गए। बाक़ियों को रोमी बेड़ियाँ पहनाकर ले गए। मुझे यक़ीन है कि उन्हें ग़ुलाम बनाकर बेच दिया जाएगा।”

इफ़राईम की टाँगें बेतहाशा काँपने लगीं। उसने जल्दी से एक कुरसी का सहारा लिया और बेदम-सा उस पर बैठ गया। “लेकिन नौजवान! यह तो बताओ, तुम हो कौन?” उसके होंट ख़ुश्क हो रहे थे।

“मैं शमाऊन ज़ेलोतेस हूँ,” नौजवान ने जवाब दिया। “दाऊद ने मुझे क़ायल किया था कि उनके साथ मिल जाऊँ। और आज पहला मौक़ा था कि मैं इस गुरोह के हमराह हूँ।”

“तुम कितने सिर-फिरे लोग हो! एक आलमी ताक़त की क़ुव्वत तोड़ने की उम्मीद कैसे कर सकते हो?”

“जनाब आप हमारे साथ बेइनसाफ़ी कर रहे हैं। हम मुस्तक़बिल में हमला करने का मनसूबा बना रहे थे। हमारा मक़सद ख़त्म नहीं हुआ। इसलिए कि हमारा लीडर और उसके साथी बच निकले हैं। अभी मुल्क में हमारे बहुत-से साथी बाक़ी हैं। बर-अब्बा बहुत जल्द उन्हें अपने गिर्द

दुबारा जमा कर लेगा। आज तो सिर्फ़ शिमाली इलाक़े के क़ौमपरस्त अफ़राद का इजतमा था।”

इफ़राईम ने गहरा साँस लेते हुए कहा, “क्या तुम्हें यक़ीन है कि तुमने दाऊद को उनके दरमियान देखा था जिनको पकड़कर ले गए हैं?”

“जनाब! मैं एक जगह छिप गया था। वहाँ से मैंने उसे देखा। मगर मुझे यक़ीन है कि रिश्वत देकर भी आप उसे छुड़ा न सकेंगे। रोमी हुकूमत हम सबको बहुत ख़तरनाक समझती है। हमारे बापदादा का ख़ुदा आपको जुदाई का यह सदमा बरदाश्त करने की तौफ़ीक़ दे।”

वह जवान चला गया, मगर इफ़राईम में कुरसी से भी उठने की ताक़त न थी। वह सामने ख़ला में घूरता रहा। “बर-अब्बा बचकर भाग गया।” उसके लहजे में सख़्त कड़वाहट थी। “बर-अब्बा का मतलब है ‘अपने बाप का बेटा।’ उसके बाप का बेटा तो नहीं मगर मेरा बेटा जाता रहा है।” उसका दिल उस तुंदमिज़ाज गोरिल्ले बर-अब्बा के ख़िलाफ़ नफ़रत से भर गया। उसने दाऊद को क्यों उलटी राह पर लगा दिया? न जाने और कितनों को मुसीबत और मौत की राह पर ले जाएगा?

सूबेदार की कशमकश

अभी बहुत सवेरा था। कफ़र्नहूम के क़िले में ज़िंदगी की रेल-पेल शुरू नहीं हुई थी। लेकिन सूबेदार प्रिस्कस बेदार हो चुका था क्योंकि उसे अपने दोस्त फ़्लावियुस को विदा करना था।

"यार प्रिस्कस, बहुत थके थके लग रहे हो," उसके दोस्त ने कहा। "इतने संजीदा न रहा करो।" उसने इधर-उधर नज़र दौड़ाते हुए बात जारी रखी, "यह तो छुट्टियाँ गुज़ारने के लिए लाजवाब जगह है। दूर उन पहाड़ियों को देखो! चोटियाँ बर्फ़ से ढकी हुई हैं और फिर नज़दीक चारों तरफ़ इन सरसब्ज़ और शादाब पहाड़ियों पर नज़र डालो। मैं कहता हूँ कि ऐसे मनाज़िर तो सिर्फ़ देवताओं को ही मुयस्सर होते हैं। और फिर इन सब पर वह गलील की झील, इसका तो जवाब ही नहीं। प्रिस्कस, इन सबसे लुत्फ़अंदोज़ हुआ करो। और हाँ, रात को क्या गड़बड़ थी? मैंने शोर सुना था। कोई तशवीशनाक बात तो नहीं हुई?"

"ज़ेलोतेस गुरोह पर छापा मारा था। सूबेदार सेक्सतुस कमान कर रहा था। मेरे बहुत-से सिपाही उसकी मदद करने गए थे।"

फ़्लावियुस ने बड़े ख़ुश्क लहजे में जवाब दिया, "वही पुरानी दासतान। यह अक्खड़ और ज़िद्दी यहूदी कभी क़बूल नहीं करते कि अब रोम इन पर हुक्मरान है।" फिर कुछ दिलचस्पी ज़ाहिर करते हुए बोला, "यह ज़ेलोतेस, क्या इन पर कुछ अरसे से नज़र रखी हुई थी?"

"हाँ फ़्लावियुस, उनकी नक़लो-हरकत पर कड़ी नज़र थी। जब उनकी तादाद तेज़ी से बढ़ने लगी तो दख़लंदाज़ी करना मुनासिब समझा गया, वरना वह सारे मुल्क में हलचल मचा देते। उनकी पेशबंदी ज़रूरी थी मगर बदक़िस्मती से उनके लीडर बच निकले। पता नहीं क्यों! लेकिन मुझे उन लोगों पर तरस आता है कि उन्होंने ख़ाहमख़ाह ख़ुद को मुसीबत में फँसा लिया है। लेकिन क्या किया जा सकता है?"

"कुछ नहीं। सारी मुसीबत के ज़िम्मेदार वह ख़ुद हैं," फ़्लावियुस सख़्त लहजे में बोला। "इन यहूदियों से निमटना बहुत मुश्किल है। यहूदी होते ही मग़रूर हैं। यह क़ौम हमेशा अपने आपको मख़सूस क़ौम समझती आई है। अपने मज़हब और अपने ख़ुदा पर उन्हें इतना नाज़ है कि बयान नहीं किया जा सकता। दुनिया के आम देवताओं को तो कुछ समझते ही नहीं।"

अचानक बिगुल की आवाज़ आई। क़िले में गहमा-गहमी शुरू हो गई। लंगरख़ाने से खाने की ख़ुशबू आने लगी।

सूबेदार पुरएतमाद लहजे में कहने लगा, "मैं इस क़ौम को बहुत पसंद करता हूँ। यह अक्खड़ और ज़िद्दी ज़रूर हैं मगर बा-किरदार लोग हैं। किसी के सामने झुकते नहीं। अज़ीम रोमी हुकूमत को भी इन्हें क़ाबू में रखने में बड़ी दिक़्क़त पेश आती है। लेकिन सारे ऐसे नहीं। मसलन हेरोदेस बादशाह क़ैसर को हर तरह से ख़ुश करने को तैयार है बशर्तेकि बदले में उसका तख़्त क़ायम रहे। इमामे-आज़म कायफ़ा और दूसरे इमामों का हाल भी देखो! वह रोमी हुकूमत से बिलकुल शीरो-शक्कर हैं। हूँ! मुझे तो ऐसे लोगों से सख़्त नफ़रत है।" सूबेदार संजीदगी से बोला, "फ़्लावियुस, मुझे लगता है कि यहूदी सचमुच ख़ास क़ौम हैं। इनका ख़ुदा, ज़िंदा ख़ुदा है। ख़ुदा ने अपने आपको इस क़ौम पर ज़ाहिर किया है।"

"इसका मतलब यह हुआ कि तुमने इनके मज़हब का मुतालआ किया है? क्या मालूम हुआ? मुझे भी तो बताओ। मैं यह ज़रूर कहूँगा कि इन यहूदियों का अपने ख़ुदा के लिए जोश देखकर रश्क आता है। कैसे दुआ करते हैं। कैसे एहतराम से अपने ख़ुदा का नाम लेते हैं। हर बात में बेहद अक़ीदत का इज़हार होता है।"

अब बिगुल की दूसरी आवाज़ गूँजी। इस पर तमाम सिपाही सुबह की वरज़िश के लिए खेल के मैदान में दौड़े आए।

फ़्लावियुस हैरान रह गया। "अज़ीज़ प्रिस्कस, तुम्हारी रेजिमेंट तो बड़ी मुनज़्ज़म है। ग़ज़्ज़ा के क़िले में तो ज़िंदगी पर सुस्ती छाई हुई है,

और इसके नतीजे में वह झगड़ालू और बद-मिज़ाज बन गए हैं। सुस्ती से फ़ौजी के जौहर तो खुलकर सामने नहीं आ सकते।”

प्रिस्कस ने इस बात की ताईद की, “इसी लिए मैं अपने सिपाहियों को मसरूफ़ रखता हूँ। हमें अजनबी मुल्क में हरगिज़ ढीला नहीं होना चाहिए। लेकिन तुमने पूछा कि मैंने यहूदी मज़हब का मुतालआ क्यों किया? वजह यह है कि मैं अपने देवताओं से तंग आ चुका था। फ़्लावियुस! वह कुछ भी नहीं हैं। अब तो क़ैसर भी आसमानी मख़लूक़ होने का दावा करता है। उसे भी देवता मानना पड़ता है। कैसी वाहियात बात है!”

फ़्लावियुस ने उसे ख़बरदार किया, “शी! प्रिस्कस। हाँ, मैं समझ गया। क्या हमें पता नहीं कि इस बूढ़े क़ैसर में क्या क्या ख़ामियाँ हैं!”

सूबेदार ने सर हिलाते हुए कहा, “मेरी रूह तो ज़िंदा ख़ुदा की आरज़ूमंद है। जब मैंने पाक सहीफ़े पढ़े तो मुझे उनमें ज़िंदा ख़ुदा दिखाई दिया। और मेरी भूकी और बेचैन रूह को तसकीन होने लगी। मुझे यक़ीन है कि अल्लाह ने इब्राहीम और उसकी नसल को किसी ख़ास मक़सद के लिए चुन रखा है।”

“और वह मक़सद क्या हो सकता है?”

“सहायफ़ से वाज़िह होता है कि अल्लाह ने अपने आपको इसलिए इस क़ौम पर ज़ाहिर किया है कि वह ख़ुदा के इरफ़ान को सारी दुनिया

तक पहुँचाएँ। उसने उनको बताया कि वह कैसा है ताकि वह हमको भी यह बात बताएँ।”

फ़्लावियुस बेदिली से हँसा, “ख़ूब! मैं तो सिर्फ़ यह कह सकता हूँ कि वह अपने मक़सद में बुरी तरह नाकाम रहे हैं। लेकिन वह फिर भी इस बात पर फ़ख़्र करते हैं कि हम अल्लाह के ख़ास लोग हैं और वह दूसरे सारे इनसानों को हक़ीर समझते हैं।”

प्रिस्कस ने उसकी ताईद करते हुए कहा, “कितने अफ़सोस की बात है, लेकिन मुझ पर यह बात ज़ाहिर हो गई है कि इसराईली ख़ुदा के ना-फ़रमान ख़ादिम साबित हुए हैं। जो काम अल्लाह ने उनके सुपुर्द किया था उसे वह नहीं कर पाए। तो भी यसायाह नबी ने सारी क़ौमों के लिए ख़ुशख़बरी का एलान किया है। वह वादा किए हुए अल-मसीह के बारे में बताता है कि वही ख़ुदा का फ़रमाँबरदार ख़ादिम होगा। वह इनसान को नूर और नजात अता करेगा। नबी के मुताबिक़ अल्लाह ने फ़रमाया कि ‘मैं तुझे दीगर अक़वाम की रौशनी बना दूँगा ताकि तू मेरी नजात को दुनिया की इंतहा तक पहुँचाए।’[1] लेकिन हमें तमाम यहूदियों को एक जैसा नहीं समझना चाहिए। मैं यहाँ कफ़र्नहूम में कई यहूदियों को जानता हूँ जो दूसरों से मुख़्तलिफ़ हैं। सच बताऊँ, मैं यहाँ बिलकुल मुतमइन हूँ। मैंने उनका एतमाद जीतने के लिए सिर्फ़ एक काम किया है। मुझे

1 यसायाह 49:6

मालूम हुआ कि उन्हें एक इबादतगाह दरकार है तो मैंने इबादतख़ाना बनवा दिया।”

फ़्लावियुस बोला, “भई तुम्हारा दिल तो सचमुच बहुत नरम है। लेकिन होशियार रहना। अभी एक छोटा-सा मसला भी आ रहा है।

एक बकता-झकता सिपाही एक नौजवान लड़के को धक्के मारता हुआ उसके सामने ले आया। लड़के ने फटा पुराना चोग़ा पहन रखा था। सिपाही सूबेदार से ज़रा दूर ही रुक गया और बड़े फुरतीले अंदाज़ में उसे सलाम किया, “हुज़ूर, यह मफ़रूर ग़ुलाम है। मैंने इसे चोरी करते हुए पकड़ा है।”

“फ़िलहाल तो उसे बंद कर दो। मैं बाद में इसका फ़ैसला करूँगा,” प्रिस्कस ने हुक्म दिया। लेकिन उसने ग़ुलाम को मेहरबानी की निगाह से देखा।

फ़्लावियुस हवा को सूँघते हुए कहने लगा, “झील की हवा कितनी फ़रहतबख़्श है! लेकिन हाँ, ज़रा यह तो बताओ कि अल्लाह ने यहूदियों को अपनी ख़ास उम्मत होने के लिए क्यों चुना? इनको क्या सुर्ख़ाब का पर लगा हुआ है? मेरी राय में तो वह किसी दूसरी नसल से किसी तरह भी बरतर नहीं।”

सूबेदार ने सर हिलाया, “मेरा ख़याल है इनको चुनने में ख़ुदा सारी दुनिया की भलाई चाहता था। पहले उसने अपने आपको इन पर ज़ाहिर

किया, और फिर इनको उसके अज़ीम नाम को सारी दुनिया पर ज़ाहिर करना था।”

फ़्लावियुस ने क़दरे नाराज़ होते हुए पूछा, “उन के ख़ुदा में ऐसी क्या बरतरी है? क्या वह भी दूसरे देवताओं का-सा देवता नहीं है?”

प्रिस्कस ने बड़े ज़ोरदार अंदाज़ में इसकी तरदीद की, “हरगिज़ नहीं। तुम्हारे देवताओं के बरअक्स ख़ुदा ज़िंदा, पुरएतमाद, मेहरबान और आदिल है। उसकी ज़ात ही मुहब्बत, वफ़ादारी, रास्ती और पाकीज़गी है।”

फ़्लावियुस ने जवाब दिया, “पाकीज़गी! जी बस शुक्रिया। मेरे लिए पाकीज़गी कुछ मानी नहीं रखती। इस वक़्त मुझे वह अजीबो-ग़रीब नबी याद आ रहे हैं, वही यहया। उन्होंने तो यहूदियों को बिलकुल हिलाकर रख दिया है। कहा जाता है कि वह उन्हें उस आनेवाले अल-मसीह के लिए तैयार कर रहे हैं। क्या तुम्हारे ख़याल में वह ख़तरनाक तो नहीं?”

सूबेदार ने एकदम जवाब नहीं दिया। लगता था कि वह मौज़ूँ जवाब तलाश कर रहा है। आख़िर वह बोला, “नहीं, यहया किसी लिहाज़ से भी सियासत में मुलव्वस नहीं।” वह हलका-सा मुसकराया और बात जारी रखी। “यक़ीन रखो कि रोमी हुकूमत और ख़ुद हेरोदेस बादशाह ने भी इसकी अच्छी तरह छानबीन कर ली है। मैं ख़ुद उनकी मुनादी सुनने जाता रहता हूँ। मैंने इनके बारे में बहुत ग़ौर किया है और इस नतीजे पर

पहुँचा हूँ कि वह एक ख़ास नबी हैं। अपने बारे में वह कहते हैं कि 'मैं अल-मसीह की आमद की राह तैयार कर रहा हूँ।'"

फ़्लावियुस तंज़िया लहजे में बोला, "हूँ! यहूदियों के ईमान के मुताबिक़ तो फिर हमारी शामत आनेवाली है। वह खुल्लम कहते हैं कि जब हमारा अल-मसीह आएगा तो हमारे तमाम दुश्मनों को मुल्क से निकाल फेंकेगा।" वह ख़ुश्क-सी हँसी हँसा। "दुश्मन तो हम हैं। हमें तैयारी करनी चाहिए। किसी भी दिन यहाँ से बोरिया-बिस्तर समेटना पड़ेगा।"

प्रिस्कस ने सर हिलाया, "अल-मसीह का मज़ाक़ मत उड़ाओ, दोस्त। अल्लाह ने उसे भेजने का वादा किया है और वह अपना वादा ज़रूर पूरा करेगा। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि उसका मक़सद दुनिया में शानदार यहूदी हुकूमत की बहाली नहीं होगा। यहूदियों का मसला बेहद गहरा है। वह ख़ुद भी उसे नहीं समझते। उनका सबसे बड़ा दुश्मन रोम नहीं बल्कि शैतान है। जो उनकी ज़िंदगियों को कंट्रोल करता है। बिलकुल ऐसे ही जैसे वह बाक़ी हम सबकी ज़िंदगियों को कंट्रोल कर रहा है।"

फ़्लावियुस ने तंज़ करते हुए जवाब दिया, "बेशक यहूदी फ़रिश्ते नहीं हैं। अपने मज़हब के बावुजूद बाक़ी हम सबकी तरह वह भी पापी हैं।"

सूबेदार ने ज़रा-सा सर हिलाया, "इसलिए मेरा ख़याल है कि मसीहे-मौऊद का मक़सद इन यहूदियों के ख़याल और सोच से कहीं बड़ा

होगा। मेरा अंदाज़ा तो यह है कि वह हमें ऐसी ज़िंदगी बसर करने की राह दिखाएगा जो ख़ुदा को पसंद हो।”

“इतने अज़ीम ख़ुदा को हम जैसी बेहक़ीक़त मख़लूक़ की क्या परवा हो सकती है! आज हम मौजूद हैं। कल मिट्टी के साथ मिट्टी हो जाएँगे। यक़ीनन अल्लाह को हमारे साथ क़रीबी रिफ़ाक़त रखने में कोई दिलचस्पी नहीं हो सकती। ऐसा सोचना भी हमाक़त है।”

प्रिस्कस ने ख़बरदार करते हुए कहा, “इतनी जल्दबाज़ी से काम न लो। पाक नविश्तों के पढ़ने से पता चलता है कि इनसान अल्लाह की शबीह पर पैदा किया गया है। इसका मक़सद यही था कि वह अपने ख़ालिक़ के साथ क़रीबी रिफ़ाक़त रखे। इस बात पर ग़ौर करो फ़्लावियुस, तो तुम समझोगे कि इनसान सचमुच ख़ास मख़लूक़ है। पहले दो इनसानों यानी आदम और हव्वा का यही हाल था। वह अपने ख़ालिक़ के साथ रिफ़ाक़त रखते थे। लेकिन जब उन्होंने उसके ख़िलाफ़ बग़ावत की और उसका हुक्म मानने के बजाए मनमानी की तब गुनाह उनके और ख़ुदा के दरमियान आ गया। नतीजा यह हुआ कि उनको उसकी हुज़ूरी से हाँककर निकाल दिया गया। लेकिन साथ साथ अल्लाह ने वादा किया कि ‘एक दिन मैं एक नजातदहिंदे को भेजूँगा जो गुनाह की ताक़त को पाश पाश कर देगा।’”

फ़्लावियुस बहुत मुतअस्सिर हुआ। “यह तो अनसुनी बातें हैं। काश कि मैं यक़ीन कर सकूँ कि मैं भी क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा की नज़र में इतना

क़ीमती हूँ।” फिर शक भरे लहजे में पूछने लगा, “तुमको यह ख़याल कैसे आया कि अल-मसीह हम ग़ैरयहूदियों पर भी मेहरबान होगा?”

प्रिस्कस ने जवाब दिया, “है तो यह मेरा अंदाज़ा ही मगर अल्लाह तो तमाम इनसानों का ख़ुदा है। उसने इसराईलियों को “मेरा पहलौठा” कहा है, इसलिए बाक़ी क़ौमें उसके दूसरे बच्चे हुए। उसने वादा किया कि इब्राहीम के वसीले सारी ज़मीन बरकत पाएगी।” सूबेदार ने विज़ाहत की, “यह बात अभी तक पूरी नहीं हुई लेकिन अल्लाह पर एतमाद किया जा सकता है। मुझे यक़ीन है कि वह अपनी बात ज़रूर पूरी करेगा।” थोड़े वक़्फ़े के बाद वह गरमजोशी से बोला, “हम ऐसे दौर में दाख़िल हो रहे हैं जिसमें दिल गरमा देनेवाले वाक़ियात पेश आएँगे।”

फ़्लावियुस ने मुहतात-सा जवाब दिया, “ख़ैर देखा जाएगा। मुझे तो इतनी जल्दी ख़ुशी मनाने की कोई बात नज़र नहीं आती। जब मैं चारों तरफ़ इतनी बेइनसाफ़ी और बेयक़ीनी देखता हूँ तो मेरी समझ में कुछ नहीं आता। यह अल-मसीह कोई ख़ास ही हस्ती होगा जो दुनिया को उम्मीद दिला सके।” फिर ज़ोर देते हुए बोला, “अगर अपने इर्दगिर्द की बातें सुनने की ज़हमत करो तो समझ जाओगे कि लोग मुस्तक़बिल के बारे में कितने फ़िकरमंद हैं। उन्हें सिवाए-तारीकी और ना-उम्मीदी के कुछ नज़र नहीं आता। किसी को पता नहीं कि कल को ग़ुलाम बनना पड़ेगा या किसी बेइनसाफ़ी और ज़ुल्म का शिकार होना या मैदाने-जंग में जान देना। इसके अलावा जगह जगह बेशुमार लोग इस नतीजे पर

पहुँच रहे हैं कि हमारे देवता बिलकुल बेकार हैं। वह अपने ख़ौफ़ और फ़िकर में ख़ुद को बेसहारा और अकेला महसूस करते हैं।"

"हर नसल के लोग यही सोच रहे हैं कि आख़िर इस दुनिया में मेरा क्या मक़सद है? मैं कहाँ जा रहा हूँ? मेरा अंजाम क्या होगा?"

फ़्लावियुस ने सूबेदार के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, "दोस्त अगर अल-मसीह हमारे इन बेक़रार सवालों का जवाब दे सके तो मैं बहुत ख़ुश हूँगा।" फिर ठंडी साँस लेते हुए कहा, "अब मुझे अपने फ़रायज़ की अदायगी के लिए रवाना हो जाना चाहिए।"

ऐन उसी वक़्त एक सिपाही तेज़ी से उनके पास आकर सूबेदार से कहने लगा, "जनाब! मरीज़ को सख़्त दर्द हो रहा है। क्या किया जाए?"

फ़्लावियुस ने सवालिया नज़रों से सूबेदार की तरफ़ देखा। सूबेदार ने विज़ाहत करते हुए कहा, "मेरा एक नौजवान नौकर है। वह सख़्त बीमार है। मेरे जैसा सिपाही भी उसकी तकलीफ़ देखने का हौसला नहीं रखता। कल रात काफ़ी देर तक मैं उसके पास रहा। काश मौत ही उस पर रहम खाए और इस तकलीफ़ से नजात दिलाए।"

उसी दम घोड़े की टाप सुनाई दी। फ़्लावियुस के सिपाही उसका घोड़ा ला रहे थे। दोनों दोस्तों ने अलविदा कहा और फ़्लावियुस घोड़े पर सवार हो गया। उसने तसल्ली दिलाने वाले लहजे में कहा, "प्रिस्कस! तुम्हें ज़िंदगी से मुतमइन होना चाहिए। तुम सूबेदार हो और यह क़िला

तुम्हारी कमान में है। तुमने नाम पैदा किया है और एक अच्छे इनसान हो, यहाँ तक कि यहूदी भी तुम्हारी इज़्ज़त करते हैं। हर एक को ज़िंदगी में इतनी नेमतें नसीब नहीं होतीं।”

सूबेदार ने ख़ुश दिली से जवाब दिया, “हाँ! मैं इन सब बातों का शुक्रगुज़ार हूँ। लेकिन न तो पेशे में सरबुलंदी और न इज़्ज़तो-तौक़ीर मुझे मुतमइन कर सकते हैं। मेरे दिल में एक ख़ला है जो सिर्फ़ ख़ुदा ही पुर कर सकता है।”

फ़्लावियुस ने सलाम के लिए हाथ उठाया, “देवता तुम पर मेहरबान रहें” और घोड़ा भगाते हुए सूबेदार की नज़रों से ओझल हो गया।

प्रिस्कस ने ठंडी साँस भरी। उसे बीमार नौजवान याद आ गया। तन-तनहा ज़िंदगी की मुश्किलात में से गुज़रना कितना कठिन होता है। कितने ही लोगों को वादा किए हुए अल-मसीह जैसे मददगार और हमदर्द की ज़रूरत है! उसके यूनानी मुंशी ने कुछ ही दिन पहले अपनी मुसीबत का बयान किया था। उसकी छोटी भाँजी पर बदरूह ने क़ब्ज़ा कर रखा था। उसने बड़े दुखी दिल से बताया था कि “मेरी बहन आयरस दूर बहीराए-रोम के किनारे सूर शहर में रहती है। जब भी मैं उधर को रुख़ करता हूँ तो बहन के ख़याल से दिल भर आता है। जब वह अपनी बेटी की हालत देखती है तो उसका कलेजा टुकड़े टुकड़े हो जाता है।”

काश ऐसे अफ़राद की मदद के लिए कोई आसमानी मददगार आ जाए जिसको पूरा पूरा एहसास हो कि दर्द और दुख क्या होता है। अब

उसके ख़यालात फिर अल-मसीह की तरफ़ चले गए, और उसे कुछ तसल्ली हुई कि उसके आने से सबके दिन फिर जाएँगे।

आसमानी मददगार की ज़रूरत

दाऊद के ग़ायब हो जाने के दो हफ़्ते बाद इफ़राईम और रूत वापस यरूशलम आ गए। बेशक उन्हें उम्मीद थी कि दाऊद ज़िंदा है मगर फिर भी बेयक़ीनी से उनके दिलों पर आरे चल रहे थे। मौसम भी ख़ासा ख़राब हो गया था। सर्द हवाएँ घर के चारों तरफ़ चीख़ती हुई मालूम होती थीं। मूसलाधार बारिशों ने मौसम और भी ख़राब कर दिया था। उनके दिलो-दिमाग़ उदासियों की गहराइयों में उतर चुके थे। ख़ुशक़िसमती से आज सूरज निकला था। अब क़दरे सुकून का साँस लेना नसीब हुआ था। लेकिन सबसे ज़्यादा तसल्लीबख़्श ख़याल यह था कि रब हमारे साथ है।

रूत अपने बाप के लिए बड़े लज़ीज़ अंजीर और अंगूरों के रस का प्याला लेकर आई थी। वह बोझल दिल से सोचने लगी, “कितना प्यारा है मेरा बाप! अल्लाह करे उसकी उम्मीद बर आए।” फिर अपने बाप के सफ़ेद बालों में उँगलियाँ फेरते हुए उसे कुछ खाने-पीने पर आमादा

करने लगी। “इतनी फ़िकर न किया करें। ख़ुदा यक़ीनन मेरे भाई की हिफ़ाज़त कर रहा है। मैं नहीं चाहती कि आपको भी खो दूँ। प्यारे अब्बू जी अपना ख़याल रखा करें। आज तो आपने खाने को हाथ भी नहीं लगाया।”

बाप के रुख़सारों पर आँसू बहने लगे। वह बड़े जज़बाती अंदाज़ में बोला, “मैं अब भी सोचता हूँ कि इस लड़के की ज़िंदगी से रब का कोई बड़ा मक़सद है। और वह उसे ज़रूर पूरा करेगा। शायद यह मुसीबत उसकी हटधर्मी को दूर कर दे। वह अल्लाह की मरज़ी के बजाए हमेशा मनमानी करता रहा है। इस तजरिबे से शायद वह ख़ुदा की राह पर चलने को तैयार हो जाए।”

“ठीक है अब्बा जान! ज़रूर ऐसा ही होगा। थोड़ा-बहुत खा-पी लीजिए। हम सबको आपकी ज़रूरत है। जब दाऊद वापस आएगा और आपको मौजूद नहीं पाएगा तो क्या कहेगा? उसका तो दिल टूट जाएगा। वह ऊपर से तो बड़ा सख़्ततबीयत लगता है मगर अंदर से बच्चों की तरह नरमदिल है।”

रूत कान लगाकर कुछ सुनने लगी। उसके होंटों पर मुसकराहट फैल गई। “अब्बा जान! लगता है कि बैत-अनियाहवाले हमारे दोस्त वापस आ गए हैं। कितना अच्छा हो कि वह चंद दिन हमारे पास ठहरें ताकि हमारा दिल बहल जाए।”

"हाँ। बिलकुल दुरुस्त। लाज़र और उसकी बहनें मरियम और मर्था दूसरों का कितना ख़याल रखते हैं। काश इन जैसे और भी बहुत-से लोग होते।" उसने प्यार भरी नज़रों से रूत को देखा। "बेटी, अगर तुम बैत-अनियाह जाकर चंद दिन इनके साथ गुज़ारो तो तुम्हारे लिए बहुत अच्छा होगा।"

उनके तीनों मेहमान अंदर आए। इफ़राईम सीधा होकर बैठ गया। उसने ख़ुश ख़ुश नज़र आने की कोशिश की। "बहुत ख़ूब! आप लोग वापस आ पहुँचे। बैठिए तशरीफ़ रखिए। बैतुल-मुक़द्दस में तो बहुत रौनक़ होगी।"

लाज़र ने जवाब दिया, "मर्दों के सहन में तो बहुत भीड़ थी। मगर मर्था का ख़याल है कि औरतों के सहन में ज़्यादा रौनक़ थी।"

इफ़राईम सोचने लगा कि तीनों में कितना फ़रक़ है। लाज़र नेक-तबा और सीधा-सादा, क़ाबिले-एतमाद इनसान है जबकि उसकी बहन मर्था हर बात का ध्यान रखनेवाली अमली ख़ातून है। और वह न हो तो लाज़र और मरियम का क्या बनता! घर का सारा इंतज़ाम तो वही चलाती है। मरियम तो ख़ाबों में खोई हुई गहरी सोचों में डूबी रहती है। मगर अल्लाह से बेहद प्यार करती है। बड़ी क़ाबिले-क़दर ख़ातून है। फिर ज़रा बुलंद आवाज़ से बोला, "मैं रूत से कह रहा था कि आप लोगों के साथ चंद दिनों के लिए बैत-अनियाह चली जाए। कुछ तबदीली हो जाएगी।"

मर्था एकदम कहने लगी, "ज़रूर चलो, रूत, ज़रूर। हम तुम्हें बड़े आराम से रखेंगे।"

और मरियम ने गिरह लगाई, "हम बहुत ख़ुश होंगे रूत!" लेकिन इस हस्सास ख़ातून को फ़ौरन इफ़राईम का ख़याल आ गया। वह बड़ी हमदर्दी से पहले ग़मगीन बाप को और फिर रूत को देखने लगी। "लेकिन रूत तुम अभी तो अपने बाप को अकेला नहीं छोड़ सकती ना?"

रूत ने जल्दी से जवाब दिया, "नहीं। हरगिज़ नहीं। किसी और वक़्त ज़रूर आऊँगी। तुम्हारे प्यारे घर में रहने का कितना मज़ा आता है।"

लाज़र ने भी इफ़राईम को यक़ीन दिलाया कि वह जब चाहिए हमारे हाँ आ सकती। इफ़राईम ने देखा कि लाज़र उदास-सा है। पूछने लगा, "बेटा! क्या सोच रहे हो?"

"मुहतरम, मुझे मज़हब की फ़िकर है। बाज़ार में लोगों की बातें सुनें तो सब मज़हबी रंग में रँगी होती हैं। यों महसूस होता है कि हमारी क़ौम बिलकुल ठीक-ठाक है। लेकिन इनकी ज़िंदगियाँ देखें तो और ही ढंग नज़र आते हैं, यहाँ तक कि इमामों का काम भी ऊपर ऊपर से बिलकुल ठीक लगता है लेकिन उनकी ज़िंदगियों को नज़दीक से देखें तो वैसी नहीं हैं जैसी होनी चाहिएँ। जनाब! कुछ समझ में नहीं आता कि हम कहाँ जा रहे हैं। कौन हमारे लोगों को ख़ुदा का एहसास दिला सकता है। हम समझते हैं कि ग़ैरयहूदी ही ख़राब हैं लेकिन यह नहीं देखते कि हमारी अपनी क़ौम सरासर बिगड़ चुकी है।"

इफ़राईम ने इस बात से इत्तफ़ाक़ किया, “हाँ। बेशक हमारी क़ौम बिगड़ी हुई और गुनाह में धँसी हुई है। मगर इनफ़िरादी तौर पर तो इनसान अल्लाह की क़ुरबत में रह सकता और इन बातों से बच सकता है।”

मरियम बड़े ग़ौर से इफ़राईम को देखने लगी, “मेरे दिल में ख़ुदा की बड़ी आरज़ू है। मैं उसे गहरे तौर पर जानना चाहती हूँ। मैं घंटों उसके बारे में ग़ौरो-ख़ौज़ करती रहती, दुआएँ माँगती और रोज़े रखती हूँ ...” उसने गहरी साँस ली, “मगर सब बेसूद। मैं उसे जान नहीं पाती। उसकी अज़मत और उसकी पाकीज़गी मेरी समझ से बाहर है।”

इफ़राईम तसल्ली देते हुए बोला, “मरियम, यह न भूलो कि मूसा नबी ने अपनी क़ौम को बताया था कि ‘मेरे बाद एक नबी यानी अल-मसीह बरपा होगा।’ वह अल्लाह को पूरे तौर से जानने में हमारी राहनुमाई करेगा।” बूढ़ा आदमी लाज़र की तरफ़ मुतवज्जिह हुआ, “बेटा, इस अफ़रा-तफ़री के ज़माने में वही हमारी उम्मीद है।”

मर्था कहने लगी, “सुनिए, आज इत्तफ़ाक़ से गली में मुझे मग्दल शहर की तबीता मिल गई थी। कह रही थी कि उसकी भतीजी मग्दलीनी की हालत बद से बदतर होती जा रही है। बदरूहों ने उसे बिलकुल पागल कर दिया है। वह उनकी ग़ुलाम बन के रह गई है। उसके साथ सारा ख़ानदान दुख उठा रहा है।”

इफ़राईम कहने लगा, “मैं जब कफ़र्नहूम में था तो कभी कभी इस ख़ानदान से मिलने जाया करता था। तुम तो जानते हो कि मग्दल

कफ़र्नहूम के क़रीब ही तो है। मैं हमेशा सोचता था कि कितनी अच्छी लड़की है। लेकिन वह कुछ ज़्यादा ही हस्सासतबीयत है।"

मर्था अपने अमली अंदाज़ में बोली, "हमें सचमुच एक ऐसे मददगार की ज़रूरत है जिसे इनसानों की बेबसी और बेचारगी का पूरा पूरा अंदाज़ा हो और जो तारीकी की इन क़ुव्वतों से बरतर हो।"

इतने में रूबिन अंदर दाख़िल हुआ। वह सबसे बूढ़ा और क़ाबिले-एतमाद नौकर था। अब तो वह घर का एक फ़रद समझा जाता था। बड़े अदब से झुककर बोला, "आक़ा! आपके क़ाबिले-क़दर दोस्त का बेटा मरक़ुस एक और नौजवान के साथ आया है। क्या आप इनसे मिलना पसंद फ़रमाएँगे?"

इफ़राईम ने शौक़ से हाँ में सर हिलाया और लाज़र से मुख़ातिब हुआ, "मुझे यक़ीन है कि तुम्हें भी यहया नबी के बारे में सुनने में दिलचस्पी होगी। मरक़ुस इस नबी की नई तहरीक के बारे में एक एक ख़बर रखता है। इसके साथ अकसर बातचीत होती रहती है। अब भी कोई ताज़ा ख़बर लाया होगा।"

इफ़राईम ने बड़ी मुहब्बत से नौजवानों को ख़ुशआमदीद कहा। वह उनकी तेज़तरारी और भरपूर जवानी को बड़े रश्क से देख रहा था। दोनों सच्चे और ईमानदार इसराईली थे जो दिल से सच्चाई की तलाश में थे। रूत मरक़ुस की वालिदा का हाल-चाल पूछने में मसरूफ़ थी। वह

उस ख़ातून को बहुत चाहती थी। इफ़राईम कहने लगा, “मेहमानों की ख़ातिरतवाज़ो के लिए कुछ ले आओ।”

मर्था उछलकर खड़ी हो गई। “मैं भी आपका हाथ बटाती हूँ।”

रूत मर्था के कंधे पर बड़े प्यार से अपना हाथ रखते हुए बोली, “तुम तो कभी आराम से बैठ ही नहीं सकती। ठीक है ना?” फिर मुसकराते हुए उसका हाथ पकड़ा और कहा, “चलो, आओ। चलें।”

बावरचीख़ाने में पहुँचकर रूत ने नौकरों को खाने-पीने की चीज़ें लाने का हुक्म दिया लेकिन मर्था ने किसी और को इनको तैयार करने में हाथ न लगाने दिया। उसने सारी चीज़ें ऐसे सलीक़े से सजा दीं कि देखते ही राल टपकने लगे।

रूत ने तारीफ़ की, “बहुत ख़ूब! और हाँ यह तो बताओ कि तुम्हारा वह वफ़ादार गलीली नौकर अब भी शिमाली इलाक़े में अपने घर और गलील की झील को याद करता है? क्या नाम है उसका?”

“ओबेद। हाँ बहुत याद करता है। आए दिन अपने भतीजे शमाऊम बिन यूनुस और उसकी बीवी नओमी को मिलने चल पड़ता है। रूत तुम भी तो उन्हें जानती हो। एक बार जब मैं कफ़र्नहूम में तुम्हारे पास आई हुई थी तो उनसे मुलाक़ात हुई थी। शमाऊन बहुत जसीम और बातूनी था। मगर नओमी हलीम और ख़ामोश-तबा थी।”

रूत हँसते हुए कहने लगी, “हम दोनों का ख़याल था कि यह ख़ामोश-तबा नओमी इस मछेरे शमाऊन के लिए बड़ी अच्छी बीवी साबित होगी। वह बैत-सैदा में रहते हैं ना?”

“हाँ। अभी तक तो वहीं हैं। लेकिन सोच रहे हैं कि नओमी की माँ बहुत बूढ़ी है, इसलिए उसके पास कफ़र्नहूम चले जाएँ। लो, यह काम तो हो गया। आओ चलें।”

मर्था ने देखा कि बूढ़ा रूबिन हमारे इर्दगिर्द मँडला रहा है। उसने रूत को इशारा किया, “वह तुमसे कोई बात करना चाहता है। तुम सुन लो। मैं यह चीज़ें मेहमानों के पास ले चलती हूँ।”

रूत ने मुलायम लहजे में रूबिन से पूछा, “क्या बात है? क्यों इतने उदास हो?”

बूढ़ा नौकर बहुत बेक़रार दिखाई दे रहा था। आख़िर हाथ मलते हुए कहने लगा, “मैं मालिक को नहीं बताना चाहता था। उनको बहुत फ़िकर लग जाएगी क्योंकि इस बात का ताल्लुक़ आपके दोस्त ख़ूज़ा और उसकी बीवी से है।”

“ख़ूज़ा, बादशाह का नाज़िम? उसकी बीवी युअन्ना की हालत ज़्यादा ख़राब तो नहीं हो गई?”

रूबिन ने इसबात में सर हिलाया, “कल मुझे ख़ूज़ा का वफ़ादार नौकर मलाकी मिला। कह रहा था कि ख़ूज़ा अपनी बीवी की बीमारी से बहुत परेशान है। उसकी प्यारी बीवी युअन्ना बिलकुल हड्डियों का पिंजर

बन गई है। ख़ूज़ा से उसकी हालत देखी नहीं जाती। मलाकी कह रहा था कि मेरा मालिक बिलकुल बदल गया है। उसका सारा फ़ख़्र जाता रहा है। अब तो उसे दौलत और वक़ार की भी कुछ परवा नहीं। वह युअन्ना की सेहत के लिए सब कुछ निसार करने को तैयार है।" रूबिन ने उँगली उठाई, "अब तो फ़िकर है कि ख़ूज़ा पागल न हो जाए। बहुत कमज़ोर हो गया है। किसी से बातचीत नहीं करता। अपने आप में गुम रहता है। पूछता है कि आख़िर इस ज़िंदगी का क्या मक़सद है। क्या हम इसी लिए पैदा हुए कि दुख सहते रहें और दुख सहते सहते मर जाएँ?"

अपने दोस्तों की राम कहानी सुनकर रूत का दिल भर आया। वह आह भरकर कहने लगी, "बेचारा ख़ूज़ा! बेचारी युअन्ना! हाँ रूबिन, अच्छा किया मुझे बता दिया। लेकिन कौन इन दुखी इनसानों की मदद कर सकता है!"

बैठक में वापस आकर रूत को तसल्ली हुई कि मेहमानों की वजह से उसके बाप का ध्यान अपने ग़म से हट गया था। रब की बड़ी मेहरबानी थी कि उसने इतने बहुत-से दोस्त दे रखे थे जो अकसर मिलने आते रहते थे।

इफ़राईम ने पूछा, "उस नबी की कोई ख़बर?" मरक़ुस बड़ी चाहत से आगे को झुका और कहने लगा, "यह मेरा दोस्त यूहन्ना बिन ज़बदी है। यहया नबी का शागिर्द। गलील में बैत-सैदा में रहता है। कभी कभी इमामे-आज़म के घर में अपने एक दोस्त को मिलने भी चला जाता है।

उससे मेरी भी जान-पहचान हो गई है। मुहतरम, इसमें कोई शक नहीं कि यहया नबी मौऊदा अल-मसीह के पेशरौ हैं जैसा कि यसायाह नबी की किताब में लिखा है, "रेगिस्तान में रब की राह तैयार करो! बयाबान में हमारे ख़ुदा का रास्ता सीधा बनाओ,"[1] और यह भी कि "तब अल्लाह का जलाल ज़ाहिर हो जाएगा, और तमाम इनसान मिलकर उसे देखेंगे। यह रब के अपने मुँह का फ़रमान है।"[2]

यूहन्ना बिन ज़बदी की आँखें आग की तरह रौशन थीं। "यही जवाब अपने पूछनेवालों को नबी ने दिया था। उन्होंने यसायाह की यही आयत सुनाई थी। हम जो उनके शागिर्द हैं सबके सब नौजवान हैं। बेशक हम ख़ुदावंद की ख़ातिर सब कुछ क़ुरबान करने को तैयार हैं, लेकिन हर ऐरे-ग़ैरे के पीछे नहीं चल पड़ते। हम कई हफ़्तों से उनका जायज़ा ले रहे हैं। उनके साथ साथ रहते हैं। उनमें सच्चे नबी की तमाम निशानियाँ मौजूद हैं। वह अल्लाह के हुक्म पर चलते हैं, और ख़ुदा भी उनके वसीले से काम और कलाम करते हैं। इसी लिए तो लोगों के दिलों पर असर होता है। वह भी महसूस करते हैं कि नबी को बड़ी आरज़ू है कि जिस की राह तैयार कर रहा हूँ, उससे मुलाक़ात का शरफ़ भी हासिल हो। हम उनके साथ हर रोज़ उस मुबारक हस्ती का इंतज़ार करते रहते हैं। एक अजीब दौर शुरू होनेवाला है।" उसके लबो-लहजे में निराला ही जोश था।

1 यसायाह 40:3

2 यसायाह 40:5

उसी वक़्त नीकुदेमुस आ पहुँचा। उसे देखकर सब बहुत ख़ुश हुए। अब तो वह बहुत दाना और ख़ासी उम्र का ज़िम्मेदार शख़्स था। उसे बैत-अनियाह के तीनों अफ़राद से मिलकर ख़ासी ख़ुशी हुई क्योंकि वह उसके भी दोस्त थे। रूत ने आगे बढ़कर उसका इस्तिक़बाल किया और आराम से एक कुरसी पर बिठाया। "चचा नीकुदेमुस! आपकी दोस्ती तो अब्बा जान के ज़ख़मी दिल पर मरहम का फाहा साबित होती है।"

नीकुदेमुस अब यहूदियों की आला मजलिस सन्हद्रीन, यानी सदरे-अदालत का रुकन भी बन चुका था। यह मजलिस यरूशलम में यहूदियों की सबसे बड़ी अदालत थी। वह फ़रीसी[1] था। सब लोग उसकी ईमानदारी और दियानतदारी के बाइस उसकी इज़्ज़त करते थे। हक़ीक़त है कि वह अल्लाह के एक एक हुक्म को पूरे दिल से मानने की कोशिश करता था। वह दिल की गहराई से इफ़राईम से मुख़ातिब हुआ, "दोस्त, ख़ुदा का हाथ तुम्हारे घराने पर भारी है।"

इफ़राईम ने बड़े दुखी अंदाज़ में जवाब दिया, "वही देता है और वही ले लेता है।"

फ़रीसी ने बात मुकम्मल कर दी, "उसी का नाम मुबारक हो।"

दुखी बाप के होंटों से एक भारी आह निकली। लेकिन उसने इब्राहीम के सच्चे फ़रज़ंद की तरह कहा, "आमीन। रब की मरज़ी पूरी हो।"

---

1 यहूदियों का रासिख़ुल-एतक़ाद फ़िरक़ा

इफ़राईम ने नीकुदेमुस से पूछा, "मेरे दोस्त, क्या बहुत मसरूफ़ रहे हो?"

अब नीकुदेमुस ने आह भरी, "मैं रब के हिस्से के हिसाब-किताब में उलझा हुआ हूँ कि जितना इस महीने में हासिल हुआ है, इसका दसवाँ हिस्सा कितना बनता है। बड़ा मुश्किल काम है! पैसों का दसवाँ हिस्सा निकालना तो आसान है मगर पौदीने में और बाग़ की दूसरी पैदावार पर दहयकी निकालना ... हाय ... बहुत मुश्किल हिसाब-किताब होता है।"

इफ़राईम ने बात को समझते हुए सर हिलाया, "दोस्त! तुम्हें ऐसी बात बताते हैं जो शरीअत के अहकाम और बोझ से तुम्हारा ध्यान हटा देगी। इनसे मिलो। यह हैं यहया नबी के शागिर्द। यूहन्ना बिन ज़बदी और इसका दोस्त। यह तुम्हें इस नबी के बारे में अपने ज़ाती तजरिबे से बहुत कुछ बता सकते हैं।"

फ़रीसी ने यूहन्ना बिन ज़बदी को पिदराना शफ़क़त से देखा, "मैंने सुना कि वह तौबा की मुनादी करते हैं। बहुत अच्छी बात है। तौबा का मतलब है वापस मुड़ना। वह लोगों को बताते रहते हैं कि उन्हें गुनाह से मुड़ने और अल्लाह की तरफ़ रुजू करने की ज़रूरत है।"

यूहन्ना बिन ज़बदी ने गरमजोशी से जवाब दिया, "जी हाँ। और जनाब, लोग गुरोह दर गुरोह दिल की गहराइयों से तौबा करते हैं। और इसमें दिखावेवाली बात भी नहीं होती क्योंकि यहया उनको क़ुद्दूस ख़ुदा

का सामना करने की तलक़ीन करते हैं। वह उन्हें पानी से बपतिस्मा देते हैं मगर साथ साथ यह बात भी साफ़ कह देते हैं कि मैं सिर्फ़ एक एलची, एक पेशरौ हूँ और बस। अल-मसीह के लिए राह तैयार कर रहा हूँ। कहते हैं कि जब अल-मसीह आएगा तो वह आग से बपतिस्मा देगा।"

फ़रीसी ने ऐसे सर हिलाया जैसे कुछ समझ में नहीं आ रहा, "यह पहला मौक़ा है कि इब्राहीम के बेटों और बेटियों को भी बपतिस्मा दिया जा रहा है। यह तो फ़ितरी बात है कि गुनाह के दाग़ों से भरे हुए ग़ैरयहूदी जब हमारे मज़हब में शामिल होते हैं तो बपतिस्मा लें क्योंकि बपतिस्मा है ही गुनाहगारों के लिए। लेकिन कोई यहूदी कभी यह नहीं सोचता होगा कि मैं भी ग़ैरयहूदियों की तरह ख़ुदा की हुज़ूरी से ख़ारिज हूँ। वह तो अपने आपको इब्राहीम का फ़रज़ंद और जन्नत का वारिस समझता है।" नीकुदेमुस ने पूरे एतमाद के साथ कहा, "तौबा और अल्लाह की तलाश की यह बेमिसाल क़ौमी तहरीक यक़ीनन अल्लाह के रूह से है।" ज़रा झिझक के बाद उस ने बात जारी रखी, "तो आप कह रहे थे कि अल-मसीह आग से बपतिस्मा देगा। इसका मतलब क्या हुआ?" फ़रीसी कुछ सोचने के बाद ख़ुदकलामी के अंदाज़ में बोलने लगा, "मेरा ख़याल है कि अल-मसीह की आग में नूरो-हिदायत होगी। वह इनसान को सच्चाई की राह दिखाकर उसे अल्लाह के पास पहुँचाएगी। लेकिन मेरी बात याद रखें। उसकी आग पाक भी करेगी। वह सारे भूसे को भस्म

कर देगी यानी उस सारी बदी को जो हमें ख़ुदाए-पाक और क़ुद्दूस से दूर रखे हुए है।”

यूहन्ना बिन ज़बदी ने बड़े जोश से सर हिलाया, “यहया भी हर एक से बड़ी सफ़ाई से यही कहते हैं।”

नीकुदेमुस ने ज़रा त्योरी चढ़ाते हुए कहा, “मैं कई बातों में उससे इत्तफ़ाक़ करता हूँ लेकिन मुझे वह बहुत सख़्त आदमी लगता है। जब चंद मुअज़्ज़ज़ सदूक़ी और फ़रीसी बपतिस्मा लेने उसके पास गए तो वह उन पर बरस ही पड़ा। उसने उन्हें अफ़ई के बच्चे तक कह दिया कि ‘यह मत सोचो कि इब्राहीम की औलाद होने की वजह से मुफ़्त ही जन्नत में चले जाओगे। बल्कि तुम्हें भी बदी छोड़कर ख़ुदा की तरफ़ फिरने की ज़रूरत है।’ इस तरह तो उसने इन शरीफ़ आदमियों को ख़ाहमख़ाह अपना दुश्मन बना लिया।”

यूहन्ना बिन ज़बदी तसल्ली दिलाने वाले लहजे में बोला, “मुअज़्ज़ज़ उस्ताद! मेरी बात का यक़ीन करिए, मैं यहया नबी को अच्छी तरह जानता हूँ। उनका दिल बेहद नरम है। वह झिड़कते हैं तो मुहब्बत के बाइस ताकि गुनाहगारों को नींद से जगाएँ। वह अपनी गई-गुज़री हालत को महसूस करें और बचने की तदबीर कर लें। मैं सच्चे दिल से फ़रीसियों को दाद देता हूँ कि वह पूरे ख़ुलूस से अल्लाह के अहकाम पर अमल करने की कोशिश करते हैं। लेकिन देखें कि इन अहकाम का क्या हश्र हो गया है! इनसानों ने ऐसे सैंकड़ों इज़ाफ़ी अहकाम बना लिए हैं।

वह एक भारी बोझ बन गए हैं। आलीजाह! आप भी तो इसी बात पर अफ़सोस कर रहे थे। ख़ुदा ने सीधा-सादा हुक्म दिया था कि हम अपने सारे माल का दसवाँ हिस्सा दिया करें। लेकिन इनसानों ने इसमें भी बाल की खाल उतारनी शुरू कर दी और सारे अहकाम को भूल-भुलैयाँ बनाके रख दिया। आम लोगों ने इन चक्करों में पड़ना ही छोड़ दिया है। फिर भी बाज़ लोगों की ग़लतफ़हमी है कि हम इन तमाम अहकाम पर अमल कर सकते हैं। कितने आलिम और फ़रीसी हैं जो फ़ख़्र से दावा करते हैं कि हम छः सौ से भी ज़ायद अहकाम पर अमल करते हैं। यहया महसूस करते हैं कि वह इस ख़याल से अपने आपको धोका दे रहे हैं कि हमारे नेक काम हमें अल्लाह की नज़र में रास्तबाज़ ठहराते हैं। जनाब! इस साफ़गोई पर मुझे माफ़ कीजिए। मैं जानता हूँ कि नबी लोगों से बेपनाह मुहब्बत रखते हैं। वह महसूस करते हैं कि ख़ासकर मज़हब-परस्त लोग समझते हैं कि हम बेगुनाह हैं। लेकिन किस को हक़ है कि ऐसा कहे?”

नीकुदेमुस ख़ामोशी से यूहन्ना की बातों पर ग़ौर करने लगा। फ़रीसी तरीक़ उसे बहुत पुर-कशिश लगता था, क्योंकि उसमें बड़े बड़े लोग शामिल थे। लेकिन यह भी सच था कि रफ़्ता रफ़्ता बहुत-से फ़रीसी घमंड में मुब्तला हो गए हैं। वह अपने बारे में बड़ी अच्छी राय रखते और समझते हैं कि हम ख़ुदा के हुज़ूर में खड़े रहने के लायक़ हैं। वह ऐसे लोगों को हक़ीर समझते हैं जो उनकी बराबरी नहीं कर सकते।

नीकुदेमुस ने ठंडी साँस भरी। अल्लाह और इनसान के लिए बहुतों की मुहब्बत कितनी ठंडी पड़ गई है! हाँ वह ख़ुद भी मज़हब में नई चिंगारियों और नई रौशनी का आरज़ूमंद था!

इफ़राईम ने तमाम हाज़िरीन की तरजुमानी कर दी, “अल्लाह करे कि अल-मसीह जल्द आकर हमारे मज़हब में दुबारा रूह फूँक दे। क्योंकि इसमें अब जान नज़र नहीं आती बल्कि बोझ बन के ही रह गया है।” साथ ही उसने इरादा कर लिया कि दरियाए-यरदन पर जाकर यहया से ख़ुद मिले। उसने सोचा, “है तो दूर और मैं बूढ़ा भी हूँ मगर किसी न किसी तरह पहुँच ही जाऊँगा।”

दरिया पर अजीब वाक़िया

कुछ ऐसी बात हो गई कि इफ़राईम को अपना मनसूबा बदलना पड़ा और वह हज़रत यहया के पास जल्दी न जा सका। अलबत्ता रूत अपने अज़ीज़ों मूसा बिन अज़रा और उसकी बीवी अबीजेल के हमराह चली गई। उनका बेटा इलियज़र जो रूत से चंद बरस बड़ा था, वह भी उनके साथ था। मूसा और अबीजेल रूत को अपनी बेटी समझते थे। अबीजेल बड़ी सादा-तबा औरत थी। वह सादगी में बातें करती तो रूत अकसर खिलखिला उठती थी। हाँ। फिर से हँसना कितनी अच्छी बात है। बेशक दाऊद का ख़याल साय की तरह उसके साथ रहता और दिल में काँटे की तरह खटकता रहता था, लेकिन उदासी का बेहतरीन इलाज यह हँसी ही थी। रूत इस बात पर भी हैरान थी कि अब इलियज़र को मेरा बहुत ख़याल रहता है। जब कभी वह ग़ैरमुतवक़्क़े तौर पर उसकी तरफ़ देखती तो उसकी आँखों में मुहब्बत झलकती नज़र आती। उसके दिल की धड़कन तेज़ हो जाती और वह सोचने लगती, “मैं इसे इतने अरसे

से जानती हूँ। इसकी इज़्ज़त करती हूँ। शायद यह इज़्ज़त अब मुहब्बत का रूप धार रही है।”

इलियज़र को सबके आराम का ख़याल था। रूत जानती थी कि वह कट्टर यहूदी है। तमाम हुक्मों पर सख़्ती से कारबंद है। मगर फिर भी कोई बात थी जिससे इस नौजवान ख़ातून को बेचैनी हो रही थी। क्या बात हो सकती है?

आख़िरकार वह दरियाए-यरदन पर पहुँच गए। कुछ देर ही हो गई थी। सफ़र में तवक़्क़ो से ज़्यादा वक़्त लग गया था। दरिया की तरफ़ से हुजूम का हलका हलका शोर उनके कानों तक पहुँच रहा था। नज़दीक आए तो चंद लोगों को एक दूसरे से गले मिलते देखा। उनके चेहरे ख़ुशी से तमतमा रहे थे। उन्होंने ज़रूर एक दूसरे से सुलह-सफ़ाई कर ली होगी। शायद वह रिश्तेदार थे या पड़ोसी जिन की सालों से एक दूसरे से बोल-चाल बंद थी। रूत को इस ख़याल से बड़ी ख़ुशी हुई कि तौबा का असर कितना गहरा होता है।

अब हज़रत यहया क़तार के आख़िरी आदमी को बपतिस्मा दे रहे थे। मूसा बिन अज़रा, उसकी बीवी और रूत भीड़ में से जल्दी जल्दी रास्ता बनाते पानी की तरफ़ बढ़े। मियाँ-बीवी और रूत एक दम बपतिस्मा लेने के लिए तैयार हुए। जब यहया ने रूत को पानी में ग़ोता दिया तो नई उम्मीदों से उसका सारा बदन काँपने लगा। वह पानी से निकली तो उसका दिल ख़ुशी से मामूर था। रूत ने बड़ी इनकिसारी से मान लिया

था कि 'मैं गुनाहगार हूँ और मुझे भी पाको-साफ़ हो जाने की हाजत है।' बपतिस्मा लेकर उसने इस बात का इज़हार किया था कि 'मैं बदी को छोड़कर अल्लाह की तरफ़ फिरना चाहती हूँ।' उसने दिल ही दिल में दुआ माँगी, "ऐ ख़ुदा! मुझे क़ुव्वत दे कि तेरी मरज़ी के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ार सकूँ। मैं हाज़िर हूँ। मेरे दिल को अल-मसीह की आमद के लिए तैयार कर।"

रूत ने देखा कि इलियज़र पीछे रह गया है। उसके चेहरे पर नुकताचीनी झलक रही थी। लेकिन इन बातों पर ग़ौर करने का वक़्त नहीं था। अभी वह यरदन से बाहर निकले ही थे कि उनकी निगाहें एक नौजवान पर जमकर रह गईं। उसकी उम्र तीस बरस के लगभग होगी। वह बड़े पुरएतमाद अंदाज़ से क़दम उठाता यरदन में खड़े बपतिस्मा देनेवाले नबी की तरफ़ जा रहा था। हज़रत यहया के चेहरे पर सख़्त हैरत और नौजवान के चेहरे पर संजीदगी देखकर भीड़ में जोश की एक लहर दौड़ गई। रूत के क़रीब ही कोई आहिस्ता से कहने लगा, "यह नासरत का ईसा है। मैं इसके सारे ख़ानदान को अच्छी तरह से जानता हूँ। यह मरियम का बेटा है। बड़ी पुरअसरार शख़्सियत है। इसकी वालिदा इसके बारे में बहुत कम बताती है। लेकिन मुझे मालूम हुआ है कि मरियम अभी कुँवारी ही थी कि जिबराईल फ़रिश्ते ने उसके पास आकर उसे एक लड़के की पैदाइश की बिशारत दी। इस ख़बर से वह सख़्त घबरा गईं और फ़रिश्ते से पूछा कि "यह क्योंकर हो सकता है जबकि मैं किसी

मर्द को नहीं जानती?” जिबराईल ने उससे कहा कि “रूहुल-क़ुद्स तुझ पर नाज़िल होगा, अल्लाह तआला की क़ुदरत का साया तुझ पर छा जाएगा। इसलिए यह बच्चा क़ुद्दूस होगा और अल्लाह का फ़रज़ंद कहलाएगा।”[1]

किसी ने सरगोशी की, “इसके मंगेतर ने क्या किया? जब उसे मालूम हुआ कि वह हामिला है तो क्या उसे छोड़ दिया? मरियम को तो बड़ी परेशानी हुई होगी।”

पहली आवाज़ ने बड़े अहम अंदाज़ से जवाब दिया, “हाँ। जवान औरत के लिए परेशानी तो थी। लोग तरह तरह की बातें बनाने लगे। मगर उस पाकदामन को रब पर पूरा भरोसा था कि वही मुझे बदनामी से बचाएगा और ऐसा ही हुआ। ख़ुदा ने उसके मंगेतर यूसुफ़ को होनेवाले बच्चे के मुताल्लिक़ रोया में सब कुछ बता दिया। तब वह उसे अपने घर ले आया। ख़याल करो कि ईसा को दुनिया में शुरू से ही कितनी सख़्तियों का सामना रहा है। पहले उसके माँ-बाप को नासरत छोड़कर और इतना लंबा सफ़र करके बैत-लहम जाना पड़ा जो उनका आबाई गाँव है ताकि रोमी हुकूमत के हुक्म के मुताबिक़ मर्दुमशुमारी के लिए अपने नाम लिखवाएँ। बच्चे के पैदा होने का वक़्त क़रीब था। इतने लंबे सफ़र के बाद उन्हें बैत-लहम में रहने की कोई जगह न मिली। बस रात एक झोंपड़ी में गुज़ारनी पड़ी, और वहीं ईसा पैदा हुआ। इतने ही पर बस

1 लूक़ा 1:35

न हुआ। हेरोदेस बादशाह की तलवार उसे मार डालने को बैत-लहम में उसके पिंगूरे के पास लहराने लगी। ख़ैर, और बच्चे तो मारे गए लेकिन ईसा तक यह तलवार न पहुँच सकी। नहीं, उसकी माँ ने मुझे बताया कि ख़ुदा के फ़रिश्ते ने यूसुफ़ को ख़बरदार कर दिया था कि हेरोदेस इस बच्चे को मरवा डालने को है। इसलिए तू उसे और उसकी माँ को लेकर मिसर को भाग जा। और जब तक वापस आने की हिदायत न मिले वहीं रहना। जब हेरोदेस मर गया और ख़तरा जाता रहा तो ख़ुदा ने उन्हें वापस आने की हिदायत की। अब उनकी रिहाइश नासरत में है। यक़ीनन ख़ुदावंद का हाथ ईसा पर है।"

दूसरी आवाज़ ने बात काटी, "शश! नबी कुछ कह रहा है।" सारा हुजूम साँस रोके था।

यहया ने आगे बढ़ते हुए हज़रत ईसा की तरफ़ इशारा करके बुलंद आवाज़ से पुकारा, "देखो, यह अल्लाह का लेला है जो दुनिया का गुनाह उठा ले जाता है। यह वही है जिसके बारे में मैंने कहा, 'एक मेरे बाद आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है, क्योंकि वह मुझसे पहले था।' मैं तो उसे नहीं जानता था, लेकिन मैं इसलिए आकर पानी से बपतिस्मा देने लगा ताकि वह इसराईल पर ज़ाहिर हो जाए।"[1]

लोग हैरान हुए। अगर यही अल्लाह का वादा किया हुआ अल-मसीह है तो पाक और बेगुनाह है। उसे तौबा की निशानी यानी बपतिस्मा की

---

1 यूहन्ना 1:29-31

ज़रूरत क्यों है? साफ़ मालूम हो रहा था कि यहया की राय भी यही है। नबी हज़रत ईसा को बाज़ रखने की कोशिश करने लगे। उन्होंने कहा, "मुझे तो आपसे बपतिस्मा लेने की ज़रूरत है, तो फिर आप मेरे पास क्यों आए हैं?"

फिर हज़रत ईसा की आवाज़ साफ़ सुनाई दी, "अब होने ही दे, क्योंकि मुनासिब है कि हम यह करते हुए अल्लाह की रास्त मरज़ी पूरी करें।"[1]

यहया नबी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि यह पाक हस्ती क्यों गुनाहगारों की सफ़ में खड़ी हो रही है? मगर जब हज़रत ईसा बेधड़क पानी में आ दाख़िल हुए तो यहया ने भी महसूस किया कि यह क़दम ख़ुदा की तरफ़ से है। लेकिन क्यों? अल्लाह क्यों चाहता है कि वह ऐसा करें?

आख़िर उन्होंने हज़रत ईसा को बपतिस्मा दे ही दिया। जब वह पानी से बाहर निकले तो हज़रत ईसा ने आसमान को खुलते और रूहुल-क़ुद्स को कबूतर की शक्ल में अपने ऊपर उतरते देखा। साथ ही आसमान से आवाज़ आई, "तू मेरा प्यारा फ़रज़ंद है, तुझसे मैं ख़ुश हूँ।"[2] हुजूम भी अल्लाह की मुक़द्दस हुज़ूरी को महसूस कर रहा था।

अल्लाह ने यहया की आँखें खोल दीं ताकि जो कुछ हज़रत ईसा देख रहे थे वह भी देख लें और आवाज़ भी सुन लें। वह बेबयान ख़ुशी से

---

1 मत्ती 3:14-15

2 मरक़ुस 1:11

हुजूम की तरफ़ मुड़े और पुकारकर गवाही दी, "मैंने देखा कि रूहुल-क़ुद्स कबूतर की तरह आसमान पर से उतरकर उस पर ठहर गया। मैं तो उसे नहीं जानता था, लेकिन जब अल्लाह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए भेजा तो उसने मुझे बताया, 'तू देखेगा कि रूहुल-क़ुद्स उतरकर किसी पर ठहर जाएगा। यह वही होगा जो रूहुल-क़ुद्स से बपतिस्मा देगा।' अब मैंने देखा है और गवाही देता हूँ कि यह अल्लाह का फ़रज़ंद है।"[1]

अब हज़रत ईसा के दिल में रूह की आग भड़क उठी। वह तेज़ तेज़ चलते हुए बयाबान की तरफ़ बढ़े और लोगों के देखते ही देखते ओझल हो गए। ख़िदमत शुरू करने के लिए ख़ुदा का बुलावा आ गया था। अब वह उस अज़ीम काम को रोज़े और दुआ से शुरू करनेवाले थे।

दरियाए-यरदन के किनारे हुजूम में ज़िंदगी की लहर दौड़ गई। सब मुत्तफ़िक़ थे कि हज़रत ईसा ख़ासुल-ख़ास शख़्सियत हैं। लेकिन किसी ने शक का इज़हार भी किया कि "अज़ीम हस्तियाँ तो हम जैसे आम इनसानों के साथ मेल-जोल नहीं रखा करतीं और इसमें शक नहीं कि अल-मसीह भी अज़ीम शख़्सियत होगा। वह बड़े जाहो-जलाल के साथ आएगा और रोमी ताक़त को कुचल डालेगा। लेकिन यह ईसा तो इस मेयार पर पूरा नहीं उतरता।"

---

1 यूहन्ना 1:32-34

घर वापस आते हुए रूत अपने ही ख़यालात में गुम थी। उसने ग़ौर ही नहीं किया कि ख़ानदान में इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया है। उसे एहसास हुआ तो चौंक पड़ी कि इलियज़र यहया और इस नई तहरीक के बारे में शुकूक का इज़हार कर रहा है। उसकी माँ जवाब में कहने लगी, “लेकिन बेटा, कम-से-कम तुम बपतिस्मा लेने पर तो राज़ी होते। हर कोई बपतिस्मा ले रहा है। और यहया बड़ा नेक आदमी है। माना कि तुम उसके तीखे अंदाज़े-गुफ़्तगू और निराले अंदाज़े-ज़िंदगी को पसंद नहीं करते।”

रूत को बड़ी मायूसी हुई। क्या मेरी अज़ीज़ा ने इसलिए बपतिस्मा लिया है कि आज का फ़ेशन बन गया है? कितने और लोग भी इन्हीं ख़ुतूत पर सोच रहे होंगे! और यह इलियज़र है कि मज़हब के पुराने तरीक़ों से लिपटा हुआ है। मज़हब में हर नई बात को शक की निगाह से देखता और पूछता है। “हम अपने बुज़ुर्गों की तरह क्यों नहीं रह सकते? इस गंदे-से दरिया में एकदम यह बपतिस्मा की क्या सूझी? और गर्दो-ग़ुबार में अटे हुए बयाबान में मुनादी की क्या तुक है? मुझे तो यह नई नई बातें पसंद नहीं हैं।”

अब रूत की समझ में आया कि इलियज़र की क्या बात मुझे परेशान कर रही है। इसमें गहराई नहीं है। बेशक वह ऊपरी ऊपरी तौर पर अपने दीनी फ़रायज़ अदा करता है। लेकिन मज़हब ने उसके दिल में जड़ नहीं पकड़ी। वह जहाँ तक हो सका ख़ुदा के अहकाम की तामील करता है यह समझकर कि बस इतना ही काफ़ी है। वह अल्लाह को अपना

प्यार देने को तैयार नहीं। कहीं उसे यह ख़तरा तो नहीं लग रहा कि इस नई तहरीक से ख़ुदा मेरे ज़्यादा क़रीब आ जाएगा? रूत को दिल से इलियज़र पर तरस आया।

रूत को अपना भाई दाऊद भी याद आया जो जवानी में ख़ुदसर होने की वजह से मुसीबत में फँस गया था। लेकिन इतना ज़रूर था कि वह जो कुछ भी करता पूरे दिल से करता था। हाँ वह पूरे दिल से अल्लाह की तलाश करता था। उसे इनसानों के ख़ुदसाख़्ता अहकाम पर बहुत ग़ुस्सा आता था। कई बार वह झुँझलाकर कहा करता कि "आख़िर डाक्टर सबत के दिन मरीज़ की क्यों मदद नहीं कर सकता? यह तो कोई वजह न हुई कि मुक़द्दस दिन पर इनसान को काम करने की इजाज़त नहीं। यह हुक्म इनसानों ने ख़ुद घड़ लिए हैं। ख़ुदा रहीमो-करीम है। यक़ीनन वह चाहता है कि बीमार आदमी को आराम पहुँचे चाहे सबत ही का दिन क्यों न हो। रूत ने सोचा कि यहया के शागिर्दों के साथ दाऊद की ख़ूब निभ सकती है।

दरियाए-यरदन पर अपने तजरिबे से रूत पर बहुत गहरा असर पड़ा। अब से उस की सब से बड़ी आरज़ू यह थी कि अल्लाह की बादशाही जल्द से जल्द आए।

तजस्सुस और पैरवी

दरियाए-यरदन बयाबान के बीचों-बीच तेज़ी से बह रहा था। लेकिन इस दोपहर उसके चारों तरफ़ ख़ामोशी फैली हुई थी। यहया नबी और उनके शागिर्द भीड़ से अलग होकर आराम कर रहे थे। नज़दीक ही एक बकरी के बालों के ख़ैमे में यहया के कुछ शागिर्द धीमी आवाज़ में बातचीत कर रहे थे। बैत-सैदा के मछेरे यूहन्ना बिन ज़बदी, उसका भाई याक़ूब और अंदरियास थे। उनके साथ करियोत का यहूदाह भी था।

अचानक तेज़ तेज़ क़दमों की आवाज़ आई और गुफ़्तगू बंद हो गई। चारों का ख़याल था कि हमारे उस्ताद यहया आ रहे हैं। लेकिन अंदरियास का भाई शमाऊम बिन यूनुस नज़र आया। लंबे और मज़बूत डील-डौल का मछेरा था। उसने सबसे मुख़ातिब होकर कहा, "तुम्हारी सलामती हो। तुम सब तो एकदम ऐसे ख़ामोश हो गए हो कि अगर सूई गिर जाए तो उसकी आवाज़ भी सुनाई देगी। क्या हुआ?"

अंदरियास बोला, “आओ भाई शमाऊन, ख़ुशआमदीद। यहाँ बैठो मेरे पास। कई दिन से मुलाक़ात ही नहीं हुई। घर का हाल-चाल पूछने से पहले मैं बताना चाहता हूँ कि हम यहया नबी के मुताल्लिक़ बातें कर रहे थे। पिछले चालीस दिन से वह अजीबो-ग़रीब रवैया दिखा रहे हैं। खाने-पीने की भी परवा नहीं करते। साथ साथ वह पहले की निसबत अल्लाह का काम भी कहीं ज़्यादा ज़ोरो-शोर से कर रहे हैं।”

शमाऊन ने हैरान होकर पूछा, “इसकी क्या वजह होगी?”

यूहन्ना बिन ज़बदी जल्दी से बोला, “अब तो वह पहले से भी ज़्यादा बेधड़क हो गए हैं, यहाँ तक कि हेरोदेस बादशाह के मुँह पर भी कह दिया, “तुझे अपने भाई की बीवी रखना जायज़ नहीं।”

याक़ूब कहने लगा, “हमारे उस्ताद तो लोगों के गुनाह खोल खोलकर उनके सामने रख देते हैं। किसी की परवा नहीं करते। लगता है कि उनके मिशन का ख़ातमा क़रीब आ रहा है।”

शमाऊन ने हैरानी से पूछा, “यह बताओ कि चालीस दिन पहले क्या हुआ था?”

यहूदाह ने आगे झुककर कहा, “जब से उन्होंने हज़रत ईसा को बपतिस्मा दिया है वह बिलकुल बदल गए हैं। हज़रत ईसा के बपतिस्मे के वक़्त उस्ताद के चेहरे पर ऐसा तास्सुर था जैसे ख़ुद ख़ुदा ने उन्हें कोई बात बताई हो। हममें से उन्होंने ही अल्लाह के रूह को कबूतर की शक्ल

में उतरते और हज़रत ईसा पर ठहरते देखा था। इससे ख़ुदा ने उन पर ज़ाहिर किया कि हज़रत ईसा ही अल-मसीह हैं।"

शमाऊन थोड़ी देर बिलकुल ख़ामोश रहा। "काश कि अल्लाह की बादशाही आ जाए!" फिर बोला, "काश कि उनकी बात दुरुस्त हो। लेकिन माज़ी में भी तो कितने ही लोगों ने तहरीकें चलाईं और दावे किए कि हम अल-मसीह हैं मगर नतीजा कुछ न निकला। अगर हज़रत ईसा सचमुच अल-मसीह हैं तो मैं दिलो-जान से उनके साथ हूँ। मैं सब कुछ उन पर निसार कर दूँगा।"

यहूदाह ने बेयक़ीनी से कहा, "मौक़ा आने पर मैं तुम्हें देख लूँगा। तुम शादीशुदा आदमी क्या अल-मसीह के पीछे चलने की ख़ातिर अपना घरबार छोड़ दोगे? बीवी और कारोबार को ख़ैरबाद कहोगे? दोस्त, क्या जानते हो कि सब कुछ छोड़ने का क्या मतलब होता है?"

शमाऊन ने फ़ौरन जवाब दिया, "यहूदाह! मेरी बात का एतबार करो। अल-मसीह को पहचानते ही मैं उसी की ख़िदमत में लग जाऊँगा। हाँ, मैं अपने ख़ानदान और कारोबार से प्यार करता हूँ मगर ज़िंदगी इन सबसे भी बढ़कर है।"

उसका भाई अंदरियास ज़ोरदार लहजे में कहने लगा, "शमाऊन अल-मसीह की ख़िदमत में पूरा ज़ोर लगा देगा। यह जो कुछ करता है पूरे दिल से करता है।" वह उठ खड़ा हुआ, "यह लो, हमारे उस्ताद वापस आ गए हैं। दरिया के किनारे खड़े हैं। मैं जाकर उन्हें लाता हूँ।"

यूहन्ना बिन ज़बदी भी उछलकर खड़ा हो गया और उसके पीछे पीछे चल पड़ा। दरिया को जाते हुए एक और आदमी को गुज़रते हुए देखा। यूहन्ना कहने लगा, "देखो अंदरियास, वह हैं हज़रत ईसा।"

उनके उस्ताद ने भी यह अलफ़ाज़ सुन लिए और कहा, "हाँ, हज़रत ईसा बयाबान से वापस आ गए हैं। मुझे उनकी वापसी का इंतज़ार था।" फिर उनकी तरफ़ इशारा करके बड़े जोश से बोले, "देखो, यह अल्लाह का लेला है!"[1] उनके उस्ताद की आँखें कह रही थीं, "मुझे भूल जाओ और जाकर इन्हीं की पैरवी करो।"

यह सुनकर दोनों शागिर्द हज़रत ईसा के पीछे हो लिए।

अचानक हज़रत ईसा मुड़े और उनसे मुख़ातिब होकर पूछने लगे, "तुम क्या चाहते हो?"[2]

अंदरियास ने जवाब दिया, "उस्ताद, हम हज़रत यहया के शागिर्द हैं। मेरा नाम अंदरियास बिन यूनुस है और यह यूहन्ना बिन ज़बदी है। हम बैत-सैदा के रहनेवाले मछेरे हैं। आप बुरा न मानें तो हम आपसे कुछ बातें करना चाहते हैं। आप रहते कहाँ हैं?"

"नज़दीक ही। चलो, चलकर देख लो।"

चलते चलते अंदरियास ने सूरज की तरफ़ नज़रें उठाईं। कोई चार बजे का वक़्त होगा। उसने सोचा कि मुझे अपने भाई को भी लाना

---

1 यूहन्ना 1:36
2 यूहन्ना 1:38

चाहिए कि उस्ताद से मिल ले। यों हज़रत ईसा की रिहाइशगाह देखने के बाद वह अपने भाई को लेने चला गया।

यूहन्ना को हज़रत ईसा का साथ बहुत भला लग रहा था। वह रोटी, सूखे अंजीर और शरबत खा-पी कर ताज़ादम हुए। फिर कहने लगा, "उस्ताद, हम जो हज़रत यहया के शागिर्द हैं, हम में बड़ी हलचल मची हुई है। क्योंकि उस्ताद ने बताया है कि ख़ुदा का राज आने ही वाला है। इसलिए हम सब कुछ छोड़-छाड़कर उनके पास आ गए। हम अल्लाह के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा जानना चाहते हैं ताकि जब ख़ुदा की बादशाही क़ायम हो जाए तो हम तैयार हों।" वह ज़रा रुका और फिर बोला, "अंदरियास का भाई शमाऊन अल्लाह की ख़िदमत करने का बेहद जज़्बा रखता है। लेकिन वह शादीशुदा है। उसके लिए सब कुछ छोड़ना आसान नहीं होगा।"

हज़रत ईसा ने इत्तफ़ाक़ करते हुए जवाब दिया, "हाँ बादशाही का रास्ता तंग और दुश्वारगुज़ार है। हर कोई इस पर चल नहीं सकता। उसकी ख़ातिर सब कुछ छोड़ना पड़ता है—बीवी, बच्चे, माँ-बाप, हाँ हर चीज़। मगर इसके बावुजूद इसी राह में सच्ची ख़ुशी मिलती है।"

यूहन्ना ने सर हिलाया, "अरे, लगता है अंदरियास अपने भाई को लेकर आ रहा है। कुछ आवाज़ें आ रही हैं।"

अंदरियास का साँस फूला हुआ था। वह शमाऊन को लिए अंदर दाख़िल हुआ। "उस्ताद, यह है मेरा भाई।"

शमाऊन ने मुसकराते हुए कहा, “उस्ताद, आप पर सलामती हो। मेरा भाई कहता है कि हमें अल-मसीह मिल गया है, इसलिए मुझे आना ही पड़ा। आख़िर यह भी तो देखना है कि उसकी बात में कितनी सच्चाई है।”

हज़रत ईसा ने शमाऊन को बड़े ग़ौर से देखा। उस नौजवान को उनकी नज़रें अपनी रूह की गहराइयों में उतरती महसूस होने लगीं। फिर हज़रत ईसा ने कहा, “तू शमाऊम बिन यूनुस है, तू कैफ़ा यानी पतरस कहलाएगा (जिसका मतलब है पत्थर)।

शमाऊन चौंक पड़ा। उसने महसूस किया कि हज़रत ईसा तो मेरे ज़ाहिरो-बातिन की एक एक बात जानते हैं। उसका दिल बहुत चाह रहा था कि उनसे पूछे कि अल्लाह की बादशाही इसराईल को किस तरह हासिल हो सकती है। लेकिन उसी वक़्त यूहन्ना बिन ज़बदी बोलने लगा और बातचीत का रुख़ बदल गया।

यूहन्ना ने बड़े तजस्सुस से पूछा, “उस्ताद, पाकीज़गी दरअसल क्या होती है? हम अहकाम को मानने की कोशिश करते हैं। इमामों को उनका हिस्सा भी देते हैं, लेकिन फिर भी हमें तसल्ली नहीं होती कि इन कामों से हमें पाकीज़गी हासिल होती भी है कि नहीं। मतलब है कि इन कामों से हम ऐसे लोग नहीं बन पाते जो ख़ुदा को ख़ुश कर सकें। कोई न कोई कमी रहती है। और गुज़श्ता चंद दिनों के दौरान हज़रत यहया

की मुनादी ने गुनाह का एहसास और गहरा कर दिया है। हमें अल्लाह की पाकीज़गी और अपने गुनाह ज़्यादा सफ़ाई से नज़र आने लगे हैं।"

अंदरियास आगे झुककर कहने लगा, "उस्ताद, हम महसूस करते हैं कि हम अहकाम पर पूरे नहीं उतर सकते। हम अपनी कोशिश से कभी ख़ुदा को ख़ुश करने के लायक़ नहीं हो सकते।"

हज़रत ईसा ने बड़ी मुहब्बत से उन पर निगाह डाली जैसे सब कुछ समझते हों। "अपनी ताक़त से तुम कभी कामयाब नहीं हो सकते। अल्लाह ने मुझे भेजा है कि तुम्हारी मदद करूँ। अब तो मैं तुम्हें यह नसीहत करता हूँ कि अपनी ज़िंदगी में मुहब्बत को राज करने दो। क्योंकि मुहब्बत कोई ग़लत काम नहीं कर सकती।"

तीनों आदमियों के दिल में हज़रत ईसा की मुहब्बत जोश मारने लगी। वह उनकी तरफ़ खिंचे चले जा रहे थे। वह महसूस कर रहे थे कि उनके पास हमारे परेशान दिलों का इलाज है। उनका जी चाह रहा था कि उनके बारे में और कुछ जानें। आख़िर वह जाने के लिए उठ खड़े हुए। यूहन्ना कहने लगा, "उस्ताद, मैं पहला काम यह करूँगा कि अपने भाई याक़ूब को आपसे मिलाऊँगा।"

हज़रत ईसा ने जवाब दिया, "तुम सब मेरे दोस्त हो। फिर मिलेंगे। सलामती से रुख़सत हो।" ऐसा लगता था कि हज़रत ईसा के इन अलफ़ाज़ में कोई गहरा मतलब छिपा हुआ था।

चंद दिनों बाद शमाऊन पतरस बैत-सैदा के बाज़ार में से गुज़र रहा था। इर्दगिर्द चहल-पहल पर उसकी नज़र न थी। वह हज़रत ईसा के मुताल्लिक़ सोच रहा था। क्या सचमुच वह ख़ुदा का भेजा हुआ अल-मसीह हैं? दिल की गहराइयों में उसे यही महसूस हो रहा था। यहया नबी ने भी तो उनकी तसदीक़ की थी। उनकी बात बहुत वज़न रखती थी क्योंकि वह अल्लाह के नबी थे और सच्चाई की ख़ातिर अपनी जान क़ुरबान करने को भी तैयार थे। फिर हज़रत ईसा के साथ मुलाक़ात ने भी उसे बहुत मुतअस्सिर किया था।

अचानक किसी ने उसे पुकारा, "सलाम, शमाऊन।" उसका दोस्त फ़िलिप्पुस उससे बातचीत करने को रुक गया था। उसके हमराह एक और आदमी भी था जिसका तआरुफ़ नतनेल के नाम से कराया गया। फ़िलिप्पुस कहने लगा, "तुम तो अपने ख़यालों की दुनिया में जाने कहाँ पहुँचे हुए थे।" और जवाब का इंतज़ार किए बग़ैर कहता गया, "शमाऊन! हमें अल-मसीह मिल गया है।"

नतनेल बोला, "हाँ, सच है। मैं ऐसा बंदा नहीं जो जल्दी से किसी बात का क़ायल हो जाए।" फिर वह फ़िलिप्पुस से मुख़ातिब होकर कहने लगा, "चलो उस दुकान में बैठते हैं। बातें भी करेंगे और ताज़ादम भी हो जाएंगे।"

वह दुकान में जा बैठे और अंगूर का शरबत पीने लगे। फ़िलिप्पुस की नज़रें पतरस पर जमी थीं कि न मालूम वह क्या सोच रहा है। आख़िर

उसने पूछा, "ऐसे मुसकरा क्यों रहे हो? हमारी बात का यक़ीन नहीं आया?"

शमाऊन ने नफ़ी में सर हिलाया, "नहीं, मैं तुम्हारी बात पर नहीं हँस रहा। मुझे तुम्हारी कहानी से दिलचस्पी है। दरअसल जब तुमने आवाज़ दी तो मैं अल-मसीह ही के बारे में सोच रहा था। हाँ बात करो। मैं ग़ौर से सुन रहा हूँ।"

उनको एहसास हुआ कि साथवाली मेज़ पर बैठा हुआ एक नौजवान भी हमारी बातें बड़ी दिलचस्पी से सुन रहा है। नौजवान का नाम शमाऊन ज़ेलोतेस था जिसे उनकी बात सुनते ही महसूस हो रहा था कि आज तक मैं ग़लत लीडर के पीछे चलता आया हूँ। उसने तो मुझे ग़ुलामी बल्कि तक़रीबन मौत के मुँह में धकेल दिया है। इसके मुक़ाबले में यह ईसा नासरी क्यों इतने दिलचस्प लग रहा है? शायद ईसा ही वह लीडर हो, जिसकी मुझे तलाश है। शमाऊन ज़ेलोतेस ने कान उनकी तरफ़ लगाए रखे।

फ़िलिप्पुस ने बाज़ू मेज़ पर रखकर कहा, "कल ही हज़रत ईसा की मुझसे मुलाक़ात हुई है। लेकिन मुझे लगता है कि यह मुलाक़ात इत्तफ़ाक़ी नहीं थी। वह मुझे ढूँडते हुए आए थे। और शमाऊन, ज्योंही मेरी उनसे आँखें चार हुईं तो मैंने ज़बरदस्त कशिश महसूस की। हम बातें करने लगे तो मेरा दिल जोश से भर गया और मैं ख़ुदा के लिए अजीब मुहब्बत महसूस करने लगा। मेरा दिल करता है कि हर वक़्त उनके साथ

रहूँ। फिर उन्होंने सिर्फ़ इतना ही कहा कि ‘मेरे पीछे हो ले।’ बस इतना ही तो मैं उनका शागिर्द बन गया।”

नतनेल जो ज़्यादा नरममिज़ाज था, उसने अपना प्याला मेज़ पर रखा। वह बड़ी हैरत से आहिस्ता आहिस्ता कहने लगा गोया जो कुछ उसे पेश आया था उस पर यक़ीन न आ रहा हो, “हज़रत ईसा से मुलाक़ात के बाद फ़िलिप्पुस मुझे तलाश करने आया। मैं अंजीर के दरख़्त के साय में बैठा हुआ था।”

जोश और ख़ुशी के मारे फ़िलिप्पुस के मुँह से बात नहीं निकल रही थी। वह कहने लगा, “जिसके बारे में तौरेत और अंबिया के सहायफ़ में लिखा है वह हमें मिल गया है। वह नासरत के हज़रत ईसा हैं।”

नतनेल ने अपने सर को हाथ लगाया, “सच पूछो मुझे लगता था कि फ़िलिप्पुस को कुछ हो गया है। मैंने उसे कह भी दिया, ‘फ़िलिप्पुस ज़रा सोचो, क्या नासरत से कोई अच्छी चीज़ निकल सकती है?’ वह मुसकराया और बड़ा अच्छा जवाब दिया कि ‘चलकर देख ले।’”

शमाऊन पतरस ने हँसते हुए कहा, “मैं यक़ीन के साथ कह सकता हूँ कि ज्योंही तुमने उन्हें देखा तुम भी उनके होकर रह गए।”

“नहीं, नहीं। देखो, मुझे हज़रत ईसा के बारे में शक था। लेकिन ऐसा लगता था कि उस्ताद को मेरे बारे में कोई शक न था, क्योंकि मुझे देखते ही उन्होंने कहा, ‘लो, यह सच्चा इसराईली है जिसमें मकर नहीं।’[1] मैंने

---

1 यूहन्ना 1:47

सोचा कि उन्होंने मुझे सिर्फ़ ख़ुश करने को यह बात कही होगी। मुझे जाने बग़ैर वह कैसे ऐसी बात कह सकते थे? चुनाँचे मैंने कहा, 'आप मुझे कहाँ से जानते हैं?' उन्होंने सीधे जवाब दिया, 'इससे पहले कि फ़िलिप्पुस ने तुझे बुलाया मैंने तुझे देखा। तू अंजीर के दरख़्त के साय में था।'"[1] नतनेल की आवाज़ हैरत में डूबी हुई थी। "देखो ना! किसी ने उस्ताद को नहीं बताया था कि फ़िलिप्पुस मुझे अंजीर के दरख़्त के साय में मिला था। फिर भी उन्हें पता था। जब उन्होंने यह बात बताई तो मुझे एहसास हुआ कि वह मेरे अंदर-बाहर का ख़ूब जानते बल्कि शुरू से सब कुछ जानते हैं। मैं तो जवाब में सिर्फ़ यही कह सका कि 'उस्ताद, आप अल्लाह के फ़रज़ंद हैं, आप इसराईल के बादशाह हैं।' फिर हज़रत ईसा ने मुसकराते हुए कहा, 'अच्छा, मेरी यह बात सुनकर कि मैंने तुझे अंजीर के दरख़्त के साय में देखा तू ईमान लाया है? तू इससे कहीं बड़ी बातें देखेगा।'"[2]

फिर शमाऊन पतरस ने हज़रत ईसा के साथ अपनी मुलाक़ात का हाल सुनाया और फिर बोला, "हाँ, मुझे यक़ीन है कि बड़े बड़े माजरे होंगे।"

चंद लमहे ख़ामोशी तारी रही। हर एक अपनी सोचों में गुम था। फिर फ़िलिप्पुस ने अपने घुटने पर हाथ मारा, "अरे, मैं तुम्हें हज़रत ईसा का पैग़ाम देना तो भूल ही चला था। कल वह अपने घर नासरत जाएँगे।

---

1 यूहन्ना 1:48

2 यूहन्ना 1:49-50

उन्होंने तुम्हें, अंदरियास और यूहन्ना को अपने साथ चलने की दावत दी है। हम दोनों ने तो दावत क़बूल भी कर ली है।” वह कुछ देर रुका और फिर बोला, “मैं हैरान था कि वह तुम्हें किस तरह जानते हैं। उस वक़्त मुझे ख़बर न थी कि तुम्हारी भी उनसे मुलाक़ात हो गई है।”

शमाऊन पतरस ख़ुश हुआ कि हज़रत ईसा को बेहतर तौर से जानने का अच्छा मौक़ा मिलेगा। “हाँ हम सब उनके साथ नासरत चलेंगे।”

जब शमाऊन ज़ेलोतेस ने नासरत जाने की बात सुनी तो दिल ही दिल में मुसकराया। उसे क़ाना में एक शादी में जाना था। अगले ही दिन रवाना होना था। इमकान था कि रास्ते में इन लोगों से मुलाक़ात हो जाए, क्योंकि दोनों शहरों को एक ही सड़क जाती है। इन जवानों की बातों से शमाऊन ज़ेलोतेस को ख़ास दिलचस्पी पैदा हो गई थी। उसने तहैया कर लिया कि जितनी जल्दी हो सका मैं भी हज़रत ईसा से मिलूँगा।

शादी पर मोजिज़ा

अगले रोज़ जब हज़रत ईसा और उनके साथी नासरत को जा रहे थे तो लाज़र और उसकी बहनें मर्था और मरियम भी क़ाना के लिए रवाना हुए। दोनों औरतें ख़च्चरों पर सवार थीं जबकि उनका भाई दो नौकरों के साथ पैदल चल रहा था। लाज़र किसी क़िस्म का ख़तरा मोल लेने को तैयार न था। इतने लंबे सफ़र में डाकुओं का सामना भी हो सकता था। इसलिए ओबेद और तूबियाह को साथ ले लिया था कि वक़्त आने पर मदद करें।

अब वह बत्तूफ़ के मैदान से गुज़रने लगे। मैदान में खिले हुए फूल एक ख़ूबसूरत क़ालीन लग रहे थे। मरियम बोली, “देखो मर्था, यह फूल देखो। इनकी ख़ुशबू कैसी भीनी भीनी है। मेरा तो दिल करता है कि यहाँ बैठी इनकी ख़ुशबू से लुत्फ़ उठाती रहूँ।”

मर्था ने सर को हलकी-सी जुंबिश दी। उस पर फूलों का जादू नहीं चल रहा था। कहने लगी, “लगता है इतने लंबे सफ़र से थक गई हो।

ख़ुशक़िसमती से मनज़िल आने ही वाली है। देर भी हो गई है। सूरज डूबने को है। कुछ ज़्यादा ही देर लग गई है। बेचारी दूल्हे की माँ राख़िल को तो इतने काम करने होंगे कि नाम न लो। ठीक है वह खाते-पीते लोग हैं। मदद के लिए नौकर-चाकर भी मौजूद हैं। लेकिन इतने बहुत-सारे मेहमान होंगे, और मुझे पता है कि राख़िल को फ़िकर होगी कि इंतज़ामात में कोई कमी न रह जाए।"

मरियम ने लंबी साँस ली। उसका जोड़ जोड़ दुखने लगा था। शुक्र है, अब तो सफ़र थोड़ा-सा ही रह गया है। उसने ख़ुद को सँभाला और जमाई रोकते हुए कहा, "उम्मीद है कि रूत भी अपने बाप के साथ आई होगी। सलाह तो यही थी। मूसा बिन अज़रा और उसकी बीवी अबीजेल को भी तो आना है।"

लाज़र ने ख़च्चरों को ज़रा हँकाया और बोला, "शादी पर बहुत-से दोस्तों से मुलाक़ात होगी। अगर हिम्मत हुई तो नीकुदेमुस भी आएगा। उसे सख़्त ज़ुकाम था।"

जल्द ही वह क़ाना पहुँच गए। बाज़ार में अभी तक काफ़ी रौनक़ थी। गली में चंद बच्चे दिलचस्पी से उन्हें देखने लगे। एक ने गंदी-सी उँगली उठाकर इशारा किया, "देखो। यह लोग भी शादी पर जा रहे हैं। देखा अब वह इसहाक़ का दरवाज़ा खटखटा रहे हैं।"

छोटी-सी एक लड़की बोल उठी, "दुलहन बड़ी ख़ूबसूरत होगी, अम्मी कह रही थी उसका नाम लियाह है।"

लड़के ने बड़ी हिक़ारत से उसे देखा, "तुम्हें ख़ाक पता है। मैं दूल्हा को जानता हूँ। बड़ा मज़बूत है। शेर की तरह। उसका नाम आमूस है। और जब बारात दुलहन को लेकर आएगी ना मैं भी देखूँगा।"

छोटी लड़की हँस पड़ी, "तुम तो सो भी गए होगे। वह बड़ी देर से आएँगे।"

लड़के ने जोश से उछलते और सामने इशारा करते हुए कहा, "वह देखो दूल्हे की माँ मेहमानों से मिलने को आ रही है। औरतों से गले मिल रही है।"

राख़िल ने मादराना मुहब्बत से ख़वातीन को गले लगाया। "आओ, आओ, ख़ुशआमदीद।" फिर लाज़र की तरफ़ मुख़ातिब हुई, "मुझे बड़ी ख़ुशी है कि तुमने ज़हमत करके इस ख़ास दिन पर हमारी इज़्ज़तअफ़्ज़ाई को तशरीफ़ लाए। अल्लाह तुमको बरकत दे। अंदर आओ। तुम्हारा अपना ही घर है।"

आख़िर लाज़र को भी बात करने का मौक़ा मिल गया, "ख़ुदा इस ख़ास दिन पर आप सबको बड़ी बरकत बख़्शे। आहा! इसहाक़ साहब हैं। आपकी सलामती हो। आज तो आपके लिए ख़ासुल-ख़ास दिन है।"

दूल्हे का बाप हँसकर कहने लगा, "तुमसे मिलकर बड़ी ख़ुशी हुई। लेकिन अभी तक हर काम में अफ़रा-तफ़री मची हुई है। नौकर इधर-उधर भागे फिर रहे हैं। कोई हार लाने के लिए दौड़ा जा रहा है और दूसरा

किसी और काम से। ख़ैर आओ, इधर चलकर आराम से बैठकर बातें करते हैं।"

दूल्हे की माँ राख़िल ने भी हँसकर कहा, "कोई बात नहीं, सब कुछ ठीक कर लेंगे। मर्था ज़रूर मेरा हाथ बटाएगी।"

मरियम पूछने लगी, "क्या मग्दल से दबोरा भी शादी में आ रही है? मैं उससे उसकी बेटी मग्दलीनी के बारे में पूछना चाहती हूँ। अकसर उस बेचारी लड़की के बारे में सोचती रहती हूँ।"

राख़िल ने उदासी से जवाब दिया, "नहीं, बेचारी मग्दलीनी की माँ नहीं आ सकती। अब तो इस बदरूह-गिरिफ़्ता लड़की के साथ ज़िंदगी बसर करना अज़ाब बन गया है। अकसर चीख़ती-चिल्लाती और गालियाँ देती है। वह बेहद ख़तरनाक हो गई है। सारा वक़्त उसका ध्यान रखना पड़ता है।" राख़िल की आँखों में आँसू भर आए। "ख़ानदान को पता है कि यह हरकतें, हमारी प्यारी मग्दलीनी नहीं कर रही। लेकिन बेचारे बेबस हैं, क्या कर सकते हैं!"

मेहमानों को ताज़ादम होने में देर न लगी। मरियम, मर्था और लाज़र ने थोड़ा-बहुत खाया-पिया और रौनक़ और चहल-पहल से लुत्फ़अंदोज़ होते रहे। ज़ियाफ़त का इंतज़ाम चलानेवाला नौकरों को हुक्म पै हुक्म देता रहा। "यूसुफ़, यूसुफ़! इधर आओ। यह हार दुरुस्त करो। कर रहा है। हाँ ठीक हो गया।" उसने बरतनों के ढेर पर निगाह डाली, "पड़ोसियों से और मँगवा लेना पड़ेगा। कहीं कम न पड़ जाएँ। शायद मेहमान

ज़्यादा हों। यूसुफ़, दौड़कर जाओ और नतनेल के यहाँ से कुछ और प्लेटें पकड़कर लाओ। उन्होंने कहा था कि ज़रूरत हो तो मँगवा लेना। और हाँ देख लिया था ना कि सहन बिलकुल तैयार है?"

यूसुफ़ ने हाँ में सर हिलाया, "एक तरफ़ गानेवालों के लिए भी जगह तैयार कर दी है।"

राख़िल जल्दी जल्दी आकर इंतज़ाम चलानेवाले से बात करने लगी, "क्या सब इंतज़ाम हो गया है ना? हर काम बिलकुल ठीक-ठाक लग रहा है। लेकिन मेरा ख़याल है कि कुछ और मशालें रौशन कर देनी चाहिएँ। यह एक मशाल तो बहुत धुआँ दे रही है।"

"मालिकन, माफ़ी चाहता हूँ। मैं ख़ुद ध्यान दे रहा हूँ कि सब कुछ बिलकुल आपकी मरज़ी के मुताबिक़ हो। आसफ़ तो बहुत ही सुस्त है। आज भी उसके हाथ-पैर नहीं हिल रहे हैं।"

अच्छा हुआ कि ज़ियाफ़त का इंतज़ाम चलानेवाले का ध्यान आसफ़ से हट गया वरना उसकी गत बन जाती। मगर राख़िल को कई बातें पूछनी थीं, "मेहमानों के लिए तौलिये काफ़ी हैं? और देख लेना कि मटकों में पानी भरा हो ताकि मेहमान हाथ धो सकें। तुम को पता है ना कि हमारे मज़हबी दस्तूर के मुताबिक़ खाने से पहले और बाद में हाथ धोना ज़रूरी होता है।"

इंतज़ाम चलानेवाले ने उसे यक़ीन दिलाया, "मैंने छः मटके लबालब भर दिए हैं। एक एक मटके में दो दो तीन तीन मन की गुंजाइश है।"

राख़िल जाने ही वाली थी कि एक औरत उसे तलाश करते हुए वहाँ आ पहुँची। मर्था और मरियम को वह औरत बड़ी अहम मालूम हुई। कौन हो सकती है? उसकी आँखों में कितनी गहराई है! वह बोली, “राख़िल! खाना सारा पक गया है, किसी भी वक़्त मेहमानों के आगे रखा जा सकता है।”

राख़िल ने इतमीनान का साँस लिया। “अज़ीज़ मरियम! तुम और तुम्हारी साथियों ने तो बावरचीख़ाने में कमाल कर दिया। ज़रा बैठकर सुस्ता लो। आओ, मैं तुम्हें अपने अज़ीज़ों से मिलाऊँ। यह बैत-अनियाह के मरियम और मर्था हैं।” और दोनों बहनों को बताया, “यह मरियम है। नासरत से। यूसुफ़ बढ़ई की बेवा। यह सबकी बड़ी मददगार साथी है।”

लमहे-भर झिझक के बाद बैत-अनियाह की मरियम ने पूछा, “क्या हज़रत ईसा आपके बेटे हैं? हमने इन दिनों उनके मुताल्लिक़ कई बातें सुनी हैं। बाज़ लोग कहते हैं वह नबी है और बाज़ तो यहाँ तक कहते कि वह अल-मसीह हैं। क्योंकि यहया नबी ने उनके बारे में गवाही दी है कि यह वही है जिसे भेजने का वादा ख़ुदा ने किया है।”

हज़रत ईसा की माँ मरियम ने मुसकराते हुए कहा, “हाँ हज़रत ईसा मेरा बेटा है, मगर चंद हफ़ते हुए उसने घर को ख़ैरबाद कह दिया। अल्लाह ने उसे बुलाया।” दोनों बहनों को एहसास हुआ कि इन सादे-से अलफ़ाज़ के पीछे बहुत कुछ छिपा हुआ है।

मर्था अपने अमली अंदाज़ में कहने लगी, "आपको चाहिए था कि हज़रत ईसा को समझातीं कि जो कुछ कहें और करें, एहतियात से करें। कहीं ख़तरे में न पड़ जाएँ।"

हज़रत ईसा की माँ ने अपनी गहरी और साफ़ आँखों से मर्था पर निगाह की, "मैंने सीख लिया है कि अपने बेटे की ज़िंदगी में कोई दख़ल न दूँ। वह ख़ुदा के हुक्म पर चलता है। वह मुझे सिर्फ़ थोड़े वक़्त के लिए दिया गया था कि उसकी देख-भाल करूँ। अब उसके आसमानी बाप ने उसे बुलाया है। वह पूरे तौर से उसकी हिफ़ाज़त में है, और उसे उसी की हिदायत और राहनुमाई के मुताबिक़ चलना है। ख़तरा हो या न हो, उसे क़ादिरे-मुतलक़ की राह पर चलना है। अल्लाह की फ़रमाँबरदारी में उसकी सबसे बड़ी ख़ुशी है।" फिर आहिस्ता से बोली, "हो सकता है कि वह शादी में आ जाए। मैं घर पर ख़बर छोड़ आई हूँ कि हम शादी में शिरकत के लिए क़ाना जा रहे हैं। अगर वह घर की तरफ़ से गुज़रा तो शायद आने का इरादा कर ले। बस थोड़ा-सा इमकान है।"

रात गहरी हो रही थी। मशालों को जलते हुए कई घंटे हो गए थे। कुछ लोग छत पर बारात के वापस आने का इंतज़ार कर रहे थे। अचानक किसी ने ख़ुशी से पुकारा, "आ गए! आ गए!" एक नौउम्र लड़का भागा भागा ख़बर लाया, "बारात आ गई है। उनकी मशालें नज़र आ रही हैं।" हर तरफ़ हलचल शुरू हो गई और तमाम लोग दूल्हा-दुलहन के इस्तिक़बाल को बाहर की तरफ़ लपके।

अब बाजों की आवाज़ भी साफ़ सुनाई देने लगी। दूल्हा के वालिदैन राख़िल और इसहाक़ नई जोड़ी को देखकर निहाल हो रहे थे। इसहाक़ बोला, "मेरे बेटे और बेटी, ख़ुशआमदीद। ख़ुदावंद तुम्हें ख़ुश रखे और फलदार बनाए।"

राख़िल ने दुलहन को गले लगाया और कहा, "प्यारी लियाह! मैं दिल से तुम्हें ख़ुशआमदीद कहती हूँ। बेटी, ख़ुदा तुम्हें बड़ी बरकत दे।"

मेहमानों के चेहरों पर मशालों की रौशनियाँ लहरा रही थीं। अब दूल्हे के बाप ने ख़ुशी से पुकारकर एलान किया, "मैं आप सबको ख़ुशआमदीद कहता हूँ। तशरीफ़ लाइए। सब कुछ तैयार है।" मेहमानों के इस्तिक़बाल के लिए वह कभी इधर झुकता कभी उधर। "आइए, इफ़राईम साहब! आओ रूत। शुक्रिया, आपने आने की ज़हमत की। और यह हमारे मुअज़्ज़ज़ उस्ताद नीकुदेमुस भी तशरीफ़ लाए हैं। जनाब आपने हमारी बड़ी इज़्ज़तअफ़्ज़ाई की है। और मूसा बिन अज़रा, आपको देखकर बड़ी मुसर्रत हुई। और अबीजेल! ख़ुशआमदीद! ख़ुशआमदीद! और यह कौन साहब हैं? शमाऊन ज़ेलोतेस। नौजवान दोस्त, तुम्हें देखकर ख़ास ख़ुशी हुई। और यह देखो। एक बड़े अज़ीज़ आ रहे हैं। हज़रत ईसा इब्न मरियम ..."

हज़रत ईसा ने गरमजोशी से कहा, "अल्लाह आपके बेटे और बेटी को बरकत दे। उम्मीद है आप बुरा नहीं मानेंगे, मैं चंद साथियों को भी साथ लाया हूँ।"

“कोई नहीं, कोई नहीं। मैं आप सबको ख़ुशआमदीद कहता हूँ।”

इसहाक़ ने अपनी बीवी को बताया कि कुछ इज़ाफ़ी मेहमान भी आए हैं। जब इंतज़ाम चलानेवाले को ख़बर हुई तो वह कहने लगा, “सफ़र करके आए हैं। प्यास लगी होगी। उनको तो काफ़ी मै दरकार होगी। उम्मीद है शरमिंदगी का मुँह नहीं देखना पड़ेगा। अच्छा होता कि मालिक कुछ और शरबत मँगवा लेते।” इंतज़ाम चलानेवाले को कुछ परेशान दिखाई दे रहा था।

“आसफ़, मेहमानों के लिए और तौलिये लाओ। और यशुअ बिन इफ़राईम के लिए पानी डाल दो।”

दूल्हे के बाप ने इंतज़ाम चलानेवाले के कान में कुछ कहा। वह फ़ौरन नीकुदेमुस की तरफ़ लपका। “आलीजाह! आप आगे आएँ। मालिक दरख़ास्त करते हैं कि आप उनकी दाहिनी तरफ़ तशरीफ़ रखें।”

नीकुदेमुस अपनी जगह से उठा, “ज़रूर ज़रूर! बड़ी ख़ुशी से।” आज उसे इज़्ज़त की जगह हासिल करते हुए बड़ी ख़ुशी थी।

अब इंतज़ाम चलानेवाला, शमाऊन ज़ेलोतेस की तरफ़ मुतवज्जिह हुआ, “जनाब! आप यहाँ तशरीफ़ रखें। हज़रत ईसा और उनके साथियों के साथ। अपने जैसे नौजवानों की सोहबत ख़ूब रहेगी।”

इसहाक़ और राख़िल ख़ुशी से फूले नहीं समाते थे। शादी की दावत बड़ी उम्दगी से जारी थी। हर कोई लुत्फ़अंदोज़ हो रहा था। माहौल

ख़ुशगवार था। ख़ास ख़ुशी यह थी कि उनकी अज़ीज़ा नासरत की मरियम का बेटा हज़रत ईसा भी आया हुआ था।

रूत बैत-अनियाहवाली सहेलियों से गप-शप लगा रही थी। अचानक उसकी नज़र हज़रत ईसा पर पड़ी। उसने उन्हें दरियाए-यरदन पर हज़रत यहया से बपतिस्मा लेते देखा था। इन्हीं के बारे में यहया ने कहा था कि “यह वही है जिसे ख़ुदा ने भेजा है।” उस ने अबीजेल के कान में कहा, “अबीजेल, पहचाना इनको?”

अबीजेल ने ग़ौर से देखा, “हाँ वही हैं। यरदन के किनारे इन्हीं को देखा था।”

नीकुदेमुस ने भी उनकी बातें सुन लीं। उसने पास बैठे बैतुल-मुक़द्दस के एक बुज़ुर्ग से पूछा, “याक़ूब! वह नौजवान कौन है जो उधर बैठा है?”

“वह? वह तो ईसा नासरी है। लोग उसके बारे में तरह तरह की बातें करते हैं।” फिर तंज़िया अंदाज़ में कहने लगा, “कहते हैं नबी है बल्कि अल-मसीह है। क्या आप तसव्वुर कर सकते हैं कि नासरत से भी कोई नबी बरपा होगा? क्या एक बढ़ई का बेटा हमारा अल-मसीह हो सकता है? इस क़िस्म की बातों पर मैं बिलकुल कान नहीं धरता।”

नीकुदेमुस ने आहिस्ता से जवाब दिया, “याक़ूब साहब, हम हमेशा तो अंदाज़ा नहीं लगा सकते कि अल्लाह कैसे काम करता है। उसके ख़याल हमारे ख़यालों से बुलंद हैं। मैंने अपनी तवील ज़िंदगी में यह

सबक़ सीखा है कि वह मग़रूरों को हक़ीर जानता है और हलीमों और आजिज़ों को पसंद करता है। इस नौजवान ईसा का चेहरा ऐसे शख़्स का चेहरा है जो अल्लाह की क़ुरबत में ज़िंदगी गुज़ारता है। लेकिन यह क्या! इंतज़ाम चलानेवाला बड़ा परेशान दिखाई दे रहा है!"

इंतज़ाम चलानेवाला ज़ोर ज़ोर से पुकार रहा था, "आसफ़, यूसुफ़, जल्दी करो। और शरबत लाओ। मेहमानों को ज़रूरत है। इधरवाले मेहमानों के प्याले ख़ाली हैं। क्या घर की बदनामी कराओगे। निकम्मो!"

अकसर मेहमानों को ख़बर न हुई कि आसफ़ और यूसुफ़ किस मुश्किल में फँसे हुए हैं। मै ख़त्म हो चुका थी। यूसुफ़ बेदिली से कहने लगा, "आख़िर क्यों? क्यों ऐसा हुआ? हर काम इतनी उम्दगी से हो रहा था। अब तक सारी दुकानें भी बंद हो चुकी हैं।"

आसफ़ बुड़बुड़ाया, "हमारे मालिक की कितनी बेइज़्ज़ती होगी! लोग बातें बनाएँगे कि पीने को कुछ न दिया। अब क्या करें?" फिर उन्होंने इंतज़ाम चलानेवाले की आवाज़ सुनी जो उन्हें बुला रहा था।

यूसुफ़ अपनी परेशानी में बोला, "नासरत की मरियम से पूछना चाहिए कि क्या करें। वह हमेशा बड़ी अच्छी सलाह दिया करती है।" उसकी आवाज़ में उम्मीद झलक रही थी।

मरियम ने सारी बात सुनी तो यह सोचकर उदास हो गई कि दूल्हा-दुलहन और उनके वालिदैन की ख़ुशी मलियामेट हो जाएगी। फिर उसे याद आया कि मेरा बेटा ईसा भी तो यहाँ मौजूद है। उसने कितनी बार

मुश्किल वक़्त में मदद की है। वह ख़ामोशी से हज़रत ईसा के पास पहुँची और आहिस्ता से उन्हें कहा, "हमारे अज़ीज़ों को बड़ी मुश्किल आ पहुँची है। मै ख़त्म हो गई है।"

हज़रत ईसा ने नरमी से जवाब दिया, "ऐ ख़ातून, मेरा आपसे क्या वास्ता? मेरा वक़्त अभी नहीं आया।" मरियम ने आह भरी। हज़रत ईसा ने उसे याद दिलाया था कि अब से वह सिर्फ़ ख़ुदा का हुक्म सुनेंगे। तो भी उसने महसूस किया कि किसी न किसी तरह वह ज़रूर मदद करेंगे। उसने नौकरों के पास जाकर उन्हें हुक्म दिया, "जो कुछ वह तुमको बताए वह करो।"

आसफ़ और यूसुफ़ बेदिली से हज़रत ईसा की तरफ़ देखने लगे। यह नौजवान कैसे मदद कर सकता है! अब हज़रत ईसा ने उन्हें पास बुलाया और उन छः बड़े बड़े मटकों की तरफ़ इशारा करके कहा, "इनको पानी से भर दो।" नौकर एक दूसरे का मुँह तकने लगे। यूसुफ़ ने शक भरे लहजे में पूछा, "पानी से?"

हज़रत ईसा के साथी भी बेचैन हो रहे थे। मेहमान को पानी पेश किया गया तो क्या मज़ाक़ नहीं उड़ाएँगे? इंतज़ाम चलानेवाला तो यूसुफ़ और आसफ़ पर और शायद हज़रत ईसा पर भी ऐसे बरसेगा कि मत पूछिए। लेकिन हज़रत ईसा ने हुक्म कुछ ऐसे यक़ीन से दिया था जैसे उन्हें पता हो कि नतीजा क्या होगा।

शमाऊन ज़ेलोतेस बड़े ग़ौर से उनको देखता रहा। अब तक वह तो शशो-पंज में था। अब तक वह ऐसे लीडर की तलाश में था जो अपने क़ौल का पक्का हो। उनके देखते देखते नौकरों ने एक एक करके तमाम मटके पानी से लबालब भर दिए। यूसुफ़ ने अपनी पेशानी से पसीना पोंछा और दूर खड़े इंतज़ाम चलानेवाले की तरफ़ देखने लगा। उनकी क़िस्मत अच्छी थी कि मटके भरते वक़्त वह सहन में मसरूफ़ था। लेकिन अब वह फिर उन्हें पुकार रहा था।

यूसुफ़ बुड़बुड़ाने लगा, "आसफ़। पता नहीं अब क्या करें? इतने मेहनत से मटके भरे हैं। लेकिन मै तो अब भी नहीं है।"

आसफ़ कहने लगा, "हाय, कैसी बेइज़्ज़ती। मैं तो इतना थक गया हूँ कि आज का अंजाम सोच भी नहीं सकता। जाओ। जाकर हज़रत ईसा से पूछो कि अब क्या करना है।"

यूसुफ़ बोझल क़दमों से हज़रत ईसा के पास पहुँचा, "छः के छः मटके भर गए हैं।"

हज़रत ईसा ने सीधे कहा, "अब कुछ निकालकर ज़ियाफ़त का इंतज़ाम चलानेवाले के पास ले जाओ।"[1]

यूसुफ़ का मुँह खुले का खुला रह गया, "क्या? ... यह पानी? जनाब ... अच्छा ... ठीक है।" आसफ़ ने उसे सुराही पकड़ाई। उसका हाथ काँप रहा था। आवाज़ भी थरथरा रही थी। "तू ही पानी भरकर

---

1 यूहन्ना 2:8

इंतज़ाम चलानेवाले के पास ले जा। मुझमें तो जुर्रत नहीं कि सादा पानी लेकर उसके पास जाऊँ।”

जैसे ही यूसुफ़ ने सुराही मटके में डाली, सुराही उसके हाथ से छूट गई। वह पुकार उठा, “इब्राहीम के ख़ुदा! मोजिज़ा! पानी से मै बन गई है।”

इंतज़ाम चलानेवाले की तेज़ आवाज़ फिर गूँजी, “यूसुफ़, आसफ़! जल्दी करो। तमाम मेहमानों के प्याले ख़ाली हो गए हैं। जल्दी करो।”

यूसुफ़ ने उसे नई मै का भरा हुआ प्याला पकड़ाया ताकि उसे चखे। “पुरानी मै ख़त्म हो गई थी,” उसने दबी आवाज़ में कहा। “यह नई देखें और चखें।” इंतज़ाम चलानेवाले ने चखा तो सीधे दूल्हे के पास लपका, “जनाब, अगर मैं आपकी जगह होता तो मेहमानों को पहले यह मशरूब पेश करता। यह तो निहायत उम्दा है।”

आसफ़ और यूसुफ़ हक्का-बक्का रह गए। भला यह ईसा कौन है?

शमाऊन ज़ेलोतेस भी दंग रह गया। उसके ज़हन में भी यही सवाल गूँज रहा था कि यह कौन है? हज़रत ईसा ने उसकी आँखों में आँखें डालकर देखा तो शमाऊन दिल की गहराइयों तक काँप उठा। उसे महसूस हुआ कि मेरे दिल की छानबीन हो रही है। मुझ पर अफ़सोस, मैं कितना नापाक हूँ! साथ साथ उसका दिल हज़रत ईसा की तरफ़ खिंचा चला जा रहा था। वह उसके बारे में सब कुछ जानने के लिए बेक़रार हो गया। मुमकिन है यही सही लीडर साबित हो!

मोजिज़े की ख़बर तमाम मेहमानों में आग की तरह फैल गई। रूत एक नए वलवले से भर गई। वह अपने वालिद से कहने लगी, “अब्बा जान! मुझे लगता है कि यहया नबी ने हज़रत ईसा के बारे में जो कुछ कहा था बिलकुल सच है।”

इफ़राईम ने जवाब दिया, “अगर यह बात दुरुस्त है तो अल्लाह ख़ुद इसकी तसदीक़ करेगा। हमें अपनी आँखें और कान खुले रखने चाहिएँ।”

मगर बैतुल-मुक़द्दस के बुज़ुर्ग याक़ूब के होंट पतले पतले और आँखें सख़्त थीं। वह इफ़राईम की तरफ़ झुककर कहने लगा, “मुझसे पूछो तो मैं यही कहूँगा कि मैं अपने इस एतक़ाद पर क़ायम हूँ कि नासरत जैसे मामूली और पसमाँदा इलाक़े से कोई नबी बरपा नहीं हो सकता। अल-मसीह तो हरगिज़ वहाँ से नहीं हो सकता। कितनी मज़हकाख़ेज़ बात है! क्या एक बढ़ई का बेटा अपनी क़ौम को छुड़ानेवाला अल-मसीह हो सकता है? हरगिज़ नहीं।” उसने तेज़ तेज़ साँस लेते हुए बात ख़त्म की।

लेकिन हज़रत ईसा के साथी जिन्होंने मोजिज़ा होते देखा था, उन पर उनका रोब छा गया। उनके दिल मान गए कि यहया ने ठीक ही कहा कि हज़रत ईसा ही अल-मसीह है। क्योंकि उसमें अल्लाह ही की क़ुदरत है।

पुरकशिश पैग़ाम

अप्रैल का महीना था। यरूशलम मुल्क के कोने कोने बल्कि दुनिया के हर हिस्से से आए हुए ज़ायरीन से खचाखच भरा हुआ था। वह फ़सह की ईद मनाने आए थे। यह तहवार मिसर के उस वाकिये की याद में मनाया जाता था जब ख़ुदा के फ़रिश्ते ने इसराईलियों के पहलौठों को छोड़ते हुए मिसरियों के पहलौठे मारे थे। अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ इसराईलियों ने लेला ज़बह करके उसका ख़ून अपने घरों की चौखटों पर लगाया था। उस ख़ून को देखकर ख़ुदा का फ़रिश्ता उन्हें छोड़ता गया था। फ़सह की ईद उन्हें यह भी याद दिलाती थी कि अल्लाह का हक़ीक़ी लेला अभी आने को है। वही इनसान के गुनाह भरे दिल को साफ़ करेगा ताकि पाक ख़ुदा इनसान पर रहम करके उसे अबदी मौत से बचा ले। अल्लाह का यह लेला, यह नजातदहिंदा और भी बहुत कुछ करेगा। वह उस रिफ़ाक़त को बहाल करेगा जो शुरू शुरू में ख़ुदा और इनसान के दरमियान थी। हिज़क़ीएल नबी ने पेशगोई की थी कि इस

नजातदहिंदे के ज़ुहूर के मौक़े पर अल्लाह क्या करेगा : “तब मैं तुम्हें नया दिल बख़्शकर तुममें नई रूह डाल दूँगा। . . . मैं अपना ही रूह तुममें डालकर तुम्हें इस क़ाबिल बना दूँगा कि तुम मेरी हिदायात की पैरवी और मेरे अहकाम पर ध्यान से अमल कर सको।”[1] क्या अजब कि हर साल फ़सह की ईद के मौक़े पर इस आनेवाले नजातदहिंदे की उम्मीदें रौशन हो जाती थीं।

शहर में गूनागूँ ज़बानें बोलनेवालों का सैलाब आया हुआ था। बहुत-से नौ मुरीद जो ग़ैरयहूदियों से यहूदी हुए थे, वह भी ईद मनाने आए थे। मुल्क मुल्क के रंगारंग लिबासों से यरूशलम में नई ज़िंदगी दौड़ती मालूम होती थी। मक़ामी लोग इस मौक़े पर पैसे कमाने में लग जाते थे। जितने लोगों को मुमकिन होता अपने घरों में ठहराते थे।

रात हो गई। शहर पर रफ़्ता रफ़्ता ख़ामोशी छा गई। आसमान पर लातादाद सितारे टिमटिमाने लगे। बैतुल-मुक़द्दस की सुनहरी छत पूरे चाँद में जगमगा रही थी। शहरपनाह के बाहर ज़ायरीन के पड़ाव में आग के शोले बेताबी से लहरा रहे थे। बच्चे-बूढ़े आग के इर्दगिर्द बैठे खाना खा रहे थे। थोड़ी देर बाद इधर-उधर से गाने और बातें करने की आवाज़ें आने लगीं। सबको उम्मीद थी कि यह ईद भी पहली ईदों की मानिंद होगी। मगर अब के कुछ और ही बात निकली।

1 हिज़क़ी एल 36:26-27

बूढ़ा समुएल अपनी बीवी से मुख़ातिब हुआ जो आग दुरुस्त कर रही थी, "मुझे यक़ीन है कि वह सामने क़ाना के आसफ़ और यूसुफ़ हैं।" उसकी बीवी अबियाह हँस पड़ी और जल्दी से आग में नई लकड़ियाँ डालकर अपनी तेज़ आवाज़ में पुकारी, "यूसुफ़, आसफ़! यहाँ हमारे पास आ जाओ।"

उन्होंने बड़ी ख़ुशी से दावत क़बूल कर ली। इस तरह एक आरामदेह आग के पास जगह भी मिलनी थी। वह बड़ी ख़ुशी से अबियाह के सवालों के जवाब देने लगे। हाँ, हमारा मालिक इसहाक़ और उसकी बीवी राख़िल भी आए हुए हैं। वह उस्ताद नीकुदेमुस के हाँ ठहरे हुए हैं। और नई जोड़ी आमूस और लियाह बैत-अनियाह में लाज़र और उसकी बहनों के साथ हैं। अबियाह ने सर हिलाया, "हाँ, ज़रूरी है कि हर मर्द बैतुल-मुक़द्दस में फ़सह की ईद शामिल हो। ख़ुदावंद का यही हुक्म है।"

उसका ख़ावंद एकदम संजीदा हो गया और बोला, "आजकल कौन अल्लाह का हुक्म मानता है!"

बूढ़े समुएल ने अपनी पतली-सी उँगली आसफ़ के सामने लहराते हुए कहा, "ख़ुदावंद के ख़ूबसूरत घर को चोरों का बाज़ार बना डाला है।" उसकी आवाज़ ग़ुस्से से थरथरा रही थी। "मैं कहता हूँ, बैतुल-मुक़द्दस के सहन में बाज़ार क्यों लगा रखा है? हाँ, मैं जानता हूँ। इमाम तो यही कहते हैं कि इस तरह ज़ायरीन को सहूलत रहती है। उन्हें क़ुरबानी के लिए बेऐब जानवर मौक़े पर ही मिल जाते हैं। लेकिन मैं शर्त लगाता

हूँ कि वह सौदागरों से हिस्सा वसूल करते हैं।" बूढ़ा ख़ामोश हो गया। मगर चेहरे से ग़ुस्सा टपक रहा था।

आसफ़ ने जवाब दिया, "समुएल साहब! आप दुरुस्त फ़रमाते हैं। बैतुल-मुक़द्दस में यह कारोबार तो क़ाबू से बाहर हुआ जाता है। मगर हम मामूली लोग क्या कर सकते हैं!"

अम्माँ अबियाह ने भी मुँह बनाते हुए कहा, "समुएल ठीक ही कहते हैं। मुझे याद है, एक बार हम क़ुरबानी के लिए अपना मेंढा लेकर आए थे। उसमें साफ़ साफ़ कोई ऐब नहीं था। मगर इसके बावुजूद इमाम ने इसरार किया कि वह ऐबदार है। उसने ज़ोर दिया कि आइंदा बैतुल-मुक़द्दस से ही जानवर ख़रीदना बेहतर रहेगा। मैं कहती हूँ अगर इमाम ही इस तरह पैसे बटोरने लग गए तो कितने अफ़सोस की बात है।"

उसके ख़ावंद ने सर हिलाया, "मज़ीद यह कि जानवरों की मेंगनियों और गोबर से पाक जगह सब गंदी हो जाती है और इतनी बदबू आती है कि ख़ुदा की पनाह। ख़रीदारों और सौदागरों के दरमियान सौदाबाज़ी भी तो मुनासिब नहीं। इतना शोर मचता है कि कान पड़ी आवाज़ सुनाई नहीं देती। सर्राफ़ भी कब बदज़बानी से बाज़ आते हैं। क्या यह जगह ऐसे कामों के लिए है?" वह और भी अफ़सुरदगी से कहने लगा, "कई मरतबा तो मैं सोचता हूँ कि अब मज़हब में वह बात नहीं रही है। न इमाम वैसे रहे हैं। इबादतख़ाने में वाज़ से भी कोई तसल्ली नहीं मिलती। वैसे ही भूके-प्यासे उठ आते हैं। दिल उसी तरह बेक़रार रहता है। सारा वाज़

तहारत, रोज़े, क़ुरबानियों, ईदों और इनसान के ख़ुदसाख़्ता क़वानीन के बारे में होता है। हालाँकि दिल तड़पता है कि ख़ुदाए-क़ादिर के बारे में कुछ सुना जाए।" फिर चंद लमहे ख़ामोश रहने के बाद बोला, "जब से तुम दोनों ने मुझे क़ाना के मोजिज़े के बारे में बताया है, मैं अकसर हज़रत ईसा के मुताल्लिक़ सोचता रहता हूँ।"

यूसुफ़ ने आग में लकड़ियों को हिलाया और पूरे एतमाद से कहा, "वह यक़ीनन नबी हैं। जिस तरह उन्होंने हमें मटकों में पानी भरने और मै को ज़ियाफ़त का इंतज़ाम चलानेवाले के पास ले जाने का हुक्म दिया, उसे बयान करना नामुमकिन है। उनकी आवाज़ में इख़्तियार था। ज़रा भी झिझक न थी।"

आसफ़ ने गिरह लगाई, "हज़रत ईसा को तो कोई शक नहीं था। यह हम्ही थे जो ऐसा सोच रहे थे।"

समुएल बोला, "उम्मीद है इन दिनों बैतुल-मुक़द्दस में हज़रत ईसा से मुलाक़ात हो जाएगी। यहया नबी ने भी कहा है कि वह नबी हैं। और यह भी सुना है कि वह अपने पास शागिर्द जमा कर रहे हैं। उनकी तालीम लोगों के दिलों में उतर जाती है। और यह भी कहा जाता है कि उन्हें ग़मगीन और बेसहारा लोगों और बीमारों के लिए बड़ी हमदर्दी है।" अपनी बात पर ज़ोर देने की ख़ातिर उसने अपनी कमज़ोर-सी उँगली आसमान की तरफ़ उठाई, "हाँ, कोई बीमारी ऐसी नहीं जिससे हज़रत ईसा शफ़ा न दे सकें।"

अबियाह ने ड्रामाई अंदाज़ में बात मुकम्मल कर दी, "और कोई बदरूह इतने ज़बरदस्त नहीं कि वह उनके सामने ठहर सके।"

हज़रत ईसा भी अपने शागिर्दों के साथ यरूशलम आए हुए थे। उनका इरादा था कि चंद महीने शहर में रहें ताकि लोग उन्हें जान जाएँ। अब वह बैतुल-मुक़द्दस के इहाते में थे। जब वह जानवरों, सौदागरों और सर्राफ़ों का जायज़ा ले रहे थे तो शमाऊन पतरस ने अंदरियास से कहा, "अपने आक़ा की आँखें तो देखो! उनमें अल्लाह की कितनी ग़ैरत शोलाज़न है!"

अंदरियास ने सर हिलाया, "लगता है कुछ करने को हैं।"

यूहन्ना बिन ज़बदी का रंग उड़ गया। वह कहने लगा, "फ़िलिप्पुस, शायद उस्ताद को याद नहीं कि हम बैतुल-मुक़द्दस के करता-धरता लोगों के इलाक़े में हैं। उनकी मरज़ी के ख़िलाफ़ कुछ करना ख़तरनाक साबित होगा।"

नतनेल दाँत भींचते हुए बोला, "मगर आक़ा वही कुछ करेंगे जो ख़ुदा बाप की मरज़ी हो।" उसकी आवाज़ में ख़ौफ़ भी था और हज़रत ईसा के लिए तारीफ़ भी। "मुझे तो लगता है कि वह इस नामुनासिब कारोबार का ख़ातमा कर देंगे, चाहे उन्हें क़ैद ही होना पड़े। आख़िर ऐसी मुक़द्दस जगह में इस गंदे कारोबार से अल्लाह की कितनी तौहीन होती है ना। लो ... देखो!"

उनके देखते देखते उन्होंने कोड़ा बनाकर उसे सौदागरों और जानवरों पर बरसाने लगा। उन्होंने उन्हें ग़ैरयहूदियों के सहन से बाहर निकाल दिया। सरासीमा जानवरों की आवाज़ों और सौदागरों की चीख़ो-पुकार से माहौल गूँज उठा। हज़रत ईसा ने सर्राफ़ों की चौकियाँ उलट दीं। उनके सिक्के छनछनाते हुए चारों तरफ़ बिखर गए। कबूतरफ़रोश पिंजरे उठाकर चलते बने। हज़रत ईसा ने उनसे बड़े ग़ुस्से में कहा, "मेरे बाप के घर को मंडी में मत बदलो।"[1]

यूहन्ना और अंदरियास इस भगदड़ से बचने के लिए एक कोने में सहमे-सिमटे जा खड़े हुए। यूहन्ना कहने लगा, "अल्लाह ख़ैर करे। इसका अंजाम अच्छा नहीं होगा।" उन्हें पाक कलाम की यह आयत याद आई कि 'तेरे घर की ग़ैरत मुझे खा गई।'

किसी को हज़रत ईसा का सामना करने की जुर्रत न हुई। उनका इख़्तियार और रोब सब पर छा गया। आख़िर यहया नबी की हिमायत भी तो उन्हें हासिल थी जिनोंने एलान किया था कि यही इसराईल का पेशवा है। यह सब कुछ देखकर लोग अंदाज़ा लगाने लगे कि वह क़ौम की राहनुमाई करने का एलान करेंगे।

आम लोग तो बहुत ख़ुश थे कि सौदागरों को बैतुल-मुक़द्दस से निकाल बाहर किया गया है। मगर सदरे-अदालतवालों और बैतुल-मुक़द्दस के मुंतज़िमीन का मामला और था। बेशक इस वक़्त उनको

---

1 यूहन्ना 2:16

हज़रत ईसा पर हाथ डालने की जुर्रत न थी। मगर उन्होंने अपने ग़ुस्से का साफ़ साफ़ इज़हार किया। वह कहने लगे, क्या बैतुल-मुक़द्दस के मुख़तार हम हैं या यह? अगले छः महीनों में उनकी दुश्मनी इतने शदीद हो जाने को थी कि हज़रत ईसा उस शहर में रह ही न सके।

लेकिन फ़िलहाल हज़रत ईसा यरूशलम में टिक गए। वहाँ वह ज़ायरीन और शहर के मक़ामी लोगों से मिलते, उनके दरमियान चलते-फिरते, उनके बीमारों को शफ़ा देते और बदरूहों को निकालते रहे। उनका दिल हर एक के लिए रहम और तरस से भरा हुआ था।

जब हज़रत ईसा किसी मजमा से हमकलाम होते तो वह उसमें शामिल हर एक से मुख़ातिब होते। क्योंकि उनके नज़दीक हर एक की अलग अहमियत थी। लोग जवाब में उनकी तालीम को बड़ी चाहत से सुनते रहे। अब वह उनसे कलाम करने के लिए फिर रुक गए। उन्होंने कहा, "मुक़र्ररा वक़्त आ गया है, अल्लाह की बादशाही क़रीब आ गई है। तौबा करो और अल्लाह की ख़ुशख़बरी पर ईमान लाओ।"[1]

सुननेवालों में लाज़र अपनी बहनों समेत और उनके मेहमान क़ाना का नया जोड़ा थे। समुएल और उसकी बीवी अबियाह भी थे। नीज़ इफ़राईम, यशुअ और रूत। उनके अलावा शमाऊन ज़ेलोतेस और यहूदाह इस्करियोती भी वहाँ हाज़िर थे।

---

1 मरक़ुस 1:15

शमाऊन ज़ेलोतेस यहूदाह से कहने लगा, “बड़ी दिलचस्प बात है। ख़ुदा की बादशाही क़ायम करनेवाला अल-मसीह ही होगा।”

लाज़र ने उसे चुप कराया, “हश। ज़रा सुनें कि यह बादशाही कैसी होगी।”

दोनों हज़रत ईसा की बातें सुनने को हमातन मुतवज्जिह हो गए। हज़रत ईसा ने कहा, “आसमान की बादशाही खेत में छिपे ख़ज़ाने की मानिंद है, जिसे किसी आदमी ने पाकर छिपा दिया और ख़ुशी के मारे जाकर जो कुछ उसका था बेच डाला और उस खेत को मोल ले लिया।” फिर वह ज़रा रुके और मुसकराकर देखने लगे कह क्या यह लोग अल्लाह की बादशाही के इस पहलू को समझ गए हैं? फिर मज़ीद कहा, “आसमान की बादशाही ऐसे सौदागर की मानिंद है जो अच्छे मोतियों की तलाश में था। जब उसे एक निहायत क़ीमती मोती के बारे में मालूम हुआ तो वह चला गया, अपनी तमाम मिलकियत फ़रोख़्त कर दी और उस मोती को ख़रीद लिया।”[1]

शमाऊन ज़ेलोतेस पूरी तरह न समझ सका कि हज़रत ईसा का मतलब क्या है। लेकिन वह उनके लिए बढ़ती हुई कशिश ज़रूर महसूस कर रहा था। वह भी उस बादशाही में शामिल होना चाहता था।

यहूदाह इस बात से बहुत मुतअस्सिर हुआ कि हज़रत ईसा कितनी क़ुदरत रखते हैं। उसने शमाऊन ज़ेलोतेस से कहा, “मैं ऐसे आदमी को

1 मत्ती 13:45-46

पसंद करता हूँ। लोगों पर इनका कितना असर है जैसे कि उन्होंने उन पर जादू कर दिया हो। फिर वह बीमारियों और बदरूहों पर भी क़ुदरत रखते है। ऐसा शख़्स सब कुछ कर सकता है। यक़ीनन यही अल-मसीह हैं।"

नीकुदेमुस और क़ाना के साथ उसका मेहमान इसहाक़ भी सामईन में खड़ा था। वह भी बड़ी तवज्जुह से सुन रहे थे। नीकुदेमुस ने एतराफ़ किया, "इसहाक़, मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा। आसमान की बादशाही कैसी है और कहाँ है और इसमें कैसे दाख़िल हो सकते हैं?"

इसहाक़ ने अफ़सुरदगी से जवाब दिया, "अगर आप मज़हब के आलिम होकर भी नहीं समझ सकते तो मैं कैसे समझूँ! लेकिन हज़रत ईसा की बातों से मुझे अंदाज़ा हुआ है कि आसमान की बादशाही अभी हमारे दरमियान मौजूद है। मगर छिपी हुई है। जैसे खेत में ख़ज़ाना।"

नीकुदेमुस ने उससे इत्तफ़ाक़ किया, "और लगता है कि यह बादशाही इतनी क़ीमती है कि उसे हासिल करने के लिए सब कुछ क़ुरबान कर देने से भी दरेग़ नहीं करना चाहिए।"

इसहाक़ ने महसूस किया कि आसमान की बादशाही का मज़मून नीकुदेमुस के ख़यालात का मरकज़ है। उसकी नज़रें बैतुल-मुक़द्दस के इर्दगिर्द फैली हुई पहाड़ियों पर जमी थीं लेकिन इसहाक़ महसूस कर रहा था कि मेरा दोस्त उन चीज़ों को नहीं देख रहा। वापस जाते हुए नीकुदेमुस ने इसहाक़ को बताया कि इन ख़यालात ने मेरे ज़हन में कैसी

हलचल मचा रखी है! वह बोला, “इसहाक़, आज तक मैं इस एतक़ाद पर क़ायम था कि आसमान की बादशाही क़ौमी नौईयत की होगी।”

इसहाक़ ने जवाब दिया, “मैं आपका मतलब समझ गया हूँ कि अल-मसीह रोमियों को इसराईल से निकालकर हमारे मुल्क को दुबारा इज़्ज़त और वक़ार बख़्शेगा।” वह अपने दोस्त के चेहरे को ग़ौर से देख रहा था। “लेकिन अब आपके ख़यालात बदल गए हैं।”

“अभी तो यक़ीन से कुछ कह नहीं सकता। लेकिन लगता है कि यह बादशाही रूहानी नौईयत की होगी। एक और मौक़े पर हज़रत ईसा ने सफ़ाई से कहा था कि हम अपने दुश्मन के बारे में ग़लतफ़हमी में मुब्तला हैं। हमारा असली दुश्मन रोम नहीं जिसने हमारे मुल्क पर क़ब्ज़ा कर रखा है बल्कि इबलीस और उसकी फ़ौजें हैं।”

इसहाक़ के मुंह से ख़ुश्क-सी हँसी निकली, “बहुत ख़ूब फ़रमाया है आपने। लेकिन कौन है जो इबलीस और उसकी फ़ौजों को निकाल सकता है? मेरे ख़याल में ऐसा तो सिर्फ़ अल-मसीह ही कर सकता है।”

नीकुदेमुस ने इत्तफ़ाक़ किया, “उस वक़्त हज़रत ईसा ने बड़ी दिलचस्प बात कही थी कि जो अल्लाह की बादशाही क़ायम करेगा उसे इबलीस से निमटना होगा।”

इसहाक़ ने हैरत से पूछा, “क्या उन्होंने कहा कि मैं वही हूँ?”

"बराहे-रास्त तो नहीं, सिर्फ़ इतना कहा कि अगर मैं ख़ुदा के रूह की मदद से बदरूहों को निकालता हूँ तो अल्लाह की बादशाही तुम्हारे दरमियान आ पहुँची है।"

दोनों आदमी ख़ामोशी से चलते रहे। फिर इसहाक़ कहने लगा, "हज़रत ईसा में कुछ ऐसी बात ज़रूर है जिसकी मैं विज़ाहत नहीं कर सकता। जब उन्होंने मेरे बेटे की शादी पर मोजिज़ा किया तो बिलकुल ख़ामोशी से किया। उन्हें अपनी शोहरत की रत्ती-भर परवा न थी। उनके पास बैठे लोगों को ऐसा लगा कि मोजिज़ा करने से पहले वह किसी क़िस्म की आवाज़ सुन रहे थे। इसमें कोई शक नहीं कि उन्होंने ख़ुदा के इशारे पर ही वह मोजिज़ा किया।"

नीकुदेमुस ने क़ायल होते हुए कहा, "अल्लाह के सच्चे ख़ादिम की निशानी यही है कि वह अपनी ज़िंदगी में अपने आपको नहीं बल्कि अल्लाह को मरकज़ी मक़ाम देता है। मैं हज़रत ईसा से बहुत मुतअस्सिर हो रहा हूँ। हर जगह वह शिकस्ता ज़िंदगियों को शफ़ा देते और बदरूहों को निकालते हैं। जब मैं यह सब कुछ देखता और उनके बड़े बड़े कामों के बारे में सुनता हूँ तो ख़याल करने लगता हूँ कि शायद यही अल-मसीह हों। क्या इन बातों से ज़ाहिर नहीं होता कि इबलीस की बादशाही टुकड़े टुकड़े हो रही है और अल्लाह की बादशाही क़ायम हो रही है?"

जब हज़रत ईसा ने सौदागरों को निकालकर हाँक दिया था तो नीकुदेमुस को बड़ी परेशानी हुई थी। उनका रवैया ऐसा था जैसे वह

बैतुल-मुक़द्दस के मालिक हों। वह भी बैतुल-मुक़द्दस के दूसरे सरदारों की तरह बहुत सीख़पा हुआ था कि एक मामूली घराने का नौजवान और वह भी गलील के इलाक़े का, ऐसी गुस्ताख़ाना हरकत करे। क्या हज़रत ईसा ने अपनी इस हरकत से बुज़ुर्गों की तौहीन नहीं की थी? उन्होंने इस चुभन को शिद्दत से महसूस किया था। लेकिन जब नीकुदेमुस ने हज़रत ईसा को ज़्यादा क़रीब से देखा, उन्हें बीमारों को छूते और शफ़ा बख़्शते देखा और उनकी बातें सुनीं तो उनके मुताल्लिक़ उसके ख़यालात बदल गए। उसने महसूस किया कि वह हर काम बड़ी हलीमी से करते हैं। इसके अलावा उनके हर काम और कलाम में अजीब क़िस्म का इख़्तियार और क़ुदरत थी। यों जैसे जैसे दिन गुज़रते गए उनके लिए नीकुदेमुस की कशिश बढ़ती गई।

एक शाम नीकुदेमुस बड़ी बेचैनी से अपने घर में फिर रहा था। उसको यक़ीन हो गया था कि हज़रत ईसा ख़ुदा की तरफ़ से आयए हैं। एक तो यहया नबी ने साफ़ साफ़ कहा था कि मैं हज़रत ईसा का पेशरौ हूँ। मैं वह आवाज़ हूँ जो लोगों को उनके लिए तैयार कर रही है। यहया नबी और हज़रत ईसा में कोई ताल्लुक़ ज़रूर है। इसके अलावा दोनों यही एलान करते हैं कि अल्लाह की बादशाही आ गई है। भला इनसान इस बादशाही में कैसे दाख़िल हो सकता है? यह सवाल रह रहकर उसे बेचैन कर रहा था। लेकिन वह हज़रत ईसा से यह सवाल अलानिया नहीं पूछना चाहता था। अगर सदरे-अदालत में उसके साथियों को पता

चल जाता तो वह उस पर शक करते। वह हज़रत ईसा के मुख़ालिफ़ थे। गलील का यह नौजवान उनके लिए ख़तरा बना हुआ था। वह शफ़ा देने की क़ुदरत रखते थे। वह कलाम करने की क़ुदरत रखते थे, और लोग शमा पर परवानों की तरह उनके गरवीदा थे। नीकुदेमुस को साफ़ महसूस हो रहा था कि मेरे साथी हज़रत ईसा से जलते हैं, इसलिए कि वह तंगनज़र हैं। वह किसी ऐसे शख़्स को अपना लीडर और अल-मसीह मानने को तैयार नहीं जिसने यहूदियों के सबसे बड़े मदरसे से तालीम न पाई हो। वह ऐसे शख़्स का मुक़ाबला करने के लिए हर वक़्त तैयार रहते थे चाहे इसके लिए ग़ैरक़ानूनी तरीक़े ही क्यों न अपनाने पड़ें। लिहाज़ा वह हज़रत ईसा की नेकनामी को मिट्टी में मिलाने पर उतर आए थे। नीकुदेमुस ने इरादा कर लिया कि कम-से-कम मैं तो अपनी आँखें बंद नहीं करूँगा। मैं जाकर हज़रत ईसा से मिलूँगा। उनसे बात करने के बाद ही कोई राय क़ायम करूँगा। उसने तय कर लिया कि मैं तनहाई में उससे मिलूँगा ताकि किसी को एतराज़ का मौक़ा न मिले।

थोड़ी देर के बाद वह ख़ामोशी से घर से निकला और तंग और बल खाती गलियों में से तेज़ी से उछलता हुआ उस मकान की तरफ़ चला जहाँ हज़रत ईसा अपने शागिर्दों समेत ठहरे हुए थे। दरवाज़े पर दस्तक देते हुए उसे ख़दशा था कि इतनी रात गए आने पर हज़रत ईसा ख़फ़ा न हों! क्या वह मेरी बात सुनेंगे भी?

उसे घबराने की ज़रूरत न थी। हज़रत ईसा ने बड़ी शफ़क़त से उसे ख़ुशआमदीद कहा। नीकुदेमुस ने सोचा कि वह मेरे इस वक़्त आने की वजह समझते हैं। वह एक दूसरे के आमने-सामने बैठ गए तो नीकुदेमुस महसूस करने लगा कि मैं उनकी नज़र में अहमियत रखता हूँ। गो हज़रत ईसा ख़ुद थके हुए थे तो भी वह ख़ुशी से उसे वक़्त देने को तैयार थे ताकि उसके परेशान दिल से बोझ उतर जाए।

छोटे-से दिए की लौ हवा से थरथरा रही थी। नीकुदेमुस ने बात शुरू की, "उस्ताद, हम जानते हैं कि आप ऐसे उस्ताद हैं जो अल्लाह की तरफ़ से आए हैं, क्योंकि जो इलाही निशान आप दिखाते हैं वह सिर्फ़ ऐसा शख़्स ही दिखा सकता है जिसके साथ अल्लाह हो।"[1]

हज़रत ईसा ने जो उसके दिल के अंदर तड़पते हुए सवाल को जानते थे, जवाब दिया, "मैं तुझे सच बताता हूँ, सिर्फ़ वह शख़्स अल्लाह की बादशाही को देख सकता है जो नए सिरे से पैदा हुआ हो।"[2]

नीकुदेमुस को अपने बूढ़े कानों पर एतबार नहीं आ रहा था। उसने हैरान होकर पूछा, "क्या मतलब? बूढ़ा आदमी किस तरह नए सिरे से पैदा हो सकता है? क्या वह दुबारा अपनी माँ के पेट में जाकर पैदा हो सकता है?"[3]

---

1 यूहन्ना 3:2
2 यूहन्ना 3:3
3 यूहन्ना 3 :4

हज़रत ईसा के चेहरे पर हलकी-सी मुसकराहट खेलने लगी। उन्होंने विज़ाहत की, “जिस्मानी पैदाइश से इनसान एक इनसानी ख़ानदान में पैदा होता है लेकिन जब ख़ुदा का रूह आकर उसमें बसता है तो वह अल्लाह के घराने में पैदा होता है। फिर वह अपनी ख़ाहिशात और शहवतों के मुताबिक़ ज़िंदगी नहीं गुज़ार सकता बल्कि ख़ुदा के रूह की हिदायत के मुताबिक़। इस तरह वह शख़्स अल्लाह की मरज़ी के मुताबिक़ ढल जाता है। ख़ुदा को ख़ुश करने में उसकी ख़ुशी होती है। ताज्जुब न कर कि मैं कहता हूँ, ‘तुम्हें नए सिरे से पैदा होना ज़रूर है।”

उसी वक़्त बहीराए-रोम से चलनेवाली मग़रिबी हवा की हलकी हलकी आवाज़ सुनाई दी। हज़रत ईसा ने इसी हवा की मिसाल दे दी, “फ़ितरत में भी कई भेद छिपे हैं। सबसे दाना और होशियार आदमी भी हवा को अपने क़ाबू में नहीं कर सकता। हवा जहाँ चाहे चलती है। तू उसकी आवाज़ तो सुनता है, लेकिन यह नहीं जानता कि कहाँ से आती और कहाँ को जाती है। यही हालत हर उस शख़्स की है जो रूह से पैदा हुआ है।”[1]

नीकुदेमुस समझ गया कि जैसे फ़ितरत में राज़ पोशीदा हैं उसी तरह रूहुल-क़ुद्स से नई पैदाइश भी एक भेद है। और जिस तरह कोई इनसान हवा पर इख़्तियार नहीं रखता उसी तरह वह अपनी ताक़त और कोशिश से नई पैदाइश भी हासिल नहीं कर सकता। न दुआएँ न रोज़े और न

1 यूहन्ना 3:7-8

नेक अमल ही इस काम में मदद दे सकते हैं बल्कि यह पूरे तौर से अल्लाह की बख़्शिश है। नीकुदेमुस जानता था कि जो शख़्स ग़ैरयहूदी से यहूदी मज़हब को इख़्तियार करता है, समझा जाता है कि वह नए सिरे से पैदा हुआ है। इसराईलियों में शमूलियत से गोया उसकी नई ज़िंदगी शुरू होती है। अब इस फ़रीसी की समझ में आया कि हज़रत ईसा की मुराद यह है कि जो ख़ुदा की बादशाही में दाख़िल होना चाहे, लाज़िम है कि वह पूरी तरह से तबदील हो। लेकिन नौमौलूद बच्चे जैसी मुकम्मल तबदीली कैसे हासिल हो सकती है? बड़ी उलझन के साथ उसने सवाल किया, "यह कैसे हो सकता है?"

हज़रत ईसा ने जवाब दिया, "क्या इसराईलियों का उस्ताद होकर तू इन बातों को नहीं समझता? नीकुदेमुस, इतने इल्म के बावुजूद क्या तू नहीं जानता कि इनसान अल्लाह के ग़ज़ब से कैसे बच सकता है?" नीकुदेमुस अपने बारे में हज़रत ईसा की हैरत को महसूस कर रहा था।

हज़रत ईसा ने गुफ़्तगू जारी रखी, "मैं तुझको सच बताता हूँ, हम वह कुछ बयान करते हैं जो हम जानते हैं और उसकी गवाही देते हैं जो हमने ख़ुद देखा है। तो भी तुम लोग हमारी गवाही क़बूल नहीं करते। मैंने तुमको दुनियावी बातें सुनाई हैं और तुम उन पर ईमान नहीं रखते। तो फिर तुम क्योंकर ईमान लाओगे अगर तुम्हें आसमानी बातों के बारे

में बताऊँ? आसमान पर कोई नहीं चढ़ा सिवाए-इब्ने-आदम के, जो आसमान से उतरा है।"[1]

नीकुदेमुस हैरानी के आलम में उनको देख रहा था। हज़रत ईसा की मुहब्बत भरी निगाहें उस पर जमी थीं। मालूम हो रहा था कि वह कह रहे हैं, "मैं जानता हूँ कि तू ख़ालिस दिल से सच्चाई की तलाश कर रहा है। जो कुछ तू अभी नहीं समझता उसका राज़ कुछ देर बाद तुझ पर खुल जाएगा। हज़रत ईसा ने बड़ी शफ़क़त से उसे एक निशान दिया जो पूरा होनेवाला था। इस निशान से नीकुदेमुस को बाद में मालूम हो जाना था कि उन्होंने इलाही सच्चाई बयान की थी। उन्होंने कहा, "जिस तरह मूसा ने रेगिस्तान में साँप को लकड़ी पर लटकाकर ऊँचा कर दिया उसी तरह ज़रूर है कि इब्ने-आदम को भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए, ताकि हर एक को जो उस पर ईमान लाएगा अबदी ज़िंदगी मिल जाए। क्योंकि अल्लाह ने दुनिया से इतनी मुहब्बत रखी कि उसने अपने इकलौते फ़रज़ंद को बख़्श दिया, ताकि जो भी उस पर ईमान लाए हलाक न हो बल्कि अबदी ज़िंदगी पाए। क्योंकि अल्लाह ने अपने फ़रज़ंद को इसलिए दुनिया में नहीं भेजा कि वह दुनिया को मुजरिम ठहराए बल्कि इसलिए कि वह उसे नजात दे।"[2]

नीकुदेमुस को वह वाक़िया याद था जब मूसा नबी ने बयाबान में साँप को ऊँचे पर चढ़ाया था। ख़ुदा इसराईलियों को हर रोज़ खाने के

---

1 यूहन्ना 3:11-13
2 यूहन्ना 3:14-17

लिए मन दिया करता था। लेकिन इसराईली बुड़बुड़ाने और शिकायत करने लगे। इस पर क़ादिरे-मुतलक़ नाराज़ हुआ। उसने उनके दरमियान ज़हरीले साँप भेज दिए। उनके डसने से बहुत-सारे लोग हलाक हो गए। यह देखकर वह मूसा के सामने फ़रियाद करने लगे कि हमारी ख़ातिर अल्लाह से इलतमास करें। तब ख़ुदा ने हज़रत मूसा को हिदायत की कि पीतल का एक साँप बनाकर बल्ली पर ऊँचा लटका दे ताकि सब देख सकें। उसने वादा किया कि साँप का डसा हुआ जो शख़्स पीतल के इस साँप पर निगाह करेगा वह बच जाएगा। जिन्होंने उसके कलाम पर अमल किया वह मरते मरते भी बच गए। लेकिन जिन्होंने समझा कि यह ईमान रखना हमाक़त है कि पीतल के साँप को देखने से शफ़ा मिल सकती है वह हलाक हो गए।

नीकुदेमुस ने हैरानी से सोचा कि हज़रत ईसा को किस तरह पीतल के साँप की मानिंद ऊँचे पर चढ़ाया जा सकता है ताकि जो कोई उन पर ईमान लाए हमेशा की ज़िंदगी पाए?

जब वह अपना गरम लबादा ओढ़ते हुए घर को रवाना हुआ तो रात काफ़ी गुज़र चुकी थी। उसको अपनी रूहानी ज़िंदगी पर जो एतमाद था वह बिलकुल जाता रहा था। अब अल्लाह की राहें और भी पुरअसरार मालूम होने लगी थीं। यक़ीनन हज़रत ईसा ने उसे सोचने को बहुत-सी बातें दी थीं। लगता था कि उन्होंने तीन मुअम्मे उसके सामने रख दिए थे जिन्हें हल करना था। पहला यह था कि अल्लाह के रूह से नई पैदाइश

क्या है? और यह कैसे हासिल होती है? दूसरा यह कि मूसा नबी ने जिस साँप को ऊँचे पर चढ़ाया, हज़रत ईसा को किस तरह उस तरह ऊँचे पर चढ़ाया जाएगा? और तीसरा मुअम्मा यह था कि हज़रत ईसा किस तरह अपने आपको ख़ुदा का इकलौता बेटा कहते हैं?

नीकुदेमुस ने ठंडी साँस ली। हज़रत ईसा ने उन पहेलियों का कोई हल पेश नहीं किया था। उन्होंने सारा मामला नीकुदेमुस पर छोड़ दिया था ताकि वह उन पर सोचता रहे। वक़्त आने पर यह पहेलियाँ बंद कलियों की तरह ख़ुद ही खुल जाएँगी।

नजातदहिंदे की आरज़ू

दाऊद की तो दुनिया ही तलपट हो गई थी। अब वह रोम में था। उसका माहौल उसे हर लमहे याद दिला रहा था कि मैं बुतपरस्त मुल्क में हूँ। हर तरफ़ मंदिर और बुत थे। वह साफ़ तौर से देख सकता था कि अगरचे बुत की नुमाइश बड़ी ख़ूबसूरती से की गई है लेकिन लोगों की ज़िंदगियों पर उनका कोई असर और इख़्तियार नज़र नहीं आता। दरअसल रोम को देखकर उसे सदमा हुआ था। बहुत-सी औरतें बड़ी होशियारी से अपना ही पेशा चला रही थीं। बहुत-सी अकेली ही अपनी डोलियों में घूमती-फिरती रहती थीं। अकसर को शादी से कोई दिलचस्पी न थी। दाऊद एक ऐसी गली-सड़ी और घिनौनी दुनिया से वाक़िफ़ हुआ जिसमें शादी का तक़द्दुस कोई मानी नहीं रखता था। यह हर लिहाज़ से मादर-पिदर-आज़ाद दुनिया थी।

मगर अब दाऊद ग़ुलाम था। यह बात गवारा करना बहुत मुश्किल था। उसे और बहुत-से ग़ुलामों के हमराह बहरी जहाज़ से रोम लाया

गया था। उसे मालूम हो गया था कि ग़ुलाम की हालत कैसी कठिन होती है। निचले अर्शे से रात-दिन ग़ुलामों की ग़मनाक आवाज़ें आती रहती थीं। उनको जहाज़ के चप्पू चलाने थे। एक दारोग़ा कोड़ा लिए हुए उनके सर पर खड़ा रहता था। दाऊद ने पहली बार महसूस किया कि इनसानियत में एक चीज़ मुश्तरक है, और वह है दुख-दर्द और मौत। और हर एक के सीने में आज़ादी और मुहब्बत की तड़प है।

दाऊद सोचने लगा, तौरेत में लिखा है कि ख़ुदा ने इनसान को अपनी शबीह पर बनाया। हर इनसान पर अल्लाह की छाप है। निचले अर्शे पर रहनेवाले मुजरिम ग़ुलामों पर भी उसकी छाप है। पहली बार उसकी यहूदी ज़मीर ने चुभन महसूस की कि मैं भी क़ुसूरवार हूँ। ख़ुदा ने हम यहूदियों के सुपुर्द अपना कलाम किया ताकि ग़ैरयहूदियों को भी रौशन करें। लेकिन हमने उसे अपने ही तक महदूद रखा बल्कि हम बाक़ी दुनिया को हिक़ारत की नज़रों से देखते हैं। दाऊद ने इस बात से तौबा की। इस मुसीबत में उसे ख़याल आया कि दमैं भी ख़ुदग़रज़ हूँ कि अपने बाप की नसीहत पर अमल न किया। मैंने अल्लाह के हुक्म की भी परवा नहीं की कि “तू अपने बाप की इज़्ज़त करके उसकी फ़रमाँबरदारी कर।” अब उसकी समझ में आया कि मेरी नेकनामी और इज़्ज़त को कैसा नुक़सान पहुँचा है। लेकिन फिर भी उसकी हालत कई साथी ग़ुलामों से बेहतर थी क्योंकि ख़ुदा पर उसका ईमान अब भी क़ायम था।

यह सफ़र मुसीबत का पहाड़ साबित हुआ। जहाज़ समुंदर की लहरों पर हिचकोले खाता रहा। दाऊद और दीगर क़ैदी बीमार हो गए। इनके छोटे छोटे ग़लीज़ कमरों में गरमी और बदबू बढ़ती ही गई। छत में झूलती हुई शमा भी गरमी और धुएँ में इज़ाफ़ा करती गई। इन परेशानियों में दाऊद को दुआ ही में तसल्ली और सुकून मिलता था। अब सिवाए-अल्लाह के उसके पास कुछ नहीं बचा था। ज़ियारत का एक ज़बूर उसको बार बार याद आता था :

> मैं अपनी आँखों को पहाड़ों की तरफ़ उठाता हूँ। मेरी मदद कहाँ से आती है?
> मेरी मदद रब से आती है, जो आसमानो-ज़मीन का ख़ालिक़ है।
> वह तेरा पाँव फिसलने नहीं देगा। तेरा मुहाफ़िज़ ऊँघने का नहीं।
> यक़ीनन इसराईल का मुहाफ़िज़ न ऊँघता है, न सोता है।
> रब तेरा मुहाफ़िज़ है, रब तेरे दहने हाथ पर सायबान है।
> न दिन को सूरज, न रात को चाँद तुझे ज़रर पहुँचाएगा।
> रब तुझे हर नुक़सान से बचाएगा, वह तेरी जान को महफ़ूज़ रखेगा।
> रब अब से अबद तक तेरे आने-जाने की पहरादारी करेगा। (ज़बूर 121)

दाऊद को ज़िंदा ख़ुदा बहुत याद आने लगा। उसने किस तरह इसराईलियों की हिफ़ाज़त की और अपने आपको उन पर ज़ाहिर किया ताकि वह उसकी वफ़ादारी को जान लें। लेकिन उसके बेवफ़ा लोग कितनी बार अपनी ही राहों पर चल निकले। मैं क्यों सोचने लगा था कि मैं अपनी क़ौम को आज़ाद कराने के लिए कुछ कर सकता हूँ! मैं तो भूल गया था कि सारा इख़्तियार क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा के हाथ में है। अब भी मेरा कुछ नहीं गया क्योंकि ख़ुदा मेरे साथ है। वही मेरी राहनुमाई और मदद करेगा।

जहाज़ ने ज़बरदस्त हिचकोला खाया। दूसरे लोगों की गालियों और आहों के दरमियान एक ग़ैरयहूदी की दबी दबी आवाज़ उभरी, "देवताओ, मदद करो।" फ़ौरन ही एक और आवाज़ आई, "बेवुक़ूफ़! मत पुकारो इन देवताओं को। उन्हें तो हमें दुख देने में बल्कि हमें तबाह करने में मज़ा आता है।" इस मुसीबत में इन आदमियों के दिलों में आरज़ू उभर रही थी कि काश कोई रास्तबाज़ और मुहब्बत भरा ख़ुदा हाकिम होता। ऐसा ख़ुदा जिसे हमारी मुसीबतों का एहसास होता और जो हमारी फ़िकर करता। हाँ दाऊद सचमुच ख़ुशक़िसमत था। वह जानता था कि अगरचे लोगों की नज़र में मैं ग़ुलाम हूँ और उनकी निगाहों में मेरी क़दर किसी बेजान शै से ज़्यादा नहीं तो भी अल्लाह की निगाह में मैं बहुत गिराँक़दर हूँ।

वाक़ई ख़ुदा दाऊद के साथ था। उसे सेनेटर ग्लौकुस के घरेलू ग़ुलामों में शामिल किया गया। वक़्त गुज़रने के साथ साथ उसके आक़ा की तेज़ निगाहों ने देख लिया कि वह न सिर्फ़ तालीमयाफ़्ता और ज़हीन है बल्कि बहुत क़ाबिले-एतमाद भी। उसने उसका रुतबा बढ़ाकर उसे ग़ुलामों के दारोग़े का नायब बना दिया। दाऊद इस बात पर ख़ुश था कि उसकी मालिकन क़दीम क़िस्म के अच्छे रोमियों की तरह अपने घर की देख-भाल करती थी। वह ग़ुलामों की निगरानी का ख़ास ख़याल रखती और अपने ख़ावंद से वफ़ादार भी रहती थी। लेकिन उसको उस घर में आए ज़्यादा अरसा नहीं हुआ था कि वहाँ मौत के साय लहराने लगे। बेगम ग्लौकुस फ़ौत हो गई, और उसका जनाज़ा बहुत पुर-वक़ार अंदाज़ में उठाया गया। मगर ज्योंही उसकी चिता की आग बुझी घर में एक बड़ा ख़ला महसूस होने लगा, गोया घर की रूह रुख़सत हो गई है। सबसे ज़्यादा असर सेनेटर के तेरह-साला बेटे अंटोनियुस पर हुआ। अब दाऊद को मालूम हुआ कि ग़ैरयहूदियों के दरमियान न सिर्फ़ ग़रीब बल्कि अमीर भी दिली ज़ख़मों से कराह रहे हैं।

अंटोनियुस के साथ दाऊद का रवैया बड़े भाई जैसा था। वह अपने आपको बहुत तनहा महसूस करता था। दाऊद को उस पर तरस आता था, और वह उसकी मदद करना चाहता था। लेकिन ग़ुलाम होते हुए वह कुछ कर नहीं सकता था। फिर हालात अजीब तौर से उन्हें एक दूसरे के क़रीब लाए। एक दिन एक गाड़ी के घोड़े बेक़ाबू हो गए। जब वह सरपट

दौड़े आ रहे थे तो अंटोनियुस भागकर उनसे बचने की कोशिश में गिर पड़ा। दाऊद ने अपनी जान ख़तरे में डालकर उसे उनकी ज़द से बचा लिया। लेकिन गाड़ी दाऊद से टकरा गई, और उसके सर में बड़ा-सा ज़ख़म आ गया।

एक और मौक़े पर एक नया ग़ुलाम बिलकुल ही पागलपन पर उतर आया। उसकी बीवी और बच्चे किसी और मालिक के हाथ फ़रोख़्त कर दिए गए थे इसलिए वह इंतहाई मायूस था। एक दिन वह चिल्लाता हुआ बावरचीख़ाने में घुस आया और छुरी उठाकर बाहर भाग गया। बदक़िस्मती से अंटोनियुस इस ख़तरे से बेख़बर उसके आगे आगे जा रहा था। अचानक ग़ुलाम ने वह छुरी अंटोनियुस के कंधे में उतार दी। वह दर्द से तिलमिलाकर घूमा। इतने में दाऊद उस पागल को दबोच चुका था। मगर उसे क़ाबू करना कोई आसान काम नहीं था। वह लंबा चौड़ा मज़बूत जिस्म का मालिक था और इंतहाई ग़ुस्से में था। दूसरे ग़ुलामों के पहुँचने तक दाऊद को भी कई ज़ख़म लग चुके थे। सेनेटर ग्लौकुस दाऊद से बहुत मुतअस्सिर हुआ। उसने उसका रुतबा और भी बढ़ा दिया। इधर अंटोनियुस ने महसूस किया कि मेरे और दाऊद के दरमियान एक इनसानी बंधन मज़बूत हो रहा है। उसके दिल में उसके लिए बड़ा एहतराम पैदा हो गया। वह अकसर सोचता कि यह ग़ुलाम दूसरों से मुख़्तलिफ़ क्यों है? वह एक आन रखता है जैसे अपनी क़दरो-

क़ीमत को जानता हो। वह एक ख़ास अंदाज़ से दूसरों का ख़याल रखता है।

एक दिन अंटोनियुस और उसका उस्ताद पुराने फ़िलासफ़रों की हिकमत पर बातचीत कर रहे थे। वह मामूली साज़ो-सामानवाले कमरे में बैठे थे। बूढ़े उस्ताद पिसकुस ने देखा कि मैं अपने शागिर्द की तवज्जुह हासिल करने में नाकाम हो रहा हूँ। लड़का बार बार जमाइयाँ ले रहा था और उसके ख़यालात इधर-उधर भटकते मालूम हो रहे थे। अचानक अंटोनियुस कहने लगा, "मेरा दिल करता है कि दाऊद नामी यहूदी से बातचीत करूँ और मालूम करूँ कि उसका देवता कैसा है। इस वक़्त तो रोमी अपने देवताओं से तंग आए लगते हैं। इसी लिए इतने बेशुमार ग़ैरमुल्की देवता दरामद करते फिरते हैं, यहाँ तक कि क़ैसर औगुस्तुस ने भी हुक्म जारी कर दिया है कि यहूदियों के ख़ुदा को भी कोई मक़ाम दिया जाए।"

पिसकुस जब कभी कोई दिल बहला देने की बात सुनता तो हलका-सा खाँसा करता था। इस वक़्त भी वह हलका-सा खाँसा। "क़ैसर बहादुर बहुत रवादार और तवह्हुम-परस्त भी है। उसने सोचा होगा कि इस तरह शायद यहूदियों की गरदनकश और रोमियों के ख़िलाफ़ नफ़रत कुछ कम हो जाए।"

पिसकुस बहुत गिराँक़दर ग़ुलाम था। मालिक ने उसकी भारी क़ीमत अदा की थी। लेकिन इसमें पछतावे की कोई बात न थी। वह ग़ुलाम

सचमुच क़ीमती था। वह पक्का दानिशवर आदमी था। अब उसने अपने शागिर्द की दरख़ास्त क़बूल की, और उसकी बूढ़ी आँखें चमक उठीं।

तब दाऊद को बुलाया गया, और वह कमरे में दाख़िल हुआ। उसके गुज़रे दिनों के कसरती बदन में अब भी कोई ख़ास फ़रक़ नहीं आया था, अलबत्ता उसकी आतिशीं निगाहों में तबदीली आ गई थी। उसकी आँखों से ज़ाहिर होता था कि वह अकसर अफ़सुरदगी का शिकार रहता था। जब पिसकुस ने उसे बैठने को कहा तो वह हैरान भी हुआ और परेशान भी। मगर पिसकुस कहने लगा, "हम तुम्हारे ख़ुदा के बारे में कुछ सुनना चाहते हैं।" तो उसका दिल ख़ुशी से भर गया।

उसने कहना शुरू किया, "हम एक ही ख़ुदा पर ईमान रखते हैं जो क़ादिरे-मुतलक़ है और जिसने आसमान और ज़मीन को बनाया। ख़ुदा का कलाम बताता है कि इनसान को अल्लाह की शबीह पर पैदा किया गया। उसे इसलिए पैदा किया गया कि अपने ख़ालिक़ से मुहब्बत रखे और उसकी ख़िदमत करे। लेकिन मजबूरी से नहीं बल्कि अपनी आज़ाद मरज़ी से। अल्लाह ने पहले दोनों अफ़राद की वफ़ादारी का इम्तहान लिया। इसके लिए उसने एक फलदार दरख़्त को इस्तेमाल किया। उसने उन दोनों को उसका फल खाने से मना कर दिया और उनको साफ़ साफ़ बता दिया कि अगर ना-फ़रमानी करेंगे तो मर जाएँगे। मगर इबलीस जो ख़ुदा का मुख़ालिफ़ है, वह आ गया। उसने पहले जोड़े यानी आदम और हव्वा के दिल में अल्लाह के कलाम के बारे में शक का बीज बो

दिया। उसने उन्हें बताया, 'तुम हरगिज़ नहीं मरोगे। ऐसी फ़ज़ूल बातों का यक़ीन मत करो। ख़ुदा जानता है कि यह फल खाओगे तो उसी की मानिंद हो जाओगे। इसी लिए तो उसने तुम्हें इसे खाने से मना किया है।'

"इबलीस उनके दिलों में शक पैदा करने में कामयाब हो गया। क्या अल्लाह सचमुच उतना अच्छा है जितना कहता? क्या वह महज़ बहाना तो नहीं कर रहा कि हम उसके प्यारे फ़रज़ंद हैं ताकि इस तरह हम पर रोब जमाता रहे? उसने हमें इतना मज़ेदार फल खाने से मना क्यों कर रखा है? होते होते आदम और हव्वा बग़ावत पर आमादा हो गए। उनके दिल में ख़ाहिश पैदा हो गई कि हम ख़ुदा के इख़्तियार से निकल जाएँ, हम अपनी ज़िंदगी के ख़ुद मालिक बन जाएँ। उन्होंने मना किए गए फल में से खा लिया। लेकिन जल्द ही उन्हें मालूम हो गया कि इबलीस झूठा है। क्योंकि उसका हुक्म मानकर वह उसकी मातहती में चले गए थे। अब उनकी ज़िंदगी पर इबलीस का इख़्तियार हो गया था। बल्कि हक़ीक़त में उनकी वजह से तमाम इनसान शैतान के क़ब्ज़े में चले गए। अब आदम और हव्वा को हाँककर अल्लाह की हुज़ूरी से निकाल दिया गया। लेकिन वहाँ से निकलने से पहले ख़ुदा ने उनसे वादा किया कि आइंदा किसी वक़्त एक नजातदहिंदा आएगा जो इनसान को शैतान के क़ब्ज़े से छुड़ाएगा।"

दाऊद ने ज़ोर देकर कहा कि "हम अभी तक अल-मसीह यानी उस नजातदहिंदे का इंतज़ार कर रहे हैं। बहुत अरसा गुज़र गया है। लेकिन जब भी हमारी क़ौम बेदिल होने लगती है तो अल्लाह का वादा उसे नया हौसला देता है। अल्लाह भी अपने नजात के मनसूबे की तकमील कर रहा है। उसने अपने आपको हमारे बुज़ुर्ग इब्राहीम पर ज़ाहिर किया। उसे फ़लस्तीन का मुल्क दिया और वादा किया कि 'तेरी नसल के वसीले से मैं सारी क़ौमों को बरकत दूँगा।' और ऐसा हुआ भी।"

अंटोनियुस ने बात काटी, "मगर इब्राहीम को ही क्यों चुना गया? क्या वह ख़ुदा का चहेता था? या वह दूसरों से बेहतर था?"

पिसकुस ने जवाब दिया, "सारी चीज़ों का ख़ालिक़ जिसे चाहता है, चुन लेता है। क्यों दाऊद?"

दाऊद इस जवाब से हैरान हुआ। मगर अंटोनियुस का शक दूर नहीं हुआ था। "हमने तो कभी नहीं सुना कि कोई मुहब्बत का ख़ुदा भी होता है। या ऐसा ख़ुदा भी होता है जो अपने वादे पूरा करता है। ऐसा सोचना ही हमाक़त है। हमारे देवता तो इनसानों से मिलते-जुलत हैं, इंतक़ाम लेते हैं। वह इनसानों से कहाँ मुहब्बत रखते हैं! वह सिर्फ़ इबादत और क़ुरबानियों का मुतालबा करते हैं। लेकिन इनसान उनकी नज़र में कोई हक़ीक़त नहीं रखते। वह हमसे कोई सरोकार नहीं रखते बल्कि हमसे बहुत दूर रहते हैं। उनसे डरते रहना चाहिए।" दाऊद का इम्तहान लेने

की ग़रज़ से लड़के ने उससे पूछा, “क्या तुम्हारा ख़ुदा ज़ालिम नहीं है कि उसने इनसान पर बीमारी और मौत को आने दिया?”

दाऊद ने अपना सर हिलाया। “नहीं। अल्लाह ने सारी हक़ीक़त आदम और हव्वा के सामने रख दी थी। उसने उन्हें ख़बरदार कर दिया था कि ना-फ़रमानी का नतीजा बहुत हौलनाक होगा। वह मौत के मुँह में चले जाएँगे। मगर इबलीस ने झूठ बोला ताकि उन्हें अपने क़ब्ज़े में कर ले। लेकिन ग़ौर करें, ख़ुदा ने पहले ही एक मनसूबा तैयार कर रखा था। उसने वादा किया कि मैं एक नजातदहिंदा भेजूँगा। हम यहूदी पक्का यक़ीन रखते हैं कि यह वादा जल्द पूरा होने को है। इसी से ज़ाहिर होता है कि अल्लाह अपने ना-फ़रमान और बेवफ़ा बच्चों से अब तक प्यार करता है।”

दाऊद रुका तो अंटोनियुस ने बेसब्री से हाथ हिलाया। “मैं समझ रहा हूँ। कहते जाओ।”

दाऊद ने बात जारी रखी, “बुज़ुर्ग इब्राहीम के बेटे इसहाक़ से याक़ूब पैदा हुआ। उसके बारह बेटे हुए जिनसे बारह क़बीले निकले। पेशगोई की गई थी कि वह मिसर जाएँगे और वहाँ बड़ी मुसीबतों में से गुज़रेंगे। लेकिन फिर आज़ाद किए जाएँगे और फ़लस्तीन के मुल्क में वापस आएँगे। और सचमुच यह सब कुछ पूरा हुआ। वह बहुत साल ग़ुलामी में रहे। वहाँ उनकी तादाद बहुत बढ़ गई। फिर ख़ुदा ने मूसा नबी को बरपा किया। उसने इसराईलियों को ग़ुलामी से छुड़ाया। लेकिन उन्हें अपने

वतन पहुँचने में चालीस बरस लग गए। इस तरह आहिस्ता आहिस्ता वतन तक लाने में अल्लाह का एक मक़सद था। रास्ते में उसने बार बार अपने आपको उन पर ज़ाहिर किया। वह चाहता था कि वह लोग उसे जानें और उसकी मुहब्बत और वफ़ादारी को बेहतर तौर से समझ लें। क्योंकि उसे जानकर ही वह उससे मुहब्बत रख सकेंगे और ख़ुशी से उसकी ख़िदमत कर सकेंगे। मुझे अफ़सोस से कहना पड़ता है कि हमारे लोग ख़ुदा की राहों को जानने और समझने में सुस्त थे। जब भी वह गुनाह करते और अल्लाह की राहों से फिर जाते तो ख़ुदा उन्हें बड़ी सख़्त सज़ा देता। उनको यह सबक़ सीखना पड़ा कि हम पाक ख़ुदा के साथ नारास्त चाल नहीं चल सकते। वह चाहता था कि मेरे लोगों पर मेरी पाकीज़गी, मुहब्बत और वफ़ादारी का गहरा नक़्श सब्त हो जाए। इसराईलियों का फ़र्ज़ था कि दूसरी क़ौमों को बताते कि अल्लाह कितनी अजीबो-ग़रीब हस्ती है। मगर हम इस बात से क़ासिर रहे।"

अंटोनियुस को अभी तक शक था। "जब कोई मर जाता है तो फिर क्या होता है? क्या कोई तसल्लीबख़्श ख़याल पेश कर सकते हो?"

दाऊद ने नफ़ी में सर हिलाया। "बहुत साफ़ जवाब तो नहीं दे सकता। लेकिन जो लोग ज़िंदा ख़ुदा पर ईमान रखते हैं और उसके अहकाम पर चलते हैं वह बुज़ुर्ग इब्राहीम के पास फ़िरदौस में चले जाएँगे। मुझे सिर्फ़ इतना ही पता है। लेकिन ..." और यहाँ उसका लहजा नरम हो गया ... "मौऊदा नजातदहिंदा आनेवाला है। वह हमें सारी बातें बताएगा।"

पिसकुस बड़े शौक़ से आगे को झुका, “तुम यहूदियों ने नजातदहिंदे का यह ख़ाब सारी दुनिया में फैला दिया है। दुनिया तो बिलकुल सड़-गल चुकी है। अकसर लोगों के लिए ज़िंदगी बेमक़सद और बेमानी चीज़ है। बदी ने मुआशरती ज़िंदगी तबाह करके रख दी है। यह हालत कहाँ तक चल सकती है? नजातदहिंदे के बग़ैर इनसानियत ख़ुद को तबाह कर लेगी।”

अंटोनियुस ख़ामोशी से इन बातों पर ग़ौर कर रहा था। वह देवताओं पर यक़ीन नहीं रखता था, मगर यह ज़रूर महसूस करता था कि कोई न कोई ताक़त ज़रूर है जिसने सारी चीज़ें ख़लक़ की हैं। कोई क़ुदरत है जो कायनात के निज़ाम को सँभाले हुए है। क्या यह हैरतअफ़्ज़ा बात नहीं कि हर साल मौसम कैसी बाक़ायदगी और दुरुस्ती के साथ बदलते हैं? बेशक इन सारी बातों के पीछे कोई ज़हीन और बा-शऊर क़ुव्वत मौजूद है। कायनात पर एक नज़र इसकी तसदीक़ करती है। यह दरख़्त और पौधे, यह हैवान और इनसान कैसे अजूबे हैं! मगर सवाल यह है कि क्या कोई मुहब्बत भरा ख़ुदा इनको क़ायम रखे हुए है? और क्या यह ख़ालिक़ यहूदियों का ख़ुदा है?”

यकदम उसके ख़यालात दाऊद की तरफ़ पलटे। बड़े तजस्सुस के साथ उसने सवाल किया, “मुझे बताओ। तुम ग़ुलाम कैसे बन गए? क्या तुम्हारा बाप ज़िंदा है? क्या तुम्हारे भाई-बहन हैं? क्या तुम्हारी माँ अभी तक ज़िंदा है?”

बड़ी तवज्जुह से वह दाऊद की ग़मनाक कहानी सुनने लगा। उसके दिल में तरस का दरिया ठाठें मारने लगा। दाऊद ने ख़तरे के वक़्त उसकी हिफ़ाज़त की थी। अब बदले में वह भी कुछ करना चाहता था। "मैं वालिद साहब से दरख़ास्त करूँगा कि वह तुम्हें आज़ाद कर दें। वह ज़रूर मेरी दरख़ास्त पर अमल करेंगे। अगरचे तुम्हारे चले जाने से मुझे रंज होगा।" उसने माज़रत चाही। अदब से झुककर अपने उस्ताद को सलाम किया और तेज़ी से कमरे से निकल गया।

दाऊद हैरत से बुत बना रह गया। पिसकुस उसे देखकर मुसकराने लगा, "जब तक इस जैसे नरमदिल लड़के मौजूद हैं कुछ न कुछ उम्मीद बाक़ी है," उसने आहिस्ता से कहा।

ग़ैरमुतवक़्क़े तेज़ी से नौजवान रोमी वापस आया और दाऊद को अपने बाप के पास ले गया। सेनेटर एक कुरसी पर नीम-दराज़ था। दाऊद को लगा जैसे वह बीमार है। लेकिन उसके आक़ा ने नरमी से मुसकराकर उसे देखा। "अंटोनियुस ने पुरज़ोर दरख़ास्त की है कि तुम्हें आज़ादी अता की जाए। उसने मुझे तुम्हारे सारे हालात भी सुनाए हैं। मैं बड़ी ख़ुशी से तुम्हें तुम्हारे ख़ानदान को वापस कर दूँगा। कल हम मजिस्ट्रेट के पास चलेंगे तो तुम्हारी आज़ादी तुम्हें वापस मिल जाएगी।"

दाऊद शुक्रगुज़ारी और गहरे जज़बात से मग़लूब होकर नीचे गिरा और सेनेटर के पाँव पकड़ लिए, "आक़ा! आपका बहुत बहुत शुक्रिया।

मेरा बाप बड़ी ख़ुशी से वह रक़म अदा कर देगा जो आपने मेरे लिए अदा की है।”

सेनेटर थके अंदाज़ में कुरसी से टेक लगाए सख़्ती से बोला, “कोई यह नहीं कह सकेगा कि ग्लौकुस के सीने में दिल नहीं है। और हाँ, एक बात से ख़बरदार कर दूँ। वतन वापस जाकर कभी सियासी मामलात में मुलव्वस न होना। वरना तुम पर और तुम्हारे ख़ानदान पर इससे भी बड़ी मुसीबत आ सकती है। उठो, मुझे सहारा दो। मैं अलील हूँ, लेटना चाहता हूँ।”

अगले दिन दाऊद की उम्मीदों पर पानी फिरता नज़र आने लगा। उसके मालिक की हालत नाज़ुक मालूम हो रही थी। अगर वह मर गया तो दाऊद शायद यह अनमोल आज़ादी कभी हासिल न कर सके। इस सूरत में तो शायद तमाम ग़ुलामों को बेच दिया जाए। मुस्तक़बिल बिलकुल ग़ैरयक़ीनी मालूम हो रहा था।

हैरानकुन पैग़ाम

कफ़र्नहूम की टैक्स की चौकी पर बड़ी गहमा-गहमी थी। यह जगह शहर से दूर गलील की झील के क़रीब थी। टैक्स लेनेवाले मत्ती बिन हलफ़ई के कारिंदे इस इलाक़े से माल लेकर गुज़रनेवालों से ज़्यादा से ज़्यादा टैक्स वसूल कर लेने के माहिर थे। लोग टैक्स लेनेवालों को क़हर की निगाहों से देखते थे। लेकिन वह हाथों में तूमार पकड़े मालो-असबाब और ऊँटों और गधों के दरमियान सबसे बेपरवा घूमते-फिरते थे। सामान के बोरे, टोकरे, कपड़े की गाँठें और पेटियाँ खुलती थीं और तूमारों पर टैक्स की रक़म बढ़ती जाती थी। थके-हारे मुसाफ़िर दाँत भींच भींचकर कहते, "बदमाश, हमारी चमड़ी उतार लेने से भी दरेग़ नहीं करते। उधर हुकूमत को भी दाँव लगाते हैं और अमीर से अमीरतर होते जाते हैं।" ऊँट फ़ख्र से गरदन उठाए जुगाली करते रहते। शायद अपने मालिकों की बेचैनी का लुत्फ़ उठाते थे। "अच्छा है इनको भी कभी कभी तकलीफ़ हो। उन्होंने मिसर से लेकर ग़ज़्ज़ा तक हमें मार मारकर अध-मुआ कर

दिया है। शारून के मैदान से गुज़रकर और करमिल से होते हुए हम आख़िर में कफ़र्नहूम पहुँचे हैं। लो, यह टैक्स लेनेवाले उनकी वह चीज़ें भी ढूँड निकालेंगे जिनको छिपाकर मुल्क के अंदर ले जाने की कोशिश में हैं।”

मत्ती ने मग्दल की दबोरा को क़रीब से गुज़रते देखा। वह किसी बोझ तले दबी लग रही थी। उसने देखा कि किसी ने दबोरा को रास्ते में ठहरा लिया है। उनकी गुफ़्तगू की कुछ बातें मत्ती को भी सुनाई देने लगीं। दबोरा कह रही थी, “मग्दलीनी तो बिलकुल जंगली जानवर बन गई है। कोई उसके लिए कुछ नहीं कर सकता। मगर मैंने सुना है कि हज़रत ईसा ऐसे लोगों पर तरस खाते हैं। वह बदरूहों को निकालने की क़ुदरत भी रखते हैं। इसलिए मैंने सोचा कि आकर उनकी बातें सुनूँ ताकि मुझे उनका कुछ पता लग जाए।”

मत्ती के दिल में उस ख़ानदान के लिए बहुत हमदर्दी थी। दुनिया में कैसी कैसी मुसीबतें और दुख हैं! और सबसे बुरी बात यह कि इनसान को यह सब कुछ अकेले ही सहना पड़ता है।

मत्ती को तसल्ली थी कि मेरे कारिंदे बहुत अच्छी तरह काम कर रहे हैं। बहुत-सी कश्तियाँ भी लंगर-अंदाज़ थीं। आज उसे फिर ख़ासी कमाई करने का मौक़ा था। हक़ीक़त में अमीर होने के लिए कफ़र्नहूम अच्छी जगह थी। यह सरहद्दी क़सबा और टैक्स का मरकज़ था। इसके अलावा उसके कई-एक अमीर गाहक थे जो टैक्स की अदायगी से बचने

के लिए बड़ी ख़ुशी से रिश्वत देने को तैयार हो जाते थे। मगर इन सारी बातों के बावुजूद आजकल उसके दिल पर एक बोझ-सा रहता था। आख़िर क्यों? कौन-सी बात उसे बेक़रार रखती बल्कि रात की नींदें भी हराम कर रही थी? कुछ ताज़ादम होने की ख़ातिर वह उठा और झील के किनारे किनारे चलने लगा। गलील की झील छोटी-सी है। शिमाल से जुनूब तक कोई 23 मील लंबी और मशरिक़ से मग़रिब तक 8 मील चौड़ी है। इस पर मछली पकड़ने की बेशुमार कश्तियाँ तैरती फिरती थीं। नीलगूँ पानी के पसमंज़र में सफ़ेद सफ़ेद बादबान बहुत दिलफ़रेब मंज़र पेश करते थे। झील चारों तरफ़ ऊँची-नीची पहाड़ियों से घिरी हुई है, लेकिन आज यह ख़ूबसूरत मंज़र उसका दिल बहला न सका। इफ़राईम बिन सुलेमान ने उसके घर पैग़ाम भेजा था कि मैं तुम्हें एक बहुत बड़ी ख़बर सुनाना चाहता हूँ। “हो सकता है इसका ताल्लुक़ दाऊद से हो,” मत्ती ने बड़ी उम्मीद से सोचा। अगरचे उसे रुपए-पैसे की बड़ी हवस थी ताहम उसका दिल नरम था। उसे इफ़राईम का बहुत एहसास होता था। ख़ैर वह सौदागर आएगा तो ख़बर का पता चलेगा।

झील के किनारे सैर करते वक़्त मत्ती को मानना पड़ा कि हज़रत ईसा ही ने मेरे ख़यालात में हलचल मचा रखी है। इन दिनों में वह गलील में मुनादी करते और शफ़ा देते फिर रहे थे। जब से हज़रत ईसा नासरत से कफ़र्नहूम आ गए थे मत्ती को अकसर उनसे मिलने का इत्तफ़ाक़ हो जाता था। आम तौर पर एक बड़ी भीड़ उनके गिर्द जमा रहती थी। अभी

चंद दिन पहले ही वह इसी झील के किनारे मुनादी कर रहे थे। मत्ती भी दूर खड़ा सुन रहा था। हज़रत ईसा की बातें सुनकर वह काँप गया था। अपने दुनियावी मालो-असबाब में उसकी ख़ुशी जाती रही थी। अब वह बिलकुल ही दिल-बरदाश्ता हो गया था।

भीड़ में से किसी ने हज़रत ईसा से कहा था, "उस्ताद, मेरे भाई से कहें कि मीरास का मेरा हिस्सा मुझे दे।" मगर हज़रत ईसा ने जवाब दिया, "भई, किसने मुझे तुम पर जज या तक़सीम करनेवाला मुक़र्रर किया है?" और फिर भीड़ को मुख़ातिब करके फ़रमाया, "ख़बरदार! हर क़िस्म के लालच से बचे रहना, क्योंकि इनसान की ज़िंदगी उसके मालो-दौलत की कसरत पर मुनहसिर नहीं।"

उन्होंने उन्हें एक तमसील भी सुनाई थी कि "किसी अमीर आदमी की ज़मीन में अच्छी फ़सल पैदा हुई। चुनाँचे वह सोचने लगा, 'अब मैं क्या करूँ? मेरे पास तो इतनी जगह नहीं जहाँ मैं सब कुछ जमा करके रखूँ।' फिर उसने कहा, 'मैं यह करूँगा कि अपने गोदामों को ढाकर इनसे बड़े तामीर करूँगा। उनमें अपना तमाम अनाज और बाक़ी पैदावार जमा कर लूँगा। फिर मैं अपने आपसे कहूँगा कि लो, इन अच्छी चीज़ों से तेरी ज़रूरियात बहुत सालों तक पूरी होती रहेंगी। अब आराम कर। खा-पी और ख़ुशी मना।' लेकिन अल्लाह ने उससे कहा, 'अहमक़! इसी रात तू मर जाएगा। तो फिर जो चीज़ें तूने जमा की हैं वह किसकी होंगी?'

यही उस शख़्स का अंजाम है जो सिर्फ़ अपने लिए चीज़ें जमा करता है जबकि वह अल्लाह के सामने ग़रीब है।”[1]

हज़रत ईसा के इन अलफ़ाज़ ने टैक्स लेनेवाले के ज़मीर को झँझोड़कर रख दिया था। उसे महसूस हुआ कि वह मुझसे ही हमकलाम हैं। हाँ! मालो-दौलत और रुपए-पैसे की ख़ातिर वह बहुत कुछ क़ुरबान करने को तैयार रहता था। जब से वह टैक्स लेनेवाला बना था उस पर इबादतख़ाना भी बंद हो गया था। वह किसी मुक़दमे में अदालत में गवाही भी नहीं दे सकता था। अब उसे चोरों और क़ातिलों के बराबर समझा जाता था। सोचते सोचते मत्ती की पेशानी पर बल पड़ गए। कट्टर यहूदी उसके साथ मिलना भी पसंद नहीं करते थे, क्योंकि टैक्स लेनेवालों को नापाक चीज़ों और नापाक जानवरों के बराबर ख़याल किया जाता था। अब मत्ती को मज़हब की कोई परवा नहीं रही थी। वह इनसानों के बनाए हुए सैंकड़ों अहकाम पर अमल करने का तकल्लुफ़ नहीं कर सकता था। महसूस करता था कि मज़हबी तौर से नहाने-धोने और तहारत करने से गुनाह नहीं धुल सकते। न बेहतर ज़िंदगी बसर करने में इन बातों से कोई मदद मिलती है। दीनी राहनुमा अपनी नेकी और पाकीज़गी पर फ़ख़्र करते थे। लेकिन क्या इन लीडरों को आम इनसानों से मुहब्बत नहीं करनी चाहिए? वह तो आम लोगों को लानती समझते हैं जो शरीअत के एक एक शोशे को पूरा नहीं कर सकते।

---

1 लूक़ा 12:13-21

मत्ती ने महसूस किया कि हज़रत ईसा दूसरों से कितने मुख़्तलिफ़ हैं। उनकी बातें अल्लाह की तरफ़ से हैं और सीधी दिल में उतर जाती हैं। उनका कलाम सुनकर उसे एहसास हुआ कि मेरी रूह ख़ुदा के लिए तड़प रही है और उसे ख़ुश करने की आरज़ूमंद है। मत्ती अपनी ज़िंदगी में गहरे मतलब और मक़सद के लिए तड़पने लगा। अब तक वह सिर्फ़ अपने लिए ख़ज़ाना जमा करता रहा था। अल्लाह के लिए उसने क्या किया था? उसने ख़ुदा की क्या परवा की थी? अगर आज रात उसकी जान चली जाए तो क्या होगा?

सवाल यह था कि अब वह अपनी ज़िंदगी को कैसे बदले? टैक्स लेनेवाला बन जाने के बाद कोई यहूदी संजीदगी से उसकी तरफ़ मुतवज्जिह नहीं होगा। उनकी नज़रों में वह ऐसा गया-गुज़रा गुनाहगार है जिसके लिए कोई उम्मीद नहीं। शमाऊन पतरस और उसका भाई अंदरियास कितने ख़ुशक़िसमत थे। वह यूहन्ना बिन ज़बदी और उसके भाई याक़ूब समेत हज़रत ईसा के शागिर्द बन गए थे। हज़रत ईसा ने उन्हें अपने ख़ास शागिर्द बना लिया था।

मत्ती, शमाऊन पतरस के बारे में सोचकर ख़ुद ही मुसकराने लगा। गुज़श्ता दिनों अकसर इन दोनों की मुलाक़ात होती रही थी। शमाऊन, हज़रत ईसा के बारे में जोश से भरा हुआ था। वह बड़े एतमाद से कहता था कि “यही अल-मसीह हैं। देखा नहीं कितनी भीड़ सारा वक़्त उनके पीछे पीछे चलती रहती है? वह पैदाइशी लीडर हैं। रफ़्ता रफ़्ता वह

ज़ाहिर करेंगे कि मैं अल-मसीह हूँ। तब वह क़ौम को इज़्ज़त और जलाल बख़्शेंगे।”

उसका भाई अंदरियास एतदालपसंद आदमी था। मत्ती सोचता था कि ऐसे जोशीले भाई के साथ ज़िंदगी गुज़ारना कितना मुश्किल होता होगा! शमाऊन पतरस ने उसे यह भी बताया था कि वह किस तरह हज़रत ईसा के शागिर्द बन गए थे। एक दिन वह झील में जाल डाल रहे थे कि हज़रत ईसा वहाँ से गुज़रे। अचानक वह रुके और कहने लगे, “आओ, मेरे पीछे हो लो। मैं तुमको आदमगीर बनाऊँगा।” शमाऊन पतरस ने मत्ती को बताया कि “मालिक की आवाज़ सुनकर हम फ़ौरन तैयार हो गए। हम एक बड़े मक़सद के लिए सब कुछ छोड़ देने को तैयार थे।” उसने यह भी बताया कि “हमारे मालिक को अगले चंद शागिर्द चुनने में देर नहीं लगी। हम झील के किनारे किनारे चले जा रहे थे कि ज़बदी का ख़ानदान मिल गया। ज़बदी और उसके बेटे यूहन्ना और याक़ूब जालों की मरम्मत कर रहे थे। वह पहले ही हज़रत ईसा को जानते थे। इसलिए जब उन्होंने उन्हें बुलाया तो हमें हैरानी न हुई। वह फ़ौरन अपने बाप को कश्ती में छोड़ उनके पीछे हो लिए।”

मत्ती ने देखा था कि इन दिनों हज़रत ईसा क़रीबी शागिर्दों के गुरोह में घिरे रहते थे। वह अकसर हैरान होता था कि आतिशमिज़ाज शमाऊन पतरस और ग़ौरो-फ़िकरवाली तबीयतवाला यूहन्ना बिन ज़बदी इकट्ठे किस तरह गुज़ारा करेंगे। अगरचे मत्ती जानता था कि ज़बदी के बेटे भी

कभी कभी निहायत ग़ुस्से हो जाया करते हैं। उनको "गरज के बेटे" यों ही तो नहीं कहते थे।

टैक्स लेनेवाला चौकी पर वापस आ गया। उसे बड़ी ख़ुशी हुई। इफ़राईम बिन सुलेमान उसका इंतज़ार कर रहा था। सौदागर फुरती से उठकर मत्ती से मिला। और उठते ही कहने लगा, "अल्लाह ने मुझ पर बड़ी मेहरबानी की है। मेरे बेटे दाऊद से बड़ी अच्छी ख़बर मिली है। रोम से उसके मालिक ने चिट्ठी भेजी है कि दाऊद को आज़ादी मिल गई है और कि वह घर आ रहा है। उसका मालिक सख़्त बीमार हो गया था। वरना उसे जल्दी घर भेज देता।"

मत्ती की आँखें भर आईं, "मुबारक हो आलीजाह! मुबारक हो!" उसने गरमजोशी से कहा, "हर क़ौम में नेक लोग भी होते हैं।"

बाहर से तरह तरह की आवाज़ें मुतवातिर चौकी के अंदर आ रही थीं। कभी गधे ढीनचूँ ढीनचूँ करते तो कभी ऊँट बिलबिलाने लगते। टैक्स लेनेवालों के मुतालबे और देनेवालों की शिकायात का शोर अजीब बेहंगम-सा लग रहा था। अचानक एक भीड़ की आमद आमद के शोर ने बाक़ी सारी आवाज़ों को माँद कर दिया। मत्ती ने जल्दी से बाहर झाँका तो कहने लगा, "यह तो हज़रत ईसा आ रहे हैं।" मर्दों, औरतों और बच्चों का बेपनाह हुजूम खिड़की के सामने से गुज़रने लगा तो वह बोला, "जनाब, यह हज़रत ईसा तो ख़ास ही हस्ती हैं। आसमान की बातें तो ऐसे करते हैं कि इनसान का दिल बेइख़्तियार चाहने लगता है कि वहाँ

पहुँच जाए। कहते हैं कि ख़ुदा मुहब्बत है और ख़ुद उनकी अपनी ज़िंदगी में मुहब्बत साफ़ दिखाई देती है। रास्ते ही में वह बीमारों को शफ़ा देते, कमज़ोरों और बेसहारों की मदद करते हैं।” मत्ती ज़रा दम लेने को रुका और फिर बोला, “मेरे जैसे मुआशरे के धुतकारे हुए तो उनकी मुहब्बत को ख़ास तौर से महसूस करते हैं। जब भी मेरी आँखें उनकी आँखों से चार होती हैं तो मुझे मुहब्बत और हमदर्दी ही नज़र आती है। और मेरा दिल चाहता है कि ज़िंदगी को नए सिरे से शुरू करके इसे सिर्फ़ अल्लाह के लिए बसर करूँ।” अब उसके लहजे में ज़रा तुंदी आ गई, “हमारे दीनी पेशवा कितने मुख़्तलिफ़ हैं! वह शरीअत की ज़रा ज़रा-सी बात पर अमल करने की कोशिश करते रहते हैं। मगर इनसानों और ख़ुदा के लिए मुहब्बत नाम को नहीं। कितने अफ़सोस की बात है।”

इफ़राईम ने फ़िकरमंदी से कहा, “जहाँ तक हज़रत ईसा का ताल्लुक़ है, वह मुसीबत की तरफ़ ही गामज़न हैं। हमारे लीडरों ने उनके ख़िलाफ़ एका कर लिया है, यहाँ तक कि ख़तरा है कि उन्हें तबाह ही कर दें।” फिर आह भरकर कहा, “कहीं मेरा आतिशमिज़ाज बेटा दाऊद दुबारा किसी ख़तरे में न कूद पड़े।”

मत्ती ने भी ऐसे ही अंदेशे का इज़हार किया, “मैंने सुना है कि हज़रत ईसा पर इबादतख़ाने बंद किए जा रहे हैं। मैं तो कहता हूँ कि इसकी वजह सिर्फ़ यह है कि हमारे पेशवा उनसे जलते हैं। सारी दुनिया उनकी पैरवी कर रही है, क्योंकि वह अल्लाह की आवाज़ हैं। उन्होंने कितनों

को बिलकुल नई ज़िंदगी अता की है! मैंने उस आदमी के बारे में भी सुना है जिसको उन्होंने सबत के दिन इबादतख़ाने के अंदर शफ़ा दी। उसका हाथ सूखकर बिलकुल बेकार हो चुका था। जब हज़रत ईसा ने उसे शफ़ा बख़्शी तो उसका हाथ बिलकुल पहले जैसा हो गया। अब वह भी दूसरे आदमियों की तरह काम करके इज़्ज़त की रोटी खा सकता है। लेकिन क्या हमारे लीडर इस बात पर ख़ुश हुए? नहीं। बल्कि बुड़बुड़ाने लगे कि "सबत के दिन काम करना रवा नहीं।"

मत्ती ग़ुस्से से बोलता गया, "एक और मौक़े पर हज़रत ईसा ने एक कुबड़ी औरत को शफ़ा दी। बेचारी की कमर इतनी झुकी हुई थी कि अपने पाँवों से आगे देख भी नहीं सकती थी। हज़रत ईसा ने उस पर रहम किया। बदक़िस्मती से यह वाक़िया भी सबत ही को हुआ। लीडर फिर उनके मुख़ालिफ़ हो गए। उनको उस औरत की ख़ुशी एक आँख नहीं भाई। इस बार तो हज़रत ईसा ने उन्हें झिड़क दिया। कहा, "तुम कितने रियाकार हो! क्या तुममें से हर कोई सबत के दिन अपने बैल या गधे को खोलकर उसे थान से बाहर नहीं ले जाता ताकि उसे पानी पिलाए? अब इस औरत को देखो जो इब्राहीम की बेटी है और जो 18 साल से इबलीस के बंधन में थी। जब तुम सबत के दिन अपने जानवरों की मदद करते हो तो क्या यह ठीक नहीं कि औरत को इस बंधन से रिहाई दिलाई जाती, चाहे यह काम सबत के दिन ही क्यों न किया

जाए?”[1] यह बात सुनकर इबादतख़ाने के सरदार शरमिंदा होकर रह गए। लेकिन दूसरे सारे लोग बहुत ख़ुश हुए। वह महसूस कर रहे थे कि ख़ुदा की मुहब्बत हमारे दरमियान है।” लमहे-भर के बाद उसने बात जारी रखी, “अगर मैं नए सिरे से ज़िंदगी शुरू कर सकूँ तो उसे पूरे दिल से हज़रत ईसा को दे दूँगा। सिर्फ़ रुपए-पैसे ही इनसान को ख़ुश नहीं कर सकते।”

इफ़राईम उठ खड़ा हुआ, “आओ दोस्त, चलकर उस्ताद के पीछे हो लें। मुझे बहुत शौक़ है कि ख़ुद उनकी बातें सुनूँ।” वह जल्दी जल्दी झील के साथ साथ भीड़ की तरफ़ चलने लगे। अचानक इफ़राईम को एक नौजवान नज़र आया जो कुछ शनासा लगता था। वह सोचने लगा यह कौन है? शमाऊन ज़ेलोतेस लगता है! वही जो दाऊद के मुताल्लिक़ बुरी ख़बर लेकर आया था। अब वह बड़े ग़ौर से हज़रत ईसा की बातें सुन रहा है। इफ़राईम ने इशारे से मत्ती को उधर मुतवज्जिह किया। “अगर यह शख़्स हज़रत ईसा का शागिर्द हो जाए तो मुझे हरगिज़ ताज्जुब नहीं होगा।”

मत्ती ने भी सर हिलाया, “हज़रत ईसा के क़रीब उन दूसरे नौजवानों को भी देखो। उन पर फ़रेफ़्ता मालूम होते हैं। वह क़ुनूतीपसंद तोमा है। और वह जसीम जैसा तद्दी है।”

---

1 लूक़ा 13:15-16

इफ़राईम मुसकराया, “मैं याकूब बिन हलफ़ई और यहूदाह बिन याक़ूब को भी पहचानता हूँ। बड़े अच्छे जवान हैं। और देखो, यहूदाह इस्करियोती भी उनके आस-पास मँडला रहा है। ख़ूब! बहुत ख़ूब!”

हज़रत ईसा एक कश्ती में बैठे थे। उनकी सुरीली आवाज़ लहरों पर से होती हुई भीड़ तक साफ़ साफ़ पहुँच रही थी। उनके कलाम में कितना इख़्तियार था! एक दुबले-पतले झुके हुए बुज़ुर्ग ने उन्हें धीमी आवाज़ में बताया, “कुछ फ़रीसी और आलिम कह रहे थे कि हज़रत ईसा को टैक्स लेनेवालों और गुनाहगारों से मेल-मुलाक़ात नहीं रखनी चाहिए। लगता है कि अब वह उन्हें जवाब दे रहे हैं।” बूढ़ा आदमी खिलखिला उठा। लेकिन इफ़राईम ने उसे चुप कराकर पूरी तवज्जुह से सुनने लगा।

“फ़र्ज़ करो कि तुममें से किसी की सौ भेड़ें हैं। लेकिन एक गुम हो जाती है। अब मालिक क्या करेगा? क्या वह बाक़ी 99 भेड़ें खुले मैदान में छोड़कर गुमशुदा भेड़ को ढूँडने नहीं जाएगा? ज़रूर जाएगा, बल्कि जब तक उसे वह भेड़ मिल न जाए वह उसकी तलाश में रहेगा। फिर वह ख़ुश होकर उसे अपने कंधों पर उठा लेगा। यों चलते चलते वह अपने घर पहुँच जाएगा और वहाँ अपने दोस्तों और हमसायों को बुलाकर उनसे कहेगा, ‘मेरे साथ ख़ुशी मनाओ! क्योंकि मुझे अपनी खोई हुई भेड़ मिल गई है।’ मैं तुमको बताता हूँ कि आसमान पर बिलकुल इसी तरह ख़ुशी मनाई जाएगी जब एक ही गुनाहगार तौबा करेगा। और यह ख़ुशी उस

ख़ुशी की निसबत ज़्यादा होगी जो उन 99 अफ़राद के बाइस मनाई जाएगी जिन्हें तौबा करने की ज़रूरत ही नहीं थी।”[1]

कुछ लीडरों ने मुँह बना लिए। एक तो बुड़बुड़ाकर दूसरे से कहने लगा, “इसका इशारा हमारी तरफ़ है। भला हमें किस बात से तौबा करने की हाजत है? हमने कौन-सी ग़लती की है?”

दूसरे लीडर ने भवें चढ़ाकर जवाब दिया, “उसकी समझ में यह बात नहीं आती कि कोई शरीअत की पूरी पूरी पाबंदी भी कर सकता है। वह तो ख़ुद भी रास्तबाज़ों में शामिल नहीं। सबत को तोड़ता रहता है।”

मत्ती दोनों को अच्छी तरह जानता था। इनमें से एक तो अपनी सख़्तमिज़ाजी और दूसरा अपने लालच और हवस की वजह से बदनाम था। उनकी बातों पर उसे बड़ा अफ़सोस हुआ। वह बिलकुल नहीं समझते थे कि अल्लाह का मेयार कहीं रहा, इनसान के मेयार पर भी पूरे नहीं उतरते।

हज़रत ईसा के पैग़ाम से मत्ती को ख़ुशी हुई कि ख़ुदा को गुनाहगारों में दिलचस्पी है जबकि लीडर तो उन्हें अल्लाह से दूर रखने की कोशिश कर रहे हैं। काश मैं हज़रत ईसा से पूछ सकूँ कि मेरी अपनी हालत के बारे में क्या किया जाए?

अब हज़रत ईसा एक और तमसील सुनाने लगे, “किसी आदमी के दो बेटे थे। इनमें से छोटे ने बाप से कहा, ‘ऐ बाप, मीरास का मेरा

1 लूक़ा 15:4-7

हिस्सा दे दें।’ इस पर बाप ने दोनों में अपनी मिलकियत तक़सीम कर दी। थोड़े दिनों के बाद छोटा बेटा अपना सारा सामान समेटकर अपने साथ किसी दूरदराज़ मुल्क में ले गया। वहाँ उसने ऐयाशी में अपना पूरा मालो-मता उड़ा दिया। सब कुछ ज़ाया हो गया तो उस मुल्क में सख़्त काल पड़ा। अब वह ज़रूरतमंद होने लगा। नतीजे में वह उस मुल्क के किसी बाशिंदे के हाँ जा पड़ा जिसने उसे सुअरों को चराने के लिए अपने खेतों में भेज दिया। वहाँ वह अपना पेट उन फलियों से भरने की शदीद ख़ाहिश रखता था जो सुअर खाते थे, लेकिन उसे इसकी भी इजाज़त न मिली। फिर वह होश में आया। वह कहने लगा, ‘मेरे बाप के कितने मज़दूरों को कसरत से खाना मिलता है जबकि मैं यहाँ भूका मर रहा हूँ। मैं उठकर अपने बाप के पास वापस चला जाऊँगा और उससे कहूँगा, “ऐ बाप, मैंने आसमान का और आपका गुनाह किया है। अब मैं इस लायक़ नहीं रहा कि आपका बेटा कहलाऊँ। मेहरबानी करके मुझे अपने मज़दूरों में रख लें”।’ फिर वह उठकर अपने बाप के पास वापस चला गया। लेकिन वह घर से अभी दूर ही था कि उसके बाप ने उसे देख लिया। उसे तरस आया और वह भागकर बेटे के पास आया और गले लगाकर उसे बोसा दिया। बेटे ने कहा, ‘ऐ बाप, मैंने आसमान का और आपका गुनाह किया है। अब मैं इस लायक़ नहीं रहा कि आपका बेटा कहलाऊँ।’ लेकिन बाप ने अपने नौकरों को बुलाया और कहा, ‘जल्दी करो, बेहतरीन सूट लाकर इसे पहनाओ। इसके हाथ में अंगूठी और

पाँवों में जूते पहना दो। फिर मोटा-ताज़ा बछड़ा लाकर उसे ज़बह करो ताकि हम खाएँ और ख़ुशी मनाएँ, क्योंकि यह मेरा बेटा मुरदा था अब ज़िंदा हो गया है, गुम हो गया था अब मिल गया है।'"[1]

इफ़राईम हैरान रह गया। भीड़ में से और भी बहुत-से लोगों का यही हाल था। उनके लिए यह ख़याल बिलकुल नया था कि ख़ुदा बाप की हैसियत रखता है। बेशक पाक सहायफ़ में बाज़ मक़ामात में लिखा है कि अल्लाह बाप है, लेकिन किस में जुर्रत थी कि उसे बाप कहता। लेकिन यह तमसील सुनने के बाद हर किसी को एहसास होने लगा कि ख़ुदा सचमुच चाहता है कि हम उसे बाप जानें और मानें। मत्ती के आँसू बहने लगे लेकिन वह शरमाया नहीं। उसने इफ़राईम के सामने इक़रार किया, "मैं भी तमसील के इस खोए हुए बेटे की मानिंद हूँ।" उसने अपने आँसू पोंछे। "यह तमसील सुनने के बाद मैं जान गया हूँ कि आसमानी बाप मुझे रद नहीं करेगा, बल्कि वह तो चाहता है कि मैं उसके पास वापस आ जाऊँ। कैसा उम्दा ख़याल है! और इफ़राईम ज़रा सोचो। वह मुझे बेटे के तमाम एज़ाज़ दुबारा देने को भी तैयार है। यक़ीन नहीं आता!" मत्ती के लिए यह ख़याल सबसे ज़्यादा हैरतअंगेज़ था कि अल्लाह की मुझसे मुहब्बत में कभी कमी नहीं आई।

शमाऊन ज़ेलोतेस उनके सामने खड़ा हुआ। लेकिन उसके साथ कौन है? उसका आधा चेहरा ढका हुआ था। आख़िर इफ़राईम ने उसे पहचान

1 लूक़ा 15:11-24

लिया। वह गोरिल्लों का सरग़ना बर-अब्बा था। वह ज़ोर से शमाऊन से कह रहा था कि हमारी तनज़ीम में शामिल हो जाओ। शमाऊन ने जवाब दिया, “बर-अब्बा, अब तक इसी पर ज़ोर देता आया हूँ कि हमारी क़ौम की क़ुव्वत और शान बहाल हो जाए। मगर अब . . .” बर-अब्बा ने बेसब्री से पूछा, “अब क्या? नौजवान! इससे बड़ी बात और क्या हो सकती है! हमें इसके लिए कुछ करना है। क्या इस ईसा ने तुम्हारे भी ख़यालात बदल दिए हैं?”

शमाऊन ने सर हिलाया। “इनसे मिलने के बाद मुझे मालूम हो गया कि दुनियावी चीज़ें इनसान को मुतमइन नहीं कर सकतीं। हमारी रूहें ख़ुदा को पुकारती रहती हैं, और वह अल्लाह ही में इतमीनान पाएँगी।”

बर-अब्बा हिक़ारत से बोला, “बेसमझ नौजवान ही ऐसी बातें किया करते हैं। तुम तो हमारे मक़सद के दिलो-जान से हामी थे। अब कैसे छोड़ जाओगे! शेबा, अकीम और हम सब इसराईल की बादशाही की बहाली के लिए जान तक क़ुरबान करने को तैयार हैं। हमें तुम्हारी भी ज़रूरत है।”

शमाऊन ने फ़ैसलाकुन जवाब दिया, “मुझे तो माफ़ ही रखिए। अफ़सोस है कि आपको मायूस कर रहा हूँ। हज़रत ईसा ने मेरी आँखें खोल दी हैं। मैं एक बहुत बड़ी बुलाहट को देख रहा हूँ। मैं ख़ुदा का फ़रज़ंद हूँ और हज़रत ईसा के साथ उस वक़्त तक रहूँगा जब तक यह

मालूम न हो जाए कि मैं किस तरह उस बुलावे के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ार सकूँ।”

“गधे। वक़्त ज़ाया करोगे। कुछ अरसा तो हज़रत ईसा लोगों को ख़ुश करता रहेगा। बीमारों को शफ़ा देगा और अल्लाह के मुताल्लिक़ बातें करके सबका दिल बहलाता रहेगा। मगर फिर मर जाएगा और लोग उसे भूल जाएँगे। मैं कहता हूँ कि उसके लिए यह अच्छा होगा कि हमारे साथ मिल जाए। उसकी क़ुव्वत और मक़बूलियत दुश्मन को बौखला सकती है और यों उसका नाम हर एक की ज़बान पर रहेगा।” फिर बर-अब्बा ने बेसब्री से पूछा, “यह बताओ कि तुम क्या मालूम करना चाहते हो?”

“सबसे बड़ा सवाल तो यह है कि मैं ख़ुदा की नज़र में कैसे मक़बूल ठहर सकता हूँ। अगर मैं उसका फ़रज़ंद हूँ तो कोई तरीक़ा तो होगा कि मैं पाक बनूँ और उसकी क़ुरबत में रह सकूँ! और मैं यह मालूम करके रहूँगा। मुझे एहसास हो रहा है कि हज़रत ईसा के पास ही इस सवाल का जवाब है।”

बर-अब्बा तो बुड़बुड़ाता हुआ चला गया। मत्ती और इफ़राईम हैरान रह गए कि हज़रत ईसा की तालीम ने लोगों पर कितना गहरा असर किया है। अब वह टैक्स की चौकी पर आ पहुँचे थे। इफ़राईम तो पालकी में बैठकर घर को रवाना हो गया, लेकिन मत्ती अपनी चौकी के बाहर ही बैठ गया। आसमानी बाप के साथ अपना रिश्ता बहाल करने की आरज़ू

उसे बेचैन कर रही थी। उसकी आँखें भीड़ पर लगी थीं जो आहिस्ता आहिस्ता वापस आ रही थी।

अचानक हज़रत ईसा उसकी तरफ़ बढ़े। उनकी निगाहें मत्ती पर जम गईं जैसे वह उसके दिल में उतरकर उसके ख़यालात की तलाशी ले रहे हों। फिर उन्होंने हुक्म दिया, "मेरे पीछे हो ले।" हज़रत ईसा की नज़रें आज के मत्ती को नहीं देख रही थीं बल्कि उस मत्ती को जो वह अल्लाह के फ़ज़ल से बननेवाला था। भीड़ हैरानी से देखती रह गई कि मत्ती ने ज़रा झिझक नहीं किया। उठकर फ़ौरन हज़रत ईसा के पीछे हो लिया।

एक बूढ़ी औरत से रहा न गया। वह पुकार उठी, "यक़ीन नहीं आ रहा। लालची मत्ती दीनदार कैसे बन गया है!" बेचारा याक़ूब भी जल-भुनकर बोला, "सारी दौलत यहीं छोड़ गया है। नाक़ाबिले-यक़ीन!"

लेकिन हज़रत ईसा के शागिर्दों में शामिल होने से पहले मत्ती ने अपने तमाम दोस्तों की ज़ियाफ़त की। वह चाहता था कि वह भी हज़रत ईसा से मिलें। उनकी पुरफ़ज़ल बातें सुनें। उसे उम्मीद थी कि वह भी जान लेंगे कि आसमान हमारे लिए खुल गया है और ख़ुदा बाप हमारे उसके पास वापस आने की राह देख रहा है।

उस शाम उसका घर हंसी-ख़ुशी की आवाज़ों से गूँज उठा। बहुत-से लोग बाहर से झाँक झाँककर यह देखने की कोशिश करने लगे कि अंदर क्या हो रहा है। पहले इलियाब और इलीसमा नाम दो फ़रीसी आए। उनका बहुत एहतराम से इस्तिक़बाल किया गया। किसी ने सरगोशी

की, “यह ज़ियाफ़त की रौनक़ बढ़ाएँगे।” औरों का ख़याल था कि वह बदमज़गी पैदा करेंगे। किसी ने कहा, “इलीसमा की गरमागरम आवाज़ तो सुनो। वह हज़रत ईसा के शागिर्दों से बहस कर रहा है।”

वह इलज़ाम लगा रहा था, “आपका उस्ताद टैक्स लेनेवालों और गुनाहगारों के साथ क्यों खाता है?”[1]

एक नौजवान मुँह बनाकर बोला, “अब देखते हैं कि वह क्या जवाब देते हैं?”

पास खड़े लोगों ने उसे चुप कराया, “हश! उस्ताद ख़ुद जवाब दे रहे हैं।” वह हैरान थे कि वह किस तरह पूरे माहौल पर छाए हुए हैं।

उन्होंने बड़े वक़ार से जवाब दिया, “सेहतमंदों को डाक्टर की ज़रूरत नहीं होती बल्कि मरीज़ों को। पहले जाओ और कलामे-मुक़द्दस की इस बात का मतलब जान लो कि ‘मैं क़ुरबानी नहीं बल्कि रहम पसंद करता हूँ।’ क्योंकि मैं रास्तबाज़ों को नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ।”[2]

किसी ने तारीफ़ की, “बहुत ख़ूब! इन इलज़ामतराश फ़रीसियों को कैसा उम्दा जवाब दिया। यह तो ऐसे डाक्टरों की मानिंद हैं जो अपने मरीज़ों के मरज़ से डरते हैं। ख़ुद को रास्तबाज़ गरदानते हैं और डरते हैं कि कहीं गुनाहगार इनको नापाक न कर दें।”

---

1 मत्ती 9:11

2 मत्ती 9:12-13

पास खड़े एक और आदमी ने बात मुकम्मल कर दी, “उनकी मदद करने के बजाए दूर खड़े होकर तमाशा देखते हैं।”

सब बहुत ख़ुश थे कि कम-से-कम एक ऐसी हस्ती तो है जिसे अपनी पाकीज़गी के गिर्द दीवारें खड़ी करने की ज़रूरत तो नहीं। वह हर एक की मदद करने को तैयार हैं, चाहे वह कैसा ही गुनाहगार क्यों न हो।

यह ख़बर बड़ी तेज़ी से सारे कफ़र्नहूम में फैल गई। लोग एक दूसरे से कहते, “पता है क्या हुआ? मत्ती टैक्स लेनेवाले को भी हज़रत ईसा ने भरती कर लिया है और वह भी उनका शागिर्द बन गया है। कितनी नाक़ाबिले-यक़ीन बात!” कई लोग इस बात से बहुत ख़ुश थे। ख़ासकर वह जिन्होंने मत्ती की तरह अपनी ज़िंदगी को तबाह कर रखा था। उन्हें अपने लिए भी उम्मीद नज़र आने लगी थी। लेकिन दीनी राहनुमा बहुत गज़बनाक थे। वह हज़रत ईसा की मक़बूलियत को ख़त्म करने में लग गए। अब यरूशलम में उनसे छुटकारा हासिल करने की साज़िशें होने लगीं।

क़रीब से जायज़ा

मत्ती की दुनिया बहुत बदल गई। अब वह हज़रत ईसा और उनके शागिर्दों के साथ रहने लगा। सबने मिलकर यहूदाह इस्करियोती और शमाऊन ज़ेलोतेस को भी अपने हलक़े में ख़ुशआमदीद कहा। अब यहूदाह बिन याक़ूब, तोमा, याकूब बिन हलफ़ई और तद्दी भी इनमें शामिल हो गए थे। इससे पेशतर कि हज़रत ईसा ने उनको बुलाया वह कुछ अरसे तक उनके पीछे पीछे फिरते, उनकी बातें सुनते और उन्हें देखते-भालते रहे थे।

अब यह बारह शागिर्द हज़रत ईसा के दिन-रात के साथी थे। आज सुबह वह जागे तो अपने मालिक को मौजूद न पाया। वह जानते थे कि किसी तनहा जगह दुआ माँगने गए होंगे। बाज़ औक़ात वह सारी सारी रात दुआ में गुज़ार देते।

मत्ती ने अँगड़ाई ली और उठकर बैठ गया। उसने दूसरों को छेड़ा, “अरे नींद के मतवालो! जागो।” साथियों को देखकर उसे एहसास

हुआ कि हम ज़्यादातर नौजवान ही हैं। चंद एक को छोड़कर बाक़ी सब बीस-एक के पीटे में होंगे। कोई जमाइयाँ ले रहा था। कोई अँगड़ाइयों की मदद से नींद का ख़मार दूर कर रहा था कि मत्ती की आवाज़ उभरी, “मेरी समझ में नहीं आता कि हमारे उस्ताद किस तरह सारी सारी रात दुआ में गुज़ार देते हैं। काश कि किसी दिन उनसे दुआ माँगना सीखूँ।”

शमाऊन पतरस ने हँसते हुए कहा, “जी हाँ बुज़ुर्गवार। दो-चार इज़ाफ़ी सबक़ ले लो तो बेहतर ही है। लेकिन एक टैक्स लेनेवाले से क्या उम्मीद रखी जा सकती है?”

मत्ती भी ख़ुशमिज़ाजी से हँस दिया, “मैं कहता हूँ कि मालिक को तुम्हारी तेज़ ज़बान और गरम तबीयत को सुधारने में भी ख़ास मेहनत करनी पड़ेगी। क्यों मछेरे?” अब बाक़ी भी बेदार हो चुके थे। क़ुनूतीपसंद तोमा कहने लगा, “सिर्फ़ हमारे मालिक ही हम जैसे गुरोह को जिसमें इतने रंगारंग मिज़ाजों के अफ़राद शामिल हों क़ाबू में रख सकते हैं।”

तद्दी भी कुछ सोचते हुए बोला, “मैं वह दिन कभी नहीं भूल सकता जब हज़रत ईसा ने इतने सारे पैरोकारों में से हम बारह को ख़ास शागिर्द मुक़र्रर किया था। उम्मीद है कि मैं उन्हें कभी मायूस नहीं करूँगा।”

यूहन्ना बिन ज़बदी अपनी जूतियाँ तलाश करते हुए कहने लगा, “सुनो साथियो! हमें अपने बुलावे पर किसी ख़ुशफ़हमी में मुब्तला नहीं होना चाहिए। मुझे यक़ीन है कि हज़रत ईसा की आँखों में हर एक

यकसाँ क़ीमती है। बात सिर्फ़ इतनी है कि उनके पास फ़रक़ फ़रक़ आदमियों के लिए फ़रक़ फ़रक़ काम हैं।”

मत्ती ख़ुश होकर बोला, “बिलकुल ठीक कहते हो। मुझे बहुत ख़ुशी है कि मालिक ने मज़ीद सत्तर अफ़राद को भी मुक़र्रर किया कि बिशारत के इस अज़ीम काम में मदद दें।” फिर उसने एतराफ़ किया, “मैं इतना ज़रूर कहूँगा कि जब हज़रत ईसा ने हमें दो दो करके गलील के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में भेजा था तो मैं सख़्त घबरा गया था।” उसने ख़ुश्क होंटों पर ज़बान फेरी, “मैं यह मुनादी करने को तैयार था कि आसमान की बादशाही नज़दीक आ गई है। लेकिन जब हज़रत ईसा ने यक़ीन दिलाया कि मैं तुम्हें हर क़िस्म के बीमारों को शफ़ा देने और बदरूहों को निकालने का इख़्तियार देता हूँ तो मैं थर्रा उठा।”

अंदरियास ने उसकी पीठ पर थपकी देते हुए कहा, “मैं भी महसूस करता था कि मेरा ईमान कमज़ोर है। लेकिन हमारे मालिक ने हमारे ईमान को तक़वियत दी। हाँ, और बाद में जब उन्होंने उन सत्तर को यही इख़्तियार देकर भेजा तो उनको भी मालूम हो गया कि हम हज़रत ईसा के नाम में बड़े बड़े निशान और मोजिज़े दिखा सकते हैं।”

फ़िलिप्पुस उछलकर खड़ा हो गया, “भाइयो! ऐसे तो काम नहीं चलेगा। सारी जगह को ठीक-ठाक करके नाश्ता तैयार करो। हमारे आक़ा क्या कहेंगे कि ...”

“घबराओ मत,” नतनेल ने तसल्ली दी। “हाथों हाथ काम जल्दी निमट जाता है।” फिर उस पहले दौरे को याद करते हुए उसने कहा, “जब हम हज़रत ईसा के पास वापस आए तो कैसे जोश से भरे हुए थे। हमने आते ही ख़बर दी कि ‘ख़ुदावंद, जब हम आपका नाम लेते हैं तो बदरूहें भी हमारे ताबे हो जाती हैं।’[1] मगर हमारे मालिक के नज़दीक यह कोई बड़ी बात नहीं थी। उन्होंने जवाब दिया कि ‘इस वजह से ख़ुशी न मनाओ कि बदरूहें तुम्हारे ताबे हैं, बल्कि इस वजह से कि तुम्हारे नाम आसमान पर दर्ज किए गए हैं।’”[2]

“आमीन,” मत्ती बोला। “क्या कोई मेरे जैसा आदमी समझ सकता है कि मेरा नाम आसमान पर लिखा जा सकता है? मैं पूरी तरह तो नहीं समझ सकता लेकिन इतना जानता हूँ कि जब से मैंने पुरानी लालच की ज़िंदगी छोड़कर हज़रत ईसा के पीछे चलने लगा हूँ उस वक़्त से मेरा दिल एक नई ख़ुशी से मामूर हो गया है। अब मेरे दिल में अल्लाह के लिए बड़ी तड़प है। मैं उन्हें और भी ज़्यादा जानने और उनकी ख़िदमत करने की आरज़ू रखता हूँ। इससे पहले किसी ने मेरी आँखें नहीं खोली थीं। यह काम तो हज़रत ईसा ने ही किया।”

तोमा आटा लाकर गूँधने लगा, “कल-परसों मैं सोच रहा था कि अगरचे हज़रत ईसा ने हमें शफ़ा देने और अपनी तरह मोजिज़े करने का इख़्तियार बख़्शा है तो भी उनमें और हममें ज़मीनो-आसमान का फ़रक़

1 लूक़ा 10:17
2 लूक़ा 10:20

है।” लमहे-भर रुककर उसने कहा, “इसमें कोई शक नहीं कि हम यह बड़े बड़े काम हज़रत ईसा के नाम से ही करते हैं।” उसने आटे को थपथपाया फिर दूसरों पर नज़र डालते हुए बोला, “मैं अकसर सोचता रहता हूँ कि असल में यह हज़रत ईसा हैं कौन? हमने उन्हें अपना उस्ताद और आक़ा मान लिया है मगर कभी कभी मुझे लगता है कि वह इनसान से बढ़कर ही कोई हस्ती हैं।”

शमाऊन ज़ेलोतेस ने ताईद की, “एक बात जिससे मैं बहुत मुतअस्सिर हुआ हूँ वह उनका बिशारत देने का अंदाज़ है। नपी-तुली बातें और जचे-तुले अलफ़ाज़ होते हैं। यह नहीं कि हज़रत मूसा ने यों फ़रमाया या फ़लाँ उस्ताद यों कहता है बल्कि हैरतअंगेज़ एतमाद के साथ वह अकसर फ़रमाते हैं, ‘मैं तुमसे सच सच कहता हूँ।’”

अंदरियास झाड़ू एक तरफ़ रखकर तोमा के पास आ खड़ा हुआ। “मुझे एक बात बहुत अच्छी लगती है। कि वह कभी हमारी मरज़ी को झुकाने की कोशिश नहीं करते। हर एक का बड़ा एहतराम करते हैं। कभी कभी तो मैं सोचता हूँ कि यही वजह है कि वह अपने मोजिज़ों की क़ुदरत को कम ही इस्तेमाल करते हैं। वह लोगों की आँखों को चुँधियाना नहीं चाहते और न ही उनके जाँचने-परखने की सलाहियत को मरग़ूब करना चाहते हैं। इसके बावुजूद भी लोग पहचान लेते हैं कि वह कोई अज़ीम हस्ती हैं।” वह ज़रा खाँसा, “कोई आग जलाने में यूहन्ना की मदद करे। धुएँ से पता चलता है कि उसे मुश्किल पेश आ रही है।”

यूहन्ना का भाई याक़ूब हँसने लगा, “उसे कभी आग जलानी नहीं आई।” उसने कंधे उचकाए, “लेकिन यह मत भूलो कि हमारी माँ बहुत सुघड़ थीं। सारे काम ख़ुद करती थीं।”

मत्ती बोला, “चलो छोड़ो, दौड़कर भाई की मदद करो, वरना हमारा नाश्ता धुएँ की नज़र हो जाएगा।”

तोमा गुँधा हुआ आटा उठाकर बाहर रोटियाँ पकाने चला गया। लेकिन दो क़दम चला फिर रुककर कहा, “मेरे नज़दीक तो सबसे अहम बात यह है कि हज़रत ईसा ने कहा है कि ‘अब से मैं नहीं कहता कि तुम ग़ुलाम हो … इसके बजाए मैंने कहा है कि तुम दोस्त हो।’”[1] उसने जज़बाती अंदाज़ में बात जारी रखी, “दोस्त अपने दोस्त से दिल की बात करता है। हमारे मालिक भी हमारे साथ ऐसा ही करते हैं। सारा वक़्त उनके साथ रहते हैं। इसलिए उन्हें अच्छी तरह जान गए हैं। क्या वह कभी हम पर ग़ुस्से हुए या तलख़ी या ना-गवारी का इज़हार किया है? कभी नहीं, हम हर रोज़ देखते हैं कि वह हमसे कितने मुख़्तलिफ़ हैं। उन पर बीमारों का मुसलसल कितना दबाव होता है। कई बार तो उन्हें खाना खाने की फ़ुरसत भी नहीं मिलती।”

नतनेल की आँखें चमक रही थीं। वह कहने लगा, “कितनी बड़ी बात है कि सारे मुल्क में शिकस्ता ज़िंदगियों को शफ़ा मिल रही है और हम भी उनमें शामिल हैं। बेशक आसमान की बादशाही आ गई है। मुझे

---

1 यूहन्ना 15:15

यक़ीन है कि बहुत जल्द हज़रत ईसा दुश्मन को मुल्क से निकाल बाहर करेंगे।”

यहूदाह इस्करियोती ने नाराज़ होते हुए कहा, “बेशक नतनेल तुम ठीक कहते हो। इन बीमारियों वग़ैरा से छुटकारा पाना बड़ी बात है। लेकिन सबसे ज़रूरी बात इन रोमियों से ख़लासी हासिल करना है। हमारे उस्ताद मुल्क की बाग-डोर कब सँभालेंगे? जल्दी क्यों नहीं करते? उनके पास ताक़त भी है और मक़बूलियत भी। वह एक बार कह दें तो बच्चा बच्चा उसका साथ देगा।” यहूदाह की आँखों से ज़बरदस्ती चमक रही थी। उसके साथी शागिर्द अकसर उसके बारे में हैरान होते थे। वह उन सबसे मुख़्तलिफ़ था।

मत्ती ने यहूदाह को गहरी नज़रों से देखा और ख़बरदार करते हुए कहा, “यहूदाह! ख़याल रखना, तुम्हें ताक़त और इज़्ज़त की हवस है। कहीं यह हवस तुम्हें ख़ुदा की राह से हटा न दे। दुनियावी चीज़ों से तसल्ली नहीं हुआ करती। मैं इनका मज़ा चख चुका हूँ। अल्लाह ने हमें बड़ा एज़ाज़ बख़्शा है कि हम हज़रत ईसा के साथ हैं। जब वह मुनादी करते हैं तो लगता है कि आसमान खुल गया है। हम ख़ुशक़िसमत हैं कि हमें ख़ुदा को ज़्यादा साफ़ तौर से पहचानने का मौक़ा मिला है। वह हमें बताते हैं कि हमें किन ख़तरात का सामना है और हम इनसे कैसे बच सकते हैं। हज़रत ईसा हममें इलाही बातों की भूक और प्यास पैदा करना चाहते हैं। यहूदाह! क्या तुम इस वक़्त को ज़ाया करोगे? याद

रखो कि जब अल्लाह हमारे बाप इब्राहीम से हमकलाम हुआ तो उसने कहा कि “मैं ही तेरा बहुत बड़ा अज्र हूँ।”[1] बातें करते हुए मत्ती की आँखें चमक रही थीं। “यहूदाह! ख़ुदा की मुहब्बत और शफ़क़त से कोई चीज़ बड़ी नहीं। वह है, तो हमारे पास सब कुछ है। वह नहीं, तो कुछ भी नहीं।”

यहूदाह बड़ी बेसब्री से सुन रहा था। मत्ती की बातें उस पर कुछ असर नहीं कर रही थीं। उसने ज़रा अकड़ते हुए जवाब दिया, “अज़ीज़ मत्ती! माफ़ करना, तुमने कभी संजीदगी से नहीं सोचा होगा कि मैं कभी तुम्हारी तरह इतनी पस्ती में नहीं गिरा। मैंने हमेशा ऐसे ज़िंदगी गुज़ारी है जैसे मुझे गुज़ारनी चाहिए। और ...”

मत्ती ने कोई असर लिए बग़ैर उसे टोका, “यहूदाह! मैं तुम्हें एक बार फिर ख़बरदार करता हूँ। अपनी सही शक्ल देखो। ख़ुद को पहचानो। तुम भी मेरी तरह ही गुनाहगार हो। दाऊद नबी अपने एक ज़बूर में कहता है कि ‘अल्लाह ने आसमान से इनसान पर नज़र डाली ताकि देखे कि क्या कोई समझदार है? क्या कोई अल्लाह का तालिब है? अफ़सोस, सब सही राह से भटक गए, सबके सब बिगड़ गए हैं। कोई नहीं जो भलाई करता हो, एक भी नहीं।’”[2]

मत्ती, यहूदाह को क़ायल करने की पूरी पूरी कोशिश कर रहा था। “चूँकि आदम और हव्वा ने गुनाह किया, इसलिए तमाम इनसान की

1 पैदाइश 15:1
2 ज़बूर 53:2-3

फ़ितरत में गुनाह है। सिर्फ़ मेरी ही नहीं बल्कि मैं कहता हूँ कि तमाम इनसान की फ़ितरत में। हम कुछ देर तक तो अपने आपको धोका दे सकते हैं कि हम नेक हैं, लेकिन वक़्त आता है कि शैतान हमारी कमज़ोरी से फ़ायदा उठाकर हमें पटख़ देता है। बेहतर है कि हम अपनी असली हालत को पहचानें और हलीमी से रब से मदद माँगें कि वह हमें अपने क़रीब रहने की तौफ़ीक़ अता करे।”

यहूदाह उठकर मत्ती के सामने जा खड़ा हुआ और गरजा, “मैंने कहा, बंद करो यह वाज़। मैं भी अक़्ल रखता हूँ और ज़िंदगी की मुश्किलात से निमट सकता हूँ। मुझे अपनी बात पूरी करने दो। मैं कह रहा था जिन तरीक़ों से मालिक काम कर रहे हैं मुझे उनसे तसल्ली नहीं। मेरी राय में तो उन्हें इलयास नबी की तरह अज़ाब नाज़िल करनेवाले मोजिज़े करने चाहिएँ। अगर हमारे दुश्मनों पर आसमान से आग नाज़िल हो तो लोग हज़रत ईसा को सचमुच क़बूल करेंगे। मैं कहता हूँ इस तरह उन्हें तख़्तो-ताज जल्दी हासिल हो जाएगा। ग़रीबों की मदद करने और बीमारों को शफ़ा देने से ऐसा कहाँ होता है?”

फ़िज़ा में ना-गवार-सी ख़ामोशी छा गई। उनकी रिफ़ाक़त बिगड़ती महसूस होने लगी। यह देखकर अंदरियास ने उनकी तवज्जुह दूसरी तरफ़ करने की कोशिश की। “इसमें शक नहीं कि हमारे मालिक ने लोगों पर ख़ुदा को ज़ाहिर करके उनकी ज़िंदगियों को नई ख़ुशी दिलाई है।”

इतनी देर में उनको हज़रत ईसा के क़दमों की आहट सुनाई दी और अगले ही लमहे वह अंदर दाख़िल हुए। उनकी आँखों में चमक थी। बड़ी मुहब्बत से कहने लगे, “मेरे अज़ीज़ दोस्तो! धुएँ की बू आ रही है। क्या फिर आग जलाने में मुश्किल पेश आ रही है?” हज़रत ईसा ऐसी छोटी छोटी बातों का भी ध्यान रखते थे। लेकिन इसी लमहे उन्हें यह भी मालूम था कि एक शागिर्द ग़मगीन है और उसका ग़म दूर करना चाहते थे। “शमाऊन पतरस क्या बात है? दिल पर क्या बोझ है?”

दूसरे शागिर्द हैरान होकर शमाऊन पतरस की तरफ़ देखने लगे। उन्हें ख़याल तक न था कि उसे कोई परेशानी है। अब उनको पता चल गया। हज़रत ईसा शमाऊन के कंधे पर बाज़ू रखे उसके पास बैठ गए और कहने लगे, “दोस्त, अपना बोझ मुझे दे दो। तुम्हें इसके नीचे दबे रहने की कोई ज़रूरत नहीं।”

बोलने से पहले ही शमाऊन पतरस को एहसास हो गया कि हज़रत ईसा मेरी मुश्किल को जानते हैं। उसे ऐसा लगा कि उस्ताद की आँखें मेरे ख़यालात को पढ़ रही हैं, इसलिए मुझे कुछ भी छिपाने की ज़रूरत नहीं। उसकी ज़बान चल पड़ी, “उस्ताद, मेरा दिल अपनी बीवी नओमी की वजह से परेशान है। बड़ी अच्छी औरत है लेकिन उसकी समझ में नहीं आता कि मैं घर से अकसर बाहर क्यों रहता हूँ। उस्ताद, वह आपको भी इतनी अच्छी तरह नहीं जानती जैसे कि मैं जानता हूँ। उसने आपको इतनी बार बिशारत देते भी नहीं सुना, इसलिए वह नहीं समझ सकती

कि मेरा आपके साथ रहना क्यों ज़रूरी है। ... शायद ... शायद किसी दिन उसकी समझ में यह बात आ ही जाए।"

"तुमने बड़ी दानाई की कि कफ़र्नहूम में रिहाइश इख़्तियार कर ली। अब तुम्हारे बीवी-बच्चे तुम्हारी सास के पास रहते हैं। इस बात से काफ़ी फ़रक़ पड़ेगा," हज़रत ईसा ने मुलायम आवाज़ में कहा। "सब्र करो। किसी दिन उसका दिल तुम्हारे साथ मिल जाएगा। अब उसके बारे में परेशान होने की ज़रूरत नहीं। तुम्हारा बोझ मैंने अपने दिल पर ले लिया है। आसमानी बाप के फ़रज़ंद को फ़िकर करने की कोई ज़रूरत नहीं होती।"

"बहुत बहुत शुक्रिया उस्ताद। मैं यह बात याद रखूँगा। देखिए सब इंतज़ार कर रहे हैं कि नाश्ता शुरू करें।"

वह सब बैठ गए। हज़रत ईसा ने खाने के लिए शुक्र अदा किया। जब उन्होंने दुआ माँगी तो शागिर्दों के दिल जोश से भर गए। खाने पर उनकी रिफ़ाक़त कितनी मुसर्रतअंगेज़ होती थी।

शमाऊन पतरस कहने लगा, "उस्ताद! आपने हमें हिम्मत दी है कि अल्लाह को अपना बाप कहें। क्या आप अपने पहाड़ी वाज़ की कुछ बातें दुबारा बताएँगे? उस वक़्त आपने हमारे आसमानी बाप के लिए हमारी आँखें खोल दी थीं।"

दूसरों ने भी ताईद की, "हाँ, ज़रूर बताएँ।" उनकी आँखें अपने उस्ताद पर लगी थीं। हज़रत ईसा मुसकराए। सबने देखा कि वह इस

मौज़ू पर बातें करने में कितनी ख़ुशी महसूस कर रहे हैं। उन्होंने कहना शुरू किया, “और बातों के साथ साथ मैंने यह भी कहा था कि ‘जब तुम बुरे होने के बावुजूद इतने समझदार हो कि अपने बच्चों को अच्छी चीज़ें दे सकते हो तो फिर कितनी ज़्यादा यक़ीनी बात है कि तुम्हारा आसमानी बाप माँगनेवालों को अच्छी चीज़ें देगा।[1] ... परिंदों पर ग़ौर करो। न वह बीज बोते, न फ़सलें काटकर उन्हें गोदाम में जमा करते हैं। तुम्हारा आसमानी बाप ख़ुद उन्हें खाना खिलाता है। क्या तुम्हारी उनकी निसबत ज़्यादा क़दरो-क़ीमत नहीं है? ... चुनाँचे परेशानी के आलम में फ़िकर करते करते यह न कहते रहो, ‘हम क्या खाएँ? हम क्या पिएँ? हम क्या पहनें?’ ... तुम्हारे आसमानी बाप को पहले से मालूम है कि तुमको इन तमाम चीज़ों की ज़रूरत है। पहले अल्लाह की बादशाही और उसकी रास्तबाज़ी की तलाश में रहो। फिर यह तमाम चीज़ें भी तुमको मिल जाएँगी।”[2]

हज़रत ईसा ने उनमें से एक एक को देखा और ज़ोर देकर कहा, “दोस्तो! यह कभी न भूलो कि चूँकि ख़ुदा बाप है इसलिए वह अपने हर फ़रज़ंद की फ़िकर करता है। तुम्हें खाने-पीने और लिबास के लिए फ़िकरमंद नहीं होना चाहिए। उस पर एतमाद करते हुए अपनी फ़िकरें उस पर डालने से उसकी ताज़ीम होती है।”

---

1 मत्ती 7:11

2 मत्ती 6:26,31-33

शमाऊन पतरस ने महसूस किया कि उस्ताद की नज़रें मुझ पर जम गई हैं। वह चाहते हैं कि मैं अपनी सारी फ़िकरें अपने आसमानी बाप पर डाल दूँ चाहे यह कितना मुश्किल क्यों न हो।

फ़िलिप्पुस बोला, "उस्ताद, उस वक़्त आपने एक बात बताई थी जो मेरे लिए नई थी। आपने कहा था चूँकि अल्लाह बाप है इसलिए तमाम इनसान भाई भाई हैं। इसका मतलब तो यह हुआ कि हमें किसी तरह भी दूसरों को रंज नहीं पहुँचाना चाहिए।"

हज़रत ईसा ने उसकी तारीफ़ की, "ख़ूब, फ़िलिप्पुस ख़ूब! मैंने कहा था कि तुमने सुना है कि बापदादा को फ़रमाया गया, 'क़त्ल न करना। और जो क़त्ल करे उसे अदालत में जवाब देना होगा।' लेकिन मैं तुमको बताता हूँ कि जो भी अपने भाई पर ग़ुस्सा करे उसे अदालत में जवाब देना होगा। इसी तरह जो अपने भाई को 'अहमक़' कहे उसे यहूदी अदालते-आलिया में जवाब देना होगा। और जो उसको 'बेवुक़ूफ़!' कहे वह जहन्नुम की आग में फेंके जाने के लायक़ ठहरेगा।"[1]

तोमा ने सर हिलाते हुए कहा, "यह दुरुस्त है कि एक दूसरे का दिल दुखा कर हम अपने आसमानी बाप की तौहीन करते हैं। लेकिन जब कोई शरारत पर तुला हुआ हो उससे नरमी से पेश आना तो मुश्किल है।" उसने ठंडी साँस भरी।

1 मत्ती 5:21-22

मत्ती हँसते हुए बोला, “घबराने की कोई बात नहीं। तोमा, हमारे आक़ा ने बताया है कि अगर हमने किसी का गुनाह किया हो तो मामले को किस तरह दुरुस्त किया जा सकता है। बहुत आसान है। बस जाकर उससे माफ़ी माँग लो।”

कई आवाज़ें एक साथ उभरीं, “इतना आसान!”

पतरस कहने लगा, “मेरे जैसे मुँह-फट आदमी के लिए तो बहुत मुश्किल होगा कि अपने भाई के पास जाकर माफ़ी माँगे।”

हज़रत ईसा के चेहरे पर बड़ी संजीदगी थी। वह कहने लगे, “दोस्तो! गुनाह बड़ी हौलनाक चीज़ है। वह तो भाई भाई के दरमियान दीवार खड़ी कर देता है। सारी रिफ़ाक़त और ख़ुशी ग़ारत हो जाती है। साथ ही इनसान और ख़ुदा के दरमियान भी दीवार खड़ी हो जाती है और उसके साथ रिफ़ाक़त में भी बड़ा ख़लल आ जाता है। अल्लाह को यह बात पसंद नहीं।” फिर शमाऊन पतरस की तरफ़ झुककर पूछा, “क्यों पतरस, इन सारी बातों का ख़याल करते हुए भी माफ़ी माँगना कोई बड़ी बात है?”

“नहीं, उस्ताद।”

“बिलकुल दुरुस्त, शमाऊन पतरस। याद रखो कि बाप अपने बच्चों को अच्छी चीज़ें देता है। माफ़ी तुम्हें आज़ाद कर देगी ताकि ख़ुश रह सको, मुहब्बत कर सको और इनसान और अल्लाह की रिफ़ाक़त का लुत्फ़ उठा सको। यह कितना बड़ा एज़ाज़ है, दोस्तो!”

गली से आवाज़ों का हलका हलका शोर उन तक पहुँच रहा था। अब यह शोर बुलंद हो गया और इसमें बेसब्री झलकने लगी। एक आदमी की थरथराती हुई आवाज़ बुलंद हुई, “हज़रत ईसा, मेरी सुनें, अंधे पर रहम करें, मुझ पर रहम करें।”

किसी औरत की तेज़ आवाज़ सुनाई दी, “ऐ इब्न दाऊद! मुझे शफ़ा दें।”

फिर चीख़ चीख़कर बोलने की आवाज़ें उभरीं, “हट जाओ, हट जाओ। कोढ़ी। नापाक! नापाक!” कोढ़ी की पुकार दिलों को चीर रही थी। “हज़रत ईसा, मुबारक हज़रत ईसा। मुझ पर रहम करें, शफ़ा दें। मुझ पर तरस खाएँ!”

“दोस्तो! ख़ुदा का काम हमारा मुंतज़िर है। अंदरियास और नतनेल, तुम दोनों इस जगह को ठीक-ठाक करो और बाद में हमारे साथ आ मिलना। बाक़ी सब मेरे साथ चलें।”

जब दूसरे चले गए तो अंदरियास कहने लगा, “जब उस्ताद आसमानी बाप की बात करते हैं तो मेरा दिल जोश से भर जाता है। लेकिन इससे बढ़कर यह कि वह अपनी ज़िंदगी से हम पर ज़ाहिर करते हैं कि आसमानी बाप के कितने शीदाई हैं।”

नतनेल ने ताईद की, “बिलकुल दुरुस्त। हज़रत ईसा हर काम करने की क़ुदरत रखते हैं। लेकिन वह इस क़ुदरत को कभी अपनी शान बढ़ाने के लिए इस्तेमाल नहीं करते। हमेशा आसमानी बाप की मरज़ी पूरी करने

की धुन में रहते हैं। वह कहते हैं, 'बेटा अपनी मरज़ी से कुछ नहीं कर सकता। बल्कि वही कुछ करता है जो अपने बाप को करते देखता है।' बाप के लिए उनकी मुहब्बत उतनी ज़्यादा है कि वह उन्हें बाप की मरज़ी के बरअक्स कुछ करने नहीं देती।"

अंदरियास बरतन इकट्ठे करते हुए कहने लगा, "ज़रा देखो, हमारे उस्ताद को आसमानी बाप के साथ रिफ़ाक़त रखने की कितनी लग्न है।" फिर एक ठंडी साँस भरते हुए कहा, "हमें अभी बहुत कुछ सीखना है।"

उनमें जवानी का वलवला था। वह सीखने और नए साँचे में ढलने को आमादा थे। वह हर गरम-सर्द में अपने आक़ा की पैरवी करने को तैयार थे। गो अभी हज़रत ईसा ख़ुद भी सिर्फ़ तीस साल के थे मगर उन्होंने उनके दिल जीत लिए थे।

ना-उम्मीदों के लिए नई उम्मीद

शमाऊन पतरस की बीवी नओमी ज़ोर ज़ोर से आटा गूँध रही थी। उसकी माँ मीरब ने उसे देखकर आह भरी। उसे साफ़ नज़र आ रहा था कि बेटी बड़े दुख में है। शमाऊन पतरस अभी दस दिन पहले उनको मिलकर गया था। उस वक़्त से नओमी बुझी बुझी-सी रहती थी। जब वह अपनी माँ की तरफ़ पीठ किए बैठी थी तो ज़ाहिर था कि वह थोड़े थोड़े वक़्फ़े से आस्तीन के साथ अपने आँसू पोंछ रही है।

"प्यारी नओमी" उसने मुलायम आवाज़ में कहा।

"जी अम्मी जान।"

"मैं सोच रही थी कि मैं कितनी ख़ुशक़िसमत हूँ कि तुम जैसी बेटी की माँ हूँ।"

"सच?"

"हाँ बेटी, जब से तुम बच्चों समेत कफ़र्नहूम आ गए हो मेरी तनहाई ख़त्म हो गई।"

"शुक्रिया अम्मी जान! काश शमाऊन भी हमारे साथ यहाँ होते। मुझे उन्हीं गुज़रे दिनों की तमन्ना है जब हम कभी जुदा न होते थे।"

बुज़ुर्ग ख़ातून कहने लगी, "क्या वह वक़्त सचमुच इतना अच्छा था? मुझे वह दिन भी याद हैं जब शमाऊन बहुत बेक़रार रहता था। उसे ज़िंदगी में किसी आला मक़सद की तलाश थी। लो, अब उसे वह मक़सद मिल गया है।"

जवान औरत अपनी माँ की तरफ़ मुड़ी और थरथराती आवाज़ में कहने लगी, "यह न सोचें की मैं इन्हीं बातों में उलझना रहना चाहती हूँ। मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा। एक तरफ़ तो मैं सोचती हूँ कि शमाऊन पतरस के लिए अल्लाह का काम करना दुरुस्त है। मगर जब उनसे मिले बग़ैर दिनों और हफ़्तों गुज़र जाते हैं तो कुढ़ने लगती हूँ। फिर मुझे अपने आप पर ग़ुस्सा आने लगता है।" नओमी ने दरवाज़े से सर बाहर निकाला और कुछ सुनने की कोशिश की, "एक मिनट अम्मी! हमारी पड़ोसन वापस आ गई है। मुझे उसको बुज़ुर्ग दीना का पैग़ाम देना है।"

वह वापस आई तो उसके साथ समुंदरी हवा के झोंके भी आए। वह बड़ी ख़ुशी से पुकारी, "अम्मी! भला बूझें तो, अभी अभी मुझे क्या ख़बर मिली है?"

मीरब ने मुसकराकर जवाब दिया, "उस्ताद ईसा ने किसी ग़मज़दा ज़िंदगी में ख़ुशी भर दी होगी।"

"ओह हाँ अम्मी जान! आपको मग्दल की मरियम याद है ना?"

"हाँ, हाँ। ज़रूर। वह जो हम मग्दलीनी कहते हैं।"

"मैंने सुना है कि वह तनदुरुस्त हो गई है। अब वह बिलकुल ठीक है।"

उसकी माँ की आँखें हैरत से खुली की खुली रह गईं।

"नाक़ाबिले-यक़ीन! इबलीस ने उस लड़की को कैसे जकड़ रखा था! कोई भी उसकी मदद नहीं कर सकता था।"

"हज़रत ईसा तो शैतान से भी ज़ोरावर हैं। उन्होंने मग्दलीनी में से साथ बदरूहों को निकाल दिया।" नओमी अपनी माँ के क़रीब बैठ गई। "और मैं हूँ कि शमाऊन के चले जाने का गिला कर रही हूँ, हालाँकि हज़रत ईसा ने उन्हें अपना शागिर्द बनने को बुलाया है। मैं भी कैसी औरत हूँ!"

माँ ने अपनी बेटी के सर पर हाथ रखा और तसल्ली देते हुए कहा, "लगता है कि तुमने अपने गिले-शिकवे पर फ़तह पा ली है। तुम्हारा दिल ख़ुश है कि हज़रत ईसा के वसीले से टूटी हुई ज़िंदगियाँ दुबारा जुड़ रही हैं। शमाऊन पतरस की कैसी ख़ुशक़िस्मती है कि वह हज़रत ईसा का शागिर्द बन गया है। इसके अलावा अब वह अल्लाह के बारे में गहरी सच्चाइयाँ भी सीख लेगा।"

नओमी ने सर ऊपर उठाया, "अम्मी जी, तनहाई के एहसास के अलावा मेरे दिल में एक ख़ौफ़-सा भी है। लोग कितनी बातें करते हैं।

अभी कल ही दुकानदार कालिब मुझसे कह रहा था, ‘नओमी! तुम और शमाऊन अच्छे लोग हो। और बेशक जिस राह पर शमाऊन चल रहा है बड़ी अच्छी बात है यानी अपना घरबार छोड़कर हज़रत ईसा के पीछे हो लिया है। लेकिन मुझे लगता है कि हज़रत ईसा का अंजाम बुरा होगा और साथ ही तुम्हारे शौहर का भी। गेहूँ के साथ घुन भी पिस जाएगा। नओमी, उसको ख़बरदार करो, उसको समझाओ। हमारे सरदार हज़रत ईसा के इतने मुख़ालिफ़ हैं कि कल के बजाए आज ही उनका काम तमाम करना चाहते हैं।’” नओमी ने अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया। “और फिर कालिब ने कहा, ‘तुम हरगिज़ पसंद नहीं करोगी कि तुम्हारे शमाऊन की ज़िंदगी सलीब पर लटकते हुए ख़त्म हो। ठीक है ना? रोमियों के लिए तो यह बाएँ हाथ का खेल है।’ हाय अम्मी जी! एक बार मैंने एक आदमी को सलीब पर कीलों से टँगा हुआ देखा था। उसकी दर्द भरी चीख़ें सुनकर कलेजा फट जाता था। कैसी ज़ालिमाना सज़ा है। मैं तो वह मंज़र कभी नहीं भूल सकती।”

“मैं जानती हूँ, जानती हूँ। मगर हज़रत ईसा को तो ख़ुदा ने भेजा है। जब तक उसकी मरज़ी हो न कोई रोमी और न कोई यहूदी उनके अज़ीम काम में रुकावट डाल सकता है। प्यारी बेटी, एक बार हज़रत ईसा ने कहा था कि हमें अपने आसमानी बाप पर भरोसा रखना चाहिए। यह फ़िकर नहीं करनी चाहिए कि क्या खाएँगे या क्या पिएँगे बल्कि अपनी जान की भी फ़िकर नहीं करनी चाहिए। हम पूरे तौर से उसके हाथों में

हैं।” मीरब ने ज़रा बुलंद आवाज़ में कहा, “लेकिन उन्होंने कहा था कि हमें एक बात ज़रूर करनी चाहिए।”

नओमी ने सर हिलाया, “हाँ, उन्होंने कहा था कि ‘पहले अल्लाह की बादशाही और उसकी रास्तबाज़ी की तलाश में रहो। फिर यह तमाम चीज़ें भी तुमको मिल जाएँगी।’[1] हाँ अम्मी जान! मैं अपनी सारी फ़िकरें ख़ुदा पर डाल दूँगी।” फिर ज़रा तवक़्क़ुफ़ के बाद बोली, “हज़रत ईसा एक ख़ास हस्ती हैं। उन्हें जो मुहब्बत अल्लाह और इनसान से है मैं तो उसे समझ नहीं सकती। और जिनकी ज़िंदगियाँ उलझनों में पड़ी हैं उनके लिए उनका दिल तरस से भरा है। इससे पहले कभी ऐसी हस्ती न देखने में आई न सुनने में।”

मीरब ने मुसकराकर जवाब दिया, “मैं तो ईमान रखती हूँ कि वह ख़ुदा का वादा किया हुआ अल-मसीह हैं।” वह उठकर आहिस्ता से दरवाज़े के पास गई। ताज़ा हवा में गहरी साँस ली और फिर बेटी के पास आकर पूछनी लगी, “पता कि मैंने किस को देखा है? सारा। बारूक की बीवी सारा। बेचारी अपनी उम्र से कहीं बूढ़ी लगती है। बिलकुल हड्डियों का पिंजर हो गई है।”

नओमी ने जवाब दिया, “पिंजर नहीं तो और क्या! बारह बरस से लगातार उसका ख़ून जारी है। कोई हकीम उसका इलाज नहीं कर

1 मत्ती 6:33

सकता। उसने तमाम हकीमों और डाक्टरों के हाथों दुख ही उठाया है। हर इलाज से उसकी हालत ज़्यादा बिगड़ती जाती है। बेचारी सारा!"

मीरब ने सर हिलाया, "और इस बीमारी के बाइस उसे नापाक समझा जाता है। न वह इबादत में शामिल हो सकती न इबादतख़ाने या बैतुल-मुक़द्दस में दाख़िल हो सकती है। मुझे पता है बेचारी कितना ग़म करती है। इस नौजवान औरत को कुछ समझ में नहीं आता। कोई उम्मीद भी नहीं। तारीकी ही में घिरी हुई है।"

नओमी बोली, "अगर उसकी जगह मैं होती तो फ़ौरन हज़रत ईसा के पास जाती। अब तो सिर्फ़ यही एक ज़रीअ रह गया है। लेकिन बेचारी अपनी बीमारी बताते हुए शरमाती होगी।" लमहे-भर को रुककर वह फिर बोली, "हज़रत ईसा ने आपको शफ़ा दी थी, वह सारा को भी दे सकते हैं। अम्मी जी! आपको याद है ना उस दिन आपको कितना तेज़ बुख़ार था।"

"ज़रूर याद है बेटी। बड़ा हौलनाक बुख़ार था। लेकिन सुनो। कोई आ रहा है। अरे देखो। यह तो तबीता है।"

मोटी हमसाई ज़रा हाँपते हुए बोली, "सुबह से कपड़े धो रही थी। सोचा ज़रा दम ले लूँ।" दोनों को देखते हुए कहने लगी, "लगता है माँ-बेटी कोई ख़ास बात कर रही हैं। मैंने आकर मज़ा किरकिरा कर दिया।"

नओमी ने जल्दी से उसे यक़ीन दिलाया, "नहीं नहीं। हम तो उस दिन की बात कर रही थीं जब अम्मी को तेज़ बुख़ार था।"

तबीता हँस पड़ी। "मुझे याद है। तुम्हारी अम्मी ढेर सारी रज़ाइयों के नीचे हाय हाय किए जा रही थीं। बेचारी को इतनी सर्दी लग रही थी कि कपकपी से चारपाई भी हिल रही थी। और फिर शमाऊन के हमराह हज़रत ईसा भी आए थे।"

नओमी ने कहा, "और मैं घर पर भी न थी कि अम्मी की मदद ही कर सकती।"

उसकी माँ ने सर हिलाया, "मैं बता नहीं सकती कि कितनी तकलीफ़ में थी। एक तो सारा घर बेतरतीब पड़ा था और मेरी हालत इतनी बुरी थी कि मेहमानों की ख़िदमत न कर सकती थी। मगर हज़रत ईसा ने हरगिज़ बुरा नहीं माना। वह आहिस्ता से मेरे पास आए। मेरा हाथ पकड़ा और मुझे उठाकर खड़ा किया। और बस।" मीरब ने इधर-उधर नज़र दौड़ाई। "उनके छूते ही मेरे सारे बदन में ताक़त की लहर दौड़ गई और मैं बिलकुल तनदुरुस्त हो गई।"

तबीता ने हँसते हुए कहा, "मैं इबादतख़ाने से वापस आई। मुझे तो अपनी आँखों पर यक़ीन न आया। यह ख़ातून जो इतनी बीमार थी सारे घर में भागी फिर रही थी और मेहमानों के लिए खाना पका रही थी। याद है कि जो कुछ इबादतख़ाने में हुआ था उससे मेरा दिल जोश से भरा हुआ था।" उसने अपने होंट सुकड़े। "मैं वहाँ गई तो किसी ग़ैरमामूली बात

की तवक़्क़ो न थी। मगर जाते ही सबसे पहले मेरी नज़र हज़रत ईसा पर पड़ी। उनकी बातों ने जैसे मुझ पर जादू-सा कर दिया हो। लेकिन अचानक एक आदमी ज़ोर ज़ोर से चीख़ने-चिल्लाने लगा। मैं तो काँपने लगी। दूसरों का भी यही हाल था। लोग खुसर-फुसर करने लगे, 'इसमें तो बदरूह है।' वह बंदा चीख़ चीख़कर कहने लगा, 'ऐ ईसा नासरी! तुझे हमसे क्या काम? क्या तू हमें बरबाद करने आया है? मैं जानता हूँ कि तू अल्लाह का क़ुद्दूस है।' और आप यक़ीन नहीं करेंगी कि हज़रत ईसा ने कैसे सुकून से उस आदमी का सामना किया। उन्होंने पूरे इख़्तियार से हुक्म दिया, 'चुप रह और इसमें से निकल जा।' मेरा दिल तो धक धक कर रहा था। बदरूह ने उस आदमी को सख़्त अज़ियत दी। पहले तो वह तड़पता रहा। फिर उसे मरोड़कर पटख़ दिया। लेकिन उसे हुक्म मानना ही पड़ा। आख़िर वह बड़ी आवाज़ से चिल्लाकर उस आदमी से निकल गई।"

तबीता साँस लेने को रुकी। फिर बोली, "मैं बताती हूँ कि सारे इबादतख़ाने में मक्खियों के छत्ते की तरह धीमी धीमी आवाज़ें उभरने लगीं : भला यह हज़रत ईसा कौन है?" बाज़ लोग ताज्जुब से कहने लगे कि यह तो बड़े इख़्तियार से बदरूहों को हुक्म देता है, और वह भी उसका मानती हैं।" तबीता कुछ सोचने लगी। फिर आहिस्ता से बोली,

“मेरे लिए तो हज़रत ईसा एक मुअम्मा हैं। मुझे बताओ तुम्हारे ख़याल में वह हैं कौन?”[1]

नओमी पुकार उठी, “अरे, मैं भी क्या बेफ़िकर बैठी हूँ। वक़्त का ख़याल ही नहीं रहा। थोड़ी देर में बच्चे मछलियाँ पकड़कर लौटनेवाले हैं। मैं भागकर सब्ज़ी ले आऊँ।” जल्दी जल्दी से उसने निक़ाब ओढ़ी। हाय। यह थैला कहाँ गया?”

तबीता अपने ख़ुशबाश अंदाज़ में पूछने लगी, “भला पता कि कल मेरी किससे मुलाक़ात हुई? ज़िलफ़ा से।”

मीरब बहुत हैरान हुई, “वह बेवा जो नाइन में रहती है? किसी ख़ास काम ही से यहाँ आई होगी! आख़िर क़रीबन 25 मील पैदल चलना कोई ख़ाला जी का घर तो नहीं।”

तबीता ने सर हिलाया, “ज़िलफ़ा बड़ी बहादुर औरत है। बेवा की ज़िंदगी कोई फूलों की सेज तो नहीं होती ना। लेकिन सारी मुश्किलात के बावुजूद वह हिम्मत नहीं हारती। दिन-रात मेहनत करती है ताकि अपने इकलौते बेटे आसा की परवरिश बा-इज़्ज़त तौर से कर सके।”

नओमी ने ख़ुशी से कहा, “लेकिन अब उसके लिए काफ़ी आसानी हो गई है। आसा जवान होकर उसका सहारा बन गया है।” इतने में उसे थैला मिल गया और उसने कहा, “अम्मी जी! कोई और सौदा तो नहीं लाना?”

1 मरक़ुस 1:21-27 पर मबनी है।

“हाँ कुछ रोटी लेते आना।”

नओमी घर से निकलने ही को थी कि तबीता ने आवाज़ दी, “ज़रा ठहरो! मैं तुम्हें ताज़ातरीन ख़बर सुनाना तो भूल ही गई।”

“मग्दलीनी की ख़बर? मैंने सुना है कि वह बिलकुल तनदुरुस्त हो गई है।”

“उसके मुताल्लिक़ बस इतनी ही ख़बर तो नहीं। वह हज़रत ईसा की पैरोकार बन गई है। अपने माल से हज़रत ईसा और उनके शागिर्दों की ख़िदमत करती है। कुछ और औरतें भी साथ रहकर उनकी ख़िदमत करती हैं। यह सब ख़वातीन पहले या तो सख़्त बीमार थीं या बदरूहों के क़ब्ज़े में थीं। हज़रत ईसा ने सबको शफ़ा दी है। इनमें हेरोदेस बादशाह के अफ़सर ख़ूज़ा की बीवी युअन्ना भी शामिल है। ज़रा सोचो तो!”

नओमी का मुँह खुला का खुला रह गया, और मीरब बोली, “क्या कहा? उस मग़रूर आदमी ने कैसे इजाज़त दे दी? फिर तो युअन्ना की बीमारी ने उसके ख़ावंद की ज़िंदगी में बहुत काम किया होगा।” मीरब ने अपना सिलाई का काम उठा लिया, “फिर तो मुझे कोई हैरानी नहीं कि वह अपना सब कुछ उन्हें देने को तैयार है। हज़रत ईसा ने उनकी ज़िंदगियाँ बचाई हैं। उन्होंने ख़ुदा की मुहब्बत की झलक देखी है।”

तबीता जाने के लिए खड़ी हुई। “बहुत बातें कर ली हैं। अल्लाह आपको बरकत दे।”

नओमी के साथ ही वह बाहर गली में आ गई। नओमी कहने लगी, "मेरा दिल करता है कि मग्दलीनी से मिलूँ। मैं उसे तब से जानती हूँ जब वह अभी बच्ची थी। कितनी प्यारी थी। वह अपनी नौउम्री में बहुत सवाल किया करती थी। ख़ुदा, मज़हब और समाजी ज़िंदगी के बारे में जानना चाहती थी। मगर उसने अपनी ही राह इख़्तियार कर ली।" नओमी ने उदासी से सर हिलाया, "बाद में जब मैंने उसे देखा तो यक़ीन नहीं आता था कि यह वही लड़की है।"

तबीता ने हँसते हुए जवाब दिया, "कोई बात नहीं। वह सारी बातें अब ख़त्म हो चुकी हैं। ख़ुदा हाफ़िज़।"

दिन चढ़ आया था। बाज़ार में काफ़ी रौनक़ थी। नओमी जल्दी जल्दी सौदा ख़रीदने लगी। बाज़ार की दुकान से भाव-ताव करने की निस्वानी आवाज़ें आ रही थीं। एक कह रही थी, "मनोहा! हमें सबसे उम्दा चोग़ा चाहिए। सबसे आला चोग़ा ही हमारे आक़ा की शान के लायक़ होगा।"

नओमी ग़ौर से सुनने लगी। यह जानी-पहचानी आवाज़ थी। अचानक उसने पुकारा। "मग्दलीनी!" और अगले ही लमहे वह उससे गले मिल रही थी। "तुम्हें तनदुरुस्त देखकर कितनी ख़ुशी हुई है।" ख़ुशी से उसके आँसू बहने लगे। मग्दलीनी कितनी बदल गई थी! अब वह एक मुसर्रत से भरपूर नौजवान औरत नज़र आती थी।

मग्दलीनी कहने लगी, "नओमी, मेरी यह इतमीनान भरी ज़िंदगी सिर्फ़ हज़रत ईसा की वजह से है। मैं हज़रत ईसा में ज़िंदा ख़ुदा की

क़ुदरत का जीता-जागता सबूत हूँ। कोई मुझे उन बदरूहों से नहीं छुड़ा सकता था।” उसे झुरझुरी आ गई। “नओमी, अब मुझे मालूम हुआ है कि मेरी रूह कितनी क़ीमती चीज़ है और कितनी आसानी से उसे नुक़सान पहुँच सकता है! मुझे इसका पहले-पहल एहसास उस वक़्त हुआ जब मेरे दिल में नफ़रत और बग़ावत ने सर उठाया। लगता था कि मेरे बातिन में नेकी और बदी में ज़बरदस्त जंग जारी है। जैसे जैसे दिन गुज़रते गए मुझे एहसास होता गया कि मेरी ज़िंदगी पर बदी ने क़ब्ज़ा जमा लिया है। मुझे अपने आप पर कोई क़ाबू न रहा था।”

दुकानदार मनोहा ने अपने मुलाज़िम को ज़ोर से पुकारा, “यज़्ज़ियाह! निकम्मे आदमी, कहाँ हो? सुनो। दौड़कर जाओ और गोदाम से वह ख़ास चोग़ा लाओ। जल्दी करो।” उसने खाँसकर उन औरतों को अपनी मौजूदगी का एहसास दिलाया और बोला, “मैंने पहाड़ी पर हज़रत ईसा का वाज़ सुना है। हमसे वह तो बहुत ऊँचे ऊँचे मुतालबे करते हैं। मसलन यह कि अगर तेरी दहनी आँख तुझसे गुनाह कराए तो उसे निकालकर फेंक दे। तेरे लिए बेहतर है कि एक अज़ु ज़ाया हो जाए बजाए इसके कि पूरे बदन समेत जहन्नुम में डाला जाए।” ज़रा ताम्मुल के बाद वह फिर बोला, “लेकिन मग्दलीनी! तुम्हारी हालत पर ग़ौर करने से मुझे एहसास हुआ है कि हमारी ज़िंदगी में गुनाह कैसी ज़बरदस्त क़ुव्वत है।” फिर ज़ोर देकर बात को ख़त्म किया। “अल्लाह हमें गुनाह की क़ुव्वत और जहन्नुम से बचाना चाहता है।”

मग्दलीनी ने ज़ोर से सर हिलाया। "जनाब, माफ़ कीजिए। आप सारी बात को अच्छी तरह नहीं समझे हैं। मेरे लिए ख़ुशी की बात ख़ाली यह नहीं कि मैं गुनाह और जहन्नुम से बच गई हूँ हालाँकि यह भी ख़ुदा की अजीब बख़्शिश है। लेकिन इस बात की तसल्ली के साथ हज़रत ईसा ने मुझ पर तो यह हक़ीक़त खोली है कि हम अपने आसमानी बाप के बेटे और बेटियाँ बन सकते हैं।" मग्दलीनी की आँखें चमकने लगीं। "हम इस ज़मीनी ज़िंदगी के दौरान भी अल्लाह के साथ क़रीबी रिफ़ाक़त रख सकते हैं। मेरी सबसे बड़ी आरज़ू यह नहीं कि बहिश्त और उसकी सारी शानो-शौकत हासिल करूँ बल्कि यह कि हमेशा के लिए ख़ुदा की क़ुरबत में रहूँ। हज़रत ईसा हमारे और हमारे आसमानी बाप के दरमियान मिलाप का वसीला हैं, और उन्होंने ही हमारे अंदर यह उम्मीद रौशन की है।"

मग्दलीनी की साथी ने अभी तक बात न की थी। अब वह भी जोश से कहने लगी, "मैं ख़ूज़ा की बीवी युअन्ना हूँ। मेरी ज़िंदगी का मक़सद ही यह था कि दूसरों का ख़याल किए बग़ैर हर चीज़ से लुत्फ़ उठाती रहूँ गोया हर चीज़ पर सिर्फ़ मेरा ही हक़ है। फिर मुझे यह हौलनाक बीमारी लग गई। बाज़ औक़ात तो सिवाए-कराहने के कुछ कर ही नहीं सकती थी। मैं अकसर अपने आपसे पूछती कि आख़िर इस ज़िंदगी का मक़सद क्या है? इसका अंजाम क्या होगा? मुझे इन सवालों का कोई तसल्लीबख़्श जवाब नहीं मिलता था। फिर हज़रत ईसा ने मुझे शफ़ा

दी।” उसका चेहरा ख़ुशी से चमकने लगा। “उन्होंने मेरी आँखें खोलीं, और मैं समझने लगी कि अल्लाह ने मुझे इसलिए पैदा किया कि उसे जलाल दूँ,कि मेरी ज़िंदगी से उसकी हम्दो-सताइश हो। मेरे लिए भी सबसे अहम बात यह है कि ख़ुदा मेरा आसमानी बाप है जो मेरी छोटी-सी छोटी बात की भी फ़िकर करता है। अब अल्लाह की राहों में चलना मेरे लिए बोझ नहीं रहा। हज़रत ईसा ने मेरी ज़िंदगी को हक़ीक़ी ख़ुशी से मामूर कर दिया है।”

मनोहा फिर ज़रा-सा खाँसा, “ख़वातीन! हर कोई यह बात नहीं समझ पाता कि आप क्यों हज़रत ईसा के पीछे पीछे फिरती और उनकी ख़िदमत करती हैं। लेकिन मैं मानता हूँ कि जैसे उन्होंने आपकी ज़िंदगी यकसर तबदील की है, अगर मेरी भी तबदील कर दें तो मैं भी ज़रूर उनके साथ रहूँगा।”

आख़िर यज़्ज़ियाह चोग़ा लेकर आ गया और उसके सामने रख दिया। मनोहा ने ज़रा तुरशी से कहा, “बहुत देर लगाई।” फिर कारोबारी अंदाज़ में चोग़े के कपड़े को उँगलियों और अंगूठे में पकड़ा और उस पर हाथ फेरा। गाहकों को देखते हुए उसकी आँखों से ख़ुशी छलक रही थी, “इब्राहीम के ख़ुदा की क़सम, ख़वातीन! मुझे इससे बढ़िया चोग़ा कभी नहीं मिला।” ड्रामाई अंदाज़ में उसने अपना बायाँ हाथ दिल पर रखा, “आपको मुनासिब क़ीमत पर दे दूँगा। क्योंकि आप एक अच्छे मक़सद के लिए ले रही हैं।”

इतने में एक मुहतरम-सी ख़ातून हाँपती हुई दुकान में दाख़िल हुई। “बड़ी ख़ुशी हुई कि तुम अभी तक यहाँ हो,” उसने फूली हुई साँस से कहा।

नओमी ख़ुशी से बोल उठी, “सलोमी, क्या तुम भी हज़रत ईसा की पैरोकार बन गई हो?”

सलोमी बड़ी चाहत से उसे गले मिली। फिर एक तिपाई पर बैठ गई, “हाँ, मेरी प्यारी। मगर मैं सारा वक़्त हज़रत ईसा के साथ साथ नहीं रह सकती। जब काम से फ़ुरसत होती है उस वक़्त ही उनके साथ रहती हूँ। मेरा ख़ावंद ज़बदी बड़ा दरियादिल आदमी है कि उसने यूहन्ना और याक़ूब दोनों भाइयों को जाने दिया और मुझे भी नहीं रोकता। आख़िर उसी को हमारा माहीगीरी का सारा काम सँभालना पड़ता है। लेकिन मैं कह सकती हूँ कि मेरा ख़ावंद पहचान गया है कि हज़रत ईसा के वसीले से अल्लाह काम कर रहा है।” उसने फ़ैसलाकुन अंदाज़ से काउंटर पर हाथ मारा, “और कहता है कि मैं इसी तरह ख़ुदा की ख़िदमत कर रहा हूँ कि अपने बेटों और बीवी को हज़रत ईसा की ख़िदमत करने की इजाज़त दे रखी है।”

नओमी ने पूछा, “ज़रा यह तो बताओ, तुम कितनी औरतें हो? शमाऊन पतरस ने तो तुम्हारा ज़िक्र नहीं किया था।” फिर कुछ शरमाकर कहने लगी, “शायद वह मुझे यह बताकर और परेशान नहीं करना चाहते थे कि तुम जैसी बहादुर औरतें हज़रत ईसा की ख़ातिर अपना सब कुछ

क़ुरबान कर रही हैं जबकि मैं इतनी बात पर तैयार नहीं कि अपने ख़ावंद ही को जाने दूँ।"

सलोमी ने उसकी पीठ पर थपकी दी, "हज़रत ईसा हममें से हर एक के साथ बड़े सब्र के साथ पेश आते हैं। लेकिन तुम्हारे सवाल का जवाब : और भी बहुत-सी औरतें हैं जो उनके साथ साथ रहती हैं। मेरी बहन, तुम्हें अंदाज़ा नहीं हो सकता कि कैसे बड़े बड़े काम हो रहे हैं और कितनी तबाहशुदा ज़िंदगियों को हज़रत ईसा बचा रहे हैं।"

आख़िर उस्ताद के लिए चोग़ा ख़रीदा गया। नओमी अपने ख़यालात में मगन अपने घर को रवाना हुई। उसे अफ़सोस था कि उसकी यही ख़ाहिश रही थी कि ज़िंदगी पुरानी डगर पर चलती रहे और कि उसने अल्लाह की तरफ़ से जो बड़े बड़े काम हो रहे थे अपनी आँखें बंद कर ली थीं।

दूर रोमी सिपाहियों के क़दमों की ज़ोरदार आवाज़ सुनाई देने लगी। जब नओमी उन ख़तरों का ख़याल करती जिनमें उसका ख़ावंद घिर सकता था तो उसका दिल धक धक करने लगता। वह सोचती भला इसका क्या अंजाम होगा? क्या मैं बेवा और बच्चे यतीम हो जाएँगे? हाय काश मुझमें भी युअन्ना और मग्दलीनी जैसा पुख़्ता ईमान होता।

गुनाह कौन माफ़ कर सकता है?

हज़रत ईसा और उनके शागिर्द एक और क़सबे की तरफ़ जा रहे थे। सैंकड़ों लोग उनके पीछे पीछे आ रहे थे। उनमें से बहुत-से तो कई दिनों से उनके साथ थे। हज़रत ईसा को अमीर-ग़रीब की बुरी हालत देखकर उन पर तरस आया। उन्होंने मुड़कर अपने शागिर्दों से कहा, “मुझे इन लोगों पर तरस आता है क्योंकि यह उन भेड़ों की तरह बेयारो-मददगार हैं जिनका चरवाहा न हो।”

लेकिन शागिर्द इतने बेदम हो रहे थे कि उनमें दूसरों के बारे में सोचने की सकत न थी। उनको चलते हुए घंटों हो गए थे। भीड़ की वजह से उठती हुई धूल में साँस लेना भी मुश्किल हो रहा था। यूहन्ना ने लंबी साँस खींचकर कहा, “काश हम बैत-अनियाह की मरियम, मरथा और लाज़र के हाँ होते। उनका मेहमान बनने में कितना मज़ा आता है! अल्लाह की बड़ी बरकत है कि यह ख़ानदान हमारा सहारा है। इस वक़्त तो मर्था के कुएँ के ठंडे पानी का एक गिलास भी नेमत होता।”

उसके भाई याक़ूब ने उसे बड़ी कड़ी नज़रों से देखा। “इस तरह शिकवा करते शर्म नहीं आती तुम्हें! अपनी माँ सलोमी को देखो, और मग्दलीनी और युअन्ना और सूसन्ना को देखो। वह बग़ैर उफ़ किए हमारे साथ साथ आ रही हैं। देखो कितनी बहादुरी से क़दम उठाती हैं!”

नतनेल ने दोनों को टोका, “यह तू-तकार बंद करो। मुझे तो हैरानी होती है कि हमारे आक़ा क्यों इन औरतों की ख़िदमत क़बूल करते हैं? ताज्जुब है कि वह उन्हें अपने पीछे आने से रोकते क्यों नहीं!” फ़िलिप्पुस ने बेदिली से कहा, “यह मानना पड़ेगा कि अकसर लोगों को अजीब लगता है कि औरतें उस्ताद के साथ साथ चलती हैं।”

शमाऊन पतरस बोल उठा, “यह तो कोई बात नहीं। बड़ी बात तो यह है कि हज़रत ईसा औरतों को भी मर्दों के बराबर इज़्ज़त देते हैं। यह कोई मामूली बात नहीं है। हम सब जानते हैं कि फ़रीसी किसी औरत को छूना भी गवारा नहीं करते कि नापाक हो जाएँगे।” वह क़दम बढ़ाकर नतनेल से जा मिला और खाँसकर उसे मुख़ातिब किया, “आओ, नतनेल, इस गर्दो-ग़ुबार से तवज्जुह हटाने के लिए कोई बातचीत ही करें।” फिर थोड़ी झिझक के बाद कहने लगा, “किसी ने एक बार बताया था कि अगर तुम अपने भाई का गुनाह करो तो तीन बार माफ़ी माँगो। अगर चौथी बार गुनाह करो तो माफ़ी की तवक़्क़ो मत रखो। नतनेल, मैं उस्ताद से पूछने लगा हूँ कि इस मामले में उसका क्या ख़याल है?”

यह कहकर शमाऊन पतरस ने हज़रत ईसा से पूछा, "अगर मेरा भाई मेरा गुनाह करे तो मैं उसे कितनी बार माफ़ करूँ? किया सात मरतबा?"

नतनेल दिल-ही-दिल में हँसा, "शमाऊन पतरस अपने आपको बड़ा फ़ैयाज़ समझ रहा होगा कि मैं ख़ुशी से सात मरतबा अपने भाई को माफ़ करने को तैयार हूँ।"

मगर हज़रत ईसा ने संजीदगी से जवाब दिया, "मैं तुझे बताता हूँ, सात बार नहीं बल्कि 77 बार।"[1]

पतरस हैरान रह गया। "ख़ुदावंद, आपका यह मतलब तो नहीं हो सकता कि मेरा भाई जितनी बार भी गुनाह करे मैं उसे माफ़ करता रहूँ?"

हज़रत ईसा के होंटों पर हलकी सी मुसकराहट फैल गई। "शमाऊन, मैं एक तमसील की मदद से तुम्हें समझाता हूँ कि तुम्हें इस तरह क्यों माफ़ करना चाहिए। सुनो! आसमान की बादशाही एक बादशाह की मानिंद है जो अपने नौकरों के क़र्ज़ों का हिसाब-किताब करना चाहता था। हिसाब-किताब शुरू करते वक़्त एक आदमी उसके सामने पेश किया गया जो अरबों के हिसाब से उसका क़र्ज़दार था। वह यह रक़म अदा न कर सका, इसलिए उसके मालिक ने यह क़र्ज़ वसूल करने के लिए हुक्म दिया कि उसे बाल-बच्चों और तमाम मिलकियत समेत

1 मत्ती 18:22

फ़रोख़्त कर दिया जाए। यह सुनकर नौकर मुँह के बल गिरा और मिन्नत करने लगा, ‘मुझे मोहलत दें, मैं पूरी रक़म अदा कर दूँगा।’ बादशाह को उस पर तरस आया। उसने उसका क़र्ज़ माफ़ करके उसे जाने दिया। लेकिन जब यही नौकर बाहर निकला तो एक हमख़िदमत मिला जो उसका चंद हज़ार रुपयों का क़र्ज़दार था। उसे पकड़कर वह उसका गला दबाकर कहने लगा, ‘अपना क़र्ज़ अदा कर!’ दूसरा नौकर गिरकर मिन्नत करने लगा, ‘मुझे मोहलत दें, मैं आपको सारी रक़म अदा कर दूँगा।’ लेकिन वह इसके लिए तैयार न हुआ, बल्कि जाकर उसे उस वक़्त तक जेल में डलवाया जब तक वह पूरी रक़म अदा न कर दे। जब बाक़ी नौकरों ने यह देखा तो उन्हें शदीद दुख हुआ और उन्होंने अपने मालिक के पास जाकर सब कुछ बता दिया जो हुआ था। इस पर मालिक ने उस नौकर को अपने पास बुला लिया और कहा, ‘शरीर नौकर! जब तूने मेरी मिन्नत की तो मैंने तेरा पूरा क़र्ज़ माफ़ कर दिया। क्या लाज़िम न था कि तू भी अपने साथी नौकर पर उतना रहम करता जितना मैंने तुझ पर किया था?’ ग़ुस्से में मालिक ने उसे जेल के अफ़सरों के हवाले कर दिया ताकि उस पर उस वक़्त तक तशद्दुद किया जाए जब तक वह क़र्ज़ की पूरी रक़म अदा न कर दे। मेरा आसमानी बाप तुममें से हर एक के साथ भी ऐसा ही करेगा अगर तुमने अपने भाई को पूरे दिल से माफ़ न किया।”[1]

1 मत्ती 18:23-35

शमाऊन पतरस सोच में पड़ गया। "अगर मैं दुरुस्त समझा हूँ तो तमसील में बादशाह ख़ुदा है। और मैं यह भी समझ गया हूँ कि नौकर का क़र्ज़ इतना ज़्यादा था कि वह कभी अदा न कर सकता था। आपके कहने का मतलब है कि अल्लाह के सामने हममें से हर एक की हालत ऐसी ही है। हम पर इतना क़र्ज़ है कि अगर वह अपने फ़ज़ल से माफ़ न करे तो हम छूट नहीं सकते, इसलिए इनसाफ़ का तक़ाज़ा यह है कि हम भी अपने भाइयों को माफ़ करें। हाँ, ख़ुदा ने मेहरबान होकर हमें इतना कुछ माफ़ कर दिया है लेकिन मुझ जैसे आदमी को हर किसी को हर वक़्त माफ़ करना बहुत मुश्किल लगता है।"

हज़रत ईसा ने मुहब्बत भरी नज़रों से शमाऊन पतरस को देखा। उनकी आँखें कह रही थीं, "शमाऊन, जो बात तेरे लिए नामुमकिन है वह मेरे लिए मुमकिन है। मैं तुझे तबदील करनेवाला हूँ। सब्र कर। तुझे सब कुछ मालूम हो जाएगा।"

इतनी देर में वह एक क़सबे में पहुँच गए। गाँव के लोग हज़रत ईसा के गिर्द जमा हो गए, और वह उन्हें तालीम देने लगे। बाद में लोग कई अरज़ियाँ और दरख़ास्तें पेश करने लगे। उनमें एक फ़रीसी भी था। वह कहने लगा, "उस्ताद, आज हमारे हाँ खाना खाइए। हमारी इज़्ज़तअफ़्ज़ाई होगी।" और शागिर्दों की तरफ़ इशारा करके कहा, "आपके शागिर्द भी इस दावत में शामिल हों।"

"बहुत ख़ूब जनाब। शुक्रिया। हम ज़रूर आएँगे। आपकी तारीफ़ जनाब?"

"माफ़ कीजिए। ग़लती हो गई। मैंने अपना नाम नहीं बताया। बंदे को शमाऊन फ़रीसी कहते हैं।"

यूहन्ना आहिस्ता से याक़ूब के कान में कहने लगा, "बहुत ख़ूब, दावत मिली है। मेरा तो भूक से बुरा हाल हो रहा है।"

याक़ूब ने भी ताईद की, "जब मालिक तबलीग़ कर रहे थे तो मैं उस फ़रीसी को देख रहा था। बहुत मुतअस्सिर नज़र आ रहा था, लेकिन फिर भी बड़ा नुकताचीन क़िस्म का आदमी लगता है। कहीं इस दावत का असल मक़सद यह न हो कि वह मालूम करे कि आया हज़रत ईसा सचमुच नबी हैं या नहीं।"

यकायक मत्ती चौकन्ना हो गया। एक नौजवान उसकी तरफ़ आ रहा था। "अरे यह तो दाऊद बिन इफ़राईम है! रब की तारीफ़ हो!" दोनों गरमजोशी से बग़लगीर हुए।

दाऊद बोला, "फ़िलहाल मेरे बाप ने मुझे एक चचा के यहाँ भेज दिया है ताकि कुछ अरसे तक सरकार की नज़रों से दूर रहूँ, वरना हो सकता है कि वह मुझे सियासी लिहाज़ से ख़तरनाक समझकर मुझ पर हाथ डालें। लेकिन मत्ती, मैंने सबक़ सीख लिया है। अब मैं इस नई तहरीक में दिलचस्पी ले रहा हूँ जो तुम्हारे आक़ा चला रहे हैं। क्या खाने

के बाद तुमसे बात कर सकता हूँ? मुझे इनके मुताल्लिक़ और बहुत कुछ मालूम करना है।” इतना कहकर वह चला गया।

बड़ी तवक़्क़ोआत के साथ शागिर्द शमाऊन फ़रीसी के हाँ पहुँचे। कई दूसरे मेहमान भी जमा हो रहे थे। नौकर बाज़ों के पाँव धोने और दूसरों के सर पर तेल डालने लगे। तद्दी कहने लगा, “हूँ। इस तेल की ख़ुशबू तो बहुत अच्छी है। आज हमारे साथ शाही मेहमानों जैसा सुलूक हो रहा है। देखो, हमारा मेज़बान एक मेहमान को बोसा लेकर इस्तिक़बाल कर रहा है।”

“ख़ुशआमदीद” उनके मेज़बान ने इस्तिक़बाल करते हुए कहा। “इधर तशरीफ़ ले आइए।”

यहूदाह इस्करियोती ने याकूब बिन हलफ़ई से सरगोशी की, “ऐसे इस्तिक़बाल के मुताल्लिक़ क्या ख़याल है? कम-से-कम हमारे मालिक के धूल से अटे हुए पाँव तो धुलाए जाते। लगता है कि हमारा मेज़बान हमारे उस्ताद को कोई ख़ास अहमियत नहीं दे रहा है।” यहूदाह को बहुत ताव आ रहा था। उसने बड़े एतमाद से अपनी बात जारी रखी, “जब हमारे मालिक हुकूमत सँभालेंगे तो हमारे मेज़बान को अपनी राय बदलनी पड़ेगी।”

थोड़ी ही देर बाद हज़रत ईसा और उनके शागिर्द नरम नरम गद्दियों पर नीम-दराज़ हो गए। उनके सामने नीची मेज़ें बिछी थीं। रिवाज के मुताबिक़ उनके पाँव पीछे को फैले हुए थे। तरह तरह के खानों की

ख़ुशबुएँ भूक तेज़ कर रही थीं। अभी खाना शुरू हुए थोड़ी ही देर हुई थी कि कमरे में हलचल-सी होने लगी। किसी ने नाराज़ होकर कहा, “यह क्या बदतमीज़ी है! इस बदकार औरत को शर्म नहीं आती कि यों हमारे दरमियान घुसी आती है!” तमाम आँखें उस औरत पर जमी थीं जो झिजकते झिजकते कमरे में आ रही थी। यह अंदाज़ा लगाना मुश्किल न था कि यहाँ तक पहुँचने में उसे क्या क़ीमत अदा करनी पड़ी थी। अकसरों की आँखों में उसके लिए नफ़रत और हिक़ारत भरी थी। लेकिन हज़रत ईसा से वह पहले भी मिल चुकी थी। उनके अलफ़ाज़ ने उसे नई उम्मीद दिलाई थी, क्योंकि उन्होंने कहा था कि आसमान की बादशाही के दरवाज़े बड़े से बड़े गुनाहगार के लिए खुले हैं। इसलिए वह हज़रत ईसा की तरफ़ खिंची आई। हज़रत ईसा उसे देखते रहे जैसे सब कुछ जानते हों। वह हज़रत ईसा के पाँवों के पास आ बैठी। उसने अपने दोपट्टे के नीचे से संगेमरमर की इत्रदानी निकाली और उनके पाँवों पर इत्र लगाने लगी। साथ ही साथ उसकी आँखों से नदामत के आँसुओं की नदी भी बह निकली।

हज़रत ईसा ख़ूब जानते थे कि यह उसकी गुनाहआलूदा ज़िंदगी पर पछतावे के आँसू हैं। वह कितने ख़ुश हुए कि एक और गुनाहगार अल्लाह के क़दमों में आने को तैयार हुआ है। अब औरत उनके पाँव अपने बालों से ख़ुश्क करने लगी। गो हज़रत ईसा की पूरी तवज्जुह उस परेशानहाल औरत की तरफ़ थी लेकिन उन्हें इस बात का भी एहसास था कि मेरे

मेज़बान के दिल पर क्या कुछ गुज़र रहा है। शमाऊन फ़रीसी सोचने लगा अगर यह आदमी नबी होता तो जानता कि यह औरत कैसी है जो उसको छूती है क्योंकि बदचलन है।

यह जानकर हज़रत ईसा ने उससे कहा, “शमाऊन, मैं तुझे कुछ बताना चाहता हूँ।”

उसने कहा, “जी उस्ताद, बताएँ।”

तब हज़रत ईसा ने यह तमसील सुनाई, “एक साहूकार के दो क़र्ज़दार थे। एक को उसने चाँदी के 500 सिक्के दिए थे और दूसरे को 50 सिक्के। लेकिन दोनों अपना क़र्ज़ अदा न कर सके। यह देखकर उसने दोनों का क़र्ज़ माफ़ कर दिया। अब मुझे बता, दोनों क़र्ज़दारों में से कौन उसे ज़्यादा अज़ीज़ रखेगा?”

शमाऊन ने जवाब दिया, “मेरे ख़याल में वह जिसे ज़्यादा माफ़ किया गया।”

हज़रत ईसा ने कहा, “तूने ठीक अंदाज़ा लगाया है।” और औरत की तरफ़ मुड़कर उन्होंने शमाऊन से बात जारी रखी, “क्या तू इस औरत को देखता है? जब मैं इस घर में आया तो तूने मुझे पाँव धोने के लिए पानी न दिया। लेकिन इसने मेरे पाँवों को अपने आँसुओं से तर करके अपने बालों से पोंछकर ख़ुश्क कर दिया है। तूने मुझे बोसा न दिया, लेकिन यह मेरे अंदर आने से लेकर अब तक मेरे पाँवों को चूमने से बाज़ नहीं रही। तूने मेरे सर पर ज़ैतून का तेल न डाला, लेकिन इसने मेरे पाँवों

पर इत्र डाला। इसलिए मैं तुझे बताता हूँ कि इसके गुनाहों को गो वह बहुत हैं माफ़ कर दिया गया है, क्योंकि इसने बहुत मुहब्बत का इज़हार किया है। लेकिन जिसे कम माफ़ किया गया हो वह कम मुहब्बत रखता है।"[1]

फ़रीसी को सख़्त धचका लगा, "क्या मैं शरीअत पर अमल नहीं करता?" उसने यह कभी सोचा तक नहीं था कि घमंड, गुनाहगारों से नफ़रत और मुहब्बत की कमी भी गुनाह हैं। वह अपने बारे में इतना अंधा था कि कभी एहसास ही नहीं किया था कि मेरे दिल में ख़ुदा और इनसान के लिए कोई मुहब्बत नहीं। उसमें यह सबसे अहम बात मौजूद ही न थी।

अब हज़रत ईसा उस औरत से मुख़ातिब हुए, "तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है। सलामती से चली जा।"[2]

शागिर्दों ने महसूस किया कि जितने हलके क़दमों से यह औरत बाहर गई है ऐसे कभी किसी को जाते नहीं देखा।

उस रात किसी और ने उन्हें अपने घर में उतारा। मगर शागिर्दों को नींद नहीं आ रही थी। शमाऊन ज़ेलोतेस कहने लगा, "हमारे उस्ताद दुआ माँगने बाहर गए हुए हैं। शायद सारी रात ही दुआ में गुज़ारें।" फिर खीजकर यूहन्ना से मुख़ातिब हुआ, "भैया, यह बार बार करवटें बदलना बंद करो।"

---

1 लूक़ा 7:39-47

2 लूक़ा 7:50

यूहन्ना उठकर बैठ गया। वह बोला, “मुझे एक ख़याल बेक़रार कर रहा है। हमारे आक़ा कौन हैं? आज शाम उन्होंने एक और ग़ैरमामूली बात की है। उन्होंने उस औरत के गुनाह माफ़ कर दिए हैं। हमारे बड़े से बड़े नबी को भी तो यह हक़ हासिल न था।”

शमाऊन ज़ेलोतेस ने दिए की लौ ऊँची की, फिर कहा, “हज़रत ईसा के लफ़्ज़ ख़ाली-ख़ोली लफ़्ज़ ही नहीं होते बल्कि उनमें इख़्तियार और क़ुदरत होती है। उन्होंने कितनी ही बार यह बात साबित कर दी है। तुम्हें याद होगा कि एक दिन उन्होंने उलमा और फ़रीसियों के सामने एक मफ़लूज आदमी से इसी तरह बातें कीं। वह जानते थे कि गुनाह के बोझ ने उस मफ़लूज आदमी को बीमारी से भी ज़्यादा दबाए रखा है। इसलिए उन्होंने फ़रमाया, ‘दोस्त, तेरे गुनाह माफ़ हुए हैं।’”

अंदरियास ने कहा, “मुझे याद है कि शरीअत के आलिम किस तरह हज़रत ईसा पर बुड़बुड़ाने लगे कि ‘यह कुफ़र बक रहा है। सिवाए-अल्लाह के कौन गुनाह माफ़ कर सकता है?’ लेकिन हज़रत ईसा ने उन्हें जवाब दिया कि ‘तुम दिल में बुरी बातें क्यों सोच रहे हो? क्या मफ़लूज से यह कहना ज़्यादा आसान है कि तेरे गुनाह माफ़ कर दिए गए हैं या यह कि उठ और चल-फिर? लेकिन मैं तुमको दिखाता हूँ कि इब्ने-आदम को सचमुच दुनिया में गुनाह माफ़ करने का इख़्तियार है।’ यह कहकर वह मफ़लूज से मुख़ातिब हुए, ‘उठ, अपनी चारपाई उठाकर

घर चला जा।'" अंदरियास ने ड्रामाई अंदाज़ में दम लिया। "जब वह बंदा उठकर चलने लगा तो सबकी आँखें खुली की खुली रह गईं।"

यूहन्ना कहने लगा, "इन सारी बातों के बावुजूद मेरा सवाल हल नहीं हुआ कि 'हज़रत ईसा कौन हैं?'

दूसरों ने भी इत्तफ़ाक़ किया कि हम भी उस दिन का इंतज़ार कर रहे हैं जब इस सवाल का पूरा पूरा जवाब मिलेगा।

मत्ती की ज़िंदगी की तबदीली

शागिर्द मत्ती को याद आया कि मैंने दाऊद से मुलाक़ात का वक़्त मुक़र्रर किया हुआ है। वह सबको छोड़कर उसकी तलाश में चला गया। दाऊद एक मकान के साय में से अचानक निकलकर गरमजोशी से कहने लगा, “मत्ती, बहुत अच्छा किया जो आ गए।”

मत्ती ने हँसकर जवाब दिया, “ख़ुशी तो मुझे हुई है।” उसने राय दी, “चलो बातें भी करते हैं और सैर भी करते हैं। तुम बहुत कुछ पूछना चाहते होगे। मैं तुम्हारी ख़िदमत में हाज़िर हूँ।”

दाऊद ने अपना गरम चोग़ा ज़रा कसकर लपेटते हुए कहा, “लगता है कि हज़रत ईसा ने बहुत-से लोगों को अपनी तरफ़ कर लिया है। मुझे घर वापस आते ही यह एहसास हुआ। मेरे वालिद साहब और भाई और बहन रूत पर भी उनकी बातों का बहुत असर हुआ है, और बैत-अनियाह में हमारे दोस्तों का भी यही हाल है। लाज़र, मर्था और मरियम, हज़रत

ईसा को बहुत अच्छी तरह से जानते हैं क्योंकि तुम लोग उनके मेहमान हुआ करते हो।”

“यह तो सच है,” मत्ती ने कहा। “बहुत बार उनके मेहमान रहे हैं। जब उनके हाँ होते तो लगता है कि अपने ही घर में हैं।”

दाऊद मुसकराया, “वह ख़ानदान तो यह समझता है कि हज़रत ईसा मौऊदा नजातदहिंदा अल-मसीह ही हैं।” दाऊद ज़रा रुका। “मगर मेरा बाप हज़रत ईसा के बारे में राय क़ायम करने में ज़्यादा मुहतात है। फिर भी लगता है कि जल्दी ही वह भी इस हक़ीक़त को तसलीम कर लेगा। और जब से मुझे मग्दलीनी और दूसरे बहुत-से लोगों के शफ़ा पाने का इल्म हुआ है मैं इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि उनमें हैरतदनाक क़ुदरत है। और यह भी नज़र आता है कि वह ख़ाली पुलाव नहीं करते, कि उनसे ख़ुदा की मुहब्बत भी चमकती है। उनकी बातों ने अल्लाह के बारे में मेरी आँखें एक नए अंदाज़ से खोल दी हैं। इसलिए मैंने सोचा कि उनके बारे में तुम्हारी राय मालूम करूँ, क्योंकि तुम उनको क़रीब से जानते हो। सबसे पहले मुझे यह बताओ कि तुमने क्यों एकदम अपना सब कुछ छोड़कर एक ऐसे आदमी के पीछे हो लिए जिसे तुम जानते भी न थे? तुमने तो एक चलते कारोबार को तर्क करके एक ग़ैरयक़ीनी मुस्तक़बिल को अपनाया है बल्कि मुझे तुम्हारा मुस्तक़बिल भी ख़तरे में घिरा नज़र आता है। तुम हज़रत ईसा को क्या समझते हो कि इस तरह उनके पीछे चलने को आमादा हुए?” वह ज़रा रुका फिर बोला,

“मैं जानता हूँ तुम जज़बाती आदमी नहीं हो। उन्होंने तुम्हें कोई ख़ुसूसी पेशकश की होगी, कोई ऐसी चीज़ जो रुपए-पैसे से भी अहम हो। तब ही तुमने अपने अच्छे-ख़ासे कारोबार पर लात मार दी है।”

मत्ती ने सीधे जवाब दिया, “कोई पेशकश नहीं बल्कि ख़ुद ही हज़रत ईसा ने मेरे दिल को मोह लिया है। जितना ज़्यादा मैं उनके साथ रहते हुए उनको जानता जाता हूँ, उतनी ही उनके लिए मेरी मुहब्बत बढ़ती जाती है। ज़िंदगी में उन जैसा शख़्स न कभी देखा, न सुना। है ना अजीब बात? लेकिन है बिलकुल दुरुस्त। हज़रत ईसा में कोई भी ख़ामी नज़र नहीं आती। हम उन्हें सख़्त से सख़्त हालात में भी बड़े क़रीब से देखते रहते हैं। हमने उन्हें उस वक़्त भी देखा है, जबकि वह सख़्त थके-माँदे थे। कभी तो लोग उनका मज़ाक़ उड़ाते लेकिन हज़रत ईसा के रवैये में रत्ती-भर भी फ़रक़ नहीं आता। वह न कभी बुड़बुड़ाते और न घबराते हैं बल्कि वैसी ही हलीमी से लोगों की ख़िदमत किए जाते हैं।” मत्ती ने ज़रा दम लिया। फिर जोश से बात जारी रखी, “जिस दीन की वह बिशारत देते हैं उसका ताल्लुक़ दिल से है। उन्हें इस बात की परवा नहीं कि मेरे शागिर्द खाना खाने या दुआ माँगने से पहले हाथ धोते हैं या नहीं, और न वह दीगर दीनी रसूमात की परवा करते हैं। लेकिन दूसरी तरफ़ से जिसके दिल में ख़ुदा की मुहब्बत न हो वह उनका शागिर्द नहीं हो सकता। इस बात पर वह बहुत ज़ोर देते हैं कि हमारे दिल में अल्लाह के लिए ज़रूर मुहब्बत हो।”

दाऊद बहुत मुतअस्सिर हुआ, “मैं समझ गया हूँ। बचपन ही से यह रस्में हमारे दिमाग़ों में ठूँसी गई हैं। हमें सिर्फ़ ऐसी बातों की अहमियत सिखाई गई है कि यह न खाओ, वह न खाओ। फ़लाँ मौक़े पर हाथ धोओ और सबत के दिन इतने क़दमों से ज़्यादा फ़ासला तय न करो वग़ैरा। आहिस्ता आहिस्ता हम इन रसूमात के ग़ुलाम बनकर रह गए हैं। और इनमें से कितने ही आदमियों के बनाए हुए हैं! शरीअत के आलिम, फ़रीसी और इमाम इनकी मुनादी ज़्यादा और अल्लाह की मुनादी कम करते हैं।”

मत्ती बिलकुल ख़ामोश खड़ा हो गया। “एक बार यरूशलम से शरीअत के कुछ आलिम और फ़रीसी ख़ास इसी मक़सद से आए थे कि उस्ताद को इस मसले में फँसाएँ। उन्होंने पूछा कि ‘आपके शागिर्द बापदादा की रिवायत क्यों तोड़ते हैं? क्योंकि वह हाथ धोए बग़ैर रोटी खाते हैं।’[1] यह तो तुम भी जानते हो और मैं भी कि हम कभी गंदे हाथों से तो नहीं खाते। अलबत्ता हम रस्मी पाबंदी नहीं करते कि खाने से पहले ज़रूर हाथ धोओ। हमारे आक़ा ज़ोर देकर कहते हैं कि रस्मी तौर पर धोने-धुलाने से नापाकी दूर नहीं होती।”

मत्ती मुसकराया, “काश तुम मौजूद होते जब हज़रत ईसा ने उनकी पोल खोल दी। उन्होंने कहा, “और तुम अपनी रिवायात की ख़ातिर अल्लाह का हुक्म क्यों तोड़ते हो? क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया, ‘अपने

---

1 मत्ती 15:2

बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना’ और ‘जो अपने बाप या माँ पर लानत करे उसे सज़ाए-मौत दी जाए।’ लेकिन जब कोई अपने वालिदैन से कहे, ‘मैं आपकी मदद नहीं कर सकता, क्योंकि मैंने मन्नत मानी है कि जो कुछ मुझे आपको देना था वह अल्लाह के लिए वक़्फ़ है’ तो तुम इसे जायज़ क़रार देते हो। यों तुम कहते हो कि उसे अपने माँ-बाप की इज़्ज़त करने की ज़रूरत नहीं है। और इसी तरह तुम अल्लाह के कलाम को अपनी रिवायत की ख़ातिर मनसूख़ कर लेते हो। रियाकारो! यसायाह नबी ने तुम्हारे बारे में क्या ख़ूब नबुव्वत की है, ‘यह क़ौम अपने होंटों से तो मेरा एहतराम करती है लेकिन उसका दिल मुझसे दूर है। वह मेरी परस्तिश करते तो हैं, लेकिन बेफ़ायदा। क्योंकि वह सिर्फ़ इनसान ही के अहकाम सिखाते हैं।’”[1]

दाऊद ने ज़ोर से साँस खींचा, “तुम्हारे उस्ताद बड़े दिलेर हैं। क्या उन्हें ख़ौफ़ नहीं कि किसी दिन क़ैद किए जाएँगे? अलबत्ता मैं मानता हूँ कि उन्होंने बड़े पते की बात कही। वह बेटा कितना पत्थरदिल होगा जो रुपए-पैसे ख़ुदावंद को दे देता है, लेकिन अपने वालिदैन की देख-भाल नहीं करता! और जो इमाम ऐसा हदिया क़बूल करता है वह भी अंधा है!”

मत्ती ने बात जारी रखी, “उस्ताद ने फ़रमाया कि कोई ऐसी चीज़ है नहीं जो इनसान के मुँह में दाख़िल होकर उसे नापाक कर सके, बल्कि

---

1 मत्ती 15:3-9

जो कुछ इनसान के मुँह से निकलता है वही उसे नापाक कर देता है।”[1]
मत्ती हँसा, “अफ़सोस कि हम शागिर्द भी उनकी बात समझने से क़ासिर रहे। हमने बाद में मतलब पूछा तो वह कहने लगे, ‘“क्या तुम अभी तक इतने नासमझ हो? क्या तुम नहीं समझ सकते कि जो कुछ इनसान के मुँह में दाख़िल हो जाता है वह उसके मेदे में जाता है और वहाँ से निकलकर जाए-ज़रूरत में? लेकिन जो कुछ इनसान के मुँह से निकलता है वह दिल से आता है। वही इनसान को नापाक करता है। दिल ही से बुरे ख़यालात, क़त्लो-ग़ारत, ज़िनाकारी, हरामकारी, चोरी, झूठी गवाही और बुहतान निकलते हैं। यही कुछ इनसान को नापाक कर देता है, लेकिन हाथ धोए बग़ैर खाना खाने से वह नापाक नहीं होता।’”[2]
मत्ती ने दुबारा चलना शुरू कर दिया। “देखा दाऊद, इसका मतलब यही था की ज़ाहिरी रस्मों के पीछे न जाओ बल्कि दिल की हालत की फ़िकर करो।”

दाऊद ने तसदीक़ में सर हिलाया और पूछने लगा, “क्या हज़रत ईसा ने अपने पैरौओं को कोई उसूल बताए हैं कि वह कैसी ज़िंदगी गुज़ारें?”

मत्ती ख़ुश हुआ। यह शख़्स बहुत अच्छे सवाल पूछ रहा है। “बिलकुल, बिलकुल! वह चाहता है कि उसके पैरौ दुनिया में ऐसे हों जैसे खाने में नमक होता है। सब जानते हैं कि खाने में नमक हो, तब ही मज़ा आता है। गोश्त को लगाया जाए तो उसे गलने-सड़ने से बचाता है। वह चाहता

1 मत्ती 15:10-11
2 मत्ती 15:16-20

है कि इस बिगड़े हुए मुआशरे में उसके पैरौओं का किरदार भी ऐसा हो। उस्ताद ने फ़रमाया कि "तुम दुनिया का नमक हो। लेकिन अगर नमक का ज़ायक़ा जाता रहे तो फिर उसे क्योंकर दुबारा नमकीन किया जा सकता है? वह किसी भी काम का नहीं रहा बल्कि बाहर फेंका जाएगा जहाँ वह लोगों के पाँव तले रौंदा जाएगा।"[1]

उन्होंने यह भी कहा था कि नेक ज़िंदगी लाज़िम है ताकि नमूने से लोग अपनी अपनी ज़िंदगी का जायज़ा ले सकें। उनका कहना था कि "पहाड़ पर वाक़े शहर की तरह तुमको छिपाया नहीं जा सकता। जब कोई चराग़ जलाता है तो वह उसे बरतन के नीचे नहीं रखता बल्कि शमादान पर रख देता है जहाँ से वह घर के तमाम अफ़राद को रौशनी देता है। इसी तरह तुम्हारी रौशनी भी लोगों के सामने चमके ताकि वह तुम्हारे नेक काम देखकर तुम्हारे आसमानी बाप को जलाल दें।"[2]

अचानक घोड़ों की टापों की आवाज़ आने लगी। दाऊद जल्दी से मत्ती को घसीटकर एक दीवार की ओट में ले गया। "शायद रोमी सिपाही अपनी बारकों को वापस जा रहे हैं," उसने सरगोशी की। "अच्छा है कि उनकी नज़र हम पर न पड़े।" चंद सिपाही बेढंगे अंदाज़ में गा रहे थे। अलफ़ाज़ भी अच्छी तरह मुँह से न निकल रहे थे। एक ने दूसरे को छेड़ते हुए हाँक लगाई, "रु – रोक जा … ओ …, यारो। सब … नश …, नशे में हो।" अब वह आगे बढ़ चुके थे।

---

1 मत्ती 5:13

2 मत्ती 5:14-17

ख़ामोशी हुई तो मत्ती बोला, "लगता है कि उन्हें कहीं से शराब की मशकें हाथ लग गई हैं। बेचारे, बहुत तनहाई महसूस करते होंगे। अपने घर और बाल-बच्चों से इतने दूर ज़िंदगी गुज़ारना कोई मज़ाक़ तो नहीं। यों वह अपनी फ़िकरें और ग़म शराब में ग़रक़ करने की कोशिश करते हैं।" उन्होंने फिर चलना शुरू कर दिया। मत्ती ने फिर बातों का सिलसिला छेड़ा। "हमारे उस्ताद इस बात पर बड़ा ज़ोर देते हैं कि यह मुमकिन नहीं कि तुम ख़ुदा से तो मुहब्बत रखो और अपने भाई की क़दर न करो। मुझे आसमानी बाप से जो बेबहा मुहब्बत मिलती है, ज़रूरी है कि उसकी धार उन लोगों की तरफ़ भी बहे जिनके दरमियान मैं रहकर काम करता हूँ। अगर मेरे पड़ोसी की कोई ज़रूरत हो तो मुझे उसकी मदद करने के लिए तैयार होना चाहिए। अगर उसने मेरा क़ुसूर किया हो तो चाहिए कि उसे माफ़ कर दूँ। माफ़ी और मुहब्बत की रूह हज़रत ईसा के पैरोकारों का तुर्राए-इम्तियाज़ होनी चाहिए।"

दाऊद ने कहा, "तो क्या इसका मतलब यह है कि हज़रत ईसा तौरेत की शरीअत को ख़त्म करना चाहते हैं?"

मत्ती ने उसे यक़ीन दिलाया, "हज़रत ईसा ने ख़ुद ही विज़ाहत कर दी है कि ऐसी बात हरगिज़ नहीं। उन्होंने कहा कि 'यह न समझो कि मैं मूसवी शरीअत और नबियों की बातों को मनसूख़ करने आया हूँ। मनसूख़ करने नहीं बल्कि उनकी तकमील करने आया हूँ। मैं तुमको सच बताता हूँ, जब तक आसमानो-ज़मीन क़ायम रहेंगे तब तक शरीअत

भी क़ायम रहेगी—न उसका कोई हरफ़, न उसका कोई ज़ेर या ज़बर मनसूख़ होगा जब तक सब कुछ पूरा न हो जाए।'"[1] मत्ती ने बात जारी रखी, "लगता है वह तौरेत को एक बुलंद मेयार और गहरे मानी दे रहे हैं। मसलन उन्होंने कहा कि 'तुमने सुना है कि फ़रमाया गया है, 'अपने पड़ोसी से मुहब्बत रखना और अपने दुश्मन से नफ़रत करना।' लेकिन मैं तुमको बताता हूँ, अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखो और उनके लिए दुआ करो जो तुमको सताते हैं। फिर तुम अपने आसमानी बाप के फ़रज़ंद ठहरोगे, क्योंकि वह अपना सूरज सब पर तुलू होने देता है, चाहे वह अच्छे हों या बुरे। और वह सब पर बारिश बरसने देता है, चाहे वह रास्तबाज़ हों या नारास्त। अगर तुम सिर्फ़ उन्हीं से मुहब्बत करो जो तुमसे करते हैं तो तुमको क्या अज्र मिलेगा? टैक्स लेनेवाले भी तो ऐसा ही करते हैं। ... चुनाँचे वैसे ही कामिल हो जैसा तुम्हारा आसमानी बाप कामिल है।'"[2]

दाऊद ने लंबा साँस लिया, "यार, इस पर अमल करना तो बहुत मुश्किल लगता है। पूरा दिल लगाना पड़ेगा। अगर अल्लाह के साथ ख़ालिस मुहब्बत न हो तो दिल में भाई के लिए मुहब्बत कहाँ होगी! दुश्मन का तो ज़िक्र ही क्या!"

मत्ती ने पूरे दिल से इत्तफ़ाक़ करते हुए कहा, "हमारे उस्ताद भी इस हक़ीक़त से बख़ूबी वाक़िफ़ हैं कि हर कोई जो उन्हें 'ख़ुदावंद' कहकर

1 मत्ती 5:17-18
2 मत्ती 5:43-48

पुकारता है उनका मुख़लिस पैरोकार नहीं होता। एक दिन उन्होंने कहा भी था कि 'हर एक जो मुझे 'ख़ुदावंद, ख़ुदावंद' कहकर पुकारता है आसमान की बादशाही में दाख़िल न होगा। सिर्फ़ वही दाख़िल होगा जो मेरे आसमानी बाप की मरज़ी पर अमल करता है। ... लिहाज़ा जो भी मेरी यह बातें सुनकर उन पर अमल करता है वह उस समझदार आदमी की मानिंद है जिसने अपने मकान की बुनियाद चटान पर रखी। बारिश होने लगी, सैलाब आया और आँधी मकान को झँझोड़ने लगी। लेकिन वह न गिरा, क्योंकि उसकी बुनियाद चटान पर रखी गई थी। लेकिन जो भी मेरी यह बातें सुनकर उन पर अमल नहीं करता वह उस अहमक़ की मानिंद है जिसने अपना मकान सही बुनियाद डाले बग़ैर रेत पर तामीर किया। जब बारिश होने लगी, सैलाब आया और आँधी मकान को झँझोड़ने लगी तो यह मकान धड़ाम से गिर गया।'"[1]

दाऊद के होंटों पर हलकी-सी मुसकराहट फैल गई। "मैं समझ गया। हज़रत ईसा ऐसे पैरोकार नहीं चाहते जो उनके मेयार पर पूरे नहीं उतरते बल्कि वह उन मुट्ठी-भर अफ़राद की क़दर करते हैं जो उनके हुक्मों पर अमल करें। अच्छा यह तो बताओ कि क्या यह दुरुस्त है कि हज़रत ईसा ने बाज़ अफ़राद की अपने पीछे चलने में हौसलाशिकनी की थी?"

मत्ती ने ऐसे सर हिलाया जिसका मतलब हाँ भी हो सकता था और नहीं भी। "मैं बताता हूँ। एक दिन हम सड़क पर चले जा रहे थे कि एक

1 मत्ती 7:21-27

आदमी दौड़ता हुआ आक़ा के पास आया। वह जज़बाती-सा था। ऐसे लोग कुछ करने से पहले अकसर सोचा नहीं करते। बड़े जज़बाती अंदाज़ में वह कहने लगा, 'उस्ताद, जहाँ भी आप जाएंगे मैं आपके पीछे चलता रहूँगा।' हमारे उस्ताद ऐसे पैरोकारों को हरगिज़ पसंद नहीं करते जिनको हक़ीक़त में पता नहीं होता कि हम क्यों उनके पीछे चलते हैं। उन्होंने जवाब दिया कि 'लोमड़ियाँ अपने भट्टों में और परिंदे अपने घोंसलों में आराम कर सकते हैं, लेकिन इब्ने-आदम के पास सर रखकर आराम करने की कोई जगह नहीं।'[1] ऐसी ज़िंदगी के ख़याल ही से वह आदमी हिम्मत हार गया। लेकिन दाऊद, मैं तुम्हें बताता हूँ, हमारे मालिक को अगर कोई ऐसा शख़्स मिल जाए जो दिल से उनकी पैरवी करना चाहे तो वह ज़रूर उसकी हौसलाअफ़्ज़ाई करते हैं। एक बार उनकी मुलाक़ात एक ऐसे ही आदमी से हुई। उन्होंने उससे कहा, 'मेरे पीछे हो ले।' वह आदमी बहुत ही सुस्त था। कहने लगा, 'ख़ुदावंद, मुझे पहले जाकर अपने बाप को दफ़न करने की इजाज़त दें।' और यह तो सबको पता था कि अभी उसका बाप मरा नहीं था। दरअसल वह कह रहा था कि मैं अपने बाप की वफ़ात के बाद ही तेरे पीछे चल सकता हूँ। लेकिन हमारे ख़ुदावंद ने फिर उसकी हिम्मत बढ़ाई और कहा कि 'मुरदों को अपने मुरदे दफ़नाने दे। तू जाकर अल्लाह की बादशाही की मुनादी कर।' फिर एक तीसरा आदमी था जो उस्ताद के पीछे चलना चाहता था। हम सबको

1 मत्ती 8:20

एहसास था कि मुड़ मुड़कर पीछे ही देखता रहेगा। उसने हज़रत ईसा से कहा, ‘ख़ुदावंद, मैं ज़रूर आपके पीछे हो लूँगा। लेकिन पहले मुझे अपने घरवालों को ख़ैरबाद कहने दें।’ हज़रत ईसा ने उससे कहा, ‘जो भी हल चलाते हुए पीछे की तरफ़ देखे वह अल्लाह की बादशाही के लायक़ नहीं है।”[1]

दाऊद ने कहा, “हज़रत ईसा ने बिलकुल दुरुस्त फ़रमाया। हल पर हाथ रखकर पीछे देखनेवाले को कभी सीधा चलते नहीं देखा। मैं मानता हूँ कि ख़ुदा की ख़िदमत पूरे दिल ही से की जा सकती है।”

मत्ती भाँप गया कि दाऊद के दिल में कैसी कशमकश जारी है। क्या यह नौजवान उस भारी क़ीमत से कतरा रहा है जो हज़रत ईसा का पैरोकार होने के लिए अदा करनी पड़ती है? उसने विज़ाहत करते हुए कहा, “हज़रत ईसा ने कभी नहीं कहा कि मेरे पीछे चलना आसान है बल्कि एक बार तो कहा था कि ‘जो मेरे पीछे आना चाहे वह अपने आपका इनकार करे और हर रोज़ अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे हो ले।’”[2]

दाऊद ने सर हिलाया, “मत्ती, शुक्रिया। तुमने इतना वक़्त दिया। तुमने कई बातें बताईं जिन पर मुझे सोचना होगा। लेकिन मैं देख रहा हूँ कि हज़रत ईसा के साथ रहकर तुम कितने बदल गए हो। अब मेरी बारी है कि तुमसे चंद बातें कहूँ। मैं तुम्हें ख़बरदार करना चाहता हूँ।

---

1 लूक़ा 9:57-62 पर मबनी|

2 लूक़ा 9:23

तुम्हारे आक़ा को दोहरा ख़तरा दरपेश है। मैं तुम्हें परेशान नहीं करना चाहता, मत्ती। लेकिन लोगों का जोशो-ख़ुरोश देखकर ख़याल आता है कि किसी दिन वह उनको पकड़कर ज़बरदस्ती बादशाह बना देंगे। वह उनकी ताक़त और क़ुदरत को पहचानते हैं। लेकिन रोमी हुकूमत एकदम हमला कर देगी और उनका उसी वक़्त ख़ातमा हो जाएगा। उधर यहूदी पेशवा हैं। वह उनकी बढ़ती हुई मक़बूलियत से जलकर कोयला हो रहे हैं। वह भी उनका काम तमाम करने की ताक़त रखते हैं। मैं देख रहा हूँ कि हर दो सूरतों में तुम्हारे उस्ताद के लिए ख़तरा ही ख़तरा है। अपनी आँखें खुली रखो तो शायद उन्हें ऐसे ख़ौफ़नाक अंजाम से बचा सको।”

मत्ती को ज़रा भी तशवीश न हुई। “हमारे मालिक अपनी हिफ़ाज़त करना जानते हैं,” उसने दाऊद को यक़ीन दिलाया, “और क्या पता किसी दिन वह हमारी क़ौम के हाकिम बन जाएँ। मुझे यक़ीन है कि वक़्त आने पर वह ख़ुद को मौऊदा अल-मसीह ज़ाहिर कर देंगे।”

दुखियों के लिए तसल्ली

इफ़राईम ने दाऊद को वापस कफ़र्नहूम बुला लिया था, क्योंकि उसका ख़याल था कि अब वह मामूल की ज़िंदगी गुज़ार सकता है। दाऊद भी जानता था कि वालिद साहब मुझे अपने पास ही देखना चाहते हैं। लेकिन वह उनकी ख़ाहिश पूरी नहीं कर सकता था क्योंकि अब वह हज़रत ईसा के पीछे पीछे चलने को बेक़रार था। वह उनकी बातें सुनने और अपनी आँखों से मोजिज़े देखने को बेचैन रहता था। सारे लोग हज़रत ईसा की तारीफ़ करते थे, बल्कि वह तो यहाँ तक कहते थे कि कोई भी काम इस उस्ताद के इख़्तियार से बाहर नहीं। मगर दाऊद कुछ शक्कीमिज़ाज आदमी था। वह इन बातों को यों ही क़बूल करने को तैयार न था। ताहम वह सोचता था कि इन सारी बातों में कुछ न कुछ हक़ीक़त तो ज़रूर होगी।

इस वक़्त वह तेज़ी से कफ़र्नहूम के इबादतख़ाने को जा रहा था। उसके वालिद साहब ने उसे इबादतख़ाने के एक सरदार यूनतन बिन

यूसियाह के लिए एक पैग़ाम देकर भेजा था। उसने सोचा कि पैग़ाम पहुँचाने के बाद हज़रत ईसा को तलाश करना चाहिए, क्योंकि वह इस शहर में आए हुए हैं। उन्हें तलाश करना कोई मुश्किल काम न था, क्योंकि एक बड़ी भीड़ हर वक़्त उनके साथ लगी रहती थी। दाऊद अपने ख़यालात में इतना खोया हुआ जा रहा था कि उसे ख़बर न हुई कि कोई उसे पुकार रहा है। आकर पुकारनेवाले ने उसका रास्ता रोक लिया। तब वह ख़ुशी से पुकार उठा, "इसहाक़ साहब! कफ़र्नहूम कैसे आना हुआ? इतनी मुद्दत के बाद आपसे मिलकर बेहद ख़ुशी हुई है।"

इसहाक़ दाऊद से बग़लगीर हुआ। "इब्राहीम का ख़ुदा तुम्हें हर दुख से महफ़ूज़ रखे," उसने ख़ुशदिली से कहा। "तुम्हारे ग़ायब हो जाने से तुम्हारे बाप, भाई और बहन को कितना सदमा हुआ था।" उसने अपना बायाँ हाथ ड्रामाई अंदाज़ से सीने पर रखा। "हमारे दिलों पर भी बहुत बोझ था।" फिर बड़ी मानीख़ेज़ नज़रों से दाऊद को देखते हुए पूछा, "क्या तुम ने सुना कि शादी पर क्या कुछ पेश आया था?"

दाऊद ने सर हिलाया, "हाँ। लेकिन मेरे लिए यह मानना बहुत मुश्किल है कि सचमुच ऐसा मोजिज़ा हुआ!"

इसहाक़ ने अफ़सोस करते हुए जवाब दिया, "ख़ुद मुझे भी तो बड़ी मुश्किल से यक़ीन आ रहा था हालाँकि यह मोजिज़ा मेरे अपने घर में हुआ। सारा कुछ इतनी ख़ामोशी से हो गया कि पता ही नहीं चला। लेकिन उस मोजिज़े से मैंने अंदाज़ा लगाया है कि इन दिनों में अल्लाह

हमारे दरमियान बड़े बड़े काम कर रहा है। अब तो जब भी वक़्त मिलता है मैं हज़रत ईसा के क़रीब रहता हूँ। मैं उनका कलाम सुनता और ग़ौर से उनके काम देखता हूँ। अब मुझे यक़ीन हो चला है कि वही अल-मसीह हैं।"

दाऊद ने उसे दावत दी, "हमारे घर तशरीफ़ लाकर कुछ आराम करें। अब्बा जान और रूत आपसे मिलकर बहुत ख़ुश होंगे।"

इसहाक़ ने जवाब दिया, "बेटा, शुक्रिया। लेकिन चलने से पहले मैं उस मोजिज़े का ज़िक्र करना चाहता हूँ जो अभी अभी हुआ है।" इसहाक़ ने ऐसे सर हिलाया जैसे जो कुछ देखा है उस पर यक़ीन करना बेहद मुश्किल हो। "हम एक पहाड़ पर से उतर रहे थे यानी हज़रत ईसा, उनके शागिर्द और एक बड़ी भीड़। फिर क्या देखता हूँ कि एक कोढ़ी हज़रत ईसा की तरफ़ आ रहा है। भीड़ में कई-एक तो चीख़ उठे, 'नापाक, नापाक! दूर हो जाओ। कोढ़ी!' मेरे क़रीब ही किसी ने बताया, 'यह तो सलमा बिन राम है। बहुत नेक आदमी है। देखो इसकी आँखों में इनसानी करब किस क़दर झलक रहा है।' उसके साथ एक औरत थी। शायद वह उसकी बीवी थी। वह बोली, 'इब्राहीम का ख़ुदा सलमा पर रहम करे और उसे अपने ख़ानदान से दुबारा मिला दे।"

दाऊद हैरान होकर पुकार उठा, "सलमा बिन राम! तिमना का शौहर! वह तो हमारे घर में काम करती है।" फिर ख़ास दिलचस्पी से पूछा, "फिर क्या हुआ?"

इसहाक़ को इतनी जल्दी नहीं थी। “ठहरो। अभी बताता हूँ। बाज़ लोगों के दिल पत्थर के होते हैं। किसी ने तंज़ किया कि अल्लाह ने सलमा को गुनाहगार क़रार दिया है। उसका अपना क़ुसूर है कि इतनी मुसीबत में गिरिफ़्तार है।”

दाऊद ग़ुस्से से बोला, “मैं सलमा को कई सालों से जानता हूँ। अच्छा आदमी है। बड़ी मुहब्बत से अपनी बीवी-बच्चों को पालता था। और तिमना का दिल भी बिलकुल ख़ालिस है।”

इसहाक़ ने तसल्ली देते हुए कहा, “गरम होने की ज़रूरत नहीं। तुम्हें एक अच्छी ख़बर सुनाने लगा हूँ। सलमा को शफ़ा मिल चुकी है। हज़रत ईसा ने उसे कहा कि जाकर अपने आपको इमाम को दिखा। रिवाज के मुताबिक़ एक इमाम ने उसका मुआयना किया और उसे सेहतमंद क़रार दिया। तिमना ज़रूर तुम्हें सारी बात ख़ुद बताएगी।”

दाऊद सख़्त हैरान हुआ। “आख़िर हुआ क्या? कोढ़ यों ही तो दूर नहीं हो जाया करता ना! अब तक तो इस मनहूस बीमारी का कोई इलाज दरियाफ़्त नहीं हुआ।”

इसहाक़ ने बड़ी संजीदगी से जवाब दिया, “बेटा, यह हज़रत ईसा ही का काम है। मुझे तो अब पक्का यक़ीन है कि वह कोई आम आदमी नहीं हैं। जितने इनसानों को मैं जानता हूँ उन सबसे वह बिलकुल निराले हैं।”

दाऊद ने बेसब्री से अपना सवाल दोहराया, “हज़रत ईसा ने सलमा से क्या किया? उसे कैसे शफ़ा बख़्शी?”

इसहाक़ ने जवाब दिया, “बड़ी सीधी-सादी बात है। सलमा ने आगे बढ़कर उस्ताद को सिजदा किया और मिन्नत की कि ‘ख़ुदावंद, अगर आप चाहें तो मुझे पाक-साफ़ कर सकते हैं।’ उस्ताद ने बड़ी तरस भरी नज़रों से उसे देखा और फिर उसे छूकर कहा, ‘मैं चाहता हूँ, पाक-साफ़ हो जा।” इसहाक़ ने ज़रा दम लिया, “मैं सालमा को ग़ौर से देख रहा था। एक लमहे में उसका कोढ़ जाता रहा।”[1]

दाऊद को यक़ीन नहीं आ रहा था। “जब एक आम यहूदी कोढ़ी को छूने से कतराता है कि कहीं नापाक न हो जाए तो इमाम तो उसके साय से भी भागते हैं। हज़रत ईसा सचमुच उस्तादों से कितने मुख़्तलिफ़ हैं!”

इसहाक़ बोला, “बाद में मैं उस से मिला। उसने बताया, ‘मैं बरसों अल्लाह की मुहब्बत पर शक करता रहा था, लेकिन उस लमहे मालूम हो गया कि सब बातों के बावुजूद ख़ुदा हमेशा मुझे प्यार करता है।’”

दाऊद कहने लगा, “कितनी हैरतनाक बात है। लेकिन अब मुझे जल्दी जाकर अब्बा जी का पैग़ाम पहुँचाना चाहिए।”

जब इबादतख़ाने के नज़दीक पहुँचा तो दाऊद यह देखकर हैरान रह गया कि यूनतन बिन यूसियाह और इबादतख़ाने के चंद और बुज़ुर्ग

1 मत्ती 8:1-4 पर मबनी।

खड़े दूर जाते रोमी सिपाहियों को देख रहे हैं। दाऊद ने उनके दरमियान कफ़र्नहूम के क़िले के सूबेदार को पहचान लिया।

यूनतन ने दूर ही से दाऊद को सलाम किया और उसे गले लगाने को बढ़ा। "दाऊद, तुम्हारी सलामती हो! ख़ुदा ने बड़ा फ़ज़ल किया कि तुम्हें दुबारा अपने ख़ानदान से मिला दिया।"

उसके क़रीब ही एक मुअज़्ज़ज़ आदमी खड़ा था। उसकी तरफ़ मुड़ते हुए बोला, "दाऊद, यह हैं हमारे इबादतख़ाने के मुअज़्ज़ज़ सरदार याईर।"

याईर ने गरमजोशी से कहा, "दाऊद, मैंने अभी अभी सुना है कि कितने अजीब तरीक़े से तुम्हारा अपने ख़ानदान से दुबारा मिलाप हुआ है। मेरी सिर्फ़ एक ही बेटी है। अगर ख़ुदा-नख़ास्ता उसे कुछ हो गया तो मेरे तो घर का चराग़ बुझ जाएगा।"

यूनतन ने उससे कहा, "फ़िकरमंद होने की क्या ज़रूरत है। अभी तो आपकी बेटी बारह ही बरस की है। जवान होगी तो आपके लिए और ख़ुशी का मूजिब होगी।"

दाऊद को याद आया कि क्यों आया है। "नीकुदेमुस फ़रीसी ने अब्बा जान को आपके लिए एक पैग़ाम दिया है। उनको पता चला कि आप हद से ज़्यादा मसरूफ़ रहते हैं, इसलिए कहते हैं कि ज़रा छुट्टी करें और यरूशलम आकर उनसे मिलें।" दाऊद मुसकराया, "आपकी मुलाक़ात से नीकुदेमुस को भी बहुत फ़ायदा होगा।"

यूनतन ने शुक्रिया अदा किया। “मुझे अंदाज़ा है कि उसके दिल में क्या है। हज़रत ईसा। और याद आया, हम तो उन्ही को तलाश करने जा रहे हैं।”

दाऊद ने सवाल किया, “जनाब! क्या कोई ख़ास वजह है?”

“हाँ। हमारे अज़ीज़ सूबेदार जिसने हमारा इबादतख़ाना बनवाया था, उसने दरख़ास्त की है। उसका एक नौजवान ग़ुलाम है जो उसको बहुत अज़ीज़ है। वह सख़्त बीमार बल्कि मरने के क़रीब है। इसलिए सूबेदार ने हमसे दरख़ास्त की है कि हज़रत ईसा से मिलें और अर्ज़ करें कि वह उसको शफ़ा दें।”

दाऊद बोला, “यह रोमी सूबेदार कितना फ़ैयाज़दिल है। इसका ग़ुलाम सचमुच ख़ास मक़ाम रखता होगा! मैंने भी ग़ुलामी का मज़ा चखा है। ग़ुलाम की कोई क़दरो-क़ीमत नहीं होती। लेकिन मुझे भी नेकदिल मालिक का तजरिबा हुआ।” दाऊद की आँखें भर आईं। “क्या सूबेदार हज़रत ईसा को कोई जादूगर समझता है?”

इबादतख़ाने के एक और सरदार ने जवाब दिया, “नहीं, नहीं। सूबेदार ने पाक सहायफ़ का मुतालआ कर रखा है। हमारी तरह वह भी उम्मीद रखता है कि अल-मसीह जल्दी आनेवाला है। और अब तो उसका ज़हन भी इस ख़याल की तरफ़ आ रहा है कि शायद हज़रत ईसा ही वह हस्ती हों जिसका वादा अल्लाह ने कर रखा है।” एक और सरदार बोला, “सूबेदार यहूदियों के एहसासात का बहुत ख़याल रखता है। चूँकि

ग़ैरयहूदी है इसलिए उसने मुनासिब समझा कि हम्ही उसकी दरख़ास्त उस्ताद के पास ले जाएँ।”

याईर काफ़ी बेचैन हो रहा था, “मैं सूबेदार का बहुत एहसानमंद हूँ। मैं उसकी मेहरबानी के बदले में कुछ करना चाहता हूँ, लेकिन मुझे यह एहसास भी है कि हमारे लीडर हज़रत ईसा को बड़ी शक की नज़रों से देखते हैं। इसलिए मुहतात रहो और याद रखो कि अगर हम हज़रत ईसा के साथ क़रीबी ताल्लुक़ रखें तो हमारी इज़्ज़त के बरबाद होने का ख़तरा है।” लमहे-भर के बाद उसने सरदारों की बेचैनी को दूर करने के लिए कहा कि मेरी बातों से आपको तशवीश हो रही होगी। बस, उन्हें भूल जाएँ और अपने दिल की मानें। जो बात दुरुस्त मालूम होती है वही करें।”

यूनतन बोला, “ठीक है, जनाब।” फिर अपने साथियों से कहने लगा, “हमें बातों में वक़्त ज़ाया नहीं करना चाहिए। लड़का क़रीबुल-मर्ग है।” उसने दाऊद को भी साथ चलने की दावत दी।

दाऊद फ़ौरन राज़ी हो गया। वह देखने को बेताब था कि क्या होगा! उसे शक था कि शायद हज़रत ईसा किसी ग़ैरयहूदी की मदद करने को तैयार न हों। क्या वह लड़के की मदद करने को किसी ग़ैरयहूदी के घर में दाख़िल होना पसंद करेंगे? क्या वह महज़ एक ग़ुलाम के लिए तकलीफ़ गवारा करेंगे? रास्ता-भर ऐसी ही बातें सोचता रहा। लेकिन वह दिल से चाहता था कि लड़का बच जाए।

यह पूछने की ज़रूरत न थी कि हज़रत ईसा कहाँ हैं। उनका अंदाज़ा दुरुस्त निकला। वह कफ़र्नहूम के बाहर एक बड़ी भीड़ के दरमियान मौजूद थे।

यूनतन ने दाऊद को उभारा, “तू बड़ा शहज़ोर है। ज़रा कुहनियाँ मारकर उस्ताद तक पहुँचने का रास्ता तो बना। हम तेरे पीछे पीछे आते हैं।”

आख़िर वह हज़रत ईसा तक पहुँच गए। उन्होंने अभी अभी तालीम देना ख़त्म किया था। साफ़ नज़र आता था कि थक गए हैं। दाऊद को इस बात पर सख़्त ताज्जुब हुआ कि उस्ताद बेहद हस्सास हैं। लगता है कि उन्होंने हमारी ज़रूरत महसूस कर ली हो। वह उनकी तरफ़ मुड़े। उनकी मेहरबान नज़रें उन्हें दावत दे रही थीं कि अपनी अर्ज़ पेश करें। यूनतन फ़ौरन आगे बढ़ा और संजीदगी से सूबेदार की दरख़ास्त पेश करके कहा, “यह आदमी इस लायक़ है कि आप उसकी दरख़ास्त पूरी करें, क्योंकि वह हमारी क़ौम से प्यार करता है, यहाँ तक कि उसने हमारे लिए इबादतख़ाना भी तामीर करवाया है।”

हज़रत ईसा ने फ़ौरन उन्हें यक़ीन दिलाया, “मैं ज़रूर चलूँगा।” गोया उनके लिए ऐसा करना फ़ितरी बात हो। वह उसी वक़्त उनके साथ चल पड़े।

शागिर्दों में से मत्ती दाऊद के पास आ गया, “अब तुमको हमारे उस्ताद का कुछ पता चलेगा।” उसने बड़े एतमाद से कहा, “कोई ऐसा

काम नहीं जो वह न कर सकें। मैं रोज़ कोई नई बात देखकर हैरान होता हूँ।”

दाऊद ने इक़रार किया, “मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारे उस्ताद के दिल में लोगों के लिए बेइंतहा मुहब्बत है, वरना वह हर वक़्त इतनी भीड़ को अपने इर्दगिर्द कैसे बरदाश्त कर सकते। मैं तो एक हफ़्ता-भर भी न कर सकता।” वह गरदन उठाकर देखने लगा जैसे कुछ मालूम करना चाहता हो। “देखो! कुछ रोमी आ गए हैं। ज़रूर सूबेदार के दोस्त होंगे। ज़रा सुनो क्या कहते हैं। कहीं वह ग़ुलाम मर न गया हो!”

सूबेदार के एलची की आवाज़ उन तक पहुँच गई। “उस्ताद! सूबेदार कहता है कि मेरे घर में आने की तकलीफ़ न करें, क्योंकि मैं इस लायक़ नहीं हूँ। इसलिए मैंने ख़ुद को आपके पास आने के लायक़ भी न समझा। बस वहीं से कह दें तो मेरा ग़ुलाम शफ़ा पा जाएगा। क्योंकि मुझे ख़ुद आला अफ़सरों के हुक्म पर चलना पड़ता है और मेरे मातहत भी फ़ौजी हैं। एक को कहता हूँ, ‘जा!’ तो वह जाता है और दूसरे को ‘आ!’ तो वह आता है। इसी तरह मैं अपने नौकर को हुक्म देता हूँ, ‘यह कर!’ तो वह करता है।”

हज़रत ईसा सख़्त हैरान हुए। वह भीड़ से मुख़ातिब होकर कहने लगे, “मैं तुमको सच बताता हूँ, मैंने इसराईल में भी इस क़िस्म का ईमान नहीं

पाया।” फिर उन्होंने सूबेदार के दोस्तों से कहा, “जाओ, सूबेदार के साथ वैसा ही हो जैसा उसका ईमान है।”[1]

दाऊद ने लंबा साँस खींचा। ऐसी बात हो गई थी जो कभी देखी न सुनी। एक यहूदी बल्कि उस्ताद ग़ैरयहूदी के ईमान की तारीफ़ कर रहे थे जबकि बेशुमार सुननेवाले यहूदियों को ईमान न रखने के बाइस शरमिंदा होकर रह गए थे।

मत्ती ने दाऊद को बताया, “हमारे ख़ुदावंद की क़ुदरत हैरतअफ़्ज़ा है। शफ़ा देने के लिए उनको बीमार को छूने की ज़रूरत भी नहीं होती।”

लेकिन दाऊद ने मुहतात होकर जवाब दिया, “मैं तो उस लड़के की सेहतयाबी का यक़ीन उस वक़्त करूँगा जब तसदीक़ हो जाएगी।”

मत्ती बेफ़िकर होकर हँसा, “तुम्हें मायूसी नहीं होगी।” ज़रा झिझक के बाद उसने दाऊद को दावत दी, “हमारे साथ नाइन शहर को चलो। कल सुबह हम गलील की झील के आस-पास के इलाक़े का दौरा शुरू कर रहे हैं। मेरा ख़याल है एक दिन में वहाँ पहुँच जाएँगे। लेकिन मुमकिन है कि उस्ताद रास्ते में मुनादी करना और तालीम देना पसंद करें। फिर कुछ ज़्यादा देर लग जाएगी। लेकिन इससे तुम्हें क्या फ़रक़ पड़ेगा! खुले मैदान में सोएँगे और जो कुछ मिल जाए ख़रीदकर खाएँगे।” फिर ज़रा संजीदगी से बोला, “ज़रूर चलो। तुम्हारी नज़रों में भी वुसअत आ जाएगी।”

1 मत्ती 8:5,13; लूक़ा 7:1-10 पर मबनी|

अचानक हलचल मची। कई आवाज़ें बुलंद हुईं। "ख़ुदा की तारीफ़ हो!" सूबेदार के दोस्त यह अच्छी ख़बर सुनाने को वापस आए थे कि उसका ख़ादिम बिलकुल तनदुरुस्त हो गया है।

अगली सुबह दाऊद हज़रत ईसा के साथ जाने को आया तो अच्छा-ख़ासा हुजूम मौजूद था। सफ़र के दौरान भीड़ में इज़ाफ़ा होता गया। यूनतन बिन यूसियाह भी उनके साथ था। कई घंटों की मसाफ़त के बाद वह कहने लगा, "मैं बूढ़ा हूँ। पाँव थक गए हैं। लेकिन मेरी रूह बहुत ताज़ा हुई है। क्योंकि हज़रत ईसा की बातें ज़िंदगी से मामूर हैं, उनसे बड़ी तसल्ली मिलती है।"

दाऊद ने उसकी हिम्मत बँधाई, "सर, हौसला रखें। हम नाइन के क़रीब ही पहुँच गए, सिर्फ़ एक मुश्किल बाक़ी है। शहर के क़रीब कुछ चढ़ाई चढ़नी पड़ेगी।"

सरदार मुसकराया, "मुझे सड़क का यह हिस्सा कभी अच्छा नहीं लगा, और क़ब्रिस्तान से तो वहशत होती है। सड़क के दोनों किनारों के साथ साथ क़ब्रोंवाले ग़ार हैं।" वह कुछ परेशान-सा होकर हँसा, "मेरा ख़याल है कोई भी मौत को याद करना पसंद नहीं करता। वह इनसान का ख़ौफ़नाक दुश्मन है।"

दाऊद ने हाँ में हाँ मिलाई, "बिलकुल दुरुस्त। बदक़िस्मती से हम ग़लत वक़्त पर पहुँचे हैं। लगता है कि दुश्मन का सामना होनेवाला है। लोग एक जनाज़ा उठाए आ रहे हैं।"

मत्ती ने मुड़कर दाऊद को यक़ीन दिलाया, "अच्छा हुआ कि हम इस वक़्त पहुँचे। हमारे उस्ताद ग़मज़दों को अजीब तौर से तसल्ली देते हैं। उनकी बातों से इंतहाई दुखी दिल भी सुकून पाता है।"

दाऊद अच्छी तरह देखने की कोशिश कर रहा था। "वह झुकी कमरवाली औरत जो जनाज़े के साथ साथ चल रही है बेचारी बेवा लगती है।"

शमाऊन पतरस भी उनकी गुफ़्तगू में शरीक हो गया। बड़े एतमाद से कहने लगा, "हमारे उस्ताद बेवा को ज़रूर ही अच्छी तसल्ली देंगे। उनका दिल बहुत नरम है। क्यों न हो! उनकी अपनी माँ भी तो बेवा है। वह बेवाओं के हाले-ज़ार से बख़ूबी वाक़िफ़ हैं।" वह रुका और फिर पुकार उठा, "हाय, यह बेवा तो नाइन की ज़िलफ़ा है। क्या इसके इकलौते बेटे आसा को कुछ हो गया है?"

भीड़ से हमदर्दी की आवाज़ें उठने लगीं। हर आँख हज़रत ईसा पर लगी थी ताकि देखे कि वह ग़मज़दा बेवा के लिए क्या करेंगे। क़रीब के बाज़ लोगों ने फुसफुसाया कि उस्ताद की आँखों में आँसू हैं।

आख़िर वह जनाज़े के पास आ पहुँचे। किसी ने आगे बढ़कर पूछा कि कौन फ़ौत हो गया है और मुड़कर दूसरों को बताया, "एक बेवा के इकलौते बेटे को दफ़न करने को ला रहे हैं।" बहुत-से लोग आहें भरने और आँसू बहाने लगे। बेचारी बेवा ने पहले से बरसों सख़्तियाँ बरदाश्त करके तनहाई और मुश्किलात की ज़िंदगी गुज़ारी थी। अब उसका वाहिद

सहारा और आँखों का नूर भी जाता रहा था। सब उसके दुख और करब को महसूस कर रहे थे, लेकिन मदद करने में सब बेबस थे।

बेवा का सारा बदन मारे सिसकियों के काँप रहा था। तब हज़रत ईसा उसकी तरफ़ बढ़े। मत्ती ने दाऊद से कहा, "उस्ताद ग़मज़दा लोगों से कैसे अजीब तरीक़े से बात करते हैं। देख रहे हो वह बेवा के पास जा रहे हैं। उनकी आँखों में कितनी हमदर्दी है। सुनो कह रहे हैं, 'ऐ औरत, मत रो' और यह महज़ लफ़्ज़ नहीं हैं।"

शमाऊन पतरस जो अपने ख़ानदान की अज़ीज़ा ज़िलफ़ा के लिए अफ़सोस कर रहा था कहने लगा, "ज़िलफ़ा को तसल्ली मिल रही है। देखो उसकी लाल-सुर्ख़ आँखें पूरे तौर से हज़रत ईसा पर लगी हैं। अब तो उसकी सिसकियाँ भी मधम हो गई हैं।"

यूनतन बिन यूसियाह ने हलकी-सी चीख़ मारी, "उस्ताद जनाज़े को छू रहे हैं। उन्हें परवा नहीं कि नापाक हो जाएँगे। अब जनाज़ा उठानेवाले ठहर गए हैं। शायद उस्ताद मुरदे लड़के का मुँह देखना चाहते हैं। हश! वह कुछ कह रहे हैं।"

हर तरफ़ ख़ामोशी छा गई। फिर हज़रत ईसा की ज़ोरदार आवाज़ उभरी, "नौजवान! मैं तुझे हुक्म देता हूँ, उठ," फिर क्या हुआ। मुरदा उठकर बैठ गया। देखनेवालों का तो ऊपर का साँस ऊपर और नीचे का साँस नीचे रह गया। उन्होंने उस नौजवान की घुटी घुटी आवाज़ सुनी, क्योंकि उसका सर अभी तक कफ़न में लिपटा हुआ था। लोगों ने जल्दी

जल्दी उसे खोला। हज़रत ईसा ने बड़ी नरमी से नौजवान का हाथ पकड़ा और उसकी बूढ़ी माँ के झुर्रियों भरे हाथ में दे दिया, "यह रहा तेरा बेटा।"

शमाऊन पतरस बहुत मुतअस्सिर हुआ। कहने लगा, "ज़िलफ़ा फिर रो रही है लेकिन शुक्र है कि यह ख़ुशी के आँसू हैं। देखो किस तरह उस्ताद का शुक्रिया अदा कर रही है!" फिर जैसे नींद से जागा हो वह पुकार उठा, "दोस्तो! हमारे उस्ताद तो मौत से भी ज़ोरावर हैं। हमारे अज़ीम नबी इलयास और इलीशा ने भी मुरदों को ज़िंदा किया था। अब लोगों को यक़ीन आ जाएगा कि हज़रत ईसा भी उसी दर्जे के नबी हैं।" उसने बड़ी तसल्ली से सर हिलाया, "सुनो! लोग नारे मार रहे हैं कि 'हमारे दरमियान एक बड़ा नबी बरपा हुआ है' और 'अल्लाह ने अपनी उम्मत पर तवज्जुह की है।'"

सिर्फ़ यहूदाह इस्करियोती ही वाहिद फ़रद था जो इस मौक़े पर ज़्यादा ख़ुश न हुआ। वह बुड़बुड़ाने लगा, "हज़रत ईसा के पास तो मेरे अंदाज़े से कहीं ज़्यादा क़ुदरत है।" फिर धीमी आवाज़ में नतनेल से कहा, "हमने अभी अभी देखा है कि वह मौत पर भी इख़्तियार रखते हैं, लेकिन इस क़ुदरत को एक बूढ़ी बेवा के बेटे पर ज़ाया करने की क्या ज़रूरत थी! सुनो। लोगों में उनके बारे में कैसा जोशो-ख़ुरोश है। उस्ताद को अपनी क़ुदरत किसी और तरीक़े से इस्तेमाल करनी चाहिए। वह तो चुटकी बजाते में इसराईल के बादशाह बन सकते हैं।"

नतनेल उसके पास से हट गया। उसे ख़याल आया कि अगर इस वक़्त यहूदाह इस्करियोती ख़ुशी नहीं मना सकता तो वह पत्थर जैसा बेहिस हो चुका है। क्या उसके दिल में इनसान या ख़ुदा के लिए कोई मुहब्बत भी है? लगता है कि उसकी दिलचस्पी सिर्फ़ अपने आप तक महदूद है।

दाऊद तो यह सब कुछ देखकर दंग रह गया। वह यूनतन से कहने लगा, "हज़रत ईसा के मोजिज़ों से मुझे अल-मसीह के बारे में यसायाह नबी की पेशगोई याद आ रही है कि 'तब अंधों की आँखों को और बहरों के कानों को खोला जाएगा। लँगड़े हिरन की-सी छलाँगें लगाएँगे, और गूँगे ख़ुशी के नारे लगाएँगे।'"[1]

यूनतन ने उससे इत्तफ़ाक़ करते हुए कहा, "लेकिन इतनी क़ुदरत और इलाही इख़्तियार रखते हुए भी उस्ताद तमाम इनसानों से ज़्यादा हलीम हैं।"

---

1 यसायाह 35:5,6

नफ़रत

बहार का मौसम था। हज़रत ईसा अपने शागिर्दों और बहुत-से दीगर लोगों के हमराह यरूशलम की तरफ़ बढ़ रहे थे। शमाऊन पतरस बड़े जोश से कहने लगा, "कल पूरीम का तहवार है। यह साल के निहायत ख़ुशगवार दिनों में आता है। जब बहार अपना जोबन दिखाने लगती है तो तबीयत में जोश आने लगता है। देखो हर तरफ़ फूल बहार दिखा रहे हैं। सरसब्ज़ो-शादाब कोंपलें, मिट्टी की सौंधी सौंधी ख़ुशबू और फूलों की महक फ़िज़ा को मुअत्तर कर रही है। साथ साथ पंछियों की चहकार कैसी मौसीक़ी बिखेर रही है।

तोमा खिसककर उस्ताद के क़रीब आ गया और बोझल दिल से कहने लगा, "उस्ताद! अकसर हमारे दिलों पर फ़िकर छाया रहता है। इसी लिए इर्दगिर्द अल्लाह की ख़ूबसूरत दुनिया को देखने से क़ासिर रहते हैं। कभी रोज़ाना ज़रूरियात के लिए फ़िकरमंद होते हैं और कभी दुख और बीमारी परेशान कर देती है।"

दाऊद और यूनतन जो पीछे पीछे आ रहे थे उनके कान खड़े हो गए कि उस्ताद क्या जवाब देंगे।

हज़रत ईसा बोले, "ग़ौर करो कि सोसन के फूल किस तरह उगते हैं। न वह मेहनत करते, न कातते हैं। लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ कि सुलेमान बादशाह अपनी पूरी शानो-शौकत के बावुजूद ऐसे शानदार कपड़ों से मुलब्बस नहीं था जैसे उनमें से एक। अगर अल्लाह उस घास को जो आज मैदान में है और कल आग में झोंकी जाएगी ऐसा शानदार लिबास पहनाता है तो ऐ कमएतक़ादो, वह तुमको पहनाने के लिए क्या कुछ नहीं करेगा? चुनाँचे परेशानी के आलम में फ़िकर करते करते यह न कहते रहो, 'हम क्या खाएँ? हम क्या पिएँ? हम क्या पहनें?' क्योंकि जो ईमान नहीं रखते वही इन तमाम चीज़ों के पीछे भागते रहते हैं जबकि तुम्हारे आसमानी बाप को पहले से मालूम है कि तुमको इन तमाम चीज़ों की ज़रूरत है।"[1]

तोमा बोल उठा, "शुक्रिया। आपने याद दिलाया कि मेरा आसमानी बाप है जो मेरी सारी ज़रूरियात का ख़याल करता है। अभी मुझे यह बात सीखनी है कि हर अमर में उसी पर भरोसा करूँ।"

यूहन्ना ने आहिस्ता से अंदरियास से कहा, "उस्ताद को तो फ़िकरमंद होने की बहुत-तरफ़ सी वुजूहात हैं। एक तो मज़हबी राहनुमाओं का ग़ुस्सा लमहा लमहा बढ़ता जा रहा है, दूसरी तरफ़ ख़तरा है कि हेरोदेस

---

1 मत्ती 6:28-32

बादशाह उन पर हाथ डाले! युअन्ना का ख़ावंद ख़ूज़ा जो बादशाह के घर का अफ़सर है, उसने अपनी बीवी को बताया था कि बादशाह ने यहया नबी को महल में बुलवाया था। वह सिर्फ़ यह देखना चाहता था कि कैसा आदमी है और कैसी बातें करता है।”

अंदरियास ने उसकी बात काटी, “मैं जानता हूँ, जानता हूँ। भरे दरबार में यूहन्ना ने अलानिया कहा, ‘ऐ बादशाह हेरोदेस, तेरे लिए अपने भाई की बीवी को रखना जायज़ नहीं।’ उस वक़्त तो किसी ने उस पर हाथ नहीं डाला। लेकिन मेरी बात याद रखो। बादशाह की बीवी हेरोदियास को उस वक़्त तक चैन नहीं आएगा जब तक यहया की जान न ले ले। अल्लाह अपने अज़ीम नबी को पनाह में रखे!”

यूहन्ना कहने लगा, “अगर हमारे उस्ताद हेरोदेस के हत्थे चढ़ गया तो ख़ुदा की पनाह! बादशाह ज़रूर मोजिज़े का तक़ाज़ा करेगा और उस्ताद यक़ीनन फ़क़त दिखावे की ख़ातिर मोजिज़ा दिखाने से इनकार कर देंगे। तो बस, अंजाम अफ़सोसनाक ही होगा।”

अब वह यरूशलम पहुँच गए थे। सब इधर-उधर चले गए ताकि रात बसर करने की जगह तलाश कर सकें। यूनतन दाऊद से जुदा होने से पहले कहने लगा, “आज हमने बहुत क़ीमती सबक़ सीखा है। हम भी हज़रत ईसा के नमूने की पैरवी करके सारी फ़िकरें अल्लाह पर छोड़ दें।”

इस साल पूरीम की ईद सबत के दिन आई थी। सुबह को जो लोग बैतुल-मुक़द्दस में इबादत करने आए थे, अब वह भी निकलकर गली की भीड़ में शामिल हो गए। हर तरफ़ आस्तर की किताब की बातें हो रही थीं जो इबादत में पढ़ी गई थी। यह याद दिलाती थी कि फ़ारस के बादशाह की यहूदी बीवी आस्तर ने कैसे अपनी जान ख़तरे में डालकर अपनी क़ौम की सिफ़ारिश की थी।

लोग तंग गलियों से होते हुए खुली जगहों की तरफ़ बढ़ रहे थे। कहीं भी काम या कारोबार की आवाज़ सुनाई न देती थी। ख़ुदा ने इनसानों की सहूलत के लिए जो हुक्म दिया था वह एक भारी जुआ बन चुका था। अल्लाह का मक़सद था कि इनसान सबत के दिन आराम करे। इस आराम के दिन का मक़सद यह था कि इनसान जिस्मानी और रूहानी तौर पर ताज़ादम हो जाए। लेकिन शरीअत के आलिमों ने बड़ी तफ़सील से फ़ैसला किया था कि इस दिन क्या क्या काम किए जा सकते हैं और क्या क्या नहीं किए जा सकते। मसलन किसी औरत को इजाज़त न थी कि खाना पकाने के लिए आग जलाए। डाक्टर सिर्फ़ उसी सूरत में मरीज़ की मदद कर सकता था कि मौत मँडला रही हो। कोई भी शहर की हुदूद से दो सौ गज़ से ज़्यादा दूर नहीं जा सकता था। इनसानों के घड़े हुए इन अहकाम की ना-फ़रमानी की सज़ा मौत थी, इसलिए आज न तो कोई दुकान खुली थी न छाबड़ीवाला हाँक लगा रहा था और न कोई किसान गधा हाँके बाज़ार आ रहा था।

हर फ़रद के पास फ़ारिग़ वक़्त की बहुतात थी। मौसम भी बेहद ख़ुशगवार था। नतीजे में लोगों ने खेल के मैदान गब्बता का रुख़ किया। गब्बता हेरोदेस बादशाह के महल के सामने एक वसी मैदान था। कुछ लोग अपनी पसंददीदा जगह "बैत-हसदा" यानी "रहम के घर" को चल दिए। यहाँ एक तालाब था। कहा जाता था कि तालाब के पानी में शफ़ा देने की क़ुदरत है। जब पानी हिलता तो जो कोई सबसे पहले उसमें उतर जाता वह शफ़ा पाता था। इस तालाब के इर्दगिर्द पाँच बरामदे थे जिनमें हर क़िस्म के बीमार पड़े रहते थे।

हज़रत ईसा भी बैत-हसदा के तालाब पर पहुँच गए। वह ख़ामोशी से अपने शागिर्दों के पास से चले आए थे। आज उन्हें अकेले ही एक ख़ास काम करना था। वह उन बीमारों के दरमियान घूमने लगे जो उम्मीद और ना-उम्मीदी के बीच में वहाँ पड़े थे। उन्हें उन पर बहुत रहम आया। अपनी तमामतर ताज़गी के बावुजूद बहार का मौसम भी उनके लिए बेहक़ीक़त था। एक आदमी की हालत तो बेहद ख़राब थी। हज़रत ईसा उसकी तरफ़ चल पड़े। इस ईद के दिन भी उसे कोई मिलने नहीं आया था। उसके चेहरे से दुख, दर्द और इनसान और अल्लाह के लिए तलख़ी झलक रही थी। गुनाह और फ़ालिज ने उसे बुरी तरह दबा रखा था। उसकी तनहाई बेहिसाब थी। लोग बेहतरीन लिबास पहने इधर-उधर फिर रहे थे। बीमार को अचानक एहसास हुआ कि दो हमदर्द आँखें मेरी

हालत का जायज़ा ले रही हैं। बड़ी नरमी से उससे पूछा गया, "तुम्हें यहाँ कितना अरसा हो गया है?"

बीमार ने मुरदे-से लहजे में जवाब दिया, "अड़तीस बरस।" कोई उसका दुख-दर्द बाँटनेवाला नहीं था। इस ईद के दिन वह तनहाई को और ज़्यादा महसूस कर रहा था जबकि दूसरे मरीज़ों को मिलने के लिए बहुत-से अज़ीज़ आ-जा रहे थे।

लेकिन हज़रत ईसा के अगले सवाल पर वह हैरान रह गया, "क्या तू शफ़ा पाना चाहता है?"

मरीज़ ने सोचा क्या यह भी कोई सवाल है? फिर भी उसने साफ़ दिल से जवाब दिया, "जनाब, मेरा कोई मददगार नहीं कि जब पानी हिले तो मुझे तालाब में उतार दे। और मेरे पहुँचते पहुँचते दूसरा मुझसे पहले उतर जाता है।"

हज़रत ईसा का इस अकेले आदमी पर बेइंतहा तरस आया कि दुनिया-भर में एक भी नहीं जो उसकी मदद करता। बैत-हसदा जिसका मतलब है "रहम का घर" रहम से ख़ाली था। किसी के दिल में इतना रहम नहीं था कि जब पानी हिले तो इस बेकस और लाचार को बारी दे दे। मौत के दरवाज़े पर भी हर किसी को अपनी ही पड़ी हुई थी। हज़रत ईसा ने उस आदमी पर ग़ौर से नज़र करके कहा, "उठ, अपनी चारपाई उठा और चल-फिर।"

माज़ूर ने फ़ौरन महसूस किया कि हज़रत ईसा से क़ुव्वत निकल रही है। उसके दिल में उनका हुक्म मानने की उमंग लहरा उठी। वह उठ खड़ा हुआ। टाँगों में नई ताक़त उभरने लगी। उसका जिस्म फिर से उसकी मानने लगा। वह हक्का-बक्का रह गया। मैं खड़ा हो सकता हूँ! चल सकता हूँ! कोई दर्द नहीं। सेहतयाब होकर इस मुसीबत की जगह से जा सकता हूँ। उसका दिल ख़ुशी से लबरेज़ हुआ। उसने अपनी चारपाई उठाई और वहाँ से चल दिया। चलते चलते उसे अफ़सोस हुआ कि मैं अपने मोहसिन का नाम भी न पूछ सका।

अभी थोड़ी ही दूर गया था कि ग़ुस्सा भरी आवाज़ों ने रोक लिया। "आज सबत का दिन है। आज बिस्तर उठाना मना है।" हर तरफ़ से ख़िश्मगीन नज़रें उस पर जमी थीं। उसके जामे-मुसर्रत में ग़म के क़तरे पड़ने लगे। क्या यह लोग ख़ुश नहीं कि इतने बरसों के बाद मैं अपनी चारपाई उठाने के क़ाबिल हुआ हूँ?

उसने कहा, "जिस आदमी ने मुझे शफ़ा दी उसने मुझे बताया, 'अपना बिस्तर उठाकर चल-फिर।'" शायद अब यह लोग मेरे साथ ख़ुशी मनाएँगे। लेकिन बेफ़ायदा। कितना अफ़सोस था कि वह अपनी ही हाँके जा रहे थे।

"वह कौन है जिसने तुझे यह कुछ बताया?"

वह इस बात का जवाब नहीं दे सकता था, क्योंकि शफ़ा देने के फ़ौरन बाद हज़रत ईसा वहाँ से चले गए थे।

कुछ ही देर बाद हज़रत ईसा उसे बैतुल-मुक़द्दस में मिल गए और कहा, “अब तू बहाल हो गया है। फिर गुनाह न करना, ऐसा न हो कि तेरा हाल पहले से भी बदतर हो जाए।”

उस आदमी को हज़रत ईसा से दुबारा मिलकर बहुत ख़ुशी हुई। अब वह अपने इलज़ाम लगानेवालों को बता सकता था कि मुझे किसने शफ़ा बख़्शी है। उसने सीधे जाकर उन्हें बताया। आख़िर यहूदियों के सरदार को एक बात हाथ आ गई जिसे वह हज़रत ईसा के ख़िलाफ़ इस्तेमाल कर सकते थे। मज़हबी राहनुमाओं को नाराज़ करना कोई मामूली बात न थी। जब उन्होंने हज़रत ईसा पर सबत को तोड़ने का इलज़ाम लगाया तो शागिर्द बेहद फ़िकरमंद हुए। मगर हैरानी की बात यह थी कि जब सरदार सबत के दिन शफ़ा देने के बारे में बाज़पुर्स करने लगे तो हज़रत ईसा बिलकुल न घबराए। उन्होंने पुरसुकून लहजे में जवाब दिया, “मेरा बाप आज तक काम करता आया है, और मैं भी ऐसा करता हूँ।” इन अलफ़ाज़ ने जलती पर तेल का काम किया, यहाँ तक कि वह उनके ख़ून के प्यासे हो गए कि यह न फ़क़त सबत का हुक्म तोड़ता बल्कि ख़ुदा को ख़ास अपना बाप कहता है।

जब हज़रत ईसा को मालूम हुआ कि क़ौम के राहनुमा हमेशा के लिए मेरे दुश्मन बन गए हैं तो उन्होंने उनका सामना किया। शोलाबार आँखों के साथ उन्होंने जवाब दिया, “तुम इसलिए नाराज़ होते हो कि मैंने अल्लाह को अपना बाप कहा। आज मैं तुम्हें साफ़ साफ़ बता देता

हूँ कि बाप किसी की भी अदालत नहीं करता बल्कि उसने अदालत का पूरा इंतज़ाम फ़रज़ंद के सुपुर्द कर दिया है ताकि सब उसी तरह फ़रज़ंद की इज़्ज़त करें जिस तरह वह बाप की इज़्ज़त करते हैं।”

लीडर शशदर रह गए। हज़रत ईसा ख़ुद को उनके होनेवाले मुंसिफ़ ठहरा रहे थे। बल्कि वह उनसे उस इज़्ज़त का मुतालबा भी कर रहे थे जो अल्लाह को ही देना रवा है। एहतजाजी आवाज़ें बुलंद होना शुरू हो गईं। शागिर्दों की तशवीश में इज़ाफ़ा होता गया। उनके आक़ा की बातें लीडरों के ग़ैज़ो-ग़ज़ब को हवा देती जा रही हैं। अब तो वह उन्हें संगसार करने को तैयार थे। साथ साथ शागिर्द हैरान हो रहे थे कि हज़रत ईसा कैसे इख़्तियार का दावा करते हैं! बल्कि अब तो एक और दावा किया। उन्होंने फ़रमाया, “मैं तुमको सच बताता हूँ, जो भी मेरी बात सुनकर उस पर ईमान लाता है जिसने मुझे भेजा है अबदी ज़िंदगी उसकी है। उसे मुजरिम नहीं ठहराया जाएगा बल्कि वह मौत की गिरिफ़्त से निकलकर ज़िंदगी में दाख़िल हो गया है।”[1]

लीडर ग़ुस्से से दाँत पीसने लगे, “इस नासरी को इन अलफ़ाज़ की क़ीमत अपनी जान से अदा करनी पड़ेगी।”

बहार के मौसम का निहायत ख़ुशगवार दिन था। लेकिन जब शागिर्द हज़रत ईसा के साथ घर को लौटे तो निहायत दिलगीर थे। उन्होंने अपने उस्ताद की ज़बान से अज़ीम बातें सुनी थीं। वह हैरान थे कि उन्होंने

---

1 यूहन्ना 5:24

अपने बारे में कैसे कैसे दावे किए हैं। इसके अलावा उन्होंने लीडरों की बढ़ती हुई दुश्मनी का भी अंदाज़ा कर लिया था। हज़रत ईसा के चारों तरफ़ ख़तरा ही ख़तरा मँडला रहा था। क्या अगली बार वह इन ऐयार लीडरों के पंजों से बच सकेंगे?

लेकिन यहूदाह इस्करियोती ख़ुश होकर कहने लगा, "हमारे उस्ताद कितने दिलेर हैं! वह कितनी बेबाकी से लीडरों का सामना कर रहे थे! कोई फ़िकर न करो। उनमें इतनी क़ुदरत है कि इन सबको लमहे-भर में चित कर दें। शायद ... शायद अब वह दिन नज़दीक ही है कि वह अल-मसीह के पूरे जाहो-जलाल के साथ ख़ुद को ज़ाहिर करें!"

साथी शागिर्दों ने यहूदाह की बात पर कोई तवज्जुह न दी। उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। हमारे उस्ताद को अपनी हिफ़ाज़त की परवा क्यों नहीं है? उन्होंने तो बच्चे की तरह अपनी हिफ़ाज़त को आसमानी बाप पर छोड़ा हुआ है।

हर एक के लिए फ़िकरमंदी

गलील की झील की लहरें आहिस्ता ख़िरामी से कफ़र्नहूम के साहिल से टकरा रही थीं। अभी थोड़ी ही देर पहले हज़रत ईसा किनारे की दूसरी तरफ़ गन्नेसरत के इलाक़े से वापस आए थे, लेकिन उनकी आमद की ख़बर सुनकर एक बड़ी भीड़ पहले ही किनारे पर जमा हो गई थी।

यूनतन बिन यूसियाह सबसे पहले पहुँचनेवालों में था। उसे शमाऊन पतरस से बातचीत करने का मौक़ा मिल गया। साफ़ ज़ाहिर था कि दूसरे किनारे पर होनेवाले वाकिये ने शमाऊन को हिलाकर रख दिया था। बड़े ताज्जुब से उसने बताया, "यूनतन, हज़रत ईसा बदरूहों के पूरे लशकर से भी निपट सकता है। हम इसके गवाह हैं।"

यूनतन ने देखा कि दाऊद जल्दी जल्दी आ रहा है। साँस फूली हुई है। आते ही कहने लगा, "जनाब! क्या आप एक काम करेंगे?"

"बेटा क्या हुआ? क्या कोई ख़तरे में है?"

“जनाब हन्ना है ना! याईर की इकलौती बेटी! वह मरने के क़रीब है। याईर बड़ी बेताबी से उस्ताद की वापसी का इंतज़ार कर रहा है। बेचारा फ़िकर से पागल हो रहा है। मैं हज़रत ईसा की तलाश में दो बार यहाँ आ चला हूँ। लेकिन बदक़िस्मती से और ज़्यादा ठहर नहीं सकता। मुझे अपने भाई यशुअ से मिलने जाना है। उसे वक़्त दे रखा है।”

हन्ना की बीमारी की ख़बर सुनकर यूनतन का दिल धक से रह गया। उसके होंट ख़ुश्क हो गए। कहने लगा, “याईर और उसकी बीवी मिलकाह की तो सारी पूँजी ही हन्ना है। मैं फ़ौरन जाकर इबादतख़ाने के इस मुअज़्ज़ज़ सरदार को इत्तला दूँगा कि हज़रत ईसा कफ़र्नहूम पहुँच चुके हैं।”

दाऊद ने काँपती आवाज़ से पीछे से यूनतन को पुकारकर कहा, “हज़रत ईसा ही याईर की आख़िरी उम्मीद हैं। अच्छे से अच्छे डाक्टर भी हन्ना के बारे में मायूस हैं।”

यूनतन तेज़ी से गलियों में गुज़रते हुए सोचने लगा कि याईर बड़ी दूर निकल आया है। अभी चंद ही हफ़ते हुए कि लीडरों की तानो-तशनी के ख़ौफ़ से उस्ताद के नज़दीक नहीं आना चाहता था। इतनी देर में याईर के मकान पर पहुँच गया। उसका ख़ादिम हनूक उसे अंदर ले गया। उसने आँसू पोंछते ही मधम-सी आवाज़ में बताया कि “हन्ना तो बस आख़िरी साँस ले रही है। उसकी हालत की ख़बर सारे कफ़र्नहूम में फैल गई है। सारा घर लोगों से भरा हुआ है। वह किसी न किसी तरह मदद

करना चाहते हैं। आप तो जानते ही हैं कि मालिक के कितने ख़ैरख़ाह हैं। मगर सब बेबस हैं।" हाथ के इशारे से उसने आगे बढ़ने को कहा, "वह मालिक भी आ गए।"

याईर पर मायूसी छाई हुई थी। वह यूनतन को बिठाकर कमरे में बेचैनी से इधर-उधर टहलने लगा। फिर कहा, "मैं उस्ताद का देर से ... बहुत देर से इंतज़ार कर रहा हूँ। क्या वह कभी इस शहर को वापस नहीं आएँगे? हाय मेरी हन्ना! मेरी बच्ची! मुझसे उसकी हालत देखी नहीं जाती। उसके चेहरे पर मौत की परछाइयाँ नज़र आने लगी हैं। आँखें खुली हैं मगर किसी को पहचानती नहीं। बुख़ार की शिद्दत से उसकी साँसें उखड़ रही हैं। यूनतन, मेरे दोस्त, बताओ मैं क्या करूँ?"

अपनी आवाज़ पर क़ाबू पाते हुए यूनतन ने सलाह दी, "याईर, हज़रत ईसा झील के किनारे पहुँच गए हैं।"

यह सुनते ही उसने एक ख़ादिमा को आवाज़ दी, "हैगथ। मेरे जूते। जल्दी से मेरे जूते लाओ।" हैगथ आई तो याईर ने उससे कहा, "तुम अभी अभी मरीज़ा के पास थीं। मेरी हन्ना का क्या हाल है?" उसने मुश्किल से थूक निगला और बेसब्री से कहने लगा, "नहीं, नहीं। बताने की ज़रूरत नहीं, मैं जानता हूँ। जानता हूँ मेरी हन्ना की हालत कहाँ सँभली होगी ... बिगड़ी ही होगी!" फिर अपने दोस्त से मुख़ातिब हुआ, "चल यूनतन। चलो, जल्दी करो। अब तो सिर्फ़ वही हमारी उम्मीद हैं।"

झील की तरफ़ जाते हुए यूनतन अपने दोस्त को समझाने लगा, “याईर, हज़रत ईसा पर एतमाद करो। उनमें क़ुदरत है। और वह तुम्हारे जैसे ज़रूरतमंदों की मदद करने को तैयार रहते हैं। वह सिर्फ़ यह चाहते हैं कि उन पर ईमान रखा जाए।”

याईर ने बड़े दुख से जवाब दिया, “किसी और की बेटी के बारे में जो मौत के क़रीब हो यह ईमान रखना आसान है कि वह बच जाएगी। मेरी रूह में तूफ़ान मचा है। मेरा दिल ख़ौफ़ से धड़क रहा है।”

“मेरे दोस्त, हौसला रखो। हज़रत ईसा को रत्ती-भर का ईमान भी देखकर ख़ुशी महसूस होती है। सिर्फ़ चंद घंटे हुए कि उन्होंने गरासीनियों के इलाक़े में एक आदमी को बदरूहों के लशकर से आज़ाद किया है।”

“वही तो नहीं जो ज़ंजीरों को तोड़ डालता, बेड़ियों को टुकड़े टुकड़े कर देता और क़ब्रों में रहा करता था? वह तो गरासीनियों के लिए अज़ाब बना हुआ था।”

“बिलकुल वही। वह शफ़ा पा चुका है। वह हज़रत ईसा के साथ आने पर बड़ा ज़ोर दे रहा था, मगर उस्ताद ने उसे वापस भेज दिया कि अपने अज़ीज़ों को बताए कि रब ने उसके लिए कैसे बड़े बड़े काम किए हैं।”

याईर की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। “जब हज़रत ईसा उससे मिला तो क्या उसने उन पर हमला तो नहीं किया? वह तो बड़ा ही ख़तरनाक है।”

"नहीं। बल्कि जब उसने दूर से हज़रत ईसा को आते देखा तो दौड़कर आया और उसे सिजदा किया।"

"यक़ीन नहीं आता! क्या बदरूहें भी उन्हें सिजदा करती हैं?" याईर ने हैरान होकर पूछा।

"हाँ। लेकिन सब्र से मेरी बात सुनो। सिजदे में पड़े पड़े वह आदमी ज़ोर ज़ोर से चीख़ने लगा, "ऐ ईसा अल्लाह तआला के फ़रज़ंद, मेरा आपके साथ क्या वास्ता है? अल्लाह के नाम में आपको क़सम देता हूँ कि मुझे अज़ाब में न डालें।"[1]

याईर ने कुछ सोचते हुए कहा, "क्या बदरूहें एक हलीम आदमी के भेस में छिपे हुए अल-मसीह को पहचानती हैं? क्या अल-मसीह हज़रत ईसा से ज़्यादा क़ादिर होगा? क्या वह इनसे भी बड़े मोजिज़े दिखाएगा? क्या वह इनसे भी ज़्यादा बेलौस होगा? क्या वह इनसे बढ़कर अल्लाह के जलाल को ज़ाहिर करेगा? मैंने देखा है कि हज़रत ईसा सिर्फ़ ग़रीबों से हमदर्दी रखनेवाले नहीं हैं बल्कि तमाम अजीबो-ग़रीब कामों में उनका मक़सद यही है कि ख़ुदा की बड़ाई हो।"

यूनतन ने इत्तफ़ाक़ किया। फिर सामने इशारा करके बोला, "शुक्र है, हम तक़रीबन उस्ताद के पास आ पहुँचे हैं। दोस्त, हौसला रखो। सब कुछ ठीक हो जाएगा।"

---

1 मरक़ुस 5:6-7

लेकिन याईर की आवाज़ में मायूसी थी। वह मिन्नत करके कहने लगा, "भई, इस भीड़ में से रास्ता बनाने में तुम्हें मेरी मदद करनी होगी। लोग तो दीवार की तरह घेरा डाले खड़े हैं। कहीं हज़रत ईसा तक पहुँचते पहुँचते लड़की दम न तोड़े।"

"नहीं, नहीं। हरगिज़ नहीं। चलो चलें।" फिर वह बड़ी बुलंद आवाज़ से पुकारते हुए रास्ता बनाने लगा। "एक परेशान बाप को रास्ता दो। हमारे मुअज़्ज़ज़ सरदार याईर के लिए रास्ता छोड़ो।"

फिर भी आगे बढ़ना आसान न था। आहिस्ता, बहुत आहिस्ता आहिस्ता वह आगे बढ़े। जब वह आख़िर में हज़रत ईसा के पास पहुँचे तो याईर उनके क़दमों में गिरकर इल्तिजा करने लगा, "मेरी छोटी बेटी मरनेवाली है, बराहे-करम आकर उस पर अपने हाथ रखें ताकि वह शफ़ा पाकर ज़िंदा रहे।"[1]

हज़रत ईसा ने बड़ी हमदर्दी से उस परेशान बाप की ढारस बँधाकर कहा, "मैं ज़रूर चलूँगा।"

वह याईर के घर को रवाना हुए तो सारी भीड़ भी साथ हो ली। यूनतन को अफ़सोस हो रहा था कि धक्कम-धक्का करती भीड़ जल्दी पहुँचने में सख़्त रुकावट बन रही है। वह आहिस्ता आहिस्ता ही आगे बढ़ सकते थे।

---

1 मरक़ुस 5:23

फ़िकरमंद बाप की आँखों से फिर मायूसी झाँकने लगी। उसने यूनतन से कहा, "मेरा दिल ख़ौफ़ से धक धक कर रहा है। ऐसा लग रहा है कि हम हन्ना तक वक़्त पर नहीं पहुँच सकेंगे।"

अब तो अचानक हज़रत ईसा रुक गए और मुड़कर पूछने लगे, "किसने मेरे कपड़ों को छुआ है?"[1]

याईर को धचका-सा लगा। इस वक़्त ऐसा सवाल पूछने का क्या मौक़ा है! शागिर्दों का भी यही ख़याल था। शमाऊन पतरस क़दरे नाख़ुश होकर कहने लगा, "आप ख़ुद देख रहे हैं कि हुजूम आपको घेरकर दबा रहा है। तो फिर आप किस तरह पूछ सकते हैं कि किसने मुझे छुआ?"[2] लेकिन हज़रत ईसा ने उसकी बात पर कोई तवज्जुह न दी। उनकी नज़रें चारों तरफ़ घूम रही थीं जैसे किसी को तलाश कर रही हों।

आख़िर एक औरत ख़ौफ़ के मारे लरज़ती हुई आगे बढ़ी। वह हज़रत ईसा के क़दमों पर गिर गई और शर्मसारी से इक़रार करने लगी, "मुझे माफ़ कर दें। मैंने ही आपको छुआ है। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। लेकिन बारह बरस से मेरा ख़ून बंद नहीं हो रहा था। मैंने अपना सारा माल हकीमों पर ख़र्च कर डाला लेकिन आराम आने के बजाए मेरी हालत बद से बदतर हो गई। ख़ुदावंद, आप ही मेरी वाहिद उम्मीद थे। मैंने दिल में कहा, 'अगर मैं सिर्फ़ उनके लिबास को ही छू लूँ तो मैं शफ़ा पा लूँगी।'"

---

1 मरक़ुस 5:30
2 मरक़ुस 5:31

हज़रत ईसा ने बड़ी हमदर्दी से उस दुखी औरत को देखा और उसे तसल्ली देते हुए फ़रमाया, "बेटी, तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है। सलामती से जा और अपनी अज़ियतनाक हालत से बची रह।"[1]

अब याईर के आसाब जवाब दे गए। उसने बड़ी तलख़ी से सोचा कि क्या यह औरत उस्ताद को छूने के लिए किसी और वक़्त नहीं आ सकती थी? इतने में उसने अपने घर के कुछ आदमियों को आते देखा। उसकी आँखें दहशत से फैल गईं।

जब हनूक ने उसे ग़मनाक ख़बर दी तो वह ख़ुद पर क़ाबू न रख सका और थर-थर काँपने लगा। हनूक ने कहा, "आपकी बेटी फ़ौत हो चुकी है, अब उस्ताद को मज़ीद तकलीफ़ देने की क्या ज़रूरत?"[2]

हज़रत ईसा ने यह बात सुन ली मगर बिलकुल परेशान न हुए। उन्होंने एतमाद के साथ इबादतख़ाने के सरदार से कहा, "ख़ौफ़ न कर। सिर्फ़ ईमान रख।" फिर उन्होंने हुजूम को पीछे ठहरने का हुक्म दिया। शागिर्दों में से भी सिर्फ़ शमाऊन पतरस, याक़ूब और यूहन्ना को साथ जाने की इजाज़त मिली।

यहूदाह इस्करियोती अपने उस्ताद और साथी शागिर्दों को जाते हुए ग़ौर से देखने लगा। बड़ी हटधर्मी से उसने अंदरियास से कहा, "यह अचानक इतने परदादारी क्यों? क्या यह तीनों बाक़ी हम सबसे अच्छे हैं?"

---

1 मरक़ुस 5:34
2 मरक़ुस 5:35

अंदरियास ने उसे समझाया, “बच्चों जैसी बातें मत करो, यहूदाह। ऐसे नाज़ुक मौक़े पर बेहतर है कि उस्ताद के साथ थोड़े ही लोग हों।”

घर जाते हुए याईर नाइन के उस नौजवान को याद कर रहा था जिसे हज़रत ईसा ने ज़िंदा किया था। उसे महसूस हुआ कि हज़रत ईसा के साथ चलते चलते मेरा ईमान बढ़ रहा है। अब वह घर के क़रीब आ गए थे। अब क्या होगा? दूर ही से उन्हें रोने धोने की आवाज़ें आ रही थीं। घर के अंदर कुहराम मचा हुआ था। याईर का दिल फिर डोल गया, और हज़रत ईसा पर उसका ईमान डगमगाने लगा। तब हज़रत ईसा ने उसे ऐसी निगाहों से देखा कि याईर का दिल फिर उम्मीद से भर गया।

फिर हज़रत ईसा भरपूर एतमाद के साथ घर में दाख़िल हुए और मातम करनेवालों को सख़्ती से झिड़के, “यह कैसा शोर-शराबा है? क्यों रो रहे हो? लड़की मर नहीं गई बल्कि सो रही है।”[1]

कई-एक निगाहें उन्हें घूरने लगीं और बाज़ तो उन पर हँसे। ज़ाहिर था कि लड़की मर चुकी है। हज़रत ईसा ने उन्हें बाहर निकलने को कहा। सिर्फ़ लड़की के माँ-बाप और तीन शागिर्दों को घर में ठहरने की इजाज़त मिली।

याईर ने सिसकियाँ लेते हुए पहले अपनी बेटी को और फिर अपनी बीवी को देखा। फिर क्या हुआ? हज़रत ईसा ने लड़की का हाथ

1 मरक़ुस 5:39

पकड़कर सिर्फ़ इतना कहा, "छोटी लड़की, मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि जाग उठ!"

लोगों के देखते देखते हन्ना ने आँखें खोल दीं। उठकर कमरे में यों चलने-फिरने लगी जैसे कुछ हुआ ही न था।

हर एक पर सकता तारी हो गया। याईर दंग रह गया कि हज़रत ईसा की आवाज़ में कैसा इख़्तियार है! सबका ध्यान इस अज़ीम मोजिज़े पर लगा था। लेकिन हज़रत ईसा को याद रहा कि हन्ना के कमज़ोर बदन को ख़ुराक की ज़रूरत है। उन्होंने माँ-बाप को कहा कि लड़की को कुछ खाने को दिया जाए।

याईर और उसकी बीवी की ख़ुशी की इंतहा न थी। उनकी बेटी उन्हें वापस मिल गई थी। हज़रत ईसा की क़ुदरत को आँखों से देखने का शरफ़ हासिल हुआ था।

यहया नबी की गिरिफ़्तारी और मौत

एक दिन यह ख़बर जंगल की आग की तरह सारे इलाक़े में फैल गई कि हेरोदेस बादशाह ने यहया नबी को गिरिफ़्तार कर लिया है। कफ़र्नहूम में इबादतख़ाने के बाहर मर्दों और औरतों का हुजूम जमा हो गया। यह ख़बर सुनकर मर्द तो जैसे सकते में आ गए और औरतें रोने लगीं। याईर बताने लगा, "मैंने अपनी आँखों से देखा कि हेरोदेस के सिपाही हज़रत यहया को बाँधकर ले जा रहे हैं। हमें पता चला है कि उन्हें मख़ायरुस के क़िले में बंद किया गया है।" यह जगह 'स्याह बुर्ज' के नाम से मशहूर था, क्योंकि वहाँ से कोई बचकर नहीं निकलता था।

यूनतन बिन यूसियाह परेशान होकर बोला, "समझ में नहीं आता कि ख़ुदा ने अपने वफ़ादार ख़ादिम को क्यों उस शरीर बादशाह से नहीं बचाया।"

किसी ने ख़बरदार किया, "ख़ामोश। कोई ग़लत आदमी न सुन ले।" इफ़राईम भी मौजूद था। वह एतमाद से कहने लगा, "क़ादिरे-मुतलक़

अब भी अपने ख़ादिम की हिफ़ाज़त करना जानता है। वह उन्हें उस मौत के क़िले से भी छुड़ा सकता है। लेकिन हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि क़ादिरे-मुतलक़ के ख़याल हमारे ख़याल नहीं होते।" ग़ुस्सा भरी आवाज़ से उसने बात जारी रखी, "मुझे यक़ीन है कि इस सारी काररवाई के पीछे उस ख़बीस हेरोदियास का हाथ है। नबी के मुँह से मज़म्मत सुनकर वह जल-भुन गई होगी। वह सोचती होगी जब तक यहया ज़िंदा हों हेरोदेस के साथ मेरा ताल्लुक़ महफ़ूज़ नहीं रह सकता। जब तक वह मारे न गए उसे चैन नहीं आने का।"

रूत ने ग़ुस्से से कहा, "हेरोदियास अपनी बेटी के लिए कैसा नमूना पेश कर रही है! सलोमी तो पहले ही अपनी माँ की तरह बदनाम है।"

शमाऊन पतरस की सास मीरब रोकर कहने लगी, "वह यहया नबी को बेड़ियाँ पहनाकर ले गए। वह तो खुले सहराओं के फ़रज़ंद हैं। उस तंगो-तारीक तहख़ाने में बेड़ियों में जकड़े हुए उन्हें कितनी तकलीफ़ होती होगी! धूप और खुली हवा उनका घर, और रात के तारे उनके रफ़ीक़ थे।"

यूनतन की आवाज़ में उम्मीद की झलक थी, "हो सकता है यहया नबी को छुड़ाने के लिए हज़रत ईसा कोई मोजिज़ा दिखाएँ! आख़िर यहया ने उनके बारे में ही तो गवाही दी थी।"

याईर ने जवाब दिया, "जब से हज़रत ईसा ने हन्ना को ज़िंदा किया है, मुझे यक़ीन हो गया कि वह सब कुछ कर सकते हैं। अब मेरे दिल

में ज़रा भी शक नहीं रहा कि वह अल-मसीह हैं। मतलब है कि अल्लाह की बादशाही किसी दिन भी आ सकती है। अज़ीज़ो, जब हज़रत ईसा हुकूमत सँभालेंगे तो हेरोदेस की क़ुव्वत हमेशा के लिए ख़ाक में मिल जाएगी। इसलिए हौसला रखो और अपनी उम्मीद हज़रत ईसा पर लगाओ।”

लेकिन वक़्त गुज़रता गया और कुछ भी न हुआ। हज़रत यहया क़ैदख़ाने में पड़े सड़ते रहे। पहले तो उनका ज़हन उलझन में पड़ा रहा। वह अपने आपको उस परिंदे की तरह महसूस कर रहे थे जिसे किसी ने पिंजरे में बंद कर रखा हो। वह बहुत मायूस होने लगे। उन्होंने अपने शागिर्दों की ज़बानी हज़रत ईसा के मोजिज़ों का ज़िक्र सुना तो था, लेकिन इससे भी उनका दिल ख़ुश न हो सका। क्या अल-मसीह को अपना बाज़ू नंगा करके अपनी क़ुदरत का मुज़ाहरा नहीं करना चाहिए? क्या मलाकी नबी ने अल-मसीह के बारे में पेशगोई नहीं की थी कि “जिस रब को तुम तलाश कर रहे हो वह अचानक अपने घर में आ मौजूद होगा। हाँ, अहद का पैग़ंबर जिसकी तुम शिद्दत से आरज़ू करते हो वह आनेवाला है! लेकिन जब वह आए तो कौन यह बरदाश्त कर सकेगा? कौन क़ायम रह सकेगा जब वह हम पर ज़ाहिर हो जाएगा? वह तो धात ढालनेवाले की आग या धोबी के तेज़ साबुन की मानिंद होगा।”[1]

1 मलाकी 3:1-2

आख़िर में उन्होंने हज़रत ईसा के पास यह पूछने के लिए एलची भेजे कि क्या वही मौऊदा अल-मसीह हैं या नहीं। जब एलची वापस पहुँचे तो वह उस तारीक और नमदार तहख़ाने में बैठे बैठे हज़रत ईसा के जवाब को बार बार दोहराने लगे, "यहया के पास वापस जाकर उसे सब कुछ बता देना जो तुमने देखा और सुना है। 'अंधे देखते, लँगड़े चलते-फिरते हैं, कोढ़ियों को पाक-साफ़ किया जाता है, बहरे सुनते हैं, मुरदों को ज़िंदा किया जाता है और ग़रीबों को अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाई जाती है।' मुबारक है वह जो मेरे सबब से ठोकर खाकर बरगश्ता नहीं होता।"[1] यह जवाब यसायाह नबी की पेशगोई था। दूसरे लफ़्ज़ों में हज़रत ईसा फ़रमा रहे थे कि जो कुछ अल-मसीह के बारे में कहा गया है उस पर दुबारा ग़ौर कर। अब हज़रत यहया को याद आया कि यसायाह नबी के मुताबिक़ अल-मसीह एक हलीम चरवाहे के रूप में भी पेश आएगा : "वह भेड़ के बच्चों को अपने बाज़ुओं में महफ़ूज़ रखकर सीने के साथ लगाए फिरेगा और उनकी माओं को बड़े ध्यान से अपने साथ ले चलेगा।"[2]

आख़िर मुतमइन होकर यहया ने कहा, "मेरा यह ख़याल ग़लत था कि अल-मसीह अदालत ही करने आएगा। ऐ मेरी जान फिर से ख़ुश हो, क्योंकि हज़रत ईसा सचमुच अल्लाह के भेजे हुए हैं। मैंने अच्छा

1 मत्ती 11:4-6

2 यसायाह 40:11

किया कि उनकी राह तैयार करूँ। लाज़िम है कि वह बढ़ते जाएँ जबकि मैं घटता जाऊँ।”

उनकी कोठरी के बाहर चाबियों की झंकार सुनाई दी। चरचराकर दरवाज़ा खुला और दारोग़ा अंदर आया। “बादशाह सलामत तुम्हें बुलाते हैं,” वह तुरशमिज़ाजी से बोला। “मेरी बात मानो तो अपनी ज़बान को लगाम दो। मुझे और तुम्हें बादशाह की ज़ाती ज़िंदगी से क्या वास्ता?”

हज़रत यहया ने सख़्ती से जवाब दिया, “मेरा जिस्म अगरचे क़ैद में है मगर मेरी रूह आज़ाद है। मुझे तो बादशाह को भी अल-मसीह की आमद के बारे में ख़बरदार करना है।”

दारोग़े ने ग़ुसीली आवाज़ निकाली और उन्हें सख़्ती से साथ चलने का हुक्म दिया। हेरोदेस सोफ़े पर बैठा था। कमरा बड़े शानदार तरीक़े से सजा हुआ था। मशालों से वह बुक़ाए-नूर बन गया था।

“आलीजाह, क़ैदी हाज़िर है।”

हेरोदेस ने मोटी-सी उँगली दरवाज़े की तरफ़ उठाई, “नबी को हमारे पास भेज दो। और निकल जाओ। निकम्मे कुत्ते।” धमकी के अंदाज़ में ग़ुर्राया, “और अपने ख़बीस मुँह पर ध्यान रखना। किसी को कानों-कान ख़बर न हो कि यहया यहाँ आया है बल्कि हेरोदियास और सलोमी को भी नहीं। समझे?”

दारोग़ा ताज़ीम से झुका, “आलीजाह, हुक्म की तामील होगी।”

हेरोदेस फिर ग़ुर्राया, “दफ़ा हो जाओ। सर मत खाओ।” फिर यहया नबी से मुख़ातिब हुआ, “यों तनकर क्या खड़े हो। हमें कमतरी का एहसास होता है। हम बरदाश्त नहीं कर सकते। बैठ जाओ। बातें करें।”

“शुक्रिया आलीजाह,” यहया सोफ़े की नरम गद्दी पर बैठ गए। हेरोदेस ने उनकी तरफ़ देखते हुए कहा, “तुम समझते होगे कि शायद हमने तुमसे बदला लिया है। बिलकुल ग़लत। हेरोदियास तो तुम्हें उसी वक़्त मरवा देती। दिन-रात यह औरत हमें उकसाती रहती है कि तुम्हारा काम तमाम कर दें। यक़ीन करो या न, क़ैदख़ाना ही एक जगह है जहाँ तुम उससे महफ़ूज़ हो।” हेरोदेस हँसने लगा जैसे यह कोई बड़ी शिगुफ़्ता बात हो। वह जानता था कि यहया नबी हैं, और वह ख़ुदा के ग़ज़ब से डरता था। उसने शिकायत भरे लहजे में कहा, “तुम्हें इस तरह मलिका का ग़ुस्सा भड़काने की आख़िर क्या ज़रूरत थी?”

यहया ने संजीदगी से जवाब दिया, “आलीजाह, गुनाह को इतना हलका नहीं समझा जा सकता। मेरी ज़िम्मेदारी है कि मलिका को भी उसका गुनाह बताऊँ।”

“चल, तुम्हें इसका बेहद फ़ायदा हुआ ना!” हेरोदेस ने नाराज़ी से जवाब दिया। फिर बा-दिले-नख़ास्ता मानना पड़ा, “फिर भी हम जानते हैं कि तुम हमारे दोस्त हो। यहया दोस्त सच्ची बात कहता है।” बादशाह ने नबी पर भरपूर नज़र डाली। उसकी आँखों में बेचैनी थी। “बादशाह की ज़िंदगी में सिर्फ़ ख़ुशियाँ ही नहीं होतीं। हम चोरों ओर क़ातिलों और

झूठों ... झूठे कुत्तों से घिरे रहते हैं।" उसने ख़बरदार करने को उँगली उठाई, "हमें चौकन्ना रहना पड़ता है कि कहीं कोई काट न खाए।" वह फिर हँसा। "सच्चाई हमारे लिए बेकार होती है। हा हा! और तुम्हें सच्चाई से क्या मिला? क़ैदख़ाना?"

हज़रत यहया ने एकदम जवाब दिया, "रब का हुक्म मानने में बड़ी ख़ुशी होती है।"

हेरोदेस ने मुँह बनाया, "ख़ुशी के बारे में तुम्हारा ख़याल हमारे ख़याल से बिलकुल मुख़्तलिफ़ है। तुम फ़ाक़े करते, फटे पुराने-कपड़े पहनते, तुम्हें कभी आराम नसीब नहीं होता, तुम रोज़े रखते और दुआ करते रहते हो। साथ ही ख़ुशी का ज़िक्र भी करते हो! यह क्या बात है? हमें भी तो समझाओ।"

बादशाह का सवाल क़दरे संजीदा था। नबी ने जवाब दिया, "आलीजाह, यह ऐसी ख़ुशी है जिससे आप वाक़िफ़ नहीं। यह ख़ुशी उस चश्मे से फूटती है कि ख़ुदावंद ने हमें अपनी शबीह पर बनाकर हमें इस क़ाबिल बनाया है कि उसे जानें और उसकी ख़िदमत करें।"

हेरोदेस ने लमहे-भर इस बात पर सोचा। फिर एकदम यहया की तरफ़ मुड़ा, "इस ख़ुशी की हद से ज़्यादा बड़ी क़ीमत अदा करनी पड़ती है। हम बेवुक़ूफ़ नहीं कि इस बात को समझ पाएँ। अल्लाह के अहकाम को मानना कितनी दिक़्क़त का बाइस है! चोरी न करो, झूठ न बोलो।

हा हा हा। अपने भाई की बीवी न रखो वग़ैरा वग़ैरा।” बाहर किसी उल्लू की उदास आवाज़ गूँजी, और हवा से कुछ पत्ते खड़खड़ा उठे।

हज़रत यहया आगे को झुके, “आलीजाह, अल्लाह के अहकाम इसलिए हैं कि नेक ज़िंदगी बसर करने में हमारी मदद करें। जहाँ ख़ुदा है, वहाँ मजबूरी नहीं बल्कि आज़ादी होती है। वह चाहता है कि मेरे बच्चे ख़ुशो-ख़ुर्रम ज़िंदगी गुज़ारें। वह हमें हमारी बुरी ख़ाहिशात, लालच, नफ़स और सख़्तदिली से बचाना चाहता है। इसमें हमारी अपनी ज़िल्लत है, इसलिए उसने हमारी राहनुमाई के लिए यह अहकाम दिए हैं। जनाब, यक़ीन करें कि इससे बड़ी कोई बात नहीं कि इनसान यह जाने कि अल्लाह मुझे प्यार करता, मुझे क़बूल करता है।”

हेरोदेस लमहे-भर के लिए सोच में पड़ गया। फिर मज़हका उड़ाते हुए बोला, “तुम्हारे लिए तो यह आसान है। मगर हमारा ख़याल करो। हम शाही घराने में पैदा हुए जहाँ बाप अपने बच्चों को क़त्ल कर देता है। गाली-गलौच और झूठ रोज़ाना मामूल की बातें हैं। हमारी सोच और हमारा किरदार तो इसी साँचे में ढला है। अगर हम ख़ुदापरस्त हो जाएँ तो बादशाह होने से हाथ धोना पड़ेगा।” उसने अपने ख़ुश्क होंटों पर ज़बान फेरी। “हम शाहाना ज़िंदगी बसर करते हैं। इज़्ज़त और ऐश की।” उसने यहया की तरफ़ इशारा किया, “तुम इन बातों के बारे में भला क्या जानो! तुमने दुनिया की ख़ाहिशों का मज़ा चखा ही नहीं। वैसे भी दो-एक ख़ामियों और कमज़ोरियों से क्या फ़रक़ पड़ता है?”

यहया ने ख़बरदार किया, "इससे आपकी सारी ज़िंदगी तबाह हो सकती है। गुनाह एक ऐसी ज़बरदस्त ताक़त है जिस पर संजीदगी से ग़ौर करना चाहिए। मैं मिन्नत करता हूँ कि अपने भाई की बीवी को छोड़ दें।"

हेरोदेस की आँखें चमक उठीं। "मेरे दोस्त, तुम नहीं जानते कि हेरोदियास कितनी हसीन और शीरीन है। वह मर्द के जज़बात कैसे भड़काती है!"

"आलीजाह, उसे छोड़ दें। मेरी यही हाथ जोड़कर अर्ज़ है।"

हेरोदेस ने जमाई ली। "हम कमज़ोर इनसान हैं। जब हम हेरोदियास के पास होते हैं तो वह हमारे इरादे को अपनी मरज़ी के मुताबिक़ ढाल लेती है। जब तुम्हारे साथ होते हैं तो तुम्हारा कहा मानने को तैयार हो जाते हैं। अब जाओ। दिल में हम तुम पर रश्क करते हैं।" फिर उसने बुलंद आवाज़ से बाहर खड़े दारोग़े को हुक्म दिया : "नबी को ले जाओ।"

वक़्त गुज़रता गया। बादशाह की सालगिरह आ गई। हेरोदेस ने अमीरों और रईसों के अलावा गलील के कुछ बुज़ुर्गों को भी जशन में दावत दी। यह जशन मख़ायरुस क़िले में ही मनाया जाना था। जशन से चंद रोज़ पहले तिबरियास के शहर से एक अज़ीमुश-शान जुलूस क़िले के लिए रवाना हुआ। हेरोदियास, सलोमी और महल की दीगर ख़वातीन गाड़ियों में सवार थीं। मक़ामी सिपाहियों की बड़ी तादाद उनके

जिलौ में थी। उस जुलूस में इमाम, लावी क़बीले के ख़ादिम, दरबारी अफ़सरान, ख़िदमतगार, नौकर-चाकर और ग़ुलाम, सभी शामिल थे।

हेरोदेस बादशाह एक शानदार घोड़े पर सवार जुलूस के आगे आगे चल रहा था। वह बड़े फ़ख्र से कभी जुलूस पर और कभी लहराते हुए रंगारंग झंडों पर नज़रें दौड़ाता रहा। फ़ौजी बैंड की धुनें और ही बहार दिखा रही थीं।

हेरोदेस बड़ी तरंग में सोच रहा था कि जल्द ही नबी को रिहा कर दूँगा। बस हेरोदियास को ख़बर नहीं होनी चाहिए। हेरोदियास ने तो कहा है कि मुझे और मेहमानों को ज़बरदस्त तफ़रीह पेश करेगी। बेशक यह तफ़रीह सचमुच दिल बहलाएगी। शायद हसीन रक़्क़ासों की टोली ख़ास रक़्स पेश करेगी।

बादशाह की सालगिरह से चंद दिन पहले खेल-तमाशे और रंगारंग तफ़रीहात की भरमार शुरू हुई। हर तरफ़ चहल-पहल और रौनक़ लगी रही। बादशाह तहख़ाने में क़ैद नबी को बिलकुल भूल चुका था। अलबत्ता हेरोदियास को याद था कि मेरा दुश्मन क़रीब है। जब तक वह ज़िंदा है मुझे चैन नहीं आ सकता। उसे हटाने के लिए सालगिरह का दिन तो बहुत साज़गार रहेगा।

तब सालगिरह का दिन आ गया। शाम के वक़्त मशालों ने ज़ियाफ़त के हॉल को बुक़ाए-नूर बना दिया। मेज़ों पर फूलों की सजावट थी। सोने-चाँदी के बरतन जगमगा रहे थे। ख़ादिम जगमग जगमग करते सुनहरी

रुपहली लिबास पहने मेहमानों की ख़िदमत के लिए चारों तरफ़ भागे फिर रहे थे। गूनागूँ खानों की ख़ुशबुएँ भूक को तेज़ कर रही थीं।

बेहतरीन शराब पेश की गई, और जल्द ही उसका असर साफ़ नज़र आने लगा। हँसी क़हक़हों में बदल गई। मज़ाक़ और लतीफ़े गंदे होते गए।

हेरोदियास ने देखा कि बादशाह बड़ी तरंग में है। तेज़ शराब और ख़ुशबाशी ने उस पर नशा तारी कर दिया है। इस वक़्त बादशाह से काम निकलवाया जा सकता है। तब हेरोदियास ने अपनी बेटी को इशारा दिया, “अब वक़्त आ गया है कि बादशाह को ख़ुश करो।”

इशारा पाते ही सलोमी उठकर चली गई। थोड़ी देर बाद वापस आई तो हर एक उसे देखकर हक्का-बक्का रह गया। लड़की ने रक़्स का हलका-फुलका अध-नंगा लिबास पहन रखा था। उसने हाज़िरीन पर भरपूर नज़र डाली। आँखों में अजीब चमक थी। फिर उसने रक़्स शुरू किया। उसकी हर हरकत मन-मोहनी थी। रफ़्ता रफ़्ता रक़्स में तेज़ी आती गई। उसका अंग अंग थिरकता गया। रक़्स ज़ोरों पर आया तो मर्दों को अपने दिलों पर क़ाबू रखना मुश्किल हो गया। फिर धीमे धीमे रक़्स ख़त्म हुआ। सलोमी एक आदाए- दिलरुबाई के साथ रुक गई। पूरा हॉल तालियों और तारीफ़ की आवाज़ों से गूँज उठा।

बादशाह भी जज़बात की रौ में बह गया और बेसोचे पुकार उठा, “जो जी चाहे मुझसे माँग तो मैं वह तुझे दूँगा।” बल्कि उसने क़सम खाकर

कहा, “जो भी तू माँगेगी मैं तुझे दूँगा, चाहे बादशाही का आधा हिस्सा ही क्यों न हो।”[1]

सलोमी ने बड़ी नज़ाकत से झुककर शुक्रिया अदा किया, “आलीजाह, हुज़ूर की फ़ैयाज़ी की इंतहा नहीं। मोहलत अता की जाए। सोचकर बताती हूँ।” सबकी नज़रों के सामने वह हॉल से बाहर चली गई। फिर क्या हुआ। वह सीधी माँ के पास पहुँची और शरारती मुसकराहट के साथ कहने लगी, “कामयाब हो गई हूँ। अब क्या माँगूँ?”

हेरोदियास के पास जवाब तैयार था। दाँत पीसते हुए कहने लगी, “यहया का सर माँगो। जल्दी जाओ। कहीं हेरोदेस की तरंग बदल न जाए, वह अपना वादा भूल जाए और मौक़ा हाथ से निकल जाए।”

लड़की को तेज़ी से वापस आते देखकर सब हैरान रह गए कि क्या माँगेगी। बरतनों की खनक, हँसी की आवाज़ें, बातचीत का शोर यकलख़्त बंद हो गया। हॉल में मुकम्मल ख़ामोशी छा गई। इस ख़ामोशी में सलोमी की तीखी आवाज़ गूँजी, “मैं चाहती हूँ कि आप मुझे अभी अभी यहया बपतिस्मा देनेवाले का सर ट्रे में मँगवा दें।”

बादशाह मबहूत रह गया। शराब का जाम लुढ़कता हुआ फ़र्श पर जा गिरा। वह समझ गया कि यह हेरोदियास की कारिस्तानी है। उसे हज़रत यहया पर तरस आया, मगर अपनी क़सम और हाज़िरीन के सबब बेबस था। उसे ख़याल आया कि मुझे यह वादा नहीं करना चाहिए था। मगर

---

1 मरक़ुस 6:22-23

अब उसका घमंड उसे अपनी ग़लती मानने की इजाज़त नहीं देता था। लमहे-भर में उसने ख़ुद पर क़ाबू पाया। देखनेवालों को एहसास हुआ कि हालात पर उसकी पूरी गिरिफ़्त है और लड़की की दरख़ास्त उसके नज़दीक मामूली-सी चीज़ है। बड़े रोब से उसने एक सिपाही को हुक्म दिया, "जाओ, उसका सर ट्रे में रखकर फ़ौरन पेश करो। जल्दी करो!"

चंद लमहों के लिए हाज़िरीन सकते में रह गए। सिपाही की वापसी का इंतज़ार करते करते मेहमानों ने फिर से बातें करना शुरू कर दीं और मौज-मेला फिर बढ़ गया जैसे कुछ हुआ ही नहीं। लेकिन बाज़ ऐसे भी थे जो लड़की की दरख़ास्त पर काँपकर रह गए थे। हेरोदेस का अफ़सर ख़ूज़ा तो बहुत रंजीदा दिखाई देने लगा। जब नबी की मौत की ख़बर फैलेगी तो क्या मुल्क में बलवे शुरू न हो जाएँगे?

हर लमहे बादशाह के ख़िलाफ़ उसके ग़ुस्से में इज़ाफ़ा होता जा रहा था। "हेरोदेस कैसा कमज़ोर आदमी है। बेसोचे बोल उठता है। गुनाह का ग़ुलाम, एक ईमानदार की जान बचाने के लिए अपनी ग़लती मानने का हौसला नहीं रखता।"

इतनी देर में सिपाही ट्रे में नबी का सर उठाए दाख़िल हुआ और ट्रे सलोमी को थमा दिया। ट्रे से गरम गरम ख़ून टपक रहा था। उसे देखकर कई-एक मेहमानों की तबीयत ख़राब होने लगी। उन्होंने मुँह फेर लिए मगर सलोमी पर कुछ असर नहीं हुआ। ख़ूज़ा हैरान रह गया कि लड़की कितनी बेहिस्सी से ट्रे लेकर चली गई।

अब हेरोदेस की आवाज़ ज़्यादा गरजदार हो गई। वह जाम पर जाम पिए जा रहा था। लेकिन बार बार ख़ला में ऐसे घूरता जैसे कुछ नज़र न आ रहा हो। ख़ूज़ा ने अंदाज़ा लगा लिया कि ज़ाहिरी ख़ुशी दिल के तूफ़ान को छिपाने का एक परदा है। हज़रत यहया ने ठीक ही कहा था कि गुनाह एक हैबतनाक क़ुव्वत है। वह गुनाह से ऐसे खेलता रहा था जैसे हमेशा उस पर क़ाबू रख सकेगा। अब गुनाह ने उसे बेबस कर दिया था और उसे ग़ुलाम की तरह उसका हुक्म मानना पड़ा था। यहया आज़ाद था, क्योंकि वह क़ैद में भी ख़ुदा की मरज़ी पूरी कर रहा था। हेरोदेस दाँत पीसने लगा। आज उसे एहसास हुआ कि मेरे पास एक अनमोल चीज़ थी यानी मेरी रूह। लेकिन आज मैं उसे खो बैठा हूँ।

"अरे अहमक़, और शराब दो," वह एक ख़ादिम पर दहाड़ा। "आज हमारी सालगिरह है। ओ ग़ुलाम के बच्चो! ज़ोरदार साज़ बजाओ। ख़ुशी की तानें उड़ाओ। आज ख़ुशी का दिन है।"

जब नबी के शागिर्दों ने उनकी मौत की ख़बर सुनी तो आए और उनकी लाश को लेकर दफ़न किया। अगरचे उनके दिल निहायत उदास थे लेकिन उनको बेहद तसल्ली भी थी। हज़रत यहया ने रब के तहत ज़िंदगी बसर की थी। वह नूर की तरह चमकते रहे थे ताकि लोगों की अल्लाह तक राहनुमाई करें। अब वह अपने अबदी वतन में हमेशा आज़ाद रहेंगे।

अवाम का तजस्सुस

अप्रैल का महीना शुरू हो चुका था। गलील की झील के आस-पास के क़सबे और देहात गरमी की लपेट में थे। कफ़र्नहूम के बाशिंदों की बदक़िस्मती थी कि उनका इलाक़ा समुंदर की सतह से काफ़ी नीचे था। इर्दगिर्द की पहाड़ियाँ गरमी में मज़ीद इज़ाफ़े का बाइस बनती थीं। लोग सायदार जगहों में पनाह तलाश करते फिरते थे। जिन्हें धूप में काम करना पड़ता था उनकी हालत क़ाबिले-रहम थी।

हज़रत ईसा और उनके शागिर्दों को भी खुले मैदान में काम करते हुए बड़ी दिक़्क़त आ रही थी। लेकिन झिलमिलाती गरमी भी हज़रत ईसा को अपने काम से बाज़ न रख सकती थी। यह देखकर उनके शागिर्द भी क़दम से क़दम मिलाकर चलते रहे।

आज भी बड़ी भीड़ उनके गिर्द जमा थी। उन्हें खाना खाने की फ़ुरसत भी न मिली। बार बार हज़रत ईसा की मुहब्बत भरी नज़रें उनको तक़वियत देती रही। जैसे कह रही हों, “मेरे अज़ीज़ दोस्तो, मैं तुमसे

बहुत ख़ुश हूँ।” इसी से उन्हें हौसला मिलता रहा। लेकिन फिर भी वक़्त आ गया कि वह बड़ी थकावट महसूस करने लगे। जब हज़रत ईसा ने कहा कि “हम आराम करने झील के पार चलें” तो उनके दिल शुक्रगुज़ारी से भर गए।

शमाऊन पतरस और यूहन्ना ज़बदी अपनी एक कश्ती उस्ताद के लिए हर वक़्त तैयार रखते थे। जल्दी से सारे सवार हो गए और मशरिक़ की सिम्त झील पार करने लगे। हवा ठीक थी। वह घंटे-भर बल्कि शायद आधे घंटे में पार उतरने की उम्मीद रखते थे। दूसरा किनारा कोई पंद्रह ही मील दूर था।

ठंडी ठंडी हवा बादलों से अठखेलियाँ कर रही थी। हर फ़रद यहया नबी के अलमनाक अंजाम के बारे में सोच रहा था। चंद एक तो पहले उसी के शागिर्द रहे थे। अंदरियास यहूदाह इस्करियोती से कहने लगा, “मुझे रह रहकर यहया नबी का ख़याल आ रहा है। हमारी तरह नौजवान थे। उन्होंने मेरी ज़िंदगी में नया जोश भर दिया। अल्लाह से उनकी मुहब्बत और ख़िदमत करना, मेरे लिए तो एक बड़ा नमूना साबित हुआ है। उन्हें सच्चा नबी होने की क़ीमत अपनी जान से अदा करनी पड़ी। वह हेरोदेस के गुनाह के बारे में चुप नहीं रह सकते थे, क्योंकि ख़ुदा का रूह उन्हें उभारता था कि बादशाह को ख़बरदार करें।”

लेकिन यहूदाह इस्करियोती के चेहरे से सख़्ती की झलक थी। उसकी नज़रों में शक झलक रहा था। वह कहने लगा, “समझ में नहीं आता।

अगर यहया अल-मसीह का पेशरौ थे तो अल्लाह ने हेरोदेस को उन्हें मार डालने क्यों दिया? क्या यह नहीं होना चाहिए था कि वह अल-मसीह की बादशाही में मुअज़्ज़ज़ मक़ाम पर फ़ायज़ होते?” उसने शक भरे अंदाज़ में बात ख़त्म की, “मेरे ख़याल में हज़रत ईसा अल-मसीह हैं। लेकिन आजकल मेरे ज़हन में यह सवाल हलचल मचा रहा है कि अगर वह सचमुच अल-मसीह हैं तो फिर अपने पेशरौ पर यह सब कुछ क्यों गुज़रने दिया?”

अंदरियास ने बड़े जोश से जवाब दिया, “यहूदाह, चूँकि उस्ताद ने हज़रत यहया के मामले में तुम्हारी तवक़्क़ो के मुताबिक़ मुदाख़लत नहीं की इसलिए कहीं तुम उन्हें जाली मसीह तो नहीं समझने लगे?”

यहूदाह ने बेज़ारी से सुनी अनसुनी करके कहा, “उस नबी ने बड़ी वफ़ादारी से हज़रत ईसा के हक़ में गवाही दी थी, तो भी हज़रत ईसा ने उनकी मदद के लिए उँगली तक न हिलाई। आख़िर क्यों?”

हज़रत ईसा पर यहया की मौत का ख़ास असर हुआ। उन्हें पूरा इल्म था कि ख़ुद मेरी ज़िंदगी मेरे पेशरौ की ज़िंदगी से वाबस्ता है। अब उन्हें यक़ीन हो गया कि मेरा अंजाम भी क़रीब है।

जिन लोगों को वह झील के उस तरफ़ छोड़ आए थे उन्हें बहुत मायूसी हुई। वह हज़रत ईसा को छोड़ने पर तैयार न थे। दाऊद, उसका भाई यशुअ और इसहाक़ बिन ओबेद भी इन्हीं लोगों में शामिल थे। मीरब की पड़ोसन तबीता और रूत बिन इफ़राईम भी वहीं थीं। इसहाक़ बड़े

जोश से पुकारा, “चलो! उस्ताद के पीछे चलें।” तब वह सब पैदल ही चल पड़े। ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते गए भीड़ ज़्यादा होती गई। जो लोग फ़सह की ईद के लिए गुरोह दर गुरोह यरूशलम को जा रहे थे वह भी उनमें शामिल हो गए। गरमी का मौसम था। रास्ते में कहीं साया न था मगर हज़रत ईसा से मिलने के शौक़ में वह आगे बढ़ते चले गए। कोई बीस किलोमीटर का फ़ासला तय करना था। क़रीबन चार घंटे लग गए लेकिन उन्हें कोई परवा न थी।

शागिर्दों को बस थोड़ा ही आराम मिला। जब किनारे के क़रीब पहुँचे तो जो सोने की कोशिश कर रहे थे, उनके साथियों ने उन्हें जगाया। “वह आ रहे हैं, लोगों के झुंड के झुंड! उनके पीछे उड़ती गर्द का बादल देखो! छुट्टी ख़त्म। कुछ न कुछ होनेवाला है।”

लेकिन हज़रत ईसा को उन पर तरस आया जो इतने लंबे सफ़र और इतनी गरमी के बाइस बिलकुल माँदा हो रहे थे। वह अपनी थकावट भूल गए, क्योंकि यह लोग उन भेड़ों की मानिंद थे जिनका चरवाहा न हो।

रूत तबीता से कहने लगी, “मेरा ज़मीर मुझे मलामत कर रहा है कि हम उस्ताद का वक़्त छीन रहे हैं जबकि वह बेहद थके हुए हैं। हैरानी की बात है कि वह इतनी बेग़रज़ी से हमारी ख़िदमत करने को तैयार हैं।”

थके-माँदे लोग आकर घास पर बैठते गए। हज़रत ईसा उनको तालीम देने लगे। वह बड़ी चाहत से सुनते रहे, यहाँ तक कि सूरज डूबने लगा। अगरचे हज़रत ईसा के ख़यालात आसमानी बातों पर मरकूज़ थे फिर

भी उन्हें एहसास हुआ कि अब इन लोगों को जिस्मानी ख़ुराक की भी ज़रूरत है।

शागिर्द बोले, "लोगों को अपने अपने घरों को जाने दें। अंधेरा हो रहा है। इनको तो राह में कुछ खाने को भी मुश्किल ही से मिलेगा।"

उन्हें आज़माने की ग़रज़ से हज़रत ईसा ने कहा, "तुम ही उन्हें खाने को दो।"

फ़िलिप्पुस उन्हें यों देखने लगा जैसे कुछ समझा नहीं। "क्या आपका मतलब है कि जाकर 200 सिक्के की रोटियाँ लाएँ? लेकिन वह भी इतने लोगों में क्या होंगी?"

अंदरियास कुछ मालूम करने चला गया। जल्दी ही वापस आकर उसने इत्तला दी कि "एक लड़के के पास जौ की पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं। लेकिन इतने लोगों में यह क्या हैं?"

हज़रत ईसा ने पूरे एतमाद से फ़रमाया, "अब जाकर लोगों को सौ सौ और पचास पचास की गुरोहों में बिठाओ।"

तबीता रूत से बोली, "पता नहीं क्या होनेवाला है। शमाऊन पतरस तो कह रहा था कि हमें खाना खिलाया जाएगा। खिलाने को तो कुछ है ही नहीं।"

रूत हँसने लगी। उसने हज़रत ईसा की तरफ़ इशारा किया, "देखो। वह तो तिमना का लड़का योएल है जो हज़रत ईसा के क़रीब खड़ा है।

लगता है वह कुछ खाने को साथ लाया है। शायद कुछ रोटियाँ और मछलियाँ।”

तबीता ने ताईद की, “बड़ा अच्छा लड़का है। वह उन्हें हज़रत ईसा को पकड़ा रहा है। उस्ताद को शरीक करके कितना ख़ुश है! और क्यों न हो! हज़रत ईसा ने तो उसके बाप को कोढ़ से शफ़ा बख़्शी थी। वह यह एहसान कभी भूल नहीं सकता।”

लड़का योएल अपनी रोटियाँ और मछलियाँ हज़रत ईसा को देकर दूसरों के साथ खड़ा देखने लगा। हज़रत ईसा ने वह पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ लीं, आसमान की तरफ़ नज़रें उठाईं, उन पर बरकत चाही और उन्हें तोड़कर शागिर्दों को देने लगे।

उसी लमहे दाऊद ने ज़ोर से यशुअ का बाज़ू हिलाया और पुकार उठा, “देख रहे हो? रोटियों और मछलियों के टुकड़े हज़रत ईसा के हाथों में बढ़ते ही जा रहे हैं। जितने वह शागिर्दों को पकड़वाते हैं उतने ज़्यादा बढ़ जाते हैं। देखो, कितने लोगों को खाना मिल भी चुका है।”

दाऊद ने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई और हिसाब लगाते हुए बोला, “औरतों और बच्चों को छोड़कर सिर्फ़ मर्दों की तादाद ही कोई पाँच हज़ार होगी। बहुत-से लोग खा भी रहे हैं। अब मुझे कोई शक नहीं रहा कि सबको पेट भरकर खाना मिलेगा। हमारी आँखों के सामने मोजिज़ा हो रहा है।” वह यशुअ से मुख़ातिब हुआ, “भाई क्या अल-मसीह इससे

बड़ा मोजिज़ा दिखाएगा? बेशक इन बड़े मोजिज़ों के वसीले से ख़ुदा इस बात पर मोहर कर रहा है कि हज़रत ईसा ही अल-मसीह हैं।”

यशुअ बिन इफ़राईम ने इत्तफ़ाक़ किया, “शायद हज़रत ईसा इस मोजिज़े से हमें कोई ख़ास बात सिखाना चाहते हों।”

इसहाक़ आगे को झुका, “शायद अब हज़रत ईसा हलीम ख़ादिम का लबादा उतारकर अपना हक़ीक़ी जलाल और शानो-शौकत दिखाने लगे हों।”

यशुअ बिन इफ़राईम ने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई, “सबके सब खा रहे हैं।” वह मुतअज्जिब होकर बोला, “इतने बड़े मजमा को खाना बाँट बाँटकर शागिर्द बेचारे थककर चूर हो गए हैं।”

वह सचमुच थक गए थे। लेकिन साथ साथ बेहद शादमान भी थे, क्योंकि अब उनके आक़ा ने शफ़ा के मोजिज़ों से बिलकुल मुख़्तलिफ़ मोजिज़ा दिखाया था। इतने बेशुमार लोगों को पेट भरकर खाना खिलाया बल्कि कुछ खाना तो बच भी गया। इतना बड़ा मोजिज़ा देखकर उनके ज़हन में यह ख़याल गरदिश करने लगा कि जिसने पाँच रोटियों और दो मछलियों से पाँच हज़ार से ज़्यादा अफ़राद को सेर कर दिया, वह तो हमारी हर ज़रूरत पूरी कर सकता है चाहे जिस्मानी हो चाहे रूहानी।

जब लोग रोटियाँ और मछलियाँ खाने लगे तो हज़रत ईसा के लिए उनका जोशो-ख़ुरोश और बढ़ गया। वह एक दूसरे से कहने लगे, “सचमुच यह वही नबी हैं जो दुनिया में आने को था!” वह इस बात

पर ख़ुश थे कि वह शफ़ा बख़्शने के अलावा भी मोजिज़ा कर सकते हैं। बेशक यही अल-मसीह हैं जिनका हम इंतज़ार कर रहे थे। अगर वह यह चीज़ें कसरत से मुहैया कर सकते हैं तो हमारे दुश्मन रोमियों को भी मुल्क से निकाल सकते हैं। क्यों न हम उन्हें अपने साथ यरूशलम ले जाएँ और अगर ज़रूरत हुई तो ज़बरदस्ती अपना बादशाह बना लें।

भीड़ के जोशो-ख़ुरोश ने शागिर्दों को भी अपनी गिरिफ़्त में ले लिया। वह सोचने लगे कि आख़िर हमारा ख़ाब भी पूरा होने को है। अब उस्ताद दुनिया में अपनी सलतनत क़ायम करेंगे और हमें मुअज़्ज़ज़ रुतबे मिलेंगे। ख़ास तौर पर यहूदाह इस्करियोती तो बेहद ख़ुश था, क्योंकि वह दूसरे शागिर्दों से कहीं बढ़कर बेताब था कि हज़रत ईसा अपनी दुनियावी सलतनत क़ायम करें।

लेकिन वह मायूस हुए। ऐन उस वक़्त जब अवाम का जोशो-ख़ुरोश उरूज पर था तो हज़रत ईसा ने अचानक उनको हुक्म दिया, "कश्ती में सवार होकर जल्दी जल्दी झील के पार चले जाओ।" वह उस ख़तरे को भाँप गए थे जो उनके सर पर मँडला रहा था। लोगों के जोश ने उनकी सोच को धुँधला कर दिया था। उनके दिल में ताक़त, इज़्ज़त और अज़मत की ख़ाहिश अँगड़ाइयाँ लेने लगी थी। वह अभी तक नहीं समझे थे कि फ़िलहाल अल्लाह की बादशाही इस दुनिया की नहीं बल्कि उस दिल में ही क़ायम होती है जो ख़ुदा की मरज़ी पूरी करने पर आमादा

हो। ऐसे दिल के इर्दगिर्द अल्लाह की बादशाही नज़र आती है, क्योंकि ख़ुदा का रूह उसमें काम करता है।

अब हज़रत ईसा ने जल्दी से भीड़ को रुख़सत कर दिया। फिर वह एक पहाड़ पर दुआ माँगने को चले गए, क्योंकि बहुत कुछ था जो वह अपने आसमानी बाप के सामने पेश करना चाहते थे। इधर दुनियावी बातों से सरशार भीड़ ग़लत क़िस्म की बादशाही के लिए बेक़रार थी। उधर शागिर्द ताक़त और इज़्ज़त के पीछे पड़े थे। साथ साथ उनके सामने एक निहायत मुश्किल रास्ता था। इन सब बातों से निपटने के लिए वह दुआ करने में लग गए ताकि क़ुव्वत और ताज़गी हासिल करें।

इस मौक़े पर शागिर्द भी हुजूम से जुदा नहीं होना चाहते थे, क्योंकि सब कुछ उनकी ख़ाहिश के मुताबिक़ हो रहा था। वह ख़ुद को ऐसे अहम महसूस कर रहे थे जैसे मोजिज़ा ख़ुद उन्होंने किया हो। क्या अजब कि वह उदास होकर झील को पार करने लगे। यहूदाह इस्करियोती तो ख़तरनाक हद तक बाग़ियाना सोचों में पड़ गया। वह ग़ुस्से से कहने लगा, "बेशक उस्ताद ने हमें ख़ास मक़सद के तहत वापस भेज दिया है। शायद इस वक़्त एलान हो रहा हो कि वह यहूदियों के बादशाह हैं। शायद वह हमें अपनी बादशाही में कोई हिस्सा नहीं देना चाहते।"

अचानक ही मग़रिब से तूफ़ानी आँधी उठी। लहरें दीवानों की तरह उनकी तरफ़ लपकीं। कश्ती खिलौने की तरह हिचकोले खाने लगी। सब जानते थे कि कितना बड़ा ख़तरा दरपेश है। क़ुदरत की ताक़त के सामने

वह बिलकुल बेबस थे। जो पहले अपने आपको इतना बड़ा समझ रहे थे अब ख़ौफ़ से काँपने लगे। एक लमहे कश्ती देवक़ामत लहर पर ऊपर उठती तो अगले ही लमहे एक और लहर उसे नीचे पटख़ देती। उनके सामने मौत नाचती नज़र आने लगी। उनकी आँखें बार बार आसमान की तरफ़ उठतीं। बादलों ने स्याह कंबल की तरह पूरे चाँद को छिपा रखा था। लमहे-भर को चाँद का एक टुकड़ा नज़र आता तो बिफरी हुई झील पर हलकी-सी रौशनी फैल जाती और अगले ही लमहे फिर घुप-अंधेरा हो जाता।

अचानक ही मत्ती गला फाड़कर चिल्लाने लगा, "मदद ... मदद ... भूत। कोई चीज़ लहरों पर चली आ रही है। ख़ुदाया हमें इस बदरूह से बचा!" फिर चाँद दुबारा एक बादल के पीछे ग़ायब हो गया। दूसरे सब घबरा गए।

तब शमाऊन पतरस उसे सख़्ती से समझाने लगा, "यार मत्ती! अपने आप पर क़ाबू रखो। तुम्हारे आसाब तुम्हें धोका दे रहे हैं। किया तुम इतनी-सी बात भी नहीं समझते?"

लेकिन मत्ती ने ज़िद किया कि मैंने ज़रूर भूत देखा है। अगले ही लमहे जब बादल ज़रा-सा हटा तो सारे ही ख़ौफ़ से चिल्ला उठे। एक शबीह तूफ़ानी लहरों पर चलती हुई उनकी तरफ़ बढ़ रही थी। फिर भी जब कोई लहर उसे उनकी नज़रों से छिपा लेती या चाँद छिप जाता तो तारीकी में उन्हें अपनी ज़हनी हालत पर शक होने लगता। आहिस्ता आहिस्ता

वह शबीह बढ़ती बढ़ती कश्ती के क़रीब आ पहुँची। सब दीवानावार चीख़ने-चिल्लाने लगे। फिर तूफ़ान के शोर में एक और आवाज़ सुनाई देने लगी। अब तो उनके ख़ौफ़ की इंतहा न रही। यूहन्ना बिन ज़बदी हकलाते हुए बोला, "बदरूह कुछ कह रही है।" लेकिन शोर की वजह से साफ़ सुनाई नहीं दे रहा था कि वह आवाज़ क्या कह रही है।

मत्ती ने काँपते हाथों से चेहरे पर से पानी पोंछा। "पानी से तो मैं यों भी घबराता हूँ। मगर इस वक़्त तो हवास बिलकुल जवाब दे गए हैं। लगता है कि मैं उस्ताद की आवाज़ सुन रहा हूँ, लेकिन ..."

उसी लमहे हज़रत ईसा की मज़बूत आवाज़ तूफ़ान को चीरते हुए उन तक पहुँची, "हौसला रखो! मैं ही हूँ। मत घबराओ।"

शमाऊन पतरस ने फ़ौरन अपने आप पर क़ाबू पाकर बड़ी दिलेरी से जवाब दिया, "ख़ुदावंद, अगर आप ही हैं तो मुझे पानी पर अपने पास आने का हुक्म दें।"

उन्होंने कहा, "आ।"

पतरस कश्ती से निकलकर पानी पर चलते हुए हज़रत ईसा की तरफ़ जाने लगा। मगर जब बिफरती लहरों पर नज़र की तो डर गया और आहिस्ता आहिस्ता पानी में धँसने लगा। ख़ौफ़ के मारे वह चिल्ला उठा, "ख़ुदावंद, मुझे बचाएँ!"

हज़रत ईसा ने फ़ौरन हाथ बढ़ाकर उसका हाथ थाम लिया और उसे झिड़का, "ऐ कमएतक़ाद! तू शक में क्यों पड़ गया था?"

ज्योंही हज़रत ईसा और पतरस कश्ती में आए हवा थम गई।[1]

अपने उस्ताद के तईं वह ख़ुद को कितना छोटा महसूस कर रहे थे! बहादुर शमाऊन पतरस को भी अपने मालिक के क़ुव्वतबख़्श हाथ की ज़रूरत महसूस हो रही थी। अब उन्हें मालूम हो गया कि वह अपनी ताक़त से ऐसे ख़ौफ़नाक तूफ़ान से सलामती से नहीं गुज़र सकते बल्कि अपने आक़ा के बग़ैर वह क़तअन कुछ नहीं कर सकते। वह हैरान रह गए कि हज़रत ईसा कितने अजीब हैं। वह तो फ़ितरत की ताक़तों पर भी इख़्तियार रखते हैं!

कफ़र्नहूम के भी कुछ लोग उस भीड़ में शामिल थे जिसको हज़रत ईसा ने खाना खिलाया था। अगले दिन उनको पता चला कि वह इबादतख़ाने में हैं। चूँकि उन्होंने देखा था कि वह कश्ती में बैठकर शागिर्दों के साथ नहीं चले गए थे इसलिए वह हैरानी से पूछने लगे, "उस्ताद, आप यहाँ कब आए?"

हज़रत ईसा ने जवाब में उन्हें झिड़का। उन्होंने उनकी आँखों के सामने मोजिज़ा किया था, मगर वह फिर भी ईमान नहीं लाए थे कि वह अल-मसीह हैं। इसके बजाए उनकी दुनियावी नजातदहिंदे के लिए उम्मीद जाग उठी थी जो उनको खिलाता-पिलाता और सारी दुनियावी

1 मत्ती 14 पर मबनी।

ज़रूरियात पूरी करता रहे। हाँ, जो उन्हें ऐसी कामिल सरज़मीन मुहैया कर दे जिसमें न मौत हो न बीमारी, न दुख-दर्द। हज़रत ईसा उनसे कहने लगे, "मैं तुमको सच बताता हूँ, तुम मुझे इसलिए नहीं ढूँड रहे कि इलाही निशान देखे हैं बल्कि इसलिए कि तुमने जी भरकर रोटी खाई है। ऐसी ख़ुराक के लिए जिद्दो-जहद न करो जो सड़-गल जाती है, बल्कि ऐसी के लिए जो अबदी ज़िंदगी तक क़ायम रहती है और जो इब्ने-आदम तुमको देगा, क्योंकि अल्लाह बाप ने उस पर अपनी तसदीक़ की मोहर लगाई है।"[1]

शमाऊन पतरस यूहन्ना के क़रीब खड़ा था। वह आहिस्ता से कहने लगा, "क्या उन्हें नज़र नहीं आता कि ख़ुदा ने अपने पाक रूह के वसीले से हज़रत ईसा पर अपनी मोहर लगाई है? यक़ीनन जो चाहे वह जान सकता है कि यही अल-मसीह हैं। अगर कल के अज़ीम मोजिज़े ने उनकी आँखें नहीं खोलीं तो कोई नहीं खोल सकता।"

यूहन्ना ने हाँ में सर हिलाया, "देखो, हमारे मालिक सिर्फ़ यह चाहते हैं कि इनमें हमेशा की ज़िंदगी पाने की ख़ाहिश हो। अब तक तो यह सिर्फ़ लालच और हिर्स से भरे हुए लगते हैं। वह देखो, अब इस इबादतख़ाने के सरदार आगे बढ़ रहे हैं।"

एक आलिम ने बड़े शौक़ से पूछा, "हम क्या करें ताकि अल्लाह के काम अंजाम दें?"

---

1 यूहन्ना 6:26-27

हज़रत ईसा के चेहरे पर उदास-सी मुसकराहट फैल गई। यह लोग अभी तक समझते थे कि हम अपने नेक कामों से अबदी ज़िंदगी कमा सकते हैं। किस क़दर गुमराह थे! ज़िंदगी का तो सिर्फ़ एक ही रास्ता है। उन्होंने जवाब दिया, "अल्लाह का काम यह है कि तुम उस पर ईमान लाओ जिसे उसने भेजा है।"[1]

सरदारों की बेचैनी ज़ाहिर थी। हज़रत ईसा ने साफ़ तौर से कह दिया था कि इस बात को क़बूल करो कि मुझे ख़ुदा ने भेजा है। लेकिन वह इसके लिए तैयार न थे। वह उनसे बहस करने लगे, "तो फिर आप क्या इलाही निशान दिखाएँगे जिसे देखकर हम आप पर ईमान लाएँ? आप क्या काम सरंजाम देंगे? हमारे बापदादा ने तो रेगिस्तान में मन खाया। चुनाँचे कलामे-मुक़द्दस में लिखा है कि मूसा ने उन्हें आसमान से रोटी खिलाई।"[2]

यूहन्ना ने सर हिलाया जैसे उसे यक़ीन न आ रहा हो। "क्या कलवाला मोजिज़ा ऐसा निशान नहीं? क्या यह लोग इससे भी शानदार मोजिज़े देखना चाहते हैं?"

अब भीड़ की पूरी तवज्जुह हज़रत ईसा पर थी। वह क्या जवाब देंगे? हज़रत मूसा इसराईलियों के पहले नजातदहिंदा थे। उनका ईमान था कि उन्हीं की मारिफ़त हमारे आबाओ-अजदाद को आसमान से रोटी यानी मन मिला था। उनकी तवक़्क़ो थी कि दूसरा नजातदहिंदा यानी

1 यूहन्ना 6:29
2 यूहन्ना 6:30-31

अल-मसीह भी ऐसा ही करेगा। हज़रत ईसा ने उनकी ग़लत सोच पर नुकताचीनी नहीं की बल्कि बड़े तहम्मुल से बयान किया, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि ख़ुद मूसा ने तुमको आसमान से रोटी नहीं खिलाई बल्कि मेरे बाप ने। वही तुमको आसमान से हक़ीक़ी रोटी देता है। क्योंकि अल्लाह की रोटी वह शख़्स है जो आसमान पर से उतरकर दुनिया को ज़िंदगी बख़्शता है।”[1]

हज़रत ईसा के अलफ़ाज़ ने सबको उलझन में डाल दिया। “यह अल्लाह की रोटी दर-हक़ीक़त है क्या जो दुनिया को ज़िंदगी बख़्शती है? यह कोई चीज़ तो हो नहीं सकती। तो फिर क्या कोई शख़्स है?” उनमें कुछ ऐसे भी अफ़राद मौजूद थे जिनके ज़हन में कल का मोजिज़ा अभी ताज़ा था। वह मिन्नत करने लगे, “ख़ुदावंद, हमें यह रोटी हर वक़्त दिया करें।”[2]

हज़रत ईसा ने बड़ी उदासी से उन पर नज़र दौड़ाई। अब भी इनको समझ नहीं आई थी कि हक़ीक़ी ख़ुशी क्या है। इनके नज़दीक ख़ुशी से मुराद यह है कि कोई ग़म और फ़िकर न हो और खाने-पीने की कसरत हो। उनकी ख़ाहिशात अल्लाह और उसकी बादशाही के बजाए अपने ही गिर्द घूमती रहती थीं। काश वह यह सब कुछ समझ सकते! उन्होंने फ़रमाया, “मैं ही ज़िंदगी की रोटी हूँ। जो मेरे पास आए उसे फिर कभी

---

1 यूहन्ना 6:32-33
2 यूहन्ना 6:34

भूक नहीं लगेगी। और जो मुझ पर ईमान लाए उसे फिर कभी प्यास नहीं लगेगी।”[1]

शागिर्द पूरे दिल से इस बात से मुत्तफ़िक़ थे। वह भी मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से ख़ुशी ढूँडते रहे थे लेकिन सिर्फ़ हज़रत ईसा को पा लेने के बाद ही उनकी ज़िंदगियाँ बामानी बनी थीं। शमाऊन पतरस को अल-मसीह के बारे में यसायाह नबी की एक पेशगोई याद आई, “न उन्हें भूक सताएगी न प्यास। न तपती गरमी, न धूप उन्हें झुलसाएगी। क्योंकि जो उन पर तरस खाता है वह उनकी क़ियादत करके उन्हें चश्मों के पास ले जाएगा।”[2] हज़रत ईसा के साथ उनको यही तजरिबा हुआ था।

अब इबादतख़ाने में हज़रत ईसा की आवाज़ गूँज उठी, “तुमने मुझे देखा और फिर भी ईमान नहीं लाए। जितने भी बाप ने मुझे दिए हैं वह मेरे पास आएँगे और जो भी मेरे पास आएगा उसे मैं हरगिज़ निकाल न दूँगा।”[3]

इबादतख़ाने में ख़ामोशी छा गई। लोग सोच में पड़ गए। हज़रत ईसा ने फिर अपील की थी कि मुझ पर ईमान लाओ। उन्होंने बड़े बड़े निशान दिखाए थे मगर नतीजा क्या निकला? और अगर यह सच है कि ख़ुदा अपने हक़ीक़ी फ़रज़ंदों को हज़रत ईसा के पास लाएगा तो क्या हज़रत ईसा को रद करके वह अल्लाह से दूर नहीं हैं?

---

1 यूहन्ना 6:35
2 यसायाह 49:10
3 यूहन्ना 6:36-37

इबादतख़ाने के सरदार बहुत घबराए हुए थे। अगर हर एक हज़रत ईसा पर ईमान लाकर हमेशा की ज़िंदगी हासिल कर सके तो फिर हद कहाँ रही? फिर तो साबिक़ क़ातिल, चोर, रिश्वतख़ोर और ग़ैरयहूदी भी ख़ुदा के बरगुज़ीदों में शामिल होंगे। यह कितना नाक़ाबिले-यक़ीन ख़याल था। ऐसे लोगों को अल्लाह के क़रीब आने का कोई हक़ नहीं। जो भी हो, उस वक़्त हर एक यह बात समझ गया था कि हज़रत ईसा के मुताबिक़ आसमान का दरवाज़ा सबके लिए खुला है। इनमें से कितने इस मौक़े से फ़ायदा उठाएँगे?

जैसे कि पहले भी कई मौक़ों पर किया था, अब भी हज़रत ईसा ने उन्हें बताया कि "मैं अपने आसमानी बाप की मरज़ी के मुताबिक़ काम कर रहा हूँ।" वह कहने लगे, "क्योंकि मैं अपनी मरज़ी पूरी करने के लिए आसमान से नहीं उतरा बल्कि उसकी जिसने मुझे भेजा है। और जिसने मुझे भेजा उसकी मरज़ी यह है कि जितने भी उसने मुझे दिए हैं उनमें से मैं एक को भी खो न दूँ बल्कि सबको क़ियामत के दिन मुरदों में से फिर ज़िंदा करूँ। क्योंकि मेरे बाप की मरज़ी यही है कि जो भी फ़रज़ंद को देखकर उस पर ईमान लाए उसे अबदी ज़िंदगी हासिल हो।"[1]

सब बुड़बुड़ाने लगे। मगर हज़रत ईसा ने परवा न की बल्कि मज़ीद कहा, "तुम्हारे बापदादा रेगिस्तान में मन खाते रहे, तो भी वह मर गए।

1 यूहन्ना 6:38-40

लेकिन यहाँ आसमान से उतरनेवाली ऐसी रोटी है जिसे खाकर इनसान नहीं मरता। मैं ही ज़िंदगी की वह रोटी हूँ जो आसमान से उतर आई है। जो इस रोटी से खाए वह अबद तक ज़िंदा रहेगा। और यह रोटी मेरा गोश्त है जो मैं दुनिया को ज़िंदगी मुहैया करने की ख़ातिर पेश करूँगा।”[1]

यह सवाल इबादतख़ाने में जम-सा गया कि “तुम्हारा अंजाम क्या होगा? क्या तुम्हारे बाप जैसा अंजाम होगा या हमेशा की ज़िंदगी?” इस मरहले पर हज़रत ईसा ने अपने सुननेवालों को जता दिया कि हमेशा की ज़िंदगी देनेवाला मैं हूँ, क्योंकि दुनिया के गुनाह की ख़ातिर मैं अपना बदन क़ुरबान कर दूँगा।

तब इबादतख़ाने के सरदारों में बहस होने लगी यहाँ तक कि उनमें फूट पड़ गई। बाज़ ने हज़रत ईसा की बातों को क़बूल कर लिया जबकि दूसरों ने रद कर दिया, यहाँ तक कि उनके पैरोकारों में भी बुड़बुड़ाने की आवाज़ें उठने लगीं। हज़रत ईसा सब कुछ जानते थे, इसलिए उन्होंने कहा, “क्या तुमको इन बातों से ठेस लगी है? तो फिर तुम क्या सोचोगे जब इब्ने-आदम को ऊपर जाते देखोगे जहाँ वह पहले था?”[2] इस मौक़े पर उनके पैरौओं में से भी बहुत-से उन्हें छोड़कर चले गए, क्योंकि उन्होंने उनकी यह बातें सुनकर ठोकर खाई।

फिर हज़रत ईसा ने अपने बारह शागिर्दों से मुख़ातिब होकर कहा, “क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?”

---

1 यूहन्ना 6:49-51

2 यूहन्ना 6:61-62

वह चुप रहे क्योंकि जानते नहीं थे कि क्या कहें। फिर शमाऊन पतरस ने बड़े एतमाद से ख़ामोशी को तोड़ा, "ख़ुदावंद, हम किसके पास जाएँ? अबदी ज़िंदगी की बातें तो आप ही के पास हैं। और हमने ईमान लाकर जान लिया है कि आप अल्लाह के क़ुद्दूस हैं।"[1]

हज़रत ईसा के चेहरे पर मुसकराहट फैल गई। उन्होंने जवाब दिया, "शमाऊम बिन यूनुस, तू मुबारक है, क्योंकि किसी इनसान ने तुझ पर यह ज़ाहिर नहीं किया बल्कि मेरे आसमानी बाप ने।"[2] लेकिन यह कहते ही उनकी आँखों में गहरी उदासी उतर आई, और वह दर्द भरी आवाज़ से कहने लगे, "क्या मैंने तुम बारह को नहीं चुना? तो भी तुममें से एक शख़्स शैतान है।" (वह यहूदाह इस्करियोती की तरफ़ इशारा कर रहे थे जिसने बाद में उन्हें दुश्मन के हवाले कर दिया।)[3]

---

1 यूहन्ना 6:67-69
2 मत्ती 16:17
3 यूहन्ना 6:70-71

क़त्ल का मनसूबा

यरूशलम में कायफ़ा इमामे-आज़म ने यहूदी लीडरों का एक हंगामी इजलास तलब किया। उसने आग़ाज़ करते हुए कहा, “भाइयो! एक मसला ख़त्म हुआ तो दूसरे का सामना है। अभी कुछ ही अरसा पहले यहया ने हमें परेशान कर रखा था। उसके ज़बरदस्त किरदार हज़ारों को अपनी तरफ़ खींचने लगी थी।”

एक सरदार उसकी हिमायत में बोला, “वह बहुत नेक आदमी था। यहया जो मुनादी करता था उसके मुताबिक़ ज़िंदगी भी गुज़ारता था। उसे न दौलत का लालच था, न इज़्ज़त की हवस। उसका मक़सद ख़ुदा की ख़िदमत करना और लोगों को अल-मसीह की आमद के लिए तैयार करना था।”

कायफ़ा ने झल्लाकर जवाब दिया, “मुहतरम हारून साहब, यह इज़्ज़त और दौलत पर बहस करने का मौक़ा नहीं है। हमें फ़िकर इस बात की थी कि उसकी नई तालीम अवाम को गुमराह कर देगी।”

कायफ़ा का सुसर हन्ना जो पहले इमामे-आज़म रहा था उसने बड़े तीखे अंदाज़ में अपने दामाद को घूरा, "हेरोदेस ने हमारा मसला हल कर दिया है। बेशक यहया नेक आदमी था। उसमें जोश भी बेहद था। लेकिन हम उसकी राहनुमाई में नहीं चल सकते थे। उसने तो नासरत के हज़रत ईसा को अल-मसीह क़रार दिया था।"

एक और सरदार मीकाह कहने लगा, "हाँ। यहया ने गवाही दी थी कि हज़रत ईसा को अल्लाह ने भेजा है, बल्कि यहाँ तक कहा कि 'देखो, यह अल्लाह का लेला है जो दुनिया का गुनाह उठा ले जाता है।'"[1]

"बिलकुल फ़ज़ूल बात," कायफ़ा बुड़बुड़ाया। "ऐसा लगता था कि यहया हज़रत ईसा को कोई इलाही हस्ती ख़याल करता था।"

हन्ना ने ठट्ठा मारा, "क्या ख़ूब! अल-मसीह और नासरत के एक बढ़ई का बेटा!"

नीकुदेमुस ने बड़ी जुर्रत से कहा, "ख़ुदा छोटे-बड़े हर किसी को अपने काम के लिए इस्तेमाल करता है।"

इस पर इमामे-आज़म ने उसे खा जानेवाली नज़रों से घूरा। तब उनके एक साथी इलक़ाना ने जवाब दिया, "लगता है हेरोदेस बादशाह को अपने ऊपर अल्लाह का ग़ज़ब महसूस हो रहा है। हज़रत ईसा के मोजिज़ात के बारे में सुन सुनकर उसे यक़ीन होता जा रहा है कि दरअसल वह यहया ही है जो मुरदों में से जी उठा है। सुना है कि हेरोदेस

1 यूहन्ना 1:29

आजकल बहुत बेचैन रहता है। अपने इस तवह्हुम-परस्ताना यक़ीन के बावुजूद वह हज़रत ईसा से मिलना चाहता है।"

वह बादशाह की बेचैनी पर हँसते रहे। हारून बड़ी बेपरवाई से कहने लगा, "अगर हेरोदेस की हज़रत ईसा से मुलाक़ात हो जाए तो शायद वह हमारा दूसरा मसला भी हल कर दे!" बाज़ ने इसे घटिया मज़ाक़ ख़याल किया।

बातें करते करते कायफ़ा ने ज़ोर से मेज़ पर मुक्का मारा, "भाइयो! ख़ामोश हो जाओ! हज़रत ईसा के ज़िक्र से हम अपने असली मसले पर आ गए हैं। इस पर संजीदगी से ग़ौर करने की ज़रूरत है। आप इस बात से बा-ख़बर होंगे कि हज़रत ईसा के पास यहया से कई गुना ज़्यादा भीड़ जमा हो रही है। इसके अलावा वह बड़ी क़ुदरत का मुज़ाहरा भी करता रहता है।"

ऐन उस वक़्त बाहर बड़ा शोर सुनाई दिया। "ओह! ख़ुदाया!" वह हैरानी से बुड़बुड़ाया। "कहीं जंग ने तो हमें नहीं आ लिया?" कायफ़ा ने फ़ौरन बैतुल-मुक़द्दस की पुलिस के कप्तान को तलब करके हुक्म दिया, "दौड़कर जाओ। पता करो कि क्या हो रहा है?" फिर उसे आतिशीं आँखें दिखाते हुए गरजा, "मुँह क्या देख रहे हो! जल्दी जाओ।"

कप्तान अदब से झुका, "बेहतर हुज़ूर। मुझे लगा कुछ और हुक्म भी होगा। ... कुछ ...।"

इमामे-आज़म दहाड़ा, "चलते बुनो!" वह हथियारबंद आदमी बिजली की-सी तेज़ी से दरवाज़े से निकल गया।

बैतुल-मुक़द्दस की पुलिस का कप्तान चला गया तो हन्ना संजीदगी से कहने लगा, "हज़रत ईसा जैसा आदमी हमारे मुल्क में जंग और ख़ूनरेज़ी का सबब बन सकता है। हमें मोतबर अफ़राद से ख़बर मिली कि उसने एक बहुत बड़ा मोजिज़ा किया है। पाँच रोटियों और दो मछलियों से ही पाँच हज़ार अफ़राद को सेर कर दिया। मुझे तो तमाशा ही लगता है। इसके पीछे शैतानी क़ुव्वतें होंगी लेकिन फिर भी जाहिल और लानती अवाम बहुत मुतअस्सिर हुए हैं। सुना है कि इतने जोश में आ गए थे कि उसको अपना बादशाह बनाने पर तुल गए थे।"

कायफ़ा हिक़ारत से कहने लगा, "यह भी सुना है कि पाँच हज़ार को खिलाने के बाद वह कफ़र्नहूम के इबादतख़ाने में अपने मुताल्लिक़ बड़े बड़े दावे कर रहा था। वह तो अपने आपको अल-मसीह साबित कर रहा था। कहता था कि 'मैं ख़ुदा की रोटी हूँ जो आसमान से उतरी है' और वादा किया कि 'जितने मुझ पर ईमान लाएँगे मैं उन सबको हमेशा की ज़िंदगी दूँगा।'" कायफ़ा का चेहरा निहायत सख़्त हो रहा था। "इससे पेशतर कि यह जाहिल और गंवार लोग उसे बादशाह बना लें हमें कुछ न कुछ करना चाहिए।"

इलक़ाना ने सादगी से दरियाफ़्त किया, "अगर ईसा यहूदियों का बादशाह बनना चाहता तो यह मौक़ा उसके लिए बहुत मौज़ूँ था। भला उसने मौक़े से फ़ायदा क्यों न उठाया?"

हन्ना ने अपनी आवाज़ को क़ाबू में रखते हुए जवाब दिया, "इलक़ाना, अल्लाह न करे। अगर हमारे लोग किसी को बादशाह मुंतख़ब करें तो रोमी फ़ौरन मुदाख़लत करेंगे। क्या आप चाहते हैं कि हमारे लोग सलीबों पर खींचे जाएँ? दिनों तक वहाँ लटकते और सिसक सिसककर मरते रहें? क्या आप चाहते हैं कि हम लीडरों के जो ओहदे मिले हैं वह छिन जाएँ? हमें चौकन्ना रहने की ज़रूरत है। बहुत चौकन्ना।"

अरिमतियाह के यूसुफ़ ने ऐसे सवाल किया जैसे ख़ामोश फ़िज़ाओं से पूछ रहा हो, "लेकिन अगर ईसा सचमुच ख़ुदा का भेजा हुआ है तो ...?"

कायफ़ा के सुसर ने उसे फ़ौरन टोका, "भाई यूसुफ़, आपसे तो हमें ऐसी बात की तवक़्क़ो न थी। भला आलिमों में से भी कोई इसका पैरोकार हुआ है?"

उनमें से बहुत-से हन्ना से मुत्तफ़िक़ न थे, लेकिन उन्होंने ख़ामोश रहना ही बेहतर समझा। क्या सबको मालूम नहीं कि कफ़र्नहूम के इबादतख़ाने के मशहूर सरदार ने ख़ुद हज़रत ईसा के क़दमों में झुककर उससे मिन्नत की थी कि आकर मेरी बेटी को शफ़ा दें? और क्या उस

की बेटी हज़रत ईसा के इस मोजिज़े का जीता-जागता सबूत नहीं जो उन्होंने ईमान के जवाब में किया था?

बैतुल-मुक़द्दस की पुलिस का कप्तान वापस आया। उसके आने ने माहौल को थोड़ा-सा हलका कर दिया। वह इमामे-आज़म को बताने लगा, "आलीजाह! मशहूर गोरिल्ला लीडर बर-अब्बा और उसके साथी अकीम और शेबा ने शहर में बलवा कर दिया है। बड़े अफ़सोस की बात है कि एक आदमी मारा भी गया है।"

इमामे-आज़म ने बड़ा नपा-तुला जवाब दिया, "क्या बर-अब्बा और उसके साथियों को हिरासत में लिया गया है?"

"जी हाँ, जनाबवाला। हमारे क़ौमी हीरो क़ैदख़ाने में बंद हैं। उनका अंजाम बुरा ही होगा।"

"बस काफ़ी है। जाओ"

हन्ना कहने लगा, "बर-अब्बा बहुत मँहज़ोर है। बलवा शुरू करने से पहले उसे ख़ूब सोच लेना चाहिए था। वह भी क़ौम के लिए ख़तरा पैदा कर सकता है। बेशक हमारे ज़ेलोतेस नेक मक़सद रखते हैं, लेकिन हैं सर-फिरे। रोम जैसी ताक़त को फ़तह करना कहाँ मुमकिन है!"

कायफ़ा ने बेज़ारी से कहा, "बुज़ुर्गवार हन्ना, इस वक़्त ज़ेलोतेस गुरोह को भूल जाएँ। असली मसले पर तवज्जुह दें। इस ईसा का मुँह किस तरह बंद किया जाए? क्या बेहतर न होगा कि किसी तरह उसे हमेशा के लिए रास्ते से हटाने का बंदोबस्त किया जाए?" उसने

ख़बरदार करते हुए हाथ बुलंद किया, “लेकिन इसके साथ साथ हमें अवाम को भी फ़रामोश नहीं करना चाहिए। वह उसके ज़बरदस्त हामी हैं। अगर इस काम में होशियारी न की तो कहीं वह हमें संगसार न कर दें। बड़ी हिकमत की ज़रूरत है।”

किसी ने शिकायत की, “यह नासरी जिस तरह हमारे मुअज़्ज़ज़ों और आलिमों से बात करता है बहुत इश्तआलअंगेज़ है।”

किसी और ने इलज़ाम लगाया, “सबत को भी तोड़ता है।”

एक और सरदार हिक़ारत से बोला, “गुनाहगारों के साथ उठता-बैठता है और एक टैक्स लेनेवाला तो उसके शागिर्दों में भी शामिल है।”

कायफ़ा को इन बातों से बड़ा हौसला हो रहा था। “भाइयो, देखा इस ईसा के ख़िलाफ़ कितनी शिकायात हैं! लेकिन हम सब जानते हैं कि ऐसी शिकायतें रोमी गवर्नर के लिए कोई मानी नहीं रखतीं। हमें इलज़ाम को ऐसी शक्ल देनी होगी कि रोमी हुकूमत कुछ करने पर मजबूर हो जाए।”

हन्ना अपने नरम नरम हाथ हिलाते हुए कहने लगा, “मेरे ख़याल में गवर्नर को मजबूर करना ज़्यादा मुश्किल नहीं होगा। पीलातुस ने कई बार अपनी शरारतों से हमारे क़ौमी और दीनी जज़बात को ठेस पहुँचाई है। इस वजह से वह अपने ओहदे के लिए फ़िकरमंद रहता है। हम क़ैसर से दो-एक शिकायतें कर दें तो उसका ज़वाल यक़ीनी है।”

हन्ना ने बेहिस-सी निगाहों से कायफ़ा को देखा, “इसलिए मेरी सलाह है कि हम उसकी ग़ैरयक़ीनी हालत का फ़ायदा उठाएँ और उसे डराएँ। पीलातुस बहुत बुज़दिल है। वह हमारे सामने हथियार डाल देगा।”

इमामे-आज़म ने इन अलफ़ाज़ के साथ इजलास को बरख़ास्त कर दिया, “हम ईसा पर कड़ी नज़र रखें। उम्मीद है कि वह हमारी शरीअत के ख़िलाफ़ या रोम के ख़िलाफ़ ज़रूर कुछ करेगा या कहेगा। यों हमारे हत्थे चढ़ जाएगा।”

ग़ैरयहूदियों में दौरा

अपनी ख़िदमत के दूसरे साल के मौसमे-गरमा में हज़रत ईसा तीन बार अपने मुल्क से बाहर गए। हम दो सफ़रों का हाल बयान करते हैं। इसराईल में उनकी मुख़ालफ़त ज़ोर पकड़ती जा रही थी। उन्हें मालूम था कि मेरे कूच का वक़्त नज़दीक आ रहा है। इसलिए वह अपने शागिर्दों को उस काम के लिए तैयार करने लगे जो उन्हें बाद में करना था। इसराईल में उन्हें तनहाई का वक़्त नहीं मिलता था। सुबह-सवेरे से रात गए तक बीमार और दुखी उनको घेरे रहते थे।

पहले सफ़र में वह शिमाल में बहीराए-रोम के साहिल पर वाक़े सूर और सैदा के शहरों को गए। रास्ता पहाड़ों में से होकर जाता था। शमाऊन पतरस ने ऊपर पहुँचकर हाँपते हुए पीछे निगाह दौड़ाई और नतनेल से कहा, “हमारे आक़ा भी अजीब आदमी हैं। देखो कैसे क़दम बढ़ाते जा रहे हैं। थकन का तो नाम ही नहीं लेते।”

नतनेल ने अपने साथी शागिर्द की हिम्मत बँधाई, "हौसला रखो। चोटी पर पहुँच चुके हैं। देखो कितना सुंदर नज़ारा है!"

दूसरे साथी भी रुककर इस दिलफ़रेब मंज़र से लुत्फ़अंदोज़ होने लगे। शमाऊन पतरस जोश से कहने लगा, "फ़लस्तीन का सारा मुल्क हमारे क़दमों तले है। शुक्र है अब चढ़ाई ख़त्म हो गई है!"

हज़रत ईसा ने अपने थके-माँदे शागिर्दों को तसल्ली देते हुए कहा, "चंद ही दिनों में हम समुंदर के रास्ते सूर शहर में पहुँच जाएँगे।"

सबने उन्हें यक़ीन दिलाया कि इस सफ़र से हमें बड़ा मज़ा आ रहा है। ख़ास तौर से इसलिए कि अपने उस्ताद के साथ तनहा वक़्त गुज़ारने का मौक़ा मिला है। फ़िलिप्पुस कहने लगा, "उस्ताद! बीमारों और दुखी लोगों की मदद करना बहुत अज़ीम काम है, लेकिन कभी कभी दुनिया के शोरो-ग़ुल से निकल आना भी ज़रूरी होता है।"

सूर की दुनिया उनके अपने इलाक़े से बिलकुल मुख़्तलिफ़ थी। यहाँ रोम की सारी शानो-शौकत उनकी आँखों के सामने थी। लेकिन ऐसे शानदार इलाक़े में रहने का कोई इरादा न था। हज़रत ईसा ने एक अलग-थलग इलाक़े में रहने को तरजीह दी ताकि अवाम की नज़रों से बचे रहें। उन्हें मालूम था कि मेरी शोहरत फ़लस्तीन की हुदूद से निकलकर दूर दूर पहुँच चुकी है। फ़लस्तीन के बाहर के इलाक़ों से भी बीमार हर रोज़ उनके पास लाए जाते थे। जल्द ही शागिर्दों को मालूम हो गया कि यहाँ

भी छिपने की कोशिश बेसूद है। यहाँ के लोग भी हज़रत ईसा को जानते हैं।

एक दिन उनकी क़ियामगाह की ख़बर आयरस को भी हो गई। वह कफ़र्नहूम के क़िले के सूबेदार प्रिस्कस के मुंशी की बहन थी। आयरस को सख़्त परेशानी का सामना था। उसकी बेटी बदरूह के क़ब्ज़े में थी, और लगता था कि कोई उसकी मदद नहीं कर सकता। लड़की का दुख देख देखकर माँ हर वक़्त कुढ़ती थी और ग़म खाती रहती थी। अकसर वह सोचा करती, “यह तो खेलने-कूदने और सहेलियों के साथ दिल-लगी करने के दिन हैं। लेकिन बेचारी को इन बातों को होश ही नहीं। इस बदरूह ने सारी ख़ुशियों के दरवाज़े उस पर बंद कर रखे हैं। हम दोनों को कैसी मायूसी की ज़िंदगी का सामना है!”

आयरस ने अपने भाई से सुना था कि हज़रत ईसा ने सूबेदार के नौकर को मोजिज़ाना तौर पर अच्छा किया है। उसने यह भी सुन रखा था कि कोई बीमारी ऐसी नहीं जिससे हज़रत ईसा शफ़ा न दे सकें। उसके ख़यालात उस नबी के किरदार के गिर्द घूमते रहते थे। लेकिन ग़ैरयहूदी औरत होते हुए वह किस तरह उनसे मुलाक़ात कर सकती थी?

फिर एक दिन ऐसा हुआ कि आयरस अपने सहन में थी। वह अपनी छोटी बेटी ख़लोए को अपने बाज़ुओं में थामे उससे मीठी मीठी बातें कर रही थी। नाश्ते के बरतन अभी धोने थे। आग पर केतली रखी थी।

उसकी टोंटी से भाप के मरग़ोले निकल रहे थे और ढकना अजीब जल-तरंग बजा रहा था। गोया एलान कर रहा हो कि पानी तैयार है। लेकिन आयरस की आँखें सिर्फ़ ख़लोए पर लगी थीं। वह बड़ी मुहब्बत से कह रही थी, "मेरी नन्ही परी। एक दिन तू भी दूसरे बच्चों की तरह आज़ाद और ख़ुश होगी।" पुरनम आँखों के साथ उसने उसका माथा चूम लिया। उसने बड़ी अफ़सुरदगी से देखा कि ख़लोए की आँखें चिढ़ी चिढ़ी-सी हैं। उसे मालूम था कि इसका मतलब है कि मुसीबत आ रही है। ऐसे मौक़े पर ख़लोए एक अनजान ख़ौफ़ से घिर जाती थी। अगले ही लमहे उसने ज़बरदस्ती ख़ुद को माँ के बाज़ुओं से आज़ाद करा लिया और चीख़ती और लड़खड़ाती हुई उबलती हुई केतली की तरफ़ लपकी।

"नहीं, नहीं। ऐ बदरूह, मेरी लाडली को नुक़सान न पहुँचाना," आयरस दीवानावार चिल्ला उठी। उसने बढ़कर बेटी को पकड़ना चाहा। ऐन उस वक़्त उसकी अज़ीज़ा लुदिया ने ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाया और पुकारकर कहा, "आयरस, आयरस! जल्दी दरवाज़ा खोलो। बड़ी अच्छी ख़बर लाई हूँ।"

आयरस बेटी को सँभालते सँभालते बेदम हो रही थी। वह काँपती आवाज़ से पुकारी, "धक्का दो। कुंडी नहीं लगी हुई।"

लुदिया जल्दी से अंदर दाख़िल हुई और धड़कते दिल के साथ कहने लगी, "आयरस, वह आ गए हैं। नासरत के नबी हमारे शहर में हैं। दौड़कर जाओ। उन्हें ढूँडो। शायद ऐसा मौक़ा फिर कभी न आए।"

आयरस ने लंबा साँस लिया, “लुदिया, मेरी अच्छी बहन, तुम ख़लोए का ख़याल रखो। में अभी जाती हूँ।” जवाब का इंतज़ार किए बग़ैर वह घर के अंदर चली गई। “मेरा दोपट्टा कहाँ गया,” वह अफ़रा-तफ़री में बुड़बुड़ाई। “यह रहा। और यह रही मेरी जूती।” दरवाज़े से निकलते निकलते उसने ताकीद की, “लुदिया, ख़याल रखना। ख़लोए ख़ुद को नुक़सान न पहुँचा बैठे। मैं जा रही हूँ। किधर को जाऊँ लुदिया?”

लुदिया ने नसीहत की, “हौसला रखो आयरस, अपने आपको सँभालो। दाईं तरफ़ को चरागाहों की तरफ़ जाओ। वहीं नज़र आए थे।”

आयरस की आँखें उम्मीद से चमकने लगीं। मज़ीद इंतज़ार किए बग़ैर वह हज़रत ईसा की तलाश में चल निकली। लुदिया मुसकरा दी। उसे यक़ीन था कि आयरस की मुराद ज़रूर पूरी होगी।

आख़िर आयरस को हज़रत ईसा मिल ही गए। उसकी ख़ुशी की इंतहा न थी। वह अपने दिली करब से पुकार उठी, “ख़ुदावंद, इब्ने-दाऊद, मुझ पर रहम करें। एक बदरूह मेरी बेटी को बहुत सताती है।” बेचारी माँ ने बड़ी फ़िकरमंदी से उस्ताद की आँखों में झाँका। वह जवाब क्यों नहीं दे रहे। क्या उन्हें कुछ परवा नहीं? क्या मुझे उनके शागिर्दों से सिफ़ारिश करानी चाहिए? हज़रत ईसा की ख़ामोशी से वह और भी परेशान हो गई।

आख़िर शागिर्द बोलने लगे, लेकिन उनकी बातें सुनकर उसका दिल बैठ गया। वह अपने उस्ताद से मिन्नत करने लगे, "उसे फ़ारिग़ कर दें, क्योंकि वह हमारे पीछे पीछे चीख़ती-चिल्लाती है।"

आयरस को एहसास हो रहा था कि मैं इनके लिए बड़ी बेज़ारी का बाइस बनी हुई हूँ। उसने सोचा, "इनको मेरी बेटी और उसके ख़ौफ़नाक दुख की क्या परवा है!" लेकिन हज़रत ईसा की आँखें उसे बेइख़्तियार अपनी तरफ़ खींच रही थीं। उनमें कोई ऐसी बात थी जो उसे हौसला दे रही थी कि दरख़ास्त किए जाए।

आख़िर में हज़रत ईसा ने बोलने को मुँह खोला। शागिर्दों के दिल से भी बोझ उतर गया। उन्हें यक़ीन था कि हमारे आक़ा उसे वापस भेज देंगे। हज़रत ईसा के होंट हिलते देखकर आयरस सँभल गई। लेकिन फ़ौरन ही उसकी ख़ुशी काफ़ूर हो गई। वह कहने लगे, "यह मुनासिब नहीं कि बच्चों से खाना लेकर कुत्तों के सामने फेंक दिया जाए।"

दिल-ही-दिल में आयरस ने बहुत बुरा माना, "हाय, ये क्यों! हज़रत ईसा का दिल इतना सख़्त क्यों है! हमने तो सुना था कि वह परले दर्जे के हमदर्द और मेहरबान हैं। मैं तो मदद और तसल्ली पाने आई हूँ। बेइज़्ज़ती कराने तो नहीं।" उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। फिर भी हज़रत ईसा की आँखों से मुहब्बत झलक रही थी, और यह मुहब्बत उसे और इल्तिजा करने पर उकसा रही थी। सोचने लगी, क्या वह मेरे ईमान का इम्तहान ले रहा है? उसकी ममता उसे मजबूर कर रही थी कि

हज़रत ईसा का दामन न छोड़े। उन्होंने सूबेदार के नौकर को तनदुरुस्त किया है, वह ज़रूर मेरी प्यारी ख़लोए को भी शफ़ा दे सकते हैं। उसने बड़ी आजिज़ी से जवाब दिया, "जी ख़ुदावंद, लेकिन कुत्ते भी वह टुकड़े खाते हैं जो उनके मालिक की मेज़ पर से फ़र्श पर गिर जाते हैं।"

हज़रत ईसा ने उसे तारीफ़ी नज़रों से देखा और जवाब दिया, "ऐ औरत, तेरा ईमान बड़ा है। तेरी दरख़ास्त पूरी हो जाए।"[1]

आयरस ने दिल से हज़रत ईसा का शुक्रिया अदा किया और घर को रवाना हो गई। वह हज़रत ईसा की बात पर पूरा भरोसा रखती थी। वह जानती थी कि ख़लोए शैतान के क़ब्ज़े से छूटकर तनदुरुस्त हो चुकी है। उसका दिल ख़ुशी से धड़क रहा था कि जाते ही आज़ाद और ख़ुशबाश ख़लोए से मुलाक़ात होगी। सहन में दाख़िल होते ही उसने लुदिया और ख़लोए की पुरमुसर्रत आवाज़ें सुनीं। वह जल्दी से दौड़ती हुई आगे बढ़ी। "ख़लोए! मेरी बच्ची, मेरी लाडली।" उसने उसे अपनी बाँहों में भींच लिया, "मेरी लाडली ठीक हो गई है!"

अब वह बिलकुल थक गई थी। वह बेटी को गोद में लिए बैठ गई और रोने लगी। "लुदिया बहन, माफ़ करना," वह सिसकी लेते हुए बोली। "यह ख़ुशी के आँसू हैं। मैं अभी, थोड़ी देर में सारी बात बताती हूँ। यह हज़रत ईसा कैसे आदमी हैं? लुदिया क्या तुम जानती हो?"

---

1 मत्ती 15:21-28

लुदिया की आँखें भी आबदीदा हो गई थीं। उसने जवाब दिया, "लोग कहते हैं कि वह बड़े नबी हैं। बाज़ यहूदी तो ख़याल करते हैं कि वह उनका आनेवाला अल-मसीह हैं जिसका वह सदियों से इंतज़ार कर रहे हैं। पता नहीं कौन-सी बात सही है।"

आयरस बोली, "मैं तो चकरा गई हूँ। मगर यह हज़रत ईसा है कोई ख़ास ही हस्ती। ऐसी हस्ती कि न कभी देखी न सुनी। जब मैंने दरख़ास्त की तो पहले बहुत सख़्त लफ़्ज़ों में जवाब दिया।" आयरस ने आँखें सुकेड़ीं। "शायद तुम्हें यह बात अजीब लगे, मगर उनकी इतनी सख़्त बातों के बावुजूद मुझे एहसास हो रहा था कि वह मेरे दुख-दर्द का पूरा पूरा एहसास रखते हैं।" लुदिया ख़ामोश सुन रही थी। उसने कोई जवाब न दिया। आयरस बोलती गई, "लुदिया, काश हमारा कोई देवता हो जो इस नबी की मानिंद इनसानी दुख-दर्द का एहसास रखता हो!"

लुदिया ने बेसाख़्ता जवाब दिया, "अगर ऐसा होता तो मैं अपनी मुहब्बत, दौलत, ताक़त, ग़रज़ अपनी जान भी उस पर निसार कर देती। मुझे तो लगता है कि हमारे देवता तो ताज़ीम के लायक़ ही नहीं।"

आयरस ने ताईद में सर हिलाया। वह बोली तो लहजे में थकन-सी थी, "हमें ज़िंदगी की भूल-भुलैयों से कौन निकालेगा? यह सारी कायनात और यह हसीनो-जमील ज़मीन किसने बनाई है? हम कहाँ से आए हैं और कहाँ को जा रहे हैं? और ज़िंदगी का मक़सद क्या है?"

उधर हज़रत ईसा और उनके शागिर्द आगे बढ़ते गए। आयरस और उसकी पुरज़ोर मिन्नत-समाजत अभी तक उनके कानों में गूँज रही थी। शागिर्दों ने सारी गुफ़्तगू बड़ी दिलचस्पी से सुनी थी। वह औरत ग़ैरयहूदी थी। उनके ख़याल में उसका कोई हक़ न था कि हज़रत ईसा से मदद ले। वह ख़ुद को रास्तबाज़ ख़याल करते थे। इसलिए जो सुलूक हज़रत ईसा ने शुरू में उस औरत से किया था वह उसको दुरुस्त समझते थे। मगर जल्द ही उन्हें एहसास होने लगा था कि उस्ताद जान-बूझकर उसके साथ सख़्ती का बरताव कर रहे हैं ताकि उसके अंदर ईमान की चिंगारी भड़ककर तेज़ शोला बन जाए। और आख़िर में वह उसके ईमान की मज़बूती पर हैरान रह गए थे। उनके आक़ा ने एक ग़ैरयहूदी के ईमान को एक जगमगाते हीरे की तरह उनके सामने ला रखा था। एक बार पहले भी उन्होंने ऐसा ही किया था—उस वक़्त जब उन्होंने सूबेदार के नौकर को शफ़ा बख़्शी थी। उस वक़्त फ़रमाया था, “मैं तुमको सच बताता हूँ, मैंने इसराईल में भी इस क़िस्म का ईमान नहीं पाया। मैं तुम्हें बताता हूँ, बहुत-से लोग मशरिक़ और मग़रिब से आकर इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब के साथ आसमान की बादशाही की ज़ियाफ़त में शरीक होंगे। लेकिन बादशाही के असल वारिसों को निकालकर अंधेरे में डाल दिया जाएगा, उस जगह जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे।”[1]

1 मत्ती 8:10-12

होते होते शागिर्दों पर यह राज़ खुलने लगा कि आसमान की बादशाही दुनिया की तमाम अक़वाम के लिए है न कि सिर्फ़ यहूदियों के लिए। लेकिन अभी वह इस बात को मानने पर आमादा न थे। अभी वह अल्लाह की अज़मत और हर इनसान के लिए उसकी मुहब्बत पर ख़ुशी मनाने को तैयार न थे। तो भी इन दो ग़ैरयहूदियों का ईमान उनके सामने जगमगाते हुए उनकी तंगनज़री को चैलेंज कर रहा था।

एक और मौक़े पर हज़रत ईसा और उनके शागिर्द अपने वतन से बाहर क़ैसरिया-फ़िलिप्पी के इलाक़े में गए। यह गलील की झील के शिमाल में चंद दिनों की मसाफ़त पर हरमून पहाड़ के दामन में है। गो गरमियों का मौसम था तो भी हरमून की चोटी बर्फ़ से ढकी हुई थी।

हज़रत ईसा और उनके शागिर्द इस ख़ूबसूरती से बहुत लुत्फ़अंदोज़ हुए। वहाँ उन्होंने दरियाए-यरदन का मंबा भी देखा। हरमून पहाड़ से पूरे ज़ोर-शोर से निकलते हुए दरिया का नज़ारा एक अलग ख़ूबसूरती रखता है। सफ़र पर रवाना होते वक़्त शागिर्दों ने महसूस किया कि हमारे आक़ा अपने ख़यालों में डूबे हुए हैं। शायद किसी ख़ास मौज़ू पर बात करना चाहते हैं। वह इसी इंतज़ार में थे कि उन्होंने सवाल किया, "लोग इब्ने-आदम को क्या कहते हैं?"

याक़ूब ने बेसाख़्ता जवाब दिया, "बाज़ यहया नबी कहते हैं। बाज़ इलयास, बाज़ यरमियाह या नबियों में से कोई।" दूसरों के साथ साथ

नतनेल को भी ख़याल था कि अभी और सवाल-जवाब होंगे। उस्ताद के अंदाज़ से वाज़िह था कि वह उनका अहम इम्तहान ले रहे हैं। वह जानते थे कि मेरे साथ रहकर उन्होंने कुछ सीखा है।

अब हज़रत ईसा ने शागिर्दों से सीधे सवाल किया, "तुम्हारे नज़दीक मैं कौन हूँ?"

शमाऊन पतरस इस सवाल पर ग़ौर करने लगा, "यह तो दुरुस्त है कि हज़रत ईसा क़दीम नबियों की मानिंद हैं, लेकिन फिर भी वह यकता और बेमिसाल हैं। वह नबी से बढ़कर हैं। हज़रत ईसा ख़ुद को इब्ने-आदम कहते हैं। दानियाल नबी ने अल-मसीह को आदमज़ाद की शक्ल में देखा था। उसने कहा था कि 'रात की रोया में मैंने यह भी देखा कि आसमान के बादलों के साथ साथ कोई आ रहा है जो इब्ने-आदम-सा लग रहा है। जब क़दीमुल-ऐयाम के क़रीब पहुँचा तो उसके हुज़ूर लाया गया। उसे सलतनत, इज़्ज़त और बादशाही दी गई, और हर क़ौम, उम्मत और ज़बान के अफ़राद ने उसकी परस्तिश की। उसकी हुकूमत अबदी है और कभी ख़त्म नहीं होगी। उसकी बादशाही कभी तबाह नहीं होगी।"[1]

सारी बात शमाऊन पतरस के ज़हन में आ गई। दानियाल नबी की इस पेशगोई के मुताबिक़ अल-मसीह इलाही ज़ात होगा लेकिन एक आम इनसान की तरह इनसानों के दरमियान रहेगा। उसका ख़ास लक़ब

1 दानियाल 7:13-14

‘इब्ने-आदम’ होगा। पतरस पर रौशन हो गया कि हज़रत ईसा नबियों की लंबी क़तार में महज़ एक और नबी नहीं हैं जिनसे गुज़श्ता ज़मानों में ख़ुदा तरह बतरह कलाम किया करता था बल्कि वह तो ज़िंदा ख़ुदा के फ़रज़ंद हैं। सिवाए-फ़रज़ंद के कौन है जो बाप की मरज़ी और मक़सद को पूरी तरह जान सके? इसलिए पतरस ने पूरे एतमाद के साथ जवाब दिया, “आप ज़िंदा ख़ुदा के फ़रज़ंद मसीह हैं।”

उसके जवाब से हज़रत ईसा का चेहरा चमक उठा और वह कहने लगे, “शमाऊम बिन यूनुस, तू मुबारक है, क्योंकि किसी इनसान ने तुझ पर यह ज़ाहिर नहीं किया बल्कि मेरे आसमानी बाप ने। मैं तुझे यह भी बताता हूँ कि तू पतरस यानी पत्थर है, और इसी पत्थर पर मैं अपनी जमात को तामीर करूँगा, ऐसी जमात जिस पर पाताल के दरवाज़े भी ग़ालिब नहीं आएँगे।”[1]

चूँकि अब शागिर्द जान गए थे कि वह कौन हैं इसलिए हज़रत ईसा ने महसूस किया कि मैं उन्हें उन मुश्किल वाक़ियात से आगाह कर सकता हूँ जो मुझे और उनको दरपेश हैं। इसलिए उन्होंने आनेवाले वाक़ियात को उन पर ज़ाहिर करना शुरू किया। फ़रमाया, “लाज़िम है कि मैं यरूशलम जाकर क़ौम के बुज़ुर्गों, राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा के हाथों बहुत दुख उठाऊँ। मुझे क़त्ल किया जाएगा, लेकिन तीसरे दिन मैं जी उठूँगा।”

1 मत्ती 16:13-20

अब शमाऊन पतरस की त्योरी चढ़ गई। वह बड़े जोश से कहने लगा, “ऐ ख़ुदावंद, अल्लाह न करे कि यह कभी भी आपके साथ हो।” दूसरों ने भी हम-आवाज़ होकर कहा, “हरगिज़ नहीं!”

शागिर्दों के जवाब से हज़रत ईसा का चेहरा उदास हो गया। उन्होंने शमाऊन पतरस को झिड़ककर कहा, “शैतान, मेरे सामने से हट जा! तू मेरे लिए ठोकर का बाइस है, क्योंकि तू अल्लाह की सोच नहीं रखता बल्कि इनसान की।”

शमाऊन पतरस की आँखों में उदासी की परछाइयाँ लहराने लगीं। थोड़ी ही देर पहले उस्ताद ने उसकी समझ और ईमान की तारीफ़ की थी तो अब इतनी जल्दी इबलीस उसे कैसे अल्लाह की मरज़ी के ख़िलाफ़ बग़ावत करने के लिए इस्तेमाल करने लगा? शर्मसार होकर उसने अपना सर झुका लिया।

हज़रत ईसा ने अपने शागिर्दों की परेशानी देखी। लेकिन उन्हें उनको एक अहम सबक़ सिखाना था, इसलिए कहने लगे, “जो मेरे पीछे आना चाहे वह अपने आपका इनकार करे और अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो अपनी जान को बचाए रखना चाहे वह उसे खो देगा। लेकिन जो मेरी ख़ातिर अपनी जान खो दे वही उसे पा लेगा। क्या फ़ायदा है अगर किसी को पूरी दुनिया हासिल हो जाए, लेकिन वह अपनी जान से महरूम हो जाए? इनसान अपनी जान के बदले क्या दे सकता है?

क्योंकि इब्ने-आदम अपने बाप के जलाल में अपने फ़रिश्तों के साथ आएगा, और उस वक़्त वह हर एक को उसके काम का बदला देगा।”[1]

यहूदाह इस्करियोती के चेहरे पर ग़ुस्से से बल पड़ गए। वह मत्ती को अलग ले जाकर पूछने लगा, “क्या तुम उस्ताद की बात समझे हो? मैं ऐसी फ़ज़ूल बातों को बरदाश्त नहीं कर सकता। एक तरफ़ तो क़त्ल किए जाने की बातें कर रहे हैं, दूसरी तरफ़ हमसे तवक़्क़ो करते हैं कि उनकी पैरवी करें। मेरा तो साफ़ इनकार है।”

मत्ती क़दरे बेचैनी से मुसकराया, “हम सबकी बेहतरी इसी में है कि अपने आपको अहमियत देना छोड़कर अल्लाह को मरकज़ी मक़ाम दें। मैं फिर कहता हूँ, इसी में हमारा भला है।” लमहे-भर के बाद उसने भी एतराफ़ किया कि मैं भी इस बात से परेशान हूँ जो हमारे आक़ा ने अपनी मौत के बारे में की।”

शागिर्द बहुत मायूस हो गए। वह हर मुमकिन कोशिश के बावुजूद इन दर्दनाक ख़यालों से पीछा नहीं छुड़ा सकते थे। अगर उस्ताद मर गए तो बस, यह उम्मीद भी गई कि वह इस ज़मीन पर अपनी सलतनत क़ायम करेंगे। क्या हमें मुग़ालता लग रहा है? क्या वह अल-मसीह नहीं हैं? अगर हैं तो फिर वह क्यों ऐसी दर्दनाक बात करके हमारा भी दिल तोड़ रहे हैं? इन सब बातों का क्या मतलब है? ऐसी सूरत में तो थोड़े ही अरसे में हर एक उनको और उनके अज़ीम कारनामों को भूल

---

1 मत्ती 16:21-27

जाएगा। वह तो ऐसे नजातदहिंदे के इंतज़ार में हैं जो क़ैसर से निपट सके। उनको उस्ताद के मोजिज़ों से बड़ी तसल्ली थी, ख़ुसूसन जब उन्होंने पाँच रोटियों और दो मछलियों से पाँच हज़ार आदमियों को सेर किया था। वह बहुत ख़ुश थे कि यही हमारे नजातदहिंदा हैं जो थोड़े में भी बेशुमार लोगों को सेर कर सकते हैं। वह यह भी जानते थे कि वह मौत से भी ज़ोरावर हैं। उन्होंने नाइन में उन्हें एक नौजवान को ज़िंदा करते देखा था, और यूहन्ना, याक़ूब और पतरस ने उन्हें एक लड़की को मुरदों में से जिलाते देखा था।

शागिर्द जितना क़रीब से हज़रत ईसा को देखते थे उतना ही क़ायल हो जाते थे कि यही नजातदहिंदा अल-मसीह हैं। वह तवक़्क़ो कर रहे थे कि वह वक़्त आया ही चाहता है जब वह अपने अल-मसीह होने का खुल्लम-खुल्ला एलान करके हुकूमत की बाग-डोर सँभाल लेंगे। उनकी उम्मीदें बहुत बुलंद थीं मगर हज़रत ईसा ने इस बात से उन्हें मायूसी के गढ़े में धकेल दिया था। उनका अपना ख़याल यह था कि पेशतर इससे कि लीडर उनके ख़िलाफ़ क़दम जमा लें उन्हें अपने बादशाह होने का एलान कर देना चाहिए।

यहूदाह इस्करियोती तो हज़रत ईसा से सख़्त नाराज़ था। उसे उनसे बड़ी बड़ी उम्मीदें थीं। जो क़ुदरत उनके पास थी, उससे यक़ीनन हर काम किया जा सकता था। उसके ख़याल में हज़रत ईसा अपनी गिराँक़दर ताक़त और क़ुव्वत को ख़ाहमख़ाह ज़ाया कर रहे हैं।

एक हफ़्ता इसी अफ़सोस और ग़म में गुज़र गया। फिर हज़रत ईसा तीन क़रीबी शागिर्दों यूहन्ना बिन ज़बदी, उसके भाई याक़ूब और शमाऊन पतरस को साथ लेकर हरमून पहाड़ पर चले गए। पहाड़ पर चढ़ते हुए उनका दिल दुबारा ख़ुश और तबीयत ख़ुशबाश हो गई।

अपने आक़ा के साथ चलने से गुज़श्ता सारा बोझ उतर गया। उनको ज़रा भी फ़िकर न हुई कि देर हो रही है, क्योंकि वह एक ऐसी जगह पहुँच गए जो रात काटने के लिए मौज़ूँ थी। आज की थकावट भी सेहतअफ़्ज़ा थी। आज वह घंटों जागते और सोचते न रहेंगे बल्कि जल्द ही सो जाएँगे। यों ज्योंही वह लेटे नींद ने उन्हें आ लिया। लेकिन हज़रत ईसा घुटनों के बल गिरकर दुआ करने लगे। शागिर्दों को देख देखकर उनका दिल बोझल हो रहा था और उन्हें अपना अंजाम भी सामने नज़र आ रहा था। वह महसूस कर रहे थे कि मुझे यह सारी बातें अपने आसमानी बाप के सामने पेश करनी हैं।

दुआ करते करते एक अजीब वाक़िया रूनुमा हुआ। शागिर्द भी जाग उठे। वह आँखें फाड़ फाड़कर अपने आक़ा को देखने लगे। उनके सामने ही उस्ताद की सूरत तबदील हो गई। रात की तारीकी में उनका चेहरा सूरज की तरह चमकने लगा, उनके कपड़े नूर की मानिंद सफ़ेद हो गए। उन्होंने अपने आक़ा को इस हालत में पहले कभी नहीं देखा था। यूहन्ना बिन ज़बदी ने कोई पचास साल बाद इस तजरिबे के बारे में लिखा। उस

वक़्त भी इस लमहे की अज़मत और दहशत उसके अलफ़ाज़ से ज़ाहिर है। "हमने उसके जलाल का मुशाहदा किया। वह फ़ज़ल और सच्चाई से मामूर था और उसका जलाल बाप के इकलौते फ़रज़ंद का-सा था।"[1] इसी तरह शमाऊन पतरस ने बाद में लिखा कि "हमने अपनी ही आँखों से उनकी अज़मत देखी थी।"[2]

शागिर्दों पर जैसे सकता तारी हुआ कि इतने में इलयास नबी और मूसा नबी ज़ाहिर हुए। हज़रत मूसा जो कि शरीअत के अलम-बरदार थे और इलयास जो इसराईल के अज़ीम नबी थे। यह दोनों इस बात की तसदीक़ करने को ज़ाहिर हुए कि यही वह हस्ती है जिसमें शरीअत और नबियों की सारी बातों की तकमील होती है। यह दोनों अज़ीम नबी हज़रत ईसा से बातें करने लगे। शागिर्द सुनकर दंग रह गए कि यह हमारे आक़ा की मौत के बारे में गुफ़्तगू कर रहे हैं। दोनों नबी बड़े ख़ुश थे कि अनक़रीब ही हज़रत ईसा अपने ख़ून से दुनिया के गुनाह का कफ़्फ़ारा देंगे और इस तरह शैतान की क़ुव्वत हमेशा के लिए तोड़ देंगे। वह कैसा अजीब वक़्त होगा जब बिल-आख़िर फ़िरदौस के दरवाज़े दुबारा खुल जाएँगे और इनसान और ख़ुदा का टूटा हुआ रिश्ता फिर से बहाल हो जाएगा। उनके आक़ा और यह नबी बहुत गहरी बातों का ज़िक्र कर रहे थे। अब शागिर्दों पर हज़रत ईसा की आनेवाली मौत के एक और ही पहलू का इनकिशाफ़ हुआ। उनकी मौत रायगाँ नहीं जाएगी जैसा कि वह

1 यूहन्ना 1:14
2 2 पतरस 1:16

पहले ख़याल करते थे। और न ही मौत को क़बूल करना उनकी कमज़ोरी का निशान होगा, बल्कि अपनी जान देते हुए वह अपने आसमानी बाप की मरज़ी पूरी कर रहे होंगे। अगरचे शागिर्द इन गहरी बातों को पूरी तरह न समझते थे, ताहम उनको अजीब इतमीनान हासिल हुआ। सब कुछ अल्लाह के इख़्तियार में दिखाई देने लगा।

यह सब कुछ देख और सुनकर शमाऊन पतरस का ज़हन चकरा गया। वह जोश में आकर उन आसमानी मेहमानों की गुफ़्तगू में मुदाख़लत करते हुए पुकार उठा, "ख़ुदावंद, कितनी अच्छी बात है कि हम यहाँ हैं। अगर आप चाहें तो मैं तीन झोंपड़ियाँ बनाऊँगा, एक आपके लिए, एक मूसा के लिए और एक इलयास के लिए।"

वह अभी बात कर ही रहा था कि एक चमकदार बादल आकर उन पर छा गया और बादल में से एक आवाज़ सुनाई दी, "यह मेरा प्यारा फ़रज़ंद है, जिससे मैं ख़ुश हूँ। इसकी सुनो।"

यह सुनकर शागिर्द दहशत खाकर औंधे मुँह गिर गए। लेकिन हज़रत ईसा ने आकर उन्हें छुआ। उन्होंने कहा, "उठो, मत डरो।" तब कहीं उनकी जान में जान आई। उन्होंने नज़र उठाई तो हज़रत ईसा के सिवा किसी को न देखा।[1] शागिर्द जान गए कि आसमानी आवाज़ ने हज़रत ईसा की यकताई के बारे में बा-इख़्तियार शहादत दी है। उनको हुक्म हुआ था कि सिर्फ़ उन्हीं की सुनें।

---

1 मत्ती 17:4-9

शमाऊन पतरस पर अजीब कैफ़ियत तारी थी। जज़बात से मग़लूब होकर उसका अंग अंग काँप रहा था। इलाही आवाज़ जो सिर्फ़ उन्हीं के लिए थी, उसने कहा था कि "यह मेरा प्यारा फ़रज़ंद है, जिससे मैं ख़ुश हूँ। इसकी सुनो।" वह सोच रहा था, "नूरानी बादल से आती इस आवाज़ ने मेरे दिली ईमान की तसदीक़ कर दी है कि उस्ताद सचमुच अल्लाह तआला के फ़रज़ंद हैं।"

जब नबी चले गए तो हज़रत ईसा और उनके साथी पहाड़ से नीचे उतरे। अब शागिर्द अपने में और अपने आक़ा में फ़रक़ को ज़्यादा महसूस कर रहे थे। उस वक़्त उन्हें हज़रत ईसा में एक नई क़ुव्वत दिखाई दे रही थी। आसमानी आवाज़ से उन्हें तसल्ली मिली थी कि वह दुरुस्त राह पर हैं चाहे इनसान उन्हें कितने ग़लत क्यों न समझते हों। सलीब की राह बेमक़सद नहीं होगी बल्कि जो ईमान लाएँगे उन सबके लिए वह नजात का बाइस होगी।

अहम पैग़ाम

सूरज ग़ुरूब होने को था। अक्तूबर के उस सुहाने दिन यरूशलम के बाशिंदे अभी रात को ख़ुशआमदीद कहने को तैयार न थे। कल झोंपड़ियों की ईद यानी फ़सली शुक्रगुज़ारी का तहवार शुरू होने को था। इस मौक़े के लिए वह सब्ज़ शाख़ों से झोंपड़ियाँ बना रहे थे। इस ईद के मौक़े पर हफ़ते-भर उनमें रहना था।

रूत और उसका भाई दाऊद उन दो झोंपड़ियों को फ़ख़्र से देख रहे थे जो उन्होंने अपने मकान की छत पर बनाए थे। डूबते सूरज की किरणें उन हरी हरी शाख़ों को अजीब रंग और चमक दे रही थीं। रूत बोली, "इस मौक़े पर हमेशा बचपन की यादें ताज़ा हो जाती हैं।"

दाऊद हँसकर कहने लगा, "मेरा भी यही हाल है। मुझे याद है हमारे माँ-बाप मिलकर झोंपड़ियाँ बनाया करते, और हम बड़े शौक़ से उनकी मदद किया करते थे।"

रूत ने जवाब दिया, "मदद क्या ख़ाक करते थे। मगर मुझे अच्छी तरह याद है कि उस मौक़े पर अम्मी जी हमें बताया करती थीं कि हम क्यों हफ़्ते-भर इनमें रहते हैं।"

दाऊद बोला, "जब वह यह सारी बातें हमें समझातीं तो उनका चेहरा कितना संजीदा होता था। वह कहा करती थीं कि "याद रखना कि हमारे बापदादा फ़लस्तीन की तरफ़ सफ़र करते हुए चालीस साल तक झोंपड़ियों में रहते रहे। इसलिए हम भी एक हफ़्ते तक इन झोंपड़ियों में रहते हैं ताकि अल्लाह के उस फ़ज़ल को याद रखें जो वह हमारे बापदादा पर करता रहा।"

रूत पुरानी यादों को ताज़ा करते हुए कहने लगी, "जब झोंपड़ियाँ तैयार हो जातीं तो मैं चुपके से अकेली एक में घुस जाती। मैं तसव्वुर करती कि मैं बापदादा में से कोई हूँ और फ़लस्तीन को जा रही हूँ। इससे मुझे बेहद ख़ुशी होती थी।"

उसी वक़्त उनका बूढ़ा नौकर रूबिन हाँपता हुआ छत पर आया और उनसे कहने लगा कि खाना तैयार है। उसने चमकती आँखों से झोंपड़ियों को देखा और तारीफ़ की, "बहुत ख़ूब! तुम ने बहुत ख़ूबसूरत झोंपड़ियाँ बनाई हैं।" उसकी आँखें भर आईं और आवाज़ थरथराने लगी, "कितनी मुद्दत हो गई है कि तुम्हारी माँ को फ़ख़्र होता था कि मैं सारे यरूशलम में सबसे उम्दा झोंपड़ी बनाती हूँ।" फिर अपने आप पर क़ाबू पाते हुए

वह क़दरे ख़ुशी से बोला, "झोंपड़ियों की ईद, फ़सली शुक्रगुज़ारी की ईद भी है। ख़ुदावंद चाहता है कि हम ख़ुशी मनाएँ।"

रूबिन झोंपड़ियों का अच्छी तरह जायज़ा लेने लगा। रूत और दाऊद मुसकराते हुए उसे देखते रहे। आख़िरकार उनके नौकर ने झोंपड़ियों से नज़रें हटाईं और कहा, "छतों पर और गलियों में यह झोंपड़ियाँ कितनी अच्छी लगती हैं। लेकिन यह उन झोंपड़ियों का मुक़ाबला नहीं कर सकतीं जो लोग देहात में बनाते हैं।" उसे अपना बचपन याद आ गया तो उसकी आँखें चमक उठीं, "देहात में कई ख़ानदान अपने ताकिस्तानों में चले जाते हैं और हफ़्तों वहीं रहते हैं। हर तरफ़ पुरमुसर्रत शुक्रगुज़ारी के नग़मे अजीब समाँ पैदा करते हैं।"

दाऊद ने कान खड़े कर लिए, "मुझे बैत-अनियाहवाले दोस्तों की आवाज़ें आ रही हैं।" थोड़ी ही देर बाद लाज़र, मर्था और मरियम को साथ लिए उनका बाप इफ़राईम छत पर आ गया। उनकी मुलाक़ात इतने पुरतपाक थी कि बयान नहीं किया जा सकता।

मर्था बड़े जोश से कहने लगी, "यरूशलम तो पहचाना ही नहीं जाता! शहर की फ़सील के बाहर पहाड़ों और वादियों में हर जगह ज़ायरीन की सरसब्ज़ झोंपड़ियाँ फैली हुई हैं। क़िदरोन की वादी और ज़ैतून का पहाड़ भी झोंपड़ियों से अटे पड़े हैं।" उसने हँसते हुए बात ख़त्म की, "लगता है कि यरूशलम के साथ सब्ज़ झोंपड़ियों का एक जुड़वाँ शहर वुजूद में आ गया है।"

मरियम ने विज़ाहत की, “ज़ायरीन के ख़ानदानों में ज़बरदस्त मुक़ाबला हो रहा है। हर ख़ानदान दूसरे से बढ़कर ख़ूबसूरत झोंपड़ी बनाने की कोशिश में है।” उसने बेयक़ीनी के अंदाज़ में सर हिलाया, “आप लोग तसव्वुर नहीं कर सकते कि कितने लोग अभी तक हरी टहनियाँ तलाश करते फिर रहे हैं।”

इफ़राईम ने ख़ुशदिली से जवाब दिया, “हर साल ऐसा ही होता है। अच्छा ही है कि इस तरह लोगों को ख़ुशी का इज़हार करने का मोक़ा मिल जाता है।”

लाज़र ने ताईद की, “हाँ, लोग यह सब कुछ ख़ुशी ख़ुशी कर रहे हैं।”

अब रूत ने उन्हें कहा कि नीचे चलकर खाना खाएँ। वह कितनी ख़ुश थी कि उसके दोस्त झोंपड़ियों की ईद हमारे साथ मनाने पर राज़ी हो गए हैं। अगर बैत-अनियाह यरूशलम के क़रीब ही था लेकिन सारी तक़रीबात में हिस्सा लेने के लिए शहर में रहने से बड़ी सहूलत हो जाती थी। शाम को इबादत तो उमूमन रात गए ख़त्म होती थी।

जल्द ही रूत, मर्था और मरियम रात बसर करने के लिए औरतों की झोंपड़ी में चली गईं। लेकिन उनका इरादा जल्द सोने का नहीं था बल्कि उनके दिल तवील गप-शप लगाने पर मायल थे। मरियम ने जमाई लेते हुए कहा, “इन शाख़ों में से चमकते तारों को देखकर कितना लुत्फ़ आ रहा है।” वह लेट गई।

रूत अपने कोने से कहने लगी, “मुझे ईद का सातवाँ दिन अच्छा लगता है। बचपन में इस बात से बड़ी ख़ुशी होती थी कि एक इमाम ख़ास तौर पर शिलोख़ के हौज़ पर जाता है ताकि सुबह की क़ुरबानी की रसूम अदा करने के लिए वहाँ से पानी लाए। मैं वालिद साहब से दरख़ास्त किया करती थी कि मुझे हौज़ पर ले जाएँ ताकि इमाम की आमद देखूँ। इमाम पहुँचता तो तीन बार नरसिंगा बजाकर उसका इस्तिक़बाल किया जाता। फिर इमाम हम दूसरों के साथ बैतुल-मुक़द्दस को वापस आते। बैतुल-मुक़द्दस में इमामे-आज़म यह पानी क़ुरबानगाह पर चाँदी के एक प्याले से उंडेलता। मैं इस रस्म से बहुत मुतअस्सिर होती थी। मुझे पता था कि ख़ुदा जो बारिश अता करता है, उसकी शुक्रगुज़ारी के लिए यह रस्म अदा की जाती है। हर साल जब मैं इस रस्म में शामिल होती हूँ तो मेरा दिल शुक्रगुज़ारी से भर जाता है। मैं याद करती हूँ कि बयाबान में चालीस-साला सफ़र के दौरान अल्लाह कैसे मोजिज़ाना तौर से हमारे बापदादा को पानी मुहैया करता रहा।”

मरियम उठकर बैठ गई। “पानी उंडेलने की रस्म में मुझे वह मौक़ा बहुत अच्छा लगता है जब यसायाह नबी के सहीफ़े से वह आयत पढ़ी जाती है जहाँ लिखा है, ‘तुम शादमानी से नजात के चश्मों से पानी भरोगे।’”[1] सचमुच जैसे ज़मीनी ज़िंदगी के लिए पानी की ज़रूरत है वैसे ही रूहानी ज़िंदगी के लिए अल्लाह के रूह की ज़रूरत है। जब यह

---

1 यसायाह 12:3

आयत पढ़ी जाती है तो हम अल-मसीह को याद करते हैं जो हमारे लिए रूहुल-क़ुद्स लेकर आएगा।” मरियम सोच में पड़ गई कि बाक़ी दोनों को अपने दिल के राज़ में शरीक करूँ या न। जब वह बोली तो उसकी आवाज़ जज़बात के मारे अच्छी तरह से नहीं निकल रही थी। “जब से मेरी हज़रत ईसा से मुलाक़ात हुई है, मुझे महसूस हो रहा है कि वह हमें रूहुल-क़ुद्स दे सकते हैं। यहया नबी ने भी तो यही गवाही दी थी कि हज़रत ईसा ही अल-मसीह हैं। एक बार उन्होंने हमें बताया था कि ‘मेरे बाद एक आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है। ... मैं तुमको पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन वह तुम्हें रूहुल-क़ुद्स से बपतिस्मा देगा।’[1] जब से मैं हज़रत ईसा के क़दमों में बैठकर उनकी बातें सुनती रही हूँ मेरी रूह को एक अजीब तसल्ली हो रही है। वह ख़ुदा को इतना क़रीब ले आते हैं कि महसूस होने लगता है कि हम उसे छू सकते हैं। उन्होंने मुझे अल्लाह की मुहब्बत और वफ़ादारी की क़दर करना सिखाया है। मेरी समझ में आने लगा है कि ख़ुदाए-अज़ीम हमारी कितनी फ़िकर करता है। हम उसके नज़दीक कितने क़ीमती हैं और वह हमारी मुहब्बत और रिफ़ाक़त का कितना आरज़ूमंद है। सच बात तो यह है कि जब से हज़रत ईसा ने ख़ुदा को मुझ पर ज़ाहिर किया, मेरी सबसे बड़ी ख़ुशी यही है कि पूरे दिलो-जान से उनकी ख़िदमत करूँ।”

1 मरक़ुस 1:7-8

मर्था ने बेसाख़्ता अपनी बहन के नज़रिये की हिमायत की। रूत ने भी एतराफ़ किया, “मैं भी हज़रत ईसा की बड़ी इज़्ज़त करती हूँ, लेकिन उन्हें अभी और ज़्यादा जानना चाहती हूँ।”

मर्था ने फिर झोंपड़ियों की ईद की बातें शुरू कर दीं। उसे यह ईद इसलिए भी ज़्यादा पसंद थी कि उसे रौशनी की ईद भी कहा जाता था। वह बड़ी ख़ुशी से याद करने लगी कि “पहले दिन की शाम तो निहायत ख़ूबसूरत होती है। बैतुल-मुक़द्दस में ख़वातीन के सहन की दीवार के साथ साथ सुनहरी शमादान रख दिए जाते हैं। मैं हर रोज़ इंतज़ार करती हूँ कि कब शाम हो और कब वह रौशन किए जाएँ। औरतों का सहन जगमगाने लगता है, तो ख़ास राहत हासिल होती है। और जब रात को लावी क़बीले के ख़ादिम तरह तरह के साज़ों के साथ हम्दो-सताइश के गीत गाते हैं तो वहाँ से हिलने को जी नहीं चाहता।”

रूत कहने लगी, “यह चराग़ हमें उस रौशनी की याद दिलाते हैं जो बयाबान में हमारे बापदादा को मुहैया की गई थी। जब उन शमादानों की रौशनी चारों तरफ़ फैलती है, तो मैं अपने बापदादा को याद किए बग़ैर नहीं रह सकती कि रात को अल्लाह किस तरह आग के सतून में होकर उनकी राहनुमाई करता था। और जब वह ख़ैमे लगाकर आराम करते थे तो रात को ख़ैमों के ऊपर छाए हुए आग के सतून को देखकर उनको अपनी हिफ़ाज़त का पूरा पूरा यक़ीन होता था!” अपनी बात पर ज़रा ग़ौर करने के बाद वह कहने लगी, “इन तमाम बातों को याद करके

हमें इस बात पर भी ख़ुशी मनानी चाहिए कि ख़ुदा हम पर भी मेहरबान है। वह फ़सलों के लिए बारिश और धूप देता है। अब वह वैसे ही बड़ी फ़ैयाज़ी से हमारी पानी और रौशनी की ज़रूरियात को पूरा करता है।"

आख़िर मर्था ने सलाह दी, "चलो, अब सो जाएँ ताकि कल ताज़ादम हों।" उसे बाद में कुछ ख़याल आया तो बोली, "तुम दोनों का क्या ख़याल है? क्या हज़रत ईसा भी ईद में आएँगे?"

मरियम ने करवट लेते हुए कहा, "मेरा ख़याल है नहीं आएँगे। अगर आए तो ख़तरा है कि क़ौम के सरदार उन्हें पकड़कर मौत के घाट उतार दें। मुझे उम्मीद नहीं कि आएँगे। लेकिन लोग उनकी कमी ज़रूर महसूस करेंगे। हमारे अच्छे उस्ताद की तालीम के बग़ैर यह ईद ख़ाली ख़ाली-सी रह जाएगी।"

अगली सुबह इफ़राईम, उसके बच्चे और मेहमान सब सुबह की इबादत के लिए चल दिए। गलियों में बेपनाह हुजूम था। तरह तरह की बोलियाँ कानों में आ रही थीं। उनके आगे आगे जानेवालों में से किसी ने अपने साथी से सवाल किया, "तुम्हारा क्या ख़याल है, क्या हज़रत ईसा भी ईद में आएँगे? क्या बैतुल-मुक़द्दस में आने की जुर्रत करेंगे, जहाँ उनके ख़ून के प्यासे दबके बैठे हैं?" अचानक बोलनेवाला रुककर बड़ी एहतियात से अपने चारों तरफ़ देखने लगा। उन दिनों हज़रत ईसा का नाम लेना भी ख़तरनाक था। उनके ख़ैरख़ाह होने या उनकी हिमायत करने का मतलब था कि ऐसा आदमी अपनी नेकनामी और यहूदी क़ौम

में अपने रुतबे से हाथ धो लेगा। लीडर इतने नाराज़ थे कि वह ऐसे शख़्स से फ़ौरन हुक़्क़ा-पानी बंद कर देते। तब उसे सारी ज़िंदगी तनहाई और ज़िल्लत में गुज़ारनी पड़ती। लेकिन भीड़ में चलते-फिरते इफ़राईम और उसके साथियों को एहसास हो गया कि इन सब बातों के बावुजूद आम लोगों को बड़ी तवक़्क़ो है कि हज़रत ईसा ईद में आ ही जाएँगे।

इफ़राईम ने गहरा साँस लिया, "मुझे डर है … यह डर है कि अगर हज़रत ईसा ने ईद की तक़रीबात में शिरकत की तो ज़रूर मुसीबत बरपा हो जाएगी। उनका यहाँ आना सख़्त नादानी होगी। मैंने शहर के बड़े फाटक पर बैतुल-मुक़द्दस के मुहाफ़िज़ों के कप्तान को भी देखा। दोस्तो! उनका वहाँ खड़ा होना बेमानी नहीं! मुझे यक़ीन है कि इमामे-आज़म कायफ़ा ने उन्हें वहाँ खड़ा किया है ताकि ज्योंही हज़रत ईसा आएँ उन्हें गिरिफ़्तार कर लें। वह ज़रूर उन्हें ज़ायरीन के इतने बड़े हुजूम से ख़िताब करने से रोकेंगे। अब तो उनका ग़ुस्सा नफ़रत में बदल चुका है, क्योंकि उन्होंने उनसे बड़ी खरी खरी बातें की हैं।"

रूत अपने बाप के साथ क़दम मिलाकर चलने की कोशिश कर रही थी। उसने बड़ी फ़िकरमंदी से कहा, "पता नहीं यह लोग उस्ताद से इतनी नफ़रत क्यों करते हैं? जहाँ तक मैं समझती हूँ वह अपनी इज़्ज़त नहीं चाहते। वह इन लीडरों की तरह अपने आपको बड़ा बनाना नहीं चाहते। वह लोगों की तवज्जुह हमेशा अल्लाह की तरफ़ मबज़ूल कराते हैं। पिछली बार जब मैंने उनको बैतुल-मुक़द्दस में देखा तो वह कह रहे

थे, ‘मैं अपनी मरज़ी से कुछ नहीं कर सकता बल्कि जो कुछ बाप से सुनता हूँ उसके मुताबिक़ अदालत करता हूँ। और मेरी अदालत रास्त है क्योंकि मैं अपनी मरज़ी करने की कोशिश नहीं करता बल्कि उसी की जिसने मुझे भेजा है।’”[1] जोश से वह कहती गई, “अब्बा जी! क्या आपके ख़याल में अल-मसीह हज़रत ईसा से ज़्यादा बड़े काम करेगा? मैं तो नहीं समझती। यक़ीनन यही वह हैं जिसे भेजने का वादा ख़ुदा ने किया है। मुझे लगता है कि हमारे राहनुमाओं ने अपने कान और आँखें बंद कर रखी हैं।”

इफ़राईम ने सर हिलाया, “सदरे-अदालत में कम-से-कम एक बंदा ज़रूर है जो हज़रत ईसा के लिए खुला ज़हन रखता है, यानी हमारा दोस्त नीकुदेमुस। लेकिन अपने साथियों का सामना करना उसके लिए मुश्किल है। इमामे-आज़म कायफ़ा और उसका सुसर हन्ना जो पहले इमामे-आज़म था, और इस तरह के दूसरे सरदार हज़रत ईसा को पकड़ने पर तुल ही गए हैं।”

उसी लमहे एक सिपाही की रोबदार आवाज़ गूँजी, “हट जाओ। बैतुल-मुक़द्दस की पुलिस के कप्तान के लिए रास्ता छोड़ो।” लोग जल्दी जल्दी हट गए। कप्तान और सिपाहियों का दस्ता सीना ताने गुज़र गया। इफ़राईम और उसके साथियों से थोड़ा आगे जाकर उन्होंने चंद गलीलियों को दबोच लिया। “क्या तुम ईसा बिन यूसुफ़ के भाई

---

1 यूहन्ना 5 :30

हो?” उन्होंने इक़रार किया कि हैं। तब कप्तान उन्हें धमका धमकाकर हज़रत ईसा का अता-पता पूछने लगा। लेकिन जब उसे पता चला कि वह ईद की रसूमात अदा करने के लिए नहीं आए तो ठंडा पड़ गया। उसे बस इन्हीं की फ़िकर थी। सिपाही अपने मख़सूस अंदाज़ से चलते हुए दूर निकल गए तो सबने सुख का साँस लिया। मरियम और मर्था का रंग तो फ़क़ हो गया था। रूत ने तसल्ली से कहा, “ख़ुदा की तारीफ़ हो कि वह नहीं आए।”

बैतुल-मुक़द्दस पहुँचे तो ख़वातीन तो इबादत के लिए औरतों के सहन की तरफ़ चली गईं और मर्द अपने सहन की तरफ़। इबादत शुरू हुई। मुख़्तलिफ़ सहनों में इबादतगुज़ार सर बसजूद होकर दुआएँ माँगने लगे। लावी क़बीले के ख़ादिमों की गाने की जमात ने बैतुल-मुक़द्दस के साज़ों के साथ एक ज़बूर गाया। इबादत के इख़्तिताम पर दो इमाम सफ़ेद लिबास पहने हुए भस्म होनेवाली क़ुरबानी के मज़बह के सामने के चबूतरे पर आए और हाथ उठाकर लोगों को बरकत दी, “ख़ुदावंद तुझे बरकत दे और तुझे महफ़ूज़ रखे।”

ईद के दिन एक एक करके गुज़रते गए, लेकिन बहुतों को किसी बात की कमी महसूस हो रही थी, और यह कमी हज़रत ईसा की मौजूदगी थी। लेकिन चूँकि हज़रत ईसा के सौतेले भाइयों को उम्मीद न थी कि वह आएँगे इसलिए लोगों ने बा-दिले-नख़ास्ता उनका इंतज़ार करना छोड़

दिया। लेकिन जब हफ़्ते के दरमियानी दिनों में यह ख़बर उड़ी कि वह आ गए हैं तो लोगों का जोश एकदम ताज़ा हो गया।

मरियम और मर्था को अफ़सोस हुआ, क्योंकि उन्हें हज़रत ईसा की हिफ़ाज़त का ख़याल था। ताहम रूत ने उन्हें यक़ीन दिलाया, "उसकी फ़िकर न करो। अल्लाह आप उनकी हिफ़ाज़त करेगा।" फिर उसने एक तरफ़ इशारा करते हुए कहा, "ज़रा उधर देखो। लोग कैसे खुले दिल से उनकी तालीम सुन रहे हैं। वह हैरान हैं कि इस आदमी में इतनी हिकमत और दानाई कहाँ से आ गई जबकि उन्होंने आला तालीम भी नहीं पाई।"

हज़रत ईसा ने भीड़ से मुख़ातिब होकर कहा, "जो तालीम मैं देता हूँ वह मेरी अपनी नहीं बल्कि उसकी है जिसने मुझे भेजा। जो उसकी मरज़ी पूरी करने के लिए तैयार है वह जान लेगा कि मेरी तालीम अल्लाह की तरफ़ से है या कि मेरी अपनी तरफ़ से। जो अपनी तरफ़ से बोलता है वह अपनी ही इज़्ज़त चाहता है। लेकिन जो अपने भेजनेवाले की इज़्ज़तो-जलाल बढ़ाने की कोशिश करता है वह सच्चा है और उसमें नारास्ती नहीं है।"[1]

लाज़र ने धीमी आवाज़ में दाऊद से कहा, "मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि उस्ताद अभी इन लीडरों को झिड़कनेवाले हैं। कहीं उनकी नफ़रत की चिंगारियाँ भड़ककर शोले न बन जाएँ।"

---

1 यूहन्ना 7:15-18

कट्टर यहूदी जो वहाँ खड़े हज़रत ईसा की मुख़ालफ़त कर रहे थे, उन पर उनकी इलज़ाम भरी निगाहें गढ़ी थीं। उन्होंने उनसे पूछा, “क्या मूसा ने तुमको शरीअत नहीं दी? तो फिर तुम मुझे क़त्ल करने की कोशिश क्यों कर रहे हो? ... तुम भी सबत के दिन काम करते हो। तुम उस दिन अपने बच्चों का ख़तना करवाते हो। और यह रस्म मूसा की शरीअत के मुताबिक़ ही है, अगरचे यह मूसा से नहीं बल्कि हमारे बापदादा इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से शुरू हुई। क्योंकि शरीअत के मुताबिक़ लाज़िम है कि बच्चे का ख़तना आठवें दिन करवाया जाए, और अगर यह दिन सबत हो तो तुम फिर भी अपने बच्चे का ख़तना करवाते हो ताकि शरीअत की ख़िलाफ़वरज़ी न हो जाए। तो फिर तुम मुझसे क्यों नाराज़ हो कि मैंने सबत के दिन एक आदमी के पूरे जिस्म को शफ़ा दी?”[1]

दाऊद तारीफ़ी अंदाज़ में कहने लगा, “हज़रत ईसा कितना दिलेर हैं! लीडरों को कैसी सच्ची सच्ची सुनाई है! अब किसी को जुर्रत नहीं होगी कि इस मसले पर उस्ताद से मज़ीद बहस करे।”

हुजूम के लोग भी हैरानी से सोचने लगे, “क्या यह वही नहीं जिसको यह मारना चाहते थे? फिर भी वह खुल्लम-खुल्ला बातें कर रहे हैं और यह उस पर हाथ नहीं डालते।” वह बड़े इश्तयाक़ से हज़रत ईसा के क़रीब रहे ताकि ज़्यादा से ज़्यादा उनकी बातों को सुनें।

---

1 यूहन्ना 7:19-23

फिर पानी उंडेलने की रस्म के मौक़े पर हज़रत ईसा ने खड़े होकर एलान किया, “जो प्यासा हो वह मेरे पास आए, और जो मुझ पर ईमान लाए वह पिए। कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़ ‘उसके अंदर से ज़िंदगी के पानी की नहरें बह निकलेंगी।’”[1]

मरियम ने फ़ातेहाना अंदाज़ में रूत और मर्था की तरफ़ देखा और आहिस्ता से कहा, “मैं न कहती थी कि वह रूह की भूक और प्यास भी बुझा सकते हैं?”

रात को जब सुनहरी शमाएं जलने से सारी बैतुल-मुक़द्दस रौशन थी तो हज़रत ईसा ने कहा, “दुनिया का नूर मैं हूँ। जो मेरी पैरवी करे वह तारीकी में नहीं चलेगा, क्योंकि उसे ज़िंदगी का नूर हासिल होगा।”[2]

मर्था के चेहरे पर सोच के आसार दिखाई दिए। वह मरियम से कहने लगी, “हज़रत ईसा की इस बात से मुझे यसायाह नबी की वह पेशगोई याद आ रही है जो अल-मसीह के बारे में है कि ‘अंधेरे में चलनेवाली क़ौम ने एक तेज़ रौशनी देखी।’”[3] फिर बड़े जोश से कहने लगी कि “जब हज़रत ईसा ने तसदीक़ कर दी कि वह नूर हैं तो गोया साफ़ साफ़ कह दिया कि मैं अल-मसीह हूँ। और हमको यह भी बता दिया कि मैं सिर्फ़ इसराईल का नूर नहीं बल्कि सारी दुनिया का नूर हूँ। क्या यसायाह नबी

---

1 यूहन्ना 7:37-38

2 यूहन्ना 7:37

3 यसायाह 9:2

ने पेशगोई नहीं की थी कि अल-मसीह क़ौमों का नूर होगा और अंधों की आँखें खोलेगा?”

मरियम की आँखों में फ़तह की चमक थी, “मैं भी तो यही कहती थी।”

जिन लोगों ने हज़रत ईसा की बात सुनी वह हैरानी से कहने लगे, “क्या कोई इनसान होकर यह कह सकता है कि मैं दुनिया का नूर हूँ? आख़िर यह है कौन?” इस मरहले पर हज़रत ईसा अपने सुननेवालों को अपने हक़ में या अपने ख़िलाफ़ फ़ैसला करने पर मजबूर कर रहे थे। आवाज़ों का शोर बुलंद हुआ। कुछ उनके हक़ में और कुछ उनके ख़िलाफ़ बोल रहे थे। मगर मजमुई तौर पर राय उनके हक़ में ही थी। आम ख़याल यही था कि वह अल-मसीह ही हैं।

उधर मज़हबी राहनुमाओं को मौक़ा मिल गया कि अपनी मुश्किल का कोई हल निकालें। इस गलीली ने उनके मनसूबों पर पानी फेर दिया था। अब सवाल यह था कि हज़रत ईसा पर कैसे हाथ डाला जाए? इस भीड़ के सामने ही उन्हें गिरिफ़्तार करना कोई ख़ाला जी का घर नहीं था। दूसरी तरफ़ वह सोच रहे थे कि हालात इस हद तक संगीन हो चुके हैं कि कुछ किए बग़ैर चारा भी नहीं। पस उन्होंने बैतुल-मुक़द्दस की पुलिस को उन्हें गिरिफ़्तार करने के लिए भेजा।

इफ़राईम बैतुल-मुक़द्दस की पुलिस को देखकर चौकन्ना हो गया। उसने लाज़र और दाऊद से कहा, “मुझे यक़ीन है कि इनकी नीयत ठीक नहीं है।”

लेकिन दाऊद ने पुलिस का अच्छी तरह जायज़ा लिया और फिर बोला, “अब्बा जान, फ़िकर न करें। अगर इनकी नीयत बुरी भी थी तो अब वह उसे भुला चुके हैं। ग़ौर से देखें। वह बड़े इनहिमाक से उस्ताद की बातें सुन रहे हैं।”

लाज़र ने उनकी तरफ़ इशारा किया, “अब वह जा रहे हैं। किसी ने हज़रत ईसा को गिरिफ़्तार करने के लिए उँगली तक नहीं हिलाई। शायद हम उनकी आमद का मतलब ग़लत समझे थे। फिर भी मैं मानता हूँ कि उन्हें देखकर मैं भी घबरा गया था। शुरू में तो बहुत गज़बनाक दिखाई दे रहे थे।”

जब बैतुल-मुक़द्दस की पुलिस ख़ाली हाथ लौटी तो लीडर उन पर सख़्त नाराज़ हुए। “तुम उसे क्यों नहीं लाए?” उन्होंने बड़े ग़ज़ब से पूछा। लेकिन सिपाहियों ने हज़रत ईसा की बेहद तारीफ़ करते हुए जवाब दिया, “किसी ने कभी इस आदमी की तरह बात नहीं की।”[1]

इस पर लीडरों को सख़्त ताव आया। वह उनका मज़ाक़ उड़ाने लगे, “क्या राहनुमाओं या फ़रीसियों में कोई है जो उस पर ईमान लाया हो? कोई भी नहीं!” और बड़ी हिक़ारत से कहने लगे, “लेकिन शरीअत

1 यूहन्ना 7:45-46

से नावाक़िफ़ यह हुजूम लानती है!" किसी को अंदाज़ा नहीं था कि नीकुदेमुस फ़रीसी और यूसुफ़ अरिमतियाह जो उनके दरमियान बैठे थे, वह हज़रत ईसा पर ईमान ला चुके थे। अब नीकुदेमुस ने महसूस किया कि मुझे बोलना चाहिए। बड़ी जुर्रत करके उसने अपने साथियों से सवाल किया, "क्या हमारी शरीअत किसी पर यों फ़ैसला देने की इजाज़त देती है? नहीं, लाज़िम है कि उसे पहले अदालत में पेश किया जाए ताकि मालूम हो जाए कि उससे क्या कुछ सरज़द हुआ है।" यह सच्चाई लीडरों को ज़हर लगी। वह उससे तंज़न पूछने लगे, "क्या तुम भी गलील के रहनेवाले हो?"[1]

इसके बाद यहूदियों की मुख़ालफ़त शदीद हो गई। हज़रत ईसा ने उन पर इलज़ाम लगाया कि "तुम मुझे क़त्ल करने की कोशिश में हो" और फिर मज़ीद कहा कि "शैतान तुम्हारा बाप है।" इस बात ने जलती पर तेल का काम किया। उन्होंने यह भी कहा कि "हक़ीक़त में तुमने उसे नहीं जाना जबकि मैं उसे जानता हूँ। अगर मैं कहता कि मैं उसे नहीं जानता तो मैं तुम्हारी तरह झूठा होता। लेकिन मैं उसे जानता और उसके कलाम पर अमल करता हूँ। तुम्हारे बाप इब्राहीम ने ख़ुशी मनाई जब उसे मालूम हुआ कि वह मेरी आमद का दिन देखेगा, और वह उसे देखकर मसरूर हुआ।"[2]

---

1 यूहन्ना 7:47-52
2 यूहन्ना 8:55-56

यहूदी मुख़ालिफ़ तंज़ करके कहने लगे, “तेरी उम्र तो अभी पचास बरस की नहीं। फिर क्या तूने इब्राहीम को देखा है?”

हज़रत ईसा ने बड़ी संजीदगी से एलान किया, “मैं तुमको सच बताता हूँ, इब्राहीम की पैदाइश से पेशतर ‘मैं हूँ।’”

लीडर बेयक़ीनी से उन्हें घूरने लगे, “कुफ़र, कुफ़र!” वह गज़बनाक होकर चिल्लाने लगे। “पत्थर लाओ। यह इस लायक़ है कि संगसार किया जाए।”

मर्था, मरियम और रूत ख़ौफ़ से काँपने लगीं, बल्कि इफ़राईम, लाज़र और दाऊद भी बेबसी से इधर-उधर देखने लगे, “क्या होगा? हम किस तरह मदद कर सकते हैं?” इधर लोग हज़रत ईसा को संगसार करने के लिए पत्थर लेने दौड़े, उधर वह अचानक बैतुल-मुक़द्दस से ग़ायब हो गए।

ताहम लोग उनके बारे में अंदाज़े लगाते रहे, “अगर यह सच है कि वह इब्राहीम से पहले हैं तो हज़रत ईसा अपनी पैदाइश से पहले भी मौजूद थे। और अगर वह अल्लाह बाप को जानते हैं तो महज़ इनसान से कहीं बढ़कर हैं। हाँ, जब वह आसमानी बाप की बात करते हैं तो हमारे दिल किस क़दर जोश से भर जाते हैं। ऐसा महसूस होता है कि आँखों देखी बातें करते हैं।” वह यह सोचे बग़ैर रह न सके कि कोई भी बशर ख़ुदा को इस तरह नहीं जानता जिस तरह कि हज़रत ईसा उसे जानते हैं।

दुनिया का नूर

इफ़राईम का वफ़ादार नौकर रूबिन बाज़ार से गुज़र रहा था। सबत का दिन था, इसलिए दुकानें बंद थीं। लोग रंगारंग कपड़े पहने गलियों में आ-जा रहे थे, मगर रूबिन का ज़रा भी ध्यान इधर नहीं था। उस पर अफ़सुरदगी तारी थी। उसने ठंडी आह भरी, “हाँ, दिन, हफ़्ते, महीने बल्कि साल धुंद की तरह उड़ते जा रहे हैं।” वह बड़े ग़म से सोच रहा था कि अभी चंद दिन गुज़रे कि बड़ी ख़ुशियों के साथ झोंपड़ियों की ईद आई थी। उसने अपना सफ़ेद सर बेयक़ीनी से हिलाया। और अब हरे हरे झोंपड़ियाँ ग़ायब हो चुकी हैं और ज़ायरीन की बड़ी तादाद वापस जा चुकी है। क्या मैं अगली ईद देखने को ज़िंदा रहूँगा?

फिर उसे ख़याल आया कि मैं क्यों ऐसी ग़मनाक सोचों में गुम हूँ? मुझे रौशन पहलू पर नज़र रखनी चाहिए। अल्लाह का शुक्र करने की भी तो कई बातें हैं। इस बुढ़ापे में भी मैं चल-फिर सकता हूँ। सेहत भी

अच्छी है कि अक्तूबर की धूप का लुत्फ़ उठा रहा हूँ। मौसम कितना ख़ुशगवार है! इसके लिए भी अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए।

फिर किसी की दुख भरी आवाज़ ने बाज़ार की ख़ामोशी को तोड़ दिया, "ख़ुदा के नाम से मुझ अंधे भिकारी पर रहम करो।" यह तो हूर का नौजवान बेटा अज़र है। बेचारे का हाल बहुत ही बुरा है। जवान और सेहतमंद होने के बावुजूद उसे भीख माँग माँगकर गुज़ारा करना पड़ता है।

रूबिन ने रुककर अज़र से गप-शप लगाने का इरादा किया। अचानक उसे ख़याल आया कि अज़र ने हज़रत ईसा से मिलने की कोशिश क्यों नहीं की? वह इस नतीजे पर पहुँचा कि उसे उस उस्ताद की ख़बर ही नहीं होगी जो बीनाई बहाल करने की क़ुदरत रखता है। क्या हज़रत ईसा ने थोड़ी देर पहले एलान नहीं किया था कि "मैं दुनिया का नूर हूँ?" रूबिन जोश से अज़र की तरफ़ बढ़ा। "मैं उसे हज़रत ईसा के बारे में बताऊँगा और अगर अज़र की मरज़ी हुई तो उसकी ख़ातिर उस्ताद की तलाश भी करूँगा।"

अज़र की दर्दनाक आवाज़ फिर गली में गूँज उठी। रूबिन ने देखा कि बेशुमार लोग आ-जा रहे हैं, लेकिन कोई भी उसकी तरफ़ आँख उठाकर नहीं देखता। जब वह उस नौजवान के सामने रुका तो देखा कि उसके बरतन में चंद मामूली से सिक्के पड़े हैं। रूबिन ने ख़ुशमिज़ाजी से उसे सलाम किया, "अज़र तुम्हारी सलामती हो।" और फिर अपनी जेब में

कोई सिक्का तलाश करके उसे उसके प्याले में फेंका। उसकी आवाज़ खनककर दूसरे सिक्कों में जा गिरा तो बूढ़े आदमी का दिल ख़ुश हो गया।

"जनाब! अल्लाह आपको बरकत दे।" भिकारी ने गरमजोशी से रूबिन का शुक्रिया अदा किया। "आप हमेशा मुझ पर मेहरबानी करते हैं।"

"अज़र, क्या तुमने कभी सोचा है कि अगर एकदम तुम्हारा अंधापन जाता रहे तो कैसा लगेगा?"

अज़र बोला, "लड़कपन में मैं ऐसे सपने देखा करता था, लेकिन सपने सपने ही होते हैं। जन्म के अंधे का तो कोई इलाज है ही नहीं।" उसने आह भरी और कहा, "जनाब! अंधे की ज़िंदगी आसान नहीं। निहायत तनहाई की ज़िंदगी है। लोगों के चेहरे तो नज़र नहीं आते मगर मैं महसूस करता हूँ कि उन्हें मुझ जैसों से कितनी नफ़रत है।"

अज़र के दर्दनाक अलफ़ाज़ सुनकर रूबिन को उसके वालिदैन का ख़याल आया। उन्होंने हज़रत ईसा का ज़िक्र ज़रूर सुना होगा। तो फिर वह क्यों अपने बेटे को शफ़ा पाने के लिए उनके पास लेकर नहीं गए? कहीं लीडरों के डर से तो वह हज़रत ईसा से दूर दूर नहीं रह रहे?

रूबिन ने मालूम करने के लिए पूछा, "अज़र, तुम्हारे वालिदैन कैसे लोग हैं? मज़हबी लोग हैं? क्या इस बात से उदास नहीं होते कि तुम्हें हर रोज़ सड़क के किनारे बैठकर भीख माँगनी पड़ती है?"

नौजवान ने बेसाख़्ता जवाब दिया, "मेरे वालिदैन बहुत अच्छे हैं। वह ईमानदार तो हैं, पड़ोसियों में उनका बड़ा नाम है। लेकिन मेरा ख़याल है वह बहुत ज़्यादा पाबंद नहीं हैं। हाँ, उन्हें फ़ख़्र है कि हम यहूदी हैं। इब्राहीम की औलाद हैं। लेकिन उनके ख़याल में इतना ही काफ़ी है। कभी कभी इबादत करने भी चले जाते हैं। लेकिन ऐसा लगता है कि उनकी दीनदारी में कुछ ख़ामी है।" उसकी ज़बान कपकपा गई, "जनाब मेरी बात समझने की कोशिश करें। मेरा सबसे बड़ा मसला यह नहीं कि मुझे भिकारी की ज़िंदगी बसर करनी पड़ रही है बल्कि दुख इस बात का है कि अंधेपन की वजह से लोग मुझे बड़ा गुनाहगार समझते हैं।"

रूबिन उसकी बात काटने लगा, मगर उसने अर्ज़ की कि मेरी पूरी बात सुन लें, "जब मेरे दादा जान ज़िंदा थे तो उन्होंने मेरे दिल में अल्लाह के कलाम का प्यार भर दिया। उन्होंने मुझे सिखाया कि क़ादिरे-मुतलक़ ने हर चीज़ पैदा की है। और जब उसने अपनी सारी तख़लीक़ को देखा तो कहा कि अच्छा है।" अज़र ने अपनी बेनूर आँखें बड़े इश्तयाक़ से रूबिन की तरफ़ घुमाईं। "मेरे दादा जान ने बताया कि ख़ुदा हर वक़्त अपनी सारी तख़लीक़ का ख़याल करता और उससे प्यार करता है। लेकिन इसी ख़याल से मेरा दिल बैठने लगता है। क्या मेरी बेचारगी की दर्दनाक ज़िंदगी इस बात की तरदीद नहीं करती? ख़ुदा मुझे इस तरह सज़ा क्यों दे रहा है? मैंने क्या किया है कि दुनिया में अंधा पैदा हुआ? अपने अंधेपन के बारे में ऐसे बहुत-से सवालों से मेरा ज़हन बोझल हो

जाता है। अकसर सोचता हूँ कि ऐसी ज़िंदगी का क्या फ़ायदा? मेरे पैदा होने का क्या मक़सद है? क्या यही कि ज़िंदगी के एक एक दिन में अल्लाह का भारी हाथ अपने ऊपर महसूस करता रहूँ? जनाब मेरी ज़िंदगी किधर को जा रही है?" उसने गहरी आह खींची, "मेरे वालिदैन मेरे सवालों को नहीं समझते। वह कहते हैं मैं पूरी ज़िंदगी के नहीं बल्कि सिर्फ़ आज के दिन के बारे में सोचा करूँ। वह कहते हैं कि मज़हबी मसायल के बारे में सोचना इमामों का काम है।"

उसने ज़रा लमहे के बाद इक़रार किया, "जनाब मैं ऐसा नहीं कर सकता। मेरे दादा जान पाक कलाम के बड़े प्यारे हिस्से पढ़कर सुनाया करते थे जिनसे ज़ाहिर होता है कि अल्लाह मुहब्बत है। वह पाक और वफ़ादार है। मैंने सीखा कि ख़ुदा ने हर चीज़ किसी मक़सद से पैदा की है।" अज़र की बातें सुनकर बूढ़े रूबिन का दिल भर आया। "अब मैं इस ख़याल से पीछा छुड़ाने की पूरी पूरी कोशिश करता हूँ कि अल्लाह एक बड़ी बला है जो मुझे दबाए जा रहा है। अब मैं दुआएँ माँगता हूँ कि ख़ुदा मुझे मेरे अंधेपन के बारे में समझा दे।" फिर आहिस्ता से बताया, "अगर मेरे अंधेपन का कोई अच्छा मक़सद हुआ तो मैं उसे अल्लाह के हाथ से ख़ुशी से क़बूल कर लूँगा।"

"अज़र, मेरे अच्छे बच्चे। सुनो! क्या तुमने कभी किसी से हज़रत ईसा का ज़िक्र सुना? वह ख़ास आदमी हैं। अभी अगले ही दिन वह कह रहे थे कि मैं दुनिया का नूर हूँ। सिर्फ़ अल-मसीह ही ऐसा दावा

कर सकता है। कई लोग तो ख़याल करते हैं कि वही अल-मसीह हैं। बेटा! उनकी तालीम तो बहुत ही पुरफ़ज़ल है। अल्लाह की क़ुदरत उनके वसीले से काम करती है। वह हर बीमारी से शफ़ा दे सकते हैं।”

अज़र ने बड़े शौक़ से पूछा, “जनाब, वह उस्ताद है कहाँ?”

रूबिन ने भी वैसे ही शौक़ से जवाब दिया, “बेटा, इन दिनों में तो वह यरूशलम में ही हैं। अपने वालिदैन से कहो तुम्हें उसके पास ले जाएँ।”

दो आदमी उधर से गुज़र रहे थे। उनमें से एक रुका और जल्दी से रूबिन की तरफ़ पलटा। “रूबिन, मैं और वालिद साहब तुम्हें सारे यरूशलम में ढूँडते फिरे,” दाऊद ने उसे छेड़ते हुए कहा। फिर संजीदगी से बोला, “दरअसल बात यह है कि एक मुलाक़ाती तुमसे मिलना चाहता है। जल्दी से घर पहुँचो। अच्छा, हम चले।”

बूढ़े आदमी को पसीना आ गया। वह परेशान हो गया। “जनाब आपको मेरे लिए तकलीफ़ नहीं करनी चाहिए थी, किसी नौकर को भेज देते।”

अब इफ़राईम भी उनके पास आ खड़ा हुआ और कहने लगा, “हमें इधर आना ही था। अच्छा हुआ कि तुम हमें मिल गए हो।”

रूबिन जाने को मुड़ा। लेकिन एक बार फिर भिकारी से मुख़ातिब हुआ, “तुमने सुना कि मुझे अब जाना है। मेरी नसीहत न भूलना, बेटा। उस्ताद से मिलने की ज़रूर कोशिश करना।”

इफ़राईम ने देखा कि रूबिन भिकारी में बहुत दिलचस्पी रखता है, तो बड़ी नरमी से कहने लगा, “अच्छा, अच्छा। तो यह अज़र है। बेटा यह लो, तुम्हारे लिए है।” चलते चलते इफ़राईम और दाऊद सोच रहे थे कि रूबिन कितना नरमदिल है। भिकारियों का हाल पूछने के लिए भी रुक जाता है।

रूबिन की जाती हुई आहटें अभी अज़र के कानों में थीं कि दूसरे कई लोगों की आहटें आने लगीं। वह उसके क़रीब आकर रुक गए। नौजवान भिकारी अपने ख़यालों में गुम था। उसने अभी अभी जो अज़ीम ख़बर सुनी थी उस पर सोच रहा था। उसने आनेवालों की तरफ़ कोई तवज्जुह न दी। उस्ताद की ख़बर से उसके लड़कपन के ख़ाब फिर से ताज़ा हो गए थे। जल्द ही उसको एहसास हो गया कि यह कोई ख़ास क़िस्म के लोग हैं जो मुझमें दिलचस्पी ले रहे हैं। एक ने पूछा, “दोस्त, तुम कितने अरसे से नाबीना हो?”

अज़र ने जवाब दिया, “जन्म से।” उसे अपने प्याले में सिक्के गिरने की आवाज़ सुनाई दी। उसने मामूल के मुताबिक़ ग़ैरजज़बाती आवाज़ में कहा, “अल्लाह तुम्हें बरकत दे।” वह चाहता था कि यह लोग चले जाएँ ताकि उस्ताद के बारे में अपनी सोचों को जारी रख सके। उसके माथे पर शिकनें उभरीं। यह जाते क्यों नहीं? एक पता करने लगा, “उस्ताद, किसने गुनाह किया कि यह अंधा पैदा हुआ?, इसने या इसके माँ-बाप ने?”

किसी और ने तेज़ी से जवाब दिया, "यह तो पैदा ही अंधा हुआ। पैदाइश के वक़्त यह गुनाह को कहाँ जानता था।"

एक और पूछने लगा, "उस्ताद। यह भी समझा जाता है कि पैदाइशी अंधापन उन गुनाहों की सज़ा है जो बाद में किए जाएँगे। क्या इस आदमी का मामला भी ऐसा ही है?"

अज़र के कान खड़े हुए। वह बड़े ग़ौर से सुन रहा था। क्या मुझे अपनी बद-नसीब ज़िंदगी के बारे में सवालों का जवाब मिलनेवाला है? अब एक और आदमी की आवाज़ उभरी। अज़र ने साँस रोक ली। "न इसका कोई गुनाह है और न इसके वालिदैन का। यह इसलिए हुआ कि इसकी ज़िंदगी में अल्लाह का काम ज़ाहिर हो जाए।" अज़र के मुँह से जैसे चीख़ निकल गई हो। क्या? ख़ुदा मेरे वसीले से अपनी क़ुदरत ज़ाहिर करना चाहता है? ओह। ओह। फिर तो उसके हाँ मेरी ज़िंदगी का एक बड़ा मनसूबा होगा। वह उस आवाज़ को बड़े ध्यान से सुनने लगा जो कह रही थी, "अभी दिन है। लाज़िम है कि हम जितनी देर तक दिन है उसका काम करते रहें जिसने मुझे भेजा है। क्योंकि रात आनेवाली है, उस वक़्त कोई काम नहीं कर सकेगा। लेकिन जितनी देर तक मैं दुनिया में हूँ उतनी देर तक मैं दुनिया का नूर हूँ।" (यह सबत का दिन था)।

अचानक अज़र भाँप गया कि बोलनेवाला वही अज़ीम शख़्स है जिसका ज़िक्र रूबिन ने किया था। क्या मुमकिन है कि यह मेरी तारीक ज़िंदगी में भी नूर ला सकें? बड़ी उम्मीद के साथ उसने कान लगाए।

उसे अपने सामने किसी हरकत का एहसास होने लगा। हज़रत ईसा अकड़ूँ बैठ गए। उसने थूकने की आवाज़ सुनी। वह हैरान होने लगा। अब हज़रत ईसा थूक से मिट्टी सान रहे थे। अंधे की हैरानी और बढ़ गई जब हज़रत ईसा वह गीली मिट्टी उसकी आँखों पर लगाने लगे। उनके नरम नरम हाथों के एहसास से नौजवान के दिल में उम्मीद की एक नई लहर दौड़ गई और अनजाने से जज़बात उभरने लगे। क्या अल्लाह गुनाहगार के दाग़ धो डालेगा? उसके अंदर उस उस्ताद के बारे में अजीब-सा एतमाद उभर रहा था। ज़रूर कोई ख़ास बात होनेवाली है, वरना उस्ताद यह गीली मिट्टी मेरी आँखों पर क्यों लगाते? क्या ख़ुदा सचमुच मेरे वसीले से अपनी क़ुदरत दिखाएगा? हज़रत ईसा ने मिट्टी उसकी आँखों पर लगा ली और उसे हुक्म दिया, "जा, शिलोख़ के हौज़ में नहा ले।"

अज़र ने टटोलकर अपनी छड़ी उठाई। यही उसकी वफ़ादार साथी थी। वह अपने जज़बात के बाइस कपकपाते हुए उठा और शिलोख़ के हौज़ को रवाना हो गया। अगरचे वह देख नहीं सकता था लेकिन उस छोटे-से गाँव में उसे सारे रास्तों का इल्म था। छड़ी से टप-टप करता हुआ वह निचले बाज़ार में से गुज़रा। हफ़्ते के बाक़ी दिनों में दाएँ-बाएँ छोटी छोटी दुकानों पर सब्ज़ियाँ, फल, घरेलू सौदा-सलफ़ और ज़रूरियात की छोटी-मोटी अशया फ़रोख़्त हुआ करती थीं। इधर-उधर छाबड़ीवाले भी बैठे होते थे। लेकिन सबत के बाइस इस अंधे आदमी को चलने

में आसानी थी क्योंकि सिवाए-इक्का-दुक्का सैर करनेवालों के सड़क बिलकुल ख़ाली थी। आज उसे छाबड़ीवालों, मसरूफ़ दुकानदारों, गधों और गाहकों के हुजूम से बचने की ज़रूरत न थी। वह दिली तमन्ना से तेज़ी से आगे बढ़ रहा था। क्या मैं अभी थोड़ी देर में अपना शहर देख सकूँगा? अपने वालिदैन और इस ख़ूबसूरत दुनिया को जिसके बारे में इतनी बातें सुन रखी हैं, क्या मैं सब कुछ देख सकूँगा? कई चीज़ें ऐसी थीं जिनका वह तसव्वुर भी नहीं कर सकता था। सूरज क्या होता है और नूर कैसा होता है जिसका ज़िक्र उस्ताद कर रहे थे?

आख़िर अज़र शिलोख़ के हौज़ पर पहुँच गया। छड़ी से टटोलता हुआ वह सीढ़ियाँ उतर गया। थरथराते हाथों से उसने चुल्लू में पानी लिया और आँखें धो लीं। जल्दी से उसने पानी पोंछा और बड़ी तवक़्क़ोआत से आँखें खोलीं। अगले ही लमहे वह चौंककर बैठ गया। नूर में नहाई हुई कैसी ख़ूबसूरत दुनिया उसका इस्तिक़बाल कर रही थी! वह मुतअज्जिब होकर बैठा रहा। उसने ख़ुद को चुटकी काटी कि कहीं ख़ाब तो नहीं देख रहा। तब उसे यक़ीन हो गया कि मैं सचमुच देख सकता हूँ। ज़िंदगी में पहली बार उसने हौज़ के चमकते हुए पानी को देखा। उसने शिलोख़ गाँव पर नज़र डाली। लगता था कि वह नज़दीकी चटानों पर गूँद से चिपका हुआ हो। दाएँ तरफ़ ज़ैतून का पहाड़ उसका इस्तिक़बाल कर रहा था। सामने यरूशलम की बेशुमार छतें उसे इशारे कर रही थीं और सारी छतों से ऊपर बैतुल-मुक़द्दस की सुनहरी छत जगमगा रही थी।

लेकिन नौजवान के पास इतना वक़्त कहाँ था कि वहाँ बैठा ख़यालात में डूबा रहता। उसको ख़ाहिश हुई कि मैं उससे मिलूँ जो कहते थे, "मैं दुनिया का नूर हूँ।" उसने उसकी ज़िंदगी से वह दाग़ मिटा दिया था जिसके बाइस उसे गुनाहगार समझा जाता था। अज़र अपनी छड़ी वहीं छोड़कर शहर को वापस चल पड़ा। उसका दिल ख़ुशी से लबरेज़ था, क्योंकि अब वह जान गया था कि ख़ुदा हमेशा मुझसे मुहब्बत करता रहा है। बल्कि वह मुझे इस दुनिया में इस माज़ूरी के साथ इसी लिए लाया था ताकि उसके नाम की बड़ाई हो। अज़र हज़रत ईसा से मिलने को तड़प रहा था ताकि मालूम करे कि वह कौन हैं। वह अल-मसीह के आने का मुश्ताक़ रहा था, उसका जो अल्लाह और इनसान का दरमियानी होगा। जब वह आएगा तो वह भी मुसीबतज़दों की हालत पर तरस खाएगा।

अज़र बाज़ार में से होता हुआ वापस जा रहा था कि उसे इफ़राईम और दाऊद मिल गए। दाऊद रुककर उसे बग़ौर देखने लगा। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। "तुम अज़र ही हो ना?" उसके लहजे से बेयक़ीनी टपक रही थी।

इफ़राईम ने भी बेहद हैरानी से कहा, "यक़ीनन तुम अज़र ही हो। हम पहले भी तुझसे मिल चुके हैं। अब तुम देख सकते हो? और कितने ख़ुश हो! क्या हुआ?"

जब लोगों ने उनको इतने जोश से बातें करते सुना तो वह भी ठहर गए। और बहुतों ने तसदीक़ की, "हाँ, सचमुच यह हूर का बेटा अज़र है।"

मुख़्तलिफ़ आवाज़ों का शोर उठने लगा। बाज़ शक में थे। "लोगो, यह सब अहमक़ाना बातें हैं। यह हरगिज़ अज़र नहीं। सिर्फ़ उसका हमशक्ल है। भला जन्म के अंधे की बीनाई कैसे बहाल हो सकती है!"

अज़र मुसकराते हुए सारी गुफ़्तगू सुनता रहा। अब उसने जवाब दिया, "दोस्तो यक़ीन करो, मैं अज़र ही हूँ जो पहले भीख माँगा करता था।"

लोगों ने उसके गिर्द घेरा तंग कर दिया और बड़े शौक़ से तफ़तीश करने लगे, "तुम्हारी आँखें कैसे खुल गईं?"

अज़र को अपनी हर-दिल-अज़ीज़ी का बहुत लुत्फ़ आ रहा था। उसने बताया, "वह जो ईसा कहलाते हैं उन्होंने मिट्टी सानकर मेरी आँखों पर लगा दी। फिर उन्होंने मुझे कहा, 'शिलोख़ के हौज़ पर जा और नहा ले।' मैं वहाँ गया और नहाते ही मेरी आँखें बहाल हो गईं।"

दाऊद ने अपने बाप की तवज्जुह चंद अफ़राद की तरफ़ दिलाई जो बड़ी तीखी नज़रों से अज़र को घूर रहे थे। बोला, "मुसीबत आनेवाली है।" बेचारा अज़र भी उनकी खा जानेवाली नज़रों से परेशान हो गया। उसे अफ़सोस होने लगा कि बाज़ लोग उसकी ख़ुशी में शामिल नहीं हो रहे हैं।

एक आदमी जो बड़ा मज़हबी दिखाई दे रहा था, उसने सख़्ती से पूछा कि "वह कहाँ है?"

अज़र ने जवाब दिया, "मुझे नहीं मालूम।" चूँकि उसकी शफ़ायाबी की ख़बर जंगल की आग की तरह गिर्दो-नवाह में फैल गई थी, इसलिए बड़ा हुजूम जमा हो गया। कट्टर यहूदियों ने फ़ैसला किया कि लीडरों को फ़ौरी तौर पर इत्तला करनी चाहिए कि हज़रत ईसा ने फिर सबत को तोड़ा है।

इफ़राईम और दाऊद को बहुत मायूसी हुई कि उनके दिल कितने सख़्त हैं कि एक ऐसे शख़्स के साथ ख़ुशी नहीं मना सकते जिस पर इतना बड़ा मोजिज़ा हुआ है।

थोड़ी ही देर बाद हैरानो-परेशान अज़र को लीडरों के सामने पेश होना पड़ा। मुअज़्ज़ज़ सरदार बहुत फ़िकरमंद दिखाई दे रहे थे। अज़र से पूछा, "तुम को बीनाई कैसे मिली?"

उसने जवाब दिया, "उसने मेरी आँखों पर मिट्टी लगा दी, फिर मैंने नहा लिया और अब देख सकता हूँ।" यह कितना अहमक़ाना सवाल था और ख़ाहमख़ाह की ले-दे! अभी अभी वह कितना ख़ुश था। इन लोगों ने बेचारे की सारी ख़ुशी ग़ारत कर दी।

अब चंद फ़रीसियों ने बड़े एतमाद से फ़तवा दिया, "यह शख़्स अल्लाह की तरफ़ से नहीं है, क्योंकि सबत के दिन काम करता है।"

लेकिन बाज़ ने एक दलील दी, "गुनाहगार इस क़िस्म के इलाही निशान किस तरह दिखा सकता है?" यों लीडरों में तफ़रक़ा पड़ गया। आख़िर उन्होंने फिर उस नौजवान से मुख़ातिब होकर पूछा, "यह शख़्स अल्लाह की तरफ़ से नहीं है, क्योंकि सबत के दिन काम करता है।"

अज़र ने सीधे जवाब दिया, "वह नबी हैं।"[1] आख़िर तमाम बुज़ुर्ग सर जोड़कर बैठे। वह इस नतीजे पर पहुँचे कि इस सारे मामले के पीछे ज़रूर कुछ है। मुमकिन है यह आदमी अंधा था ही नहीं। तब उन्होंने उसके वालिदैन को बुलाया।

जब अज़र के माँ-बाप को अज़र की शफ़ा की ख़बर मिली तो वह बहुत ख़ुश हुए, लेकिन उन्होंने फ़ैसला किया कि बुज़ुर्गों के सामने होशियारी से बात करनी चाहिए ताकि वह नाराज़ न हो जाएँ। एक एक लफ़्ज़ तोल के बोलने की ज़रूरत है। उन बुज़ुर्गों को यह शक न हो जाए कि हम हज़रत ईसा के हिमायती हैं। वह घबराए हुए बैतुल-मुक़द्दस में पहुँचे। ख़ुदा की तारीफ़ हो! उनका बेटा निहायत चमकीली आँखों से उन्हें देख रहा था। वाह, उसने उन्हें पहले कभी नहीं देखा था। अब उसने उन्हें सिर्फ़ उनकी आवाज़ों से पहचान लिया। लेकिन उस वक़्त ख़ुशी ज़ाहिर करने का मौक़ा न था। उनकी नेकनामी को ख़तरा था। बुज़ुर्गों ने उनसे सवाल किया, "क्या यह तुम्हारा बेटा है, वही जिसके बारे में तुम कहते हो कि वह अंधा पैदा हुआ था? अब यह किस तरह देख सकता है?"

---

1 यूहन्ना 9:1-17

वालिदैन को बुज़ुर्गों के सवाल में शक की चुभन महसूस हुई। उन्होंने जवाब दिया, "हम जानते हैं कि यह हमारा बेटा है और कि यह पैदा होते वक़्त अंधा था। लेकिन हमें मालूम नहीं कि अब यह किस तरह देख सकता है या कि किसने इसकी आँखों को बहाल किया है। इससे ख़ुद पता करें, यह बालिग़ है। यह ख़ुद अपने बारे में बता सकता है।"

अज़र को दुबारा तलब किया गया। इसमें तो शक की गुंजाइश न थी कि हज़रत ईसा ने एक और बड़ा मोजिज़ा किया था, लेकिन वह अज़र को मनवाना चाहते थे कि जिसने उसे शफ़ा बख़्शी वह अच्छा आदमी नहीं है। अगर वह इसमें कामयाब हो जाएँ तो यह ख़बर हज़रत ईसा के हक़ में न होगी। वह कहने लगे, "अल्लाह को जलाल दे, हम तो जानते हैं कि यह आदमी गुनाहगार है।"

अज़र ने जवाब दिया, "मुझे क्या पता है कि वह गुनाहगार हैं या नहीं, लेकिन एक बात मैं जानता हूँ, पहले मैं अंधा था, और अब मैं देख सकता हूँ!"

उन्होंने फिर सवाल किया, "उसने तेरे साथ क्या किया? उसने किस तरह तेरी आँखों को बहाल कर दिया?"

अज़र ने क़दरे गरम होकर जवाब दिया, "मैं पहले भी आपको बता चुका हूँ, और आपने सुना नहीं। क्या आप भी उनके शागिर्द बनना चाहते हैं?"

अज़र की तंज़ काम कर गई। बुज़ुर्ग सख़्त नाराज़ हो गए और बड़ी हिक़ारत से कहने लगे, "तू ही उसका शागिर्द है, हम तो मूसा के शागिर्द हैं। हम तो जानते हैं कि अल्लाह ने मूसा से बात की है, लेकिन इसके बारे में हम यह भी नहीं जानते कि वह कहाँ से आया है।"

अज़र ने फिर भरपूर तंज़ से कहा, "अजीब बात है, उन्होंने मेरी आँखों को शफ़ा दी है, और फिर भी आप नहीं जानते कि वह कहाँ से हैं। हम जानते हैं कि अल्लाह गुनाहगारों की नहीं सुनता। वह तो उसकी सुनता है जो उसका ख़ौफ़ मानता और उसकी मरज़ी के मुताबिक़ चलता है। इब्तिदा ही से यह बात सुनने में नहीं आई कि किसी ने पैदाइशी अंधे की आँखों को बहाल कर दिया हो। अगर यह आदमी अल्लाह की तरफ़ से न होते तो कुछ न कर सकते।"

अज़र की यह बात सुनकर वह आपे से बाहर हो गए। इस सर-फिरे नौजवान को सबक़ सिखाना चाहिए। वह उस पर आवाज़ कसने लगे, "तू जो गुनाहआलूदा हालत में पैदा हुआ है क्या तू हमारा उस्ताद बनना चाहता है?" यह कहकर उन्होंने उसे जमात में से निकाल दिया।[1]

अब अज़र भी उनकी नज़रों में खटकने लगा। अब उसका शुमार भी उन लोगों में होने लगा जिनके बारे में उनका ख़याल था कि वह अल्लाह के साथ रिफ़ाक़त के लायक़ नहीं। जब वह लड़खड़ाता हुआ इबादतख़ाने से बाहर निकला तो ताज्जुब करने लगा, "इतने थोड़े-से वक़्त में कितनी

---

1 यूहन्ना 9:19-21; 24-34

बातें पेश आ चुकी हैं। लेकिन उदास होने की क्या ज़रूरत है! हज़रत ईसा जो ख़ुद को दुनिया का नूर कहते हैं, उन्होंने बताया था कि मेरी ज़िंदगी से ख़ुदा के बड़े बड़े काम ज़ाहिर होंगे और ऐसा ही हुआ भी। ख़ुदावंद ने मेरी ज़िंदगी में एक मोजिज़ा किया है। यह बुज़ुर्ग चाहे मुझे गुनाहगार और मरदूद क्यों न कहें, लेकिन मेरी ख़ुशी नहीं छीन सकते, मुझे ख़ुदा के फ़ज़ल और प्यार का तजरिबा हुआ है। अल्लाह मेरी फ़िकर करता है। मुझे और किसी की परवा नहीं।"

हज़रत ईसा को भी ख़बर हुई कि अज़र ने बेधड़क होकर गवाही दी है। वह ख़ुश हुए कि वह मेरी ख़ातिर दुख सहने को तैयार है। थोड़ी देर के बाद उनकी उससे दुबारा मुलाक़ात हुई। उन्होंने उसे बड़े ग़ौर से देखा। अब वह ख़ुशबाश और चाक़ो-चौबंद था। हज़रत ईसा ने उससे एक बड़ा अहम सवाल पूछा, "क्या तू इब्ने-आदम पर ईमान रखता है?"

नौजवान ने बड़े इश्तयाक़ से पूछा, "ख़ुदावंद, वह कौन है? मुझे बताएँ ताकि मैं उस पर ईमान लाऊँ।"

हज़रत ईसा ने जवाब दिया, "तूने उसे देख लिया है बल्कि वह तुझसे बात कर रहा है।"

अज़र हज़रत ईसा को टिकटिकी बाँधकर देखने लगा। तो मेरा ख़याल दुरुस्त था। हज़रत ईसा ही इब्ने-आदम यानी दुनिया का नजातदहिंदा अल-मसीह हैं। उसने क़ायल होकर कहा, "ख़ुदावंद, मैं ईमान रखता

हूँ” और बड़ी अक़ीदत से उन्हें सिजदा किया।[1] जब से हज़रत ईसा ने छूकर उसे बीनाई बख़्शी, अज़र को एहसास था कि आख़िरकार ख़ुदा और इनसान का दरमियानी आ ही गया है।

शागिर्द फिर हैरान रह गए कि हमारे आक़ा तो इनसानों से सिजदा भी क़बूल कर लेते हैं। हज़रत ईसा उनके ख़यालात भाँपकर कहने लगे, “मैं अदालत करने के लिए इस दुनिया में आया हूँ, इसलिए कि अंधे देखें और देखनेवाले अंधे हो जाएँ।”

चंद फ़रीसियों ने जो नज़दीक खड़े थे यह सुना तो कहने लगे, “अच्छा, हम भी अंधे हैं?”

हज़रत ईसा ने जवाब दिया, “अगर तुम अंधे होते तो तुम क़ुसूरवार न ठहरते। लेकिन अब चूँकि तुम दावा करते हो कि हम देख सकते हैं इसलिए तुम्हारा गुनाह क़ायम रहता है।”[2]

अब हज़रत ईसा को और भी सफ़ाई से नज़र आ रहा था कि मेरा अंजाम नज़दीक है। अभी चंद रोज़ पेशतर उनकी जान लेने की कोशिश की गई थी। और अब वह साबिक़ अंधा जो उनकी हिमायत में साबितक़दम रहा, उसे बुज़ुर्गों ने इबादतख़ाने से ख़ारिज कर दिया था। इस सबब से उन्होंने अपने आपको और भी ज़ाहिर कर दिया ताकि ज़्यादा से ज़्यादा लोग रुजू लाकर ख़ुदा के क़दमों में आएँ।

---

1 यूहन्ना 9:36-37
2 यूहन्ना 9:39-41

मौत का वार

दिसंबर की पच्चीस तारीख़ थी। रूत और दाऊद छत पर शमाएं लगा रहे थे। आज रात तमाम घर बेशुमार शमाओं की रौशनी से जगमगा उठेगा। रूत ठंडी हवा से काँपने लगी, “हेरोदेस के महल की तरफ़ से कैसी ठंडी हवा आ रही है। देखो! इसके तुंद झोंकों से ज़ैतून के दरख़्त किस तरह हिचकोले खा रहे हैं।” रूत ने अपनी शाल अच्छी तरह लपेट ली। “घर के दरवाज़े भी खड़खड़ाने लगे हैं। भाई मुझे लगता है कि आज रात यह ख़ूबसूरत शमाएं न जला सकेंगे।”

“रूत तुम तो बहुत क़ुनूती हो। अगर ऐसा हुआ तो बेचारा रूबिन बहुत उदास होगा,” दाऊद ने छेड़ने के अंदाज़ में कहा।

रूत बोली, “यह कैसा मज़ाक़ हुआ। हमारा रूबिन तो ज़ुकाम और नज़ले से बिस्तर में पड़ा है। उस पर इतने रज़ाइयाँ देनी पड़ी हैं कि वह नज़र ही नहीं आता। खाँसी के इतने ज़बरदस्त दौरे पड़ते हैं कि बेचारे की चारपाई भी झटके खाने लगती है। भाई, वह छत पर कहाँ आएगा।”

"तुम ने उसके नज़ले के बारे में जो कुछ कहा है, दुरुस्त है। शायद कुछ मुबालग़ा भी हो। लेकिन यह बातें हमारे वफ़ादार नौकर को छत पर आकर शमाओं का जायज़ा लेने और शहर में दिलफ़रेब चराग़ देखने से रोक नहीं सकतीं। शर्त लगा लो। और अगर शमाएं जलाने के लिए मौसम ख़राब भी हो तो कौन परवा करता है! इसके बावुजूद भी मख़सूसियत की ईद ख़ुशी का मौक़ा है। साल के इस हिस्से में अकसर ऐसा हुआ ही करता है।"

रूत खिलखिलाकर हँस पड़ी, "इन सारी बातों के बावुजूद ख़ुशी मनानी चाहिए, क्योंकि बारिशें तो आसमानी बरकत होती हैं। हमारे हौज़ भर जाते हैं जो ख़ुश्क मौसम में भी काम आते रहते हैं, और खेत ख़ूब सेराब हो जाते हैं। अलबत्ता सड़कें कीचड़ से भर जाती हैं और कई लोग तहवार में शामिल नहीं हो सकते।" उसने आख़िरी जुमला अफ़सोस के साथ अदा किया।

दाऊद ने जवाब दिया, "तो क्या हुआ। यरूशलम के बाशिंदों के लिए तो मख़सूसियत की ईद बड़े आराम से गुज़रती है। ईद के आठ दिन ख़ुशी के होते हैं। यहूदाह मकाबी ने तक़रीबन 145 बरस पहले हमारी क़ौम को शामियों के जुए से रिहाई दिलाकर यह ईद मुक़र्रर की थी। वह भी इसे इतने जोशो-ख़ुरोश से नहीं मनाता हुआ होगा जैसे कि हम लोग।"

इतने में उनका बाप इफ़राईम भी छत पर आ गया था। उसने भी दाऊद की बात सुन ली। वह तारीफ़ी अंदाज़ में कहने लगा, "यहूदाह

मकाबी अज़ीम शख़्स था। वह इस बात में कामयाब हुआ कि बैतुल-मुक़द्दस को जिसे दुश्मनों ने नापाक कर दिया था ख़ुदा की इबादत के लिए दुबारा मख़सूस की जाए। उस वक़्त फिर इसे ख़ूबसूरत सुनहरी ज़ुरूफ़ से आरास्ता किया गया और पाक मक़ाम में सात शाख़ोंवाला शमादान भी नए सिरे से रौशन किया गया ताकि दिन-रात मुसलसल जलता रहे।"

रूत ख़ुशी से बोली, "इसी लिए इस ईद को 'ईदे-नूर' भी कहा जाता है। मुझे यह नाम बहुत पसंद है। लगता है आँधी थम गई। जुलूस की आवाज़ें भी आ रही हैं। देखो, कैसे ख़ुशी से नारे लगा रहे हैं। कैसी मुसर्रतबख़्श आवाज़ें हैं।"

तीनों छत के किनारे पर आ गए ताकि जुलूस देख सकें। यह जुलूस शिलोख़ से शुरू होकर हेरोदेस के महल पर ख़त्म होता था। उनकी निगाहें जुलूस का ताक़्क़ुब करती रहीं। तंग बल खाती गलियों में से गुज़रता हुआ जुलूस कितना भला लग रहा था।

सूरज ग़ुरूब हो गया। शहर-भर में चराग़ों का मंज़र अजब बहार दिखाने लगा। बैतुल-मुक़द्दस के सहन और इर्दगिर्द के हॉल बुक़ाए-नूर बन गए। शहर की गलियों और छतों पर हज़ारों शमाएं झिलमिलाने लगीं।

इफ़राईम ने ख़ुशमिज़ाजी से कहा, “बड़ी अच्छी बात है कि नौकरों ने घर के अंदर की शमाएं भी रौशन कर दी हैं। वरना छत की तरह अंदर भी अंधेरा होता। सारे यरूशलम में हमारा ही घर तारीक होता।”

रूत ने पुकारकर कहा, “दाऊद, तुम्हें ख़ुद शमाओं का ख़याल रखना चाहिए था।”

उसकी आवाज़ में ज़रा ख़फ़गी थी। दोनों ने मिलकर तमाम शमाएं रौशन कीं। “कितने अफ़सोस की बात है कि रूबिन नज़ले से पड़ा है और यह मंज़र देख नहीं सकेगा।” वह यह बात कर ही रही थी कि छत का दरवाज़ा चरचराने लगा और मुँह-सर कपड़ों में लिपटे हुए रूबिन नमूदार हुआ। इतने कपड़ों में लिपटा वह पहचाना भी नहीं जाता था। वह चादर के अंदर से बोला तो उसका नज़ला और घबराहट दोनों ज़ाहिर हो रहे थे। “माफ़ी चाहता हूँ। मुझे ख़बर न थी कि आप यहाँ पर हैं।”

तीनों एक साथ बोले, “आओ, आओ। बड़े वक़्त पर आए हो। इस वक़्त यरूशलम की शान देखने के लायक़ है।”

दाऊद ने रूबिन को छेड़ते हुए कहा, “हमारे बुज़ुर्गों ने जब 145 साल पहले आज़ादी हासिल की थी तो वह भी इतने ख़ुश नहीं हुए होंगे जितने आज हम हैं।”

रूबिन ने छींकते हुए जवाब दिया, “हाँ, हाँ। और इस ख़ुशगवार क़दीम वाकिये की याद में बैतुल-मुक़द्दस में इबादतें भी होंगी।” उसकी आवाज़ से शिकायत झलक रही थी, “लेकिन मैं इबादत में शामिल

न हो सकूँगा। सर्दी और बारिश में निकल नहीं सकता।” वह खाँसने लगा। जब दम में दम आया तो आवाज़ मधम और खुरदरी-सी हो रही थी, “पता नहीं इम्माउस से मेरा दोस्त क्लोपास और उसका बेटा भी इबादत में आए होंगे या नहीं! मेरी तरह उसे भी हज़रत ईसा की बातें सुनने का बेहद शौक़ है।”

इफ़राईम ने ख़बरदार किया, “शायद हज़रत ईसा भी न आ सके। सड़कों पर तो चलना मुहाल है।”

रूबिन ने सूँ सूँ करते हुए कहा, “मैं बिस्तर पर जाने से पहले ज़रा शहर का अच्छी तरह नज़ारा कर लूँ। ओह। बहुत-से ख़ानदान आज दावतें उड़ा रहे हैं। हर घर में दर्जनों शमाएं कैसा उम्दा मंज़र पेश कर रही हैं।” फिर उसके ख़यालात बैतुल-मुक़द्दस की तरफ़ चले गए, और वह धीरे से कहने लगा, “मुझे अभी तक हज़रत ईसा की आख़िरी बात याद है कि ‘अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए अपनी जान देता है। मज़दूर चरवाहे का किरदार अदा नहीं करता, क्योंकि भेड़ें उसकी अपनी नहीं होतीं। इसलिए ज्योंही कोई भेड़िया आता है तो मज़दूर उसे देखते ही भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है। नतीजे में भेड़िया कुछ भेड़ें पकड़ लेता और बाक़ियों को मुंतशिर कर देता है। वजह यह है कि वह मज़दूर ही है और भेड़ों की फ़िकर नहीं करता।”[1] रूबिन ने गहरी साँस ली, “हज़रत ईसा सचमुच अच्छे चरवाहे हैं। उन्हें हर एक की

1 यूहन्ना 10:11-13

फ़िकर होती है। चाहे किसी बच्चे को उनकी ज़रूरत हो या किसी कोढ़ी को, वह हर एक की मदद करते हैं।” फिर ज़रा लमहे के बाद बोला, “अल-मसीह भी एक चरवाहे की मानिंद होगा। उस वक़्त मुझे ख़याल गुज़रा कि शायद हज़रत ईसा लोगों को इशारा कर रहे हैं कि वह कौन हैं।”

दूसरों ने भी ताईद की। लेकिन दाऊद बोला, “उस वक़्त हज़रत ईसा ने यह भी तो कहा था, ‘अच्छा चरवाहा मैं हूँ। मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ और वह मुझे जानती हैं, बिलकुल उसी तरह जिस तरह बाप मुझे जानता है और मैं बाप को जानता हूँ। और मैं भेड़ों के लिए अपनी जान देता हूँ। मेरी और भी भेड़ें हैं जो इस बाड़े में नहीं हैं। लाज़िम है कि उन्हें भी ले आऊँ। वह भी मेरी आवाज़ सुनेंगी। फिर एक ही गल्ला और एक ही गल्लाबान होगा।’ मुझे समझ नहीं आती कि उन्होंने यह क्यों कहा कि मैं अपनी जान देता हूँ।”

रूत ने भी हैरान होकर पूछा, “उस्ताद ने ज़िक्र किया कि मेरी और भी भेड़ें हैं जो इस भेडख़ाने की नहीं। क्या इससे मुराद ग़ैरयहूदी तो नहीं? इसका मतलब तो यह हुआ कि वह ग़ैरयहूदियों को भी अपना शागिर्द होने की दावत देंगे। यह बातें सुनकर बहुत-से लोग तो गज़बनाक हो गए थे।”

लेकिन रूबिन ने कहा, “यहाँ बहुत-से लोग हैं जिनके दिल ऐसे चरवाहे के लिए तड़प रहे हैं जो सचमुच अपनी भेड़ों की फ़िकर करता

हो। जो फ़रीसियों और उलमा की मानिंद न हो बल्कि जो उनकी रूहानी ज़रूरियात पूरी करे। इन लोगों को हज़रत ईसा में वह अच्छा चरवाहा नज़र आता है।” लेकिन होते होते उसका गला बैठ गया, “हाय, मुझे जाना चाहिए। ख़ुदावंद आपको बरकत दे।” यह कहकर वह खाँसता और छींकता हुआ अपने कमरे को रवाना हुआ।

इफ़राईम ने फिर वही मौज़ू छेड़ दिया, “उस मौक़े पर हज़रत ईसा ने यह भी कहा कि ‘मेरा बाप मुझे इसलिए प्यार करता है कि मैं अपनी जान देता हूँ ताकि उसे फिर ले लूँ। कोई मेरी जान मुझसे छीन नहीं सकता बल्कि मैं उसे अपनी मरज़ी से दे देता हूँ। मुझे उसे देने का इख़्तियार है और उसे वापस लेने का भी। यह हुक्म मुझे अपने बाप की तरफ़ से मिला है।’”[1]

इफ़राईम मुतअज्जिब होकर सोचने लगा हज़रत ईसा ने बड़ी बड़ी बातें कही हैं। अगर वह सचमुच अल-मसीह हैं तो यह सब कुछ करने की क़ुदरत रखते हैं।

दाऊद के माथे पर बल पड़े। वह बोला, “अब्बा जान, किसी दिन हमारे लीडर, हज़रत ईसा के अलफ़ाज़ को तोड़-मरोड़ कर ऐसे मानी निकालेंगे कि उन्हें क़त्ल कर सकें। शरीअत के आलिम और फ़रीसी हर वक़्त उनके गिर्द मँडलाते रहते हैं। वह यरूशलम, यहूदिया और गलील के हर गाँव से आ जमा हुए हैं। उनका हज़रत ईसा के साथ साथ रहने

1 यूहन्ना 10:14-18

का वाहिद मक़सद यह है कि उनकी कोई बात या कोई ऐसा काम पकड़ें जो शरीअत के मुताबिक़ न हो। फिर वह सीधे सदरे-अदालत को ख़बर करेंगे।"

इफ़राईम ने अपने बेटे की ताईद की, "हालात हज़रत ईसा के लिए अच्छे नज़र नहीं आते। उन्हें कुछ वक़्त के लिए यरूशलम से दूर ही रहना चाहिए। ख़ासकर इसलिए भी कि पिछले अक्तूबर से लीडर बहुत सीख़पा हैं।"

ताहम मख़सूसियत की ईद के मौक़े पर हज़रत ईसा बैतुल-मुक़द्दस पहुँच गए, गो कोई नहीं इसकी तवक़्क़ो कर रहा था। मूसलाधार बारिश हो रही थी। बैतुल-मुक़द्दस की सुनहरी छत पर छाजों पानी पड़ रहा था जो संगे-मरमर की दीवारों पर से होता हुआ सहन के नीचे हौज़ में जमा हो रहा था। तमाम लोग बैतुल-मुक़द्दस के बड़े कमरों में और ख़ासकर सुलेमानी बरामदे में जमा हो रहे थे। अचानक हज़रत ईसा और उनके शागिर्द भी वहीं आ गए। दाऊद और इफ़राईम ने एक दूसरे को मानीख़ेज़ नज़रों से देखा। कोई नहीं कह सकता था कि हज़रत ईसा अब क्या करेंगे। दूसरे दोस्तों के साथ वह हज़रत ईसा के पास आ खड़े हुए। दाऊद ने बड़ी हमदर्दी से कहा, "बेचारे रूबिन को कितना अफ़सोस होगा कि उस्ताद की बातें नहीं सुन सका। लेकिन इस ख़बर से उन्हें ख़ुशी होगी कि उसका दोस्त क्लोपास और उसका बेटा यहाँ मौजूद थे।"

लमहे-भर की ख़ुशी के बाद इफ़राईम कहने लगा, “कितने अफ़सोस की बात है कि अज़र यहाँ हज़रत ईसा से मिल नहीं सकता। लेकिन वह और जगहों पर उन्हें मिलने की पूरी कोशिश करता होगा।”

इतने में रूत भी आ गई। “यूहन्ना मरक़ुस और उसकी माँ भी आए हुए हैं।” उसने ख़ुशी ख़ुशी बताया, “ज़रा देखो, सारे लोग कितने ख़ुश हैं। बेशक लीडरों की ख़ुशी पर तो ओस पड़ गई होगी।”

उधर से लीडर भी सुलेमान के बरामदे की तरफ़ भागे आ रहे थे ताकि हज़रत ईसा की तालीमात में ख़लल डालें। इस बार उन्होंने हज़रत ईसा को उनकी अपनी ही बातों में फाँसने का मनसूबा बना रखा था। अब तक उन्होंने सीधा कभी नहीं कहा था कि मैं अल-मसीह हूँ। अब उनकी कोशिश थी कि उनसे यही कहलवाएँ। अगर वह कामयाब हो गए तो रोमी गवर्नर के सामने उन पर इलज़ाम लगा सकेंगे। इसी मक़सद से चंद लीडर उनके गिर्द आ खड़े हुए। एक ने उनसे पूछा, “आप हमें कब तक उलझन में रखेंगे? अगर आप मसीह हैं तो हमें साफ़ साफ़ बता दें।”[1]

इफ़राईम ने साँस रोक लिया, “यह लोग कोई चाल चल रहे हैं।”

लेकिन हज़रत ईसा उनका मक़सद भाँप गए थे। उन्होंने जवाब दिया, “मैं तुमको बता चुका हूँ, लेकिन तुमको यक़ीन नहीं आया। जो काम मैं अपने बाप के नाम से करता हूँ वह मेरे गवाह हैं। लेकिन तुम ईमान नहीं

1 यूहन्ना 10:24

रखते, क्योंकि तुम मेरी भेड़ें नहीं हो। मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं। मैं उन्हें जानता हूँ और वह मेरे पीछे चलती हैं। मैं उन्हें अबदी ज़िंदगी देता हूँ, इसलिए वह कभी हलाक नहीं होंगी। कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा, क्योंकि मेरे बाप ने उन्हें मेरे सुपुर्द किया है और वही सबसे बड़ा है। कोई उन्हें बाप के हाथ से छीन नहीं सकता। मैं और बाप एक हैं।"[1] शागिर्द जो अपने आपको बेबस और बेकस महसूस कर रहे थे उनकी हिम्मत बँध गई। साथ साथ यह भी उन्हें महसूस हुआ कि थोड़ी देर में न सिर्फ़ हज़रत ईसा पर बल्कि ख़ुद हम पर भी मुसीबत आनेवाली है। लेकिन उनके आक़ा के इन अलफ़ाज़ ने उन्हें यक़ीन दिला दिया कि हम मज़बूत हाथों में महफ़ूज़ हैं।

शमाऊन पतरस जज़बाती अंदाज़ में अंदरियास से कहने लगा, "आक़ा ने कैसी तसल्ली की बात की है। मैं कभी नहीं भूलूँगा कि मैं उनके हाथ में हूँ और बिलकुल महफ़ूज़ हूँ।"

इफ़राईम सोचने लगा, "काश मेरा ईमान इतना मज़बूत हो कि मैं हज़रत ईसा को अल-मसीह मान सकूँ और यह कि वह अपनों को सचमुच इसी तरह महफ़ूज़ रख सकते हैं!" अब तक उनका ईमान डाँवाँडोल था। कभी तो यक़ीन होने लगता कि हज़रत ईसा ही अल-मसीह हैं और कभी शक करने लगता।

---

1 यूहन्ना 10:25-30

मगर लीडरों के ख़यालात बिलकुल मुख़्तलिफ़ थे। एक तरफ़ वह नाराज़ थे कि उनसे लफ़्ज़ ‘अल-मसीह’ न कहलवा सके। उनका मनसूबा फिर नाकाम हो गया था। लेकिन उनको ज़्यादा आग इस वजह से लगी कि उन्होंने फिर अल्लाह को अपना बाप कहा है। “उसे हमारे सामने ऐसा कुफ़र बकने की कैसे जुर्रत हुई!”

अचानक दाऊद ने इफ़राईम को मुख़ातिब किया, “ओह। अब्बा जान! मुसीबत आया ही चाहती है। हम रूत को घर ले चलें।”

लीडर तैश में आकर कहने लगे, “काफ़िर। कुफ़र, कुफ़र। उसे मार डालो। इसे ज़िंदा रहने का कोई हक़ नहीं।” उन्होंने उन्हें संगसार करने को पत्थर उठाए, मगर हज़रत ईसा बड़े एतमाद से उनके सामने खड़े रहे और कहने लगे, “मैंने तुम्हें बाप की तरफ़ से कई इलाही निशान दिखाए हैं। तुम मुझे इनमें से किस निशान की वजह से संगसार कर रहे हो?”

लीडरों ने जवाब दिया, “हम तुमको किसी अच्छे काम की वजह से संगसार नहीं कर रहे बल्कि कुफ़र बकने की वजह से। तुम जो सिर्फ़ इनसान हो अल्लाह होने का दावा करते हो।”[1]

हज़रत ईसा ने जवाब दिया, “तुम कुफ़र बकने की बात क्यों करते हो जब मैं कहता हूँ कि मैं अल्लाह का फ़रज़ंद हूँ? आख़िर बाप ने ख़ुद मुझे मख़सूस करके दुनिया में भेजा है। अगर मैं अपने बाप के काम न करूँ तो मेरी बात न मानो। लेकिन अगर उसके काम करूँ तो बेशक मेरी

1 यूहन्ना 10:32-34

बात न मानो, लेकिन कम-अज़-कम उन कामों की गवाही तो मानो। फिर तुम जान लोगे और समझ जाओगे कि बाप मुझमें है और मैं बाप में हूँ।”[1] यह सुनकर उन्होंने हज़रत ईसा को पकड़ने की कोशिश की।

जब इफ़राईम और उसका बेटा रूत को घर ले जा रहे थे तो उन्हें यह देखकर तसल्ली हुई कि हज़रत ईसा और उनके साथी बैतुल-मुक़द्दस से निकल गए हैं।

शागिर्दों ने अपने चोग़े अच्छी तरह लपेट रखे थे, क्योंकि बारिश फिर बरसने लगी थी लेकिन उन्हें इसकी परवा न थी। वह लीडरों के हाथ से बच निकलने पर ख़ुश थे। जल्दी ही वह क़िदरोन के नाले के पार उतरे। यह नाला उमूमन ख़ुश्क ही रहता था लेकिन आज की बारिश से तेज़ी से बह रहा था। वह जल्दी जल्दी ज़ैतून का पहाड़ पार करके बैत-अनियाह के गाँव जा पहुँचे। यह गाँव यरूशलम से सिर्फ़ दो मील के फ़ासले पर था। आगे जाने से पहले वह अपने दोस्त लाज़र और मरियम और मर्था से मिलने को रुक गए।

लाज़र और बहनों ने इन भीगे मुसाफ़िरों का पुरतपाक इस्तिक़बाल किया। कीचड़ से भरी सड़क पर सफ़र करने के बाद उन्हें इस मेहमान-नवाज़ी का दुगुना लुत्फ़ आया, और बड़ी बहन मर्था के हाथ का लज़ीज़ खाना ख़ूब मज़े ले लेकर खाया। इस प्यारे घर में दुबारा आना कितनी

1 यूहन्ना 10:36-38

मुसर्रत का बाइस था। वह इन तीनों से रिफ़ाक़त की बड़ी क़दर करते थे।

चार दिन का मुरदा क़ब्र से निकला

मार्च का महीना आ गया था। हर तरफ़ बहार अपनी तमाम रंगीनियों के साथ हुक्मरान थी। लेकिन इस हुस्न और ख़ूबसूरती के बावुजूद बैत-अनियाह में मरियम और मर्था निहायत उदास थे। लाज़र बहुत बीमार था, यहाँ तक कि बहनों को लगा कि उसकी जान के लाले पड़ गए हैं। रात को शमा की कपकपाती लौ और धीमी रौशनी में उसकी हलक़ों में धँसी हुई आँखें और रुक रुककर चलती हुई साँसें बहनों के दिलों पर छुरियाँ चलाती थीं। "काश हज़रत ईसा यहाँ होते तो भाई को सारी तकलीफ़ से रिहाई मिल जाती।"

दिन गुज़रते जा रहे थे। दोनों बहनें अकसर नज़दीकी पहाड़ियों पर चली जातीं, जहाँ से वह दूर पिरिया के ऊदे ऊदे पहाड़ों को देख सकतीं। वह जानती थीं कि हज़रत ईसा और उनके शागिर्द वहाँ हैं, लेकिन उनकी मुहब्बत उन्हें बुलाने से रोकती थी, क्योंकि यरूशलम से इतने क़रीब मौत हज़रत ईसा की मुंतज़िर थी, और वह ऐसा ख़तरा मोल नहीं ले सकती

थीं। लेकिन उनके ख़यालात अकसर हज़रत ईसा के साथ होते। वह बड़े हौसले से अपने भाई की तीमारदारी करती रहीं, मगर उसकी हालत बिगड़ती ही गई। एक दिन बीमारी इंतहा को पहुँच गई। दोनों बहनें बेबसी से उसके पलंग के पास खड़ी रहीं। क्या करें? अब तक वह हज़रत ईसा से मदद माँगने से रुकी रही थीं। लेकिन जब लाज़र की हालत बहुत बिगड़ गई तो उन्होंने एक क़ाबिले-एतमाद पड़ोसी की मिन्नत की कि पिरिया में हज़रत ईसा के पास जाए। पिरिया बैत-अनियाह से दो या तीन दिन की मसाफ़त पर था। "उस्ताद से यहाँ आने को न कहना, क्योंकि इस इलाक़े में उन्हें बहुत ख़तरा है," उन्होंने पड़ोसी को ताकीद की। "बस इतना कहना ही काफ़ी होगा कि 'ख़ुदावंद, जिसे आप प्यार करते हैं वह बीमार है।'[1] क्या पता वह इतनी दूर ही से हमारे भाई के लिए कुछ करें।"

यह एलची उसी रास्ते से रवाना हुआ जो कोई दो महीने पहले हज़रत ईसा और उनके शागिर्दों ने तय किया था। वह यरदन की वादी में उतरा और दूसरी तरफ़ रफ़्ता रफ़्ता पिरिया की पहाड़ियों पर चढ़ा। परिंदे चहचहा रहे थे। हर तरफ़ फूल ख़ुशबू बिखेर रहे थे। शहद की मक्खियाँ भिभिना रही थीं। एलची सफ़र से लुत्फ़अंदोज़ हो सकता था, लेकिन उसके दिल पर अपने दोस्त लाज़र की बीमारी का भारी बोझ था। ताज़ा खुदी हुई ज़मीन की सेहतबख़्श ख़ुशबू उसके नथनों को अच्छी नहीं लग

---

1 यूहन्ना 11:3

रही थी। “हाय, हम ख़ाकी इनसान कितने बे-सबात हैं! हम मिट्टी से बने हैं और मिट्टी में मिल जाएँगे। क्या पता लाज़र अभी तक ज़िंदा भी है या नहीं।” वह बड़ी फ़िकर से आगे बढ़ता गया। भाई के बग़ैर मर्था और मरियम को कितनी मुश्किल होगी। उसने आँसू पोंछे, “इतने नेक ख़वातीन की झोली में यह ग़म!”

ख़ुशक़िसमती से हज़रत ईसा इस इलाक़े में भी मशहूर थे। हर कोई एलची को उनके पास पहुँचने का रास्ता बता सकता था। बड़े ग़म के साथ उसने पैग़ाम दिया। बहनों की मायूसी और फ़िकरमंदी का भी ज़िक्र किया। वह उनके दोस्त हज़रत ईसा से कोई बात छिपा नहीं सकता था। शागिर्दों ने जब यह ग़मनाक ख़बर सुनी तो वह भी उन लोगों की मदद करने को बेताब हो गए जिनके हाँ वह अकसर मेहमान हुआ करते थे। लेकिन साथ ही उन्हें यह फ़िकर भी थी कि बैत-अनियाह में उनके आक़ा को बहुत ख़तरा होगा। वह नहीं चाहते थे कि वह उस जगह के क़रीब भी जाएँ। इसलिए जब हज़रत ईसा ने कहा कि “इस बीमारी का अंजाम मौत नहीं है, बल्कि यह अल्लाह के जलाल के वास्ते हुआ है, ताकि इससे अल्लाह के फ़रज़ंद को जलाल मिले”[1] तो उनको तसल्ली हुई।

एलची इस ख़बर के साथ घर लौटा। उसको समझ नहीं आई थी कि हज़रत ईसा का मतलब क्या है। लेकिन उसे यह तसल्ली ज़रूर थी कि

1 यूहन्ना 11:4

हज़रत ईसा अपने दोस्त की बीमारी की ख़बर सुनकर परेशान न हुए। सब कुछ ठीक हो जाएगा।

शागिर्द भी उस पैग़ाम के मानी नहीं समझ पाए थे जो हज़रत ईसा ने दोनों बहनों को भेजा था। इससे उन्हें वह बात याद आई जो उनके आक़ा ने अज़र नामी अंधे से की थी कि “यह बीमारी अल्लाह के जलाल के लिए है।” लिहाज़ा फ़िकर क्यों करें। यह मामला भी ख़ुदावंद के हाथों में है। अब उन्हें सिर्फ़ एक ही बात का ध्यान था कि अपने आक़ा के दुश्मनों से दूर रहें। यों पिरिया में दो दिन और गुज़र गए। कभी कभी शागिर्दों की नज़रें मग़रिब को उठकर ज़ैतून पहाड़ पर टिक जातीं। उनको मालूम था कि बैत-अनियाह वहाँ एक वादी में छिपा हुआ है। उनको रह रहकर अपने बीमार दोस्त और परेशानहाल बहनों का ख़याल आता।

वह पिरिया ही में थे कि लाज़र वफ़ात पा गया। हज़रत ईसा को इस पर कोई हैरत न हुई, क्योंकि उनके आसमानी बाप ने यह बात पहले ही उन पर ज़ाहिर कर दी थी। वह यह भी जानते थे कि मेरे इन तीनों दोस्तों को एक अजीब तजरिबा हासिल होनेवाला है। दूसरे दिन शाम को उन्होंने शागिर्दों से कहा, “आओ, हम दुबारा यहूदिया चले जाएँ।”

फ़िकरमंद शागिर्दों ने फ़ौरन ख़बरदार किया, “उस्ताद, अभी अभी वहाँ के यहूदी आपको संगसार करने की कोशिश कर रहे थे, फिर भी आप वापस जाना चाहते हैं?”

मगर उन्होंने बड़े इतमीनान से उनसे कहा, “हमारा दोस्त लाज़र सो गया है। लेकिन मैं जाकर उसे जगा दूँगा।”

शागिर्द इसका मतलब न समझकर कहने लगे, “ख़ुदावंद, अगर वह सो रहा है तो वह बच जाएगा।”

इस पर हज़रत ईसा ने साफ़ साफ़ बता दिया कि “लाज़र वफ़ात पा गया है। और तुम्हारी ख़ातिर मैं ख़ुश हूँ कि मैं उसके मरते वक़्त वहाँ नहीं था, क्योंकि अब तुम ईमान लाओगे। आओ, हम उसके पास जाएँ।”[1]

शागिर्द यह सुनकर दंग रह गए। सब साथ चलने से हिचकिचाने लगे। आख़िर तोमा जुर्रत करके कहने लगा, “चलो, हम भी वहाँ जाकर उनके साथ मर जाएँ।”[2] सबको यक़ीन था कि हम सीधा मौत के मुँह में जा रहे हैं। दो दिन का सफ़र बड़ी मायूसी और ख़ामोशी से तय हुआ। किसी शागिर्द ने इर्दगिर्द की ख़ूबसूरती को नज़र उठाकर भी न देखा। इस परेशानी में फूलों की दिलकश ख़ुशबू भी मौत की बू लगती थी। उनका जोड़ जोड़ दुख रहा था और पाँव मिनमिन के हो रहे थे, फिर भी तेज़ तेज़ क़दम उठाते वह पिरिया के पहाड़ों को उबूर करके यरदन की वादी में उतरने लगे। यरदन का मैदान पार करके वह यरीहू को हो लिए। अब मग़रिब में पहाड़ों का दूसरा सिलसिला उबूर करना था। कोई 1200 मीटर की चढ़ाई थी। जब वह बैत-अनियाह की हुदूद में पहुँचे तो थककर चूर हो रहे थे। वह परेशानी से सोचने लगे कि लाज़र तो मर चुका है

1 यूहन्ना 11:7-15

2 यूहन्ना 11:16

और अब मौत हमारा भी इंतज़ार कर रही है। हज़रत ईसा मातमवाले घर में जाने के बजाए गाँव के बाहर ही ठहर गए और किसी को भेजा कि मरियम और मर्था को उनके आने की इत्तला दे दे।

कई रिश्तेदार और मुलाक़ाती मर्था और मरियम को तसल्ली देने आए हुए थे। जब मर्था को हज़रत ईसा के आने की ख़बर मिली तो वह चुपके से घर से निकली ताकि अलहदगी में हज़रत ईसा से मुलाक़ात करे। लेकिन जब उसके सामने आई तो अपनी मायूसी पर क़ाबू न रख सकी और ग़म से पुकार उठी, "ख़ुदावंद, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता। लेकिन मैं जानती हूँ कि अब भी अल्लाह आपको जो भी माँगेंगे देगा।"

हज़रत ईसा ने उसे यक़ीन दिलाया, "तेरा भाई जी उठेगा।"

मर्था ने आह भरकर जवाब दिया, "जी, मुझे मालूम है कि वह क़ियामत के दिन जी उठेगा, जब सब जी उठेंगे।"[1]

ख़ुदावंद की निगाहें मर्था के चेहरे का जायज़ा ले रही थीं। फिर उन्होंने फ़रमाया, "क़ियामत और ज़िंदगी तो मैं हूँ। जो मुझ पर ईमान रखे वह ज़िंदा रहेगा, चाहे वह मर भी जाए। और जो ज़िंदा है और मुझ पर ईमान रखता है वह कभी नहीं मरेगा। मर्था, क्या तुझे इस बात का यक़ीन है?"[2]

1 यूहन्ना 11:21-24
2 यूहन्ना 11:25-26

मर्था ने हैरानी से ख़ुदावंद को देखा। उसके दिल में उसकी अज़मत का तास्सुर और गहरा होता गया। वह बड़े एतमाद से बोली, "जी ख़ुदावंद, मैं ईमान रखती हूँ कि आप अल्लाह के फ़रज़ंद मसीह हैं, जिसे दुनिया में आना था।"[1] अब मर्था ने महसूस किया कि मुझे मरियम को भी बुला लेना चाहिए। वह जल्दी से घर को रवाना हो गई।

उसकी हस्सास बहन उसी तरह ग़म में डूबी हुई थी। इफ़राईम बिन सुलेमान, यशुअ, दाऊद, रूत, नीकुदेमुस और रूबिन यह सारे भी आए हुए थे। उनको ऐसे अलमनाक मौक़े पर तसल्ली देने के लिए अलफ़ाज़ नहीं मिल रहे थे। किस तरह उन दो बहनों को दिलासा दें! उनका सहारा और मददगार उठ गया था। उनका भाई जाता रहा था। उनका अज़ीज़ कभी वापस नहीं आएगा। बहुत-से लोग हैरान थे कि हज़रत ईसा ने उनकी मदद क्यों नहीं की। रूबिन के आँसू रुकने का नाम न लेते थे। वह झुर्रियों भरे हाथ मलता रहा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था, "उस्ताद ने सूबेदार के नौकर को तो दूर ही से शफ़ा बख़्श दी थी। वह ... वह ... सब कुछ ... कर सकते हैं।" उसने मरियम की सूजी हुई आँखें देखीं, "मैं ... मैं ... नहीं समझ सकता ... और तुम ... तुम तो हज़रत ईसा के ख़ास दोस्त हो ... यह बहुत बड़ा राज़ है।"

मर्था ने जाकर चुपके से मरियम को बताया, "उस्ताद आ गए हैं, वह तुझे बुला रहे हैं।"[2] मरियम यह सुनते ही जल्द उठकर हज़रत ईसा के

1 यूहन्ना 11:27
2 यूहन्ना 11:28

पास आई। जो लोग उसे तसल्ली देने आए थे वह भी उसके पीछे चल पड़े। उनका ख़याल था कि मरियम क़ब्र पर रोने जा रही है। वह सारे इकट्ठे बैत-अनियाह के बाहर उस जगह पहुँचे जहाँ हज़रत ईसा मरियम के मुंतज़िर थे। मरियम ने उन्हें देखा तो उसके क़दमों पर गिरकर अपनी बहन की तरह कहने लगी, "ख़ुदावंद! अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता।" बेचारी के आँसुओं का तार बँधा हुआ था। तमाम लोग उसके साथ रो पड़े। मौत कैसा ख़ौफ़नाक दुश्मन है कि इनसान के अज़ीज़तरीन शख़्स को भी छीन ले जाती है।

हज़रत ईसा के भी आँसू बहने लगे। लेकिन जल्द ही वह पुरएतमाद नज़र आने लगे। उन्होंने पूछा, "तुमने उसे कहाँ रखा है?"

लोग जल्दी से उन्हें उनके दोस्त की आख़िरी आरामगाह तक ले गए। उस्ताद के आँसू बहते देखकर वह कहने लगे, "देखो वह इसको कैसा अज़ीज़ था।"

लेकिन बाज़ गिला करने लगे, "इस आदमी ने अंधे को शफ़ा दी। क्या यह लाज़र को मरने से नहीं बचा सकता था?"[1]

अब वह क़ब्र पर पहुँच गए। हज़रत ईसा सोगवारों के दरमियान खड़े थे। उन्हें अपने आप पर पूरा क़ाबू था। क़ब्र एक ग़ार में थी, जिसके मुँह पर पत्थर धरा था। तमाम आँखें हज़रत ईसा पर जमी हुई थीं। उन्हें तसल्ली के अलफ़ाज़ की कितनी ज़रूरत थी! लेकिन जो कुछ हुआ

---

1 यूहन्ना 11:34-37

उसकी किसी को उम्मीद न थी। हज़रत ईसा ने हुक्म दिया, "पत्थर को हटा दो।"

सब दम बख़ुद रह गए। किसी ने पुकारकर कहा, "नामुमकिन! इसकी बात न मानना।"

किसी और ने एतराज़ किया, "उसकी बहनें यह बरदाश्त नहीं कर सकेंगी। यह तो बड़ा ज़ुल्म होगा।"

मर्था ने हज़रत ईसा की तरफ़ मुड़कर कहा, "ख़ुदावंद, बदबू आएगी, क्योंकि उसे यहाँ पड़े चार दिन हो गए हैं।"

हज़रत ईसा पर उसकी बात का कोई असर न पड़ा बल्कि संजीदगी से उसे याद दिलाया कि "क्या मैंने तुझे नहीं बताया कि अगर तू ईमान रखे तो अल्लाह का जलाल देखेगी?"[1]

वह उनके दरमियान एक कमाँडर की तरह खड़े रहे, इस इंतज़ार में कि मेरा हुक्म माना जाए। आख़िर चंद अफ़राद ने काँपते हाथों से वह पलस्तर उखाड़ा जिससे पत्थर नसब था। थोड़ी देर बाद पत्थर के गिरने से सहरज़दा ख़ामोशी टूट गई। लोगों पर एक अनजाना ख़ौफ़ छा गया। वह बेयक़ीनी से क़ब्र को घूरने लगे कि अब क्या होनेवाला है? रूत भी थरथरा रही थी। मौत कितनी हौलनाक होती है! क्या ज़रूरी है कि उसके शिकार को गलते-सड़ते हुए देखा जाए? वह सोचने लगी, मैं तो इतनी सख़्त बदबू बरदाश्त नहीं कर सकूँगी। फिर उसने आँसू भरी आँखों से

---

1 यूहन्ना 11:39-40

देखा कि हज़रत ईसा आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने अपनी आँखें आसमान की तरफ़ उठाईं और दुआ माँगी, "ऐ बाप, मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि तूने मेरी सुन ली है। मैं तो जानता हों कि तू हमेशा मेरी सुनता है। लेकिन मैंने यह बात पास खड़े लोगों की ख़ातिर की ताकि वह ईमान लाएँ कि तूने मुझे भेजा है।" यह कहकर उन्होंने बुलंद आवाज़ से पुकारा, "लाज़र, निकल आ!"

लोगों के रोंगटे खड़े हो गए। मर्था और मरियम भी हैरान होकर क़ब्र को तकने लगीं। क़ब्र के अंदर सरसराहट की आवाज़ आने लगी। तब क़ब्र के मुँह पर एक शक्ल नमूदार हुई। लाज़र था। उसकी टाँगें और बाज़ू अभी तक कफ़न में लिपटे हुए थे। उसका चेहरा भी एक कपड़े में लिपटा हुआ था। बेचारा बिलकुल बेबस दिखाई देता था। लेकिन उसे इन बंधनों से खोलने के लिए कोई आगे न बढ़ा। सब पर सकता तारी हुआ था। फिर हज़रत ईसा की आवाज़ ने सभों में ज़िंदगी की लहर दौड़ा दी, "इसके कफ़न को खोलकर इसे जाने दो।" बहुत-से हाथ आगे बढ़े और उसे खोलने लगे। हर एक किसी न किसी तरह ज़ाहिर करना चाहता था कि उसे वापस पाकर हम कितने ख़ुश हैं।[1]

लाज़र और उसकी बहनों के घर में इस अनोखे मिलाप पर ख़ुशियों का ठिकाना न था। ख़बर सुनते ही सारा गाँव उससे मिलने को उमड पड़ा जो चार दिन तक मुरदा रहकर दुबारा ज़िंदा हुआ था। इस अज़ीम

1 यूहन्ना 11:41-44

मोजिज़े की ख़बर जंगल की आग की तरह फैल गई। जो लोग लाज़र के जी उठने के गवाह थे उनमें से बहुतेरे ईमान लाए कि हज़रत ईसा सचमुच अल्लाह के भेजे हुए हैं जो मौत पर भी फ़ातेह हैं।

दाऊद बोला, "अब्बा जी! मैंने हज़रत ईसा को नाइन के नौजवान को ज़िंदा करते भी देखा था। मुझे वह मोजिज़ा नाक़ाबिले-यक़ीन लगता था। लेकिन लाज़र को मरे हुए तो चार दिन हो गए थे। उसका बदन गलने-सड़ने लगा था। फिर भी हज़रत ईसा ने उसे ज़िंदा कर दिया। आप क्या समझते हैं? मैं तो यह यक़ीन किए बग़ैर नहीं रह सकता कि हज़रत ईसा ख़ुदा के भेजे हुए हैं हालाँकि वह एक अज़ीमुश-शान बादशाह के रूप में नहीं आए।"

इफ़राईम ने ख़ुशी के आँसू पोंछते हुए कहा, "बेटा, आज हज़रत ईसा ने हमें सचमुच दिखा दिया है कि वह ख़ुदावंद हैं हालाँकि बज़ाहिर हलीम हैं। उन्होंने वह क़ुदरत और जलाल दिखा दिया है जो अल्लाह ने अपने ममसूह को दे रखा है। मुझे वह मौक़ा भी याद है जब उन्होंने हमारे लीडरों से कहा कि मैं मुरदों को ज़िंदा करूँगा और इनसानों की अदालत भी करूँगा। अब लाज़र को ज़िंदा करने का मोजिज़ा देखकर मैं इस बात पर ईमान लाया हूँ। अब तो मुझे ऐसा लगता है कि वह सचमुच दुनिया के नजातदहिंदे अल-मसीह हैं।"

लेकिन मातम करनेवालों में कुछ अफ़राद ऐसे भी थे जो इस मोजिज़े से ख़ुश न हुए। उन्होंने यरूशलम जाकर एक एक बात लीडरों को बता

दी। नतीजा यह हुआ कि सदरे-अदालत का इजलास तलब किया गया और उलमा बेबसी से कहने लगे, “हम क्या कर रहे हैं? यह आदमी बहुत-से इलाही निशान दिखा रहा है। अगर हम उसे खुला छोड़ें तो आख़िरकार सब उस पर ईमान ले आएँगे।”

इमामे-आज़म कायफ़ा कहने लगा, “आप कुछ नहीं समझते और इसका ख़याल भी नहीं करते कि इससे पहले कि पूरी क़ौम हलाक हो जाए बेहतर यह है कि एक आदमी उम्मत के लिए मर जाए।” वह ख़ुद नहीं जानता था, लेकिन उस साल चूँकि वह इमामे-आज़म था इसलिए उसने यह नबुव्वत की कि हज़रत ईसा सचमुच क़ौम के वास्ते अपनी जान क़ुरबान कर देंगे। और न सिर्फ़ इसराईल क़ौम के लिए बल्कि सारी दुनिया की अक़वाम के लिए।

अब जबकि लीडरों ने फ़ैसला कर लिया कि हज़रत ईसा को क़त्ल किया जाए तो वह उनकी इस नई हर-दिल-अज़ीज़ी को बरदाश्त नहीं कर सकते थे। वह हर रोज़ सुनते रहते कि जोश से भरे हुए लोग शाना बशाना बैत-अनियाह जा रहे हैं। जिस क़ब्र में लाज़र रखा गया था उसे देखने को ठट लगे रहते। फिर उसे मिलने जाते जो चार दिन क़ब्र में रहा था। वह लाज़र और बैत-अनियाह के लोगों से इस मोजिज़े का हाल सुनते थकते न थे। इससे लीडर और भड़क उठे। उन्होंने फ़ैसला किया कि हमें जल्द से जल्द कुछ करना है वरना मामला हाथ से निकल

जाएगा। उनका इरादा था कि हज़रत ईसा के साथ साथ लाज़र को भी मार डालें, क्योंकि वह इस मोजिज़े का जीता-जागता सबूत था।

हज़रत ईसा जानते थे कि ख़ुदा बाप मेरी पूरी पूरी हिफ़ाज़त कर सकता है। तो भी वह बिलावजह अपने आपको ख़तरे में नहीं डालते थे। इसलिए वह अपने शागिर्दों को लेकर बैत-अनियाह से निकल गए और उस वक़्त तक अलग-थलग जगह में रहे जब तक कि वह उस मुश्किल काम के लिए यरूशलम को रवाना न हुए जिसे करने के लिए अल्लाह ने उन्हें भेजा था।

यरूशलम में शाहाना दाख़िला

फ़सह की ईद से छः दिन पहले हज़रत ईसा और उनके शागिर्द ख़ामोशी से फिर बैत-अनियाह में अपने दोस्तों के हाँ आ गए। मौसम बहुत ख़ुशगवार था। सब इस सफ़र से बहुत लुत्फ़अंदोज़ हुए। शागिर्दों के आसाब का तनाव भी कम हो गया था। अब वह अपनी गुज़श्ता बुरी हालत पर हँसते थे। लाज़र को ज़िंदा करने का अज़ीम मोजिज़ा देखकर उनकी तवक़्क़ोआत बढ़ गई थीं। हमारे आक़ा जैसा क़ुदरतवाला आदमी हरगिज़ लीडरों के हत्थे नहीं चढ़ सकता। हो सकता है कि अब भी वह इरादा बदल लें और क़ौम पर ज़ाहिर कर दें कि मैं ही तुम्हें छुड़ानेवाला अल-मसीह हूँ। आज उन्हें कोई फ़िकर नहीं थी। वह बहार के मौसम की ख़ूबसूरती का लुत्फ़ ले रहे थे।

नतनेल ने फ़िलिप्पुस को बताया, "लाज़र से दुबारा मिलकर मैं कितना ख़ुश हूँगा। बैत-अनियाह के यह तीनों दोस्त हमारे आक़ा पर

पुख़्ता ईमान रखते हैं। मुझे यक़ीन है कि इसी लिए ख़ुदावंद ने लाज़र पर इतना बड़ा मोजिज़ा किया है।”

फ़िलिप्पुस ने ताईद की, “अगर ज़रूरत पड़ी तो वह अपना सब कुछ उस्ताद की नज़र कर देंगे। वह इबादतख़ाने के उस अमीर नौजवान सरदार से कितने मुख़्तलिफ़ हैं जिससे हाल ही में हमारी मुलाक़ात हुई। वह हज़रत ईसा के पीछे चलने के लिए अपनी दौलत छोड़ने पर तैयार न था।”

“ज़रा सोचो। वह वाहिद शख़्स है जिसको हज़रत ईसा ने कहा था कि दौलत से पीछा छुड़ा ले,” नतनेल ने याद करते हुए कहा। “और वह कितना अच्छा आदमी था। हमारे आक़ा की तालीम को बड़े तवज्जुह से सुनता था। उसने ख़ुद को हलीम भी किया जब वह ख़ुदावंद को सिजदा करने को झुक गया।”

फ़िलिप्पुस ने हँसकर जवाब दिया, “हमारे हाँ उस्ताद के सामने झुकने का रिवाज नहीं। लेकिन उसने परवा न की कि इबादतख़ाने का कोई रुकन उसे देखता होगा।”

नतनेल ने बात को समझते हुए जवाब दिया, “उस नौजवान आलिम ने शायद पहली बार महसूस किया होगा कि जिस तरह की ज़िंदगी मैं गुज़ार रहा हूँ, इस तरह हमेशा की ज़िंदगी नहीं मिल सकती।”

फ़िलिप्पुस बोला, “उसके इबादतख़ाने के लोग तो हैरान रह गए होंगे जब उसने हज़रत ईसा से पूछा कि ‘उस्ताद, मैं कौन-सा नेक काम करूँ ताकि अबदी ज़िंदगी मिल जाए?’”

नतनेल कहने लगा, “मुझे उसका चेहरा देखकर ही महसूस हुआ कि हज़रत ईसा उसके सच्चे जोश की क़दर करेंगे। बहुत हस्सास आदमी था। पहले तो उन्होंने पूछा कि ‘क्या तू अहकाम पर अमल करता है?’ तो उसने कहा, ‘हाँ।’ इसके बावुजूद वह पूछता रहा कि ‘अब मुझमें किस बात की कमी है?’”

अब मत्ती भी उनकी गुफ़्तगू में शरीक हो गया, “नौजवान सरदार अपने ज़मीर का ख़ास ख़याल रखता था। उसके ज़मीर ने उसे पुरज़ोर अंदाज़ में बताया होगा कि तेरी रूहानी ज़िंदगी में कुछ कमी है। मुझे लगता है कि वह ख़ुदा के क़रीब रहना और पूरे तौर से उन्हीं का बनना चाहता था। इसी लिए तो इतने जोश ही से अबदी ज़िंदगी की तलाश करता फिरता था।”

अब फ़िलिप्पुस को याद आया, “हज़रत ईसा ने इस बात की तसदीक़ की कि उसमें सचमुच किसी बात की कमी है। उन्होंने फ़रमाया कि ‘अगर तू कामिल होना चाहता है तो जा और अपनी पूरी जायदाद फ़रोख़्त करके पैसे ग़रीबों में तक़सीम कर दे। फिर तेरे लिए आसमान पर ख़ज़ाना जमा हो जाएगा। इसके बाद आकर मेरे पीछे हो ले।’[1] शायद उसको ख़बर

1 मत्ती 19:21

न थी कि दौलत मुझे अल्लाह की बादशाही से पीछे खिंचती रहेगी। उसे पता न था कि वह उस क़ैदी की मानिंद है जो सोने की ज़ंजीर से बँधा हो।”

मत्ती ने जवाब दिया, “उसके दिल में कैसी कशमकश जारी थी! उसकी रूह का करब उसके चेहरे से दिखाई दिया। और जब वह चुपके से उठकर चला गया तो हम सबको कितना अफ़सोस हुआ। उसे यह सौदा बहुत महँगा लगा।”

फ़िलिप्पुस आहिस्ता से कहने लगा, “काश इस नौजवान को समझ आती कि मैं तो पहला हुक्म भी पूरा नहीं कर रहा कि ‘मैं रब तेरा ख़ुदा हूँ। मेरे सिवा किसी और माबूद की परस्तिश न करना।’[1] उसकी दौलत ही उसका माबूद था। हज़रत ईसा ने उसे दिखा दिया कि कामिलियत की तरफ़ पहला क़दम पहले हुक्म को पूरा करना है।”

मत्ती बड़ी संजीदगी से बोला, “हमारे उस्ताद बड़ी अफ़सुरदगी से उस जाते हुए नौजवान के पीछे देखते रहे। फिर उन्होंने फ़रमाया, ‘दौलतमंद के लिए आसमान की बादशाही में दाख़िल होना मुश्किल है। ... अमीर के आसमान की बादशाही में दाख़िल होने की निसबत ज़्यादा आसान यह है कि ऊँट सूई के नाके में से गुज़र जाए।’ यह सुनकर हम हैरान हुए। हमने उस्ताद से पूछा कि ‘फिर किस को नजात हासिल हो सकती है?”

1 ख़ुरूज 20:2-4

नतनेल बोला, "यह बात कि अल्लाह की बादशाही में दाख़िल होना नामुमकिन है हमें किस क़दर सदमा हुआ। लेकिन हमारे आक़ा ने यक़ीन दिलाया कि "यह इनसान के लिए तो नामुमकिन है, लेकिन अल्लाह के लिए सब कुछ मुमकिन है।"

"जब वह नौजवान चला गया तो हम सोचने लगे कि हमने बड़ी क़ीमत अदा की है। क्योंकि हमने हज़रत ईसा के पीछे चलने के लिए सब कुछ छोड़ दिया है। हम जानना चाहते थे कि इसके बदले हमें क्या मिलेगा?"

मत्ती ने क़दरे शरमिंदगी से कहा, "लेकिन उस्ताद इस क़िस्म का सवाल करने पर नाराज़ न हुए। उन्होंने फ़रमाया, 'जिसने भी मेरी ख़ातिर अपने घरों, भाइयों, बहनों, बाप, माँ, बच्चों या खेतों को छोड़ दिया है उसे सौ गुना ज़्यादा मिल जाएगा और मीरास में अबदी ज़िंदगी पाएगा।'"[1]

फ़िलिप्पुस यह सोचे बग़ैर न रह सका कि हमारे बैत-अनियाहवाले दोस्त कभी भी अज्र नहीं माँगेंगे जैसा कि हमने माँगा है। वह कहने लगा, "जानते हो, जब हज़रत ईसा वहाँ होते हैं तो लगता है कि वह उनसे रिफ़ाक़त को ही अपना अज्र समझते हैं।"

अब वह बैत-अनियाह पहुँच गए। लाज़र और उसकी बहनें उनकी आमद से बहुत ख़ुश हुए। पिछली बार वह इतनी जल्दी चले गए थे कि हज़रत ईसा का शुक्रिया भी अदा न कर सके थे। लेकिन इस वक़्त यह

1 मत्ती 19:22-30

मुश्किल आन पड़ी कि बेशुमार लोग हज़रत ईसा को अपने घर बुलाना चाहते हैं। आख़िर यह तय पाया कि वह अपने शागिर्दों समेत लाज़र और उसकी बहनों के साथ शमाऊन के घर खाना खाएँगे। यह वही शमाऊन है जो पहले कोढ़ी था। मर्था खाना खिलाने में लग गई। लाज़र हज़रत ईसा के पास बैठ गया। उसकी आँखों से नज़र आया कि वह हज़रत ईसा को किस क़दर प्यार करता है।

थोड़ी देर बाद मरियम आई। उसका चेहरा संजीदा लेकिन साथ साथ पुरमुसर्रत भी था। मेहमान गरदन उठा उठाकर उसे देखने लगे। उसके हाथ में एक क़ीमती इत्रदान देख सबको अंदाज़ा होने लगा कि कोई ख़ास बात होनेवाली है। साबिक़ कोढ़ी शमाऊन ने अपने क़रीब बैठे आदमी से सरगोशी की, "जो कुछ उस्ताद ने उनके लिए किया है, वह उसका शुक्रिया अदा करेगी।" अब मरियम हज़रत ईसा के क़दमों में बैठकर इत्र उनके पैरों में लगाने लगी। सारा घर दिलफ़रेब ख़ुशबू से महक उठा। हज़रत ईसा बहुत ख़ुश हुए। इस काम में उस्ताद से मरियम की सारी मुहब्बत सिमट आई थी। उसका दिल शुक्रगुज़ारी से लबरेज़ था कि ख़ुदावंद ने हमारे भाई को दुबारा हमसे मिला दिया है। अब वह जान चुकी थी कि दरअसल हज़रत ईसा कौन हैं।

लेकिन अचानक संजीदगी और अक़ीदत का माहौल पाश पाश हो गया। यहूदाह इस्करियोती की तेज़ आवाज़ उभरी, "इस इत्र की क़ीमत चाँदी के 300 सिक्के थी। इसे क्यों नहीं बेचा गया ताकि इसके पैसे

ग़रीबों को दिए जाते?” वह अपने उस्ताद को भी शिकायती नज़रों से तक रहा था।

हज़रत ईसा ने मुड़कर उसकी तरफ़ देखा। वह उस आदमी के बारे में कितने उदास थे जो थोड़े ही अरसे में ग़द्दारी करके उन्हें दुश्मनों के हवाले करने को था। हज़रत ईसा जानते थे कि यहूदाह को ग़रीबों की कोई फ़िकर नहीं। बस वह इस बात पर नाराज़ था कि रक़म उनकी थैली में क्यों नहीं डाली गई। क्योंकि यहूदाह उनका ख़ज़ानची था। मगर अफ़सोस कि वह चोर भी था और अकसर पैसे चुरा लिया करता था।

हज़रत ईसा यहूदाह को अच्छी तरह जानते थे। उन्होंने उस शागिर्द की बहुत फ़िकर करके उसके लिए कितनी दुआएँ माँगी थीं। मगर उन्हें मालूम था कि यहूदाह का दिल इतना सख़्त हो चुका है कि अल्लाह का रूह उसे नरम नहीं करेगा। अब शैतान उसे ख़ूब इस्तेमाल करेगा। हज़रत ईसा को उसकी चिकनी-चुपड़ी बातों के पीछे उसकी असल नीयत दिखाई दे रहा था कि वह ग़रीबों की मुहब्बत का कैसा ढोंग रचा रहा है। अगरचे हज़रत ईसा उसकी दिली हालत से आगाह थे तो भी उन्होंने अपने ऊपर पूरा पूरा क़ाबू रखकर फ़रमाया, “उसे छोड़ दे! उसने मेरी तदफ़ीन की तैयारी के लिए यह किया है। ग़रीब तो हमेशा तुम्हारे पास रहेंगे, लेकिन मैं हमेशा तुम्हारे पास नहीं रहूँगा।”[1]

---

1 यूहन्ना 12:7-8

उधर फ़सह की ईद के लिए ज़ायरीन जौक़-दर-जौक़ यरूशलम आ रहे थे। जब उन्होंने सुना कि हज़रत ईसा बैत-अनियाह में हैं तो बहुतों ने फ़ैसला किया कि वहाँ जाकर उनसे मिलें। इस तरह वह लाज़र के बारे में भी अपने तजस्सुस को पूरा कर सकते थे, जिसे उन्होंने मुरदों से जिलाया था। लीडरों की भरपूर मुख़ालफ़त के बावुजूद अवाम उनके हक़ में बहुत पुरजोश थे। उनके ताज़ातरीन मोजिज़े ने एक ताज़ा आग भड़का दी थी। भीड़ में बहुत-से ज़ायरीन ऐसे भी थे जो उन्हें दिल से प्यार करते थे, क्योंकि उन्होंने उन्हें तरह तरह की बीमारियों और बदरूहों से ख़लासी दिलाई थी और उनकी ख़ानदानी ज़िंदगी बहाल की थी। उन्होंने उनके दुख-ख़ौफ़ और दबाव को दूर किया था ताकि उनका दिल दुबारा हलका हो जाए। जब उन्होंने सुना कि हज़रत ईसा फ़सह की ईद मनाने के लिए यरूशलम आ रहे हैं तो उन्होंने उनका पुरजोश इस्तिक़बाल करने का तहैया कर लिया।

इस बार हज़रत ईसा यरूशलम में नए अंदाज़ से दाख़िल होने का फ़ैसला कर चुके थे। इसके बाद उन्हें और कोई फ़सह की ईद मनाने का मौक़ा नहीं मिलना था। वह जो ख़ुदा का बेऐब लेला हैं उन्हीं दिनों क़ुरबान होने को थे। लिहाज़ा वह बादशाह और अल-मसीह के तौर पर यरूशलम में दाख़िल होने को थे। मगर वह शहर में दाख़िल होते वक़्त शानदार जंगी घोड़े पर नहीं बल्कि गधी के बच्चे पर सवार होंगे ताकि ज़करियाह नबी की पेशगोई पूरी हो जो उसने पाँच सौ साल पेशतर की

थी कि “ऐ सिय्यून बेटी, शादियाना बजा! ऐ यरूशलम बेटी, शादमानी के नारे लगा! देख, तेरा बादशाह तेरे पास आ रहा है। वह रास्तबाज़ और फ़तहमंद है, वह हलीम है और गधे पर, हाँ गधी के बच्चे पर सवार है।”[1] उनके यों शहर में दाख़िल होने से ईमानदारों को वह निशान मिल जाएगा जिसके वह मुद्दतों से मुंतज़िर थे। साथ साथ यह अपने दुश्मनों यानी सरदारों के ख़िलाफ़ उनकी आख़िरी मुहिम होगी। हज़रत ईसा जानते थे कि सामने मौत है, मगर उनको यह भी इल्म था कि मैं उस तख़्त की तरफ़ बढ़ रहा हूँ जो अल्लाह ने मुझे दिया है। मैं फ़तह की राह पर गामज़न हूँ।

इस मक़सद के तहत हज़रत ईसा गधे के बच्चे पर सवार होकर यरूशलम को चले। उनके शागिर्दों का जोश ज़ाहिरी था। उनकी तवक़्क़ो के ख़िलाफ़ हर बात अच्छी तरह अंजाम पा रही थी। उनको महसूस हो रहा था कि आज हमारी ज़िंदगी का अज़ीमतरीन दिन है। अब अवाम को मालूम हो जाए कि अल-मसीह अपने आपको ज़ाहिर करने के लिए आ रहे हैं, कि वह मुल्क की बाग-डोर अपने हाथों में लेंगे। बड़े जोश के साथ उन्होंने गधे पर कपड़े डाले। उनके इर्दगिर्द के ज़ायरीन भी फ़ौरन वैसा ही करने लगे। हर एक हज़रत ईसा का शाहाना इस्तिक़बाल करने को तैयार हुआ। उनका ताज़ातरीन मोजिज़ा अभी सबको याद था। वह मौत से भी ज़ोरावर थे। शागिर्दों का जोशो-ख़ुरोश तमाम लोगों में फैल

1 ज़करियाह 9:9

गया। कई खजूरों की डालियाँ काट काटकर हज़रत ईसा की राह में बिछाने लगे। बाज़ ने तो अपने कपड़े उतारकर बिछा दिए। जो उनके आगे आगे जाते और पीछे पीछे आते थे वह पुकार पुकारकर कहने लगे, “इब्ने-दाऊद को होशाना!”[1]

आज हज़रत ईसा ने इस इस्तिक़बाल को क़बूल किया, क्योंकि यह उनका हक़ था। लेकिन कभी कभी वह जोश से भरे हुए अपने शागिर्दों पर एक ग़मनाक नज़र भी डाल देते। यहूदाह इस्करियोती लीडर बनकर लोगों को उभार रहा था कि वह और ज़ोर से नारे लगाएँ। लेकिन हज़रत ईसा उदास थे कि मैंने अपने अंजाम के बारे में जो बातें शागिर्दों को बताई थीं उनका उनके दिलों पर कोई असर नहीं हुआ। उनको अल-मसीह की सलीबी राह की ज़रा भी ख़बर नहीं। लगता था कि उनका ख़याल है कि अब हज़रत ईसा तख़्त पर क़ब्ज़ा करने की तरफ़ पहला क़दम उठा रहे हैं।

असल में हज़रत ईसा के यह क़रीबी दोस्त महसूस कर रहे थे कि अब अल-मसीह के तौर पर ज़ाहिर होने का निहायत मौज़ूँ मौक़ा है। अब उस्ताद को चाहिए कि दानाई के साथ दूसरा क़दम उठाएँ। वह रोमी हुकूमत और मज़हबी लीडरों को अपनी क़ुदरत इस तरह से दिखाएँ कि वह मुज़ाहमत किए बग़ैर राह से हट जाएँ। वह अपने आक़ा की उदासी से क़तअन बेख़बर थे। अगरचे हज़रत ईसा के चारों तरफ़ बड़ा हुजूम

---

1 मत्ती 21:9

था, लेकिन फिर भी वह अपने आपको तनहा महसूस कर रहे थे। वह जानते थे कि शैतान की अनदेखी क़ुव्वतें आख़िरी वार की तैयारी कर रही हैं। वह देख रहे थे कि इतने बड़े हुजूम में एक को भी ख़बर नहीं कि अल्लाह ने अल-मसीह के लिए कौन-सा रास्ता चुना है।

अब वह उस जगह पर पहुँच गए जहाँ से सड़क ज़ैतून पहाड़ के दामन में बल खाती हुई मुड़ती है और मुड़ते ही यरूशलम शहर सामने आ जाता है। हज़रत ईसा रुक गए। सब हैरान हो गए कि हज़रत ईसा को क्या हो गया है! वह बिलकुल ख़ामोश अपने ख़यालों में गुम रहे। फिर उनके रुख़सारों पर आँसू बहने लगे। उनकी आँखें सामने फैले हुए शहर पर जमी रहीं। शहर की हटधर्मी और अंधेपन पर उनका दिल भर आया। उन्होंने रोते हुए कहा, "काश तू भी इस दिन जान लेती कि तेरी सलामती किसमें है। लेकिन अब यह बात तेरी आँखों से छिपी हुई है। क्योंकि तुझ पर ऐसा वक़्त आएगा कि तेरे दुश्मन तेरे इर्दगिर्द बंद बाँधकर तेरा मुहासरा करेंगे और यों तुझे चारों तरफ़ से घेरकर तंग करेंगे। वह तुझे तेरे बच्चों समेत ज़मीन पर पटकेंगे और तेरे अंदर एक भी पत्थर दूसरे पर नहीं छोड़ेंगे। और वजह यही होगी कि तूने वह वक़्त नहीं पहचाना जब अल्लाह ने तेरी नजात के लिए तुझ पर नज़र की।"[1]

बहुत जल्द यह पेशगोई बड़े हौलनाक तरीक़े से पूरी होने को थी। कितने अफ़सोस की बात है कि यरूशलम के बसनेवाले उस हस्ती की

1 लूक़ा 19:42-44

तरफ़ से आँखें बंद कर लेनेवाले थे जो उनके लिए नजात लेकर आई थी।

जुलूस आगे बढ़ा तो लोगों में परेशानी फैलने लगी। हज़रत ईसा ज़ाहिर कर रहे थे कि मैं इस क़िस्म का लीडर नहीं जैसा कि तुम चाहते हो। मैं मुहब्बत, सुलह और अमन का बादशाह हूँ। अब हुजूम पर ज़ाहिर हो गया कि वह जंगजू सूरमा बनकर नहीं उठेंगे।

आख़िर जब जुलूस यरूशलम में दाख़िल हुआ तो सारे शहर में हलचल मच गई। हर कोई यह मालूम करने को दौड़ा कि क्या हो रहा है। लोग बड़े फ़ख़्र से कहने लगे, "यह गलील के नासरत का नबी हज़रत ईसा है।" अगले चंद दिनों में सारी आँखें हज़रत ईसा पर लगी रहीं। लेकिन शहर में आ जाने के बाद लोगों की उम्मीदों पर पानी फिर गया, क्योंकि अवाम को रोम के ख़िलाफ़ उभारने के बजाए वह ख़ामोशी से बैतुल-मुक़द्दस में इधर-उधर फिरने लगे। वह हर चीज़ को ऐसे देखते रहे जैसे आख़िरी बार देख रहे हों। वह गहरी सोच में डूबे हुए उन मक़ामों पर ध्यान देते रहे जहाँ उन्होंने अपने सुननेवालों को बड़ी गरमजोशी से अपने मक़सद के बारे में क़ायल करने की कोशिश की थी। अब उनका दिल ग़मनाक ख़यालों से भरा हुआ था। अब ख़िदमतगुज़ारी का वक़्त ख़त्म होनेवाला था।

ज़्यादा देर न गुज़री कि उन्हें रुकना पड़ा। अंधे और लँगड़े बैतुल-मुक़द्दस में उनके पास आ जमा हुए। जब वह उन्हें शफ़ा देने लगे तो कुछ बच्चों के पुरजोश नारे बुलंद हुए, "इब्ने-दाऊद को होशाना!"

तोमा बड़ी बेदिली से मत्ती से कहने लगा, "यह लड़के हुजूम की नक़ल कर रहे हैं। ऐसा मालूम होता है कि लोगों का जोशो-ख़ुरोश तो झाग की तरह जल्द ही बैठ गया है। उन्हें भी हमारी तरह उस्ताद से मायूसी हुई होगी। उनके रवैये को कौन समझ सकता है!"

मत्ती ने जवाब दिया, "मुझे भी समझ नहीं आई। कितना अच्छा मौक़ा था अपने आपको ज़ाहिर करते।" मत्ती तो अपनी मायूसी छिपाने की कोशिश कर रहा था, मगर अब उसका लबो-लहजा साथ नहीं दे रहा था। उसकी बुझी बुझी आँखें, भारी क़दम और ढीला बदन, ग़रज़ हर अंदाज़ से उसकी दिली कैफ़ियत ज़ाहिर हो रही थी। वह क़दरे परेशान होकर ज़ेरे-लब कहने लगा, "लगता है हम सबको ना-उम्मीदी ने घेर लिया है। और यहूदाह इस्करियोती को तो बहुत ही सख़्त सदमा हुआ है।"

अब इमाम और उलमा की तवज्जुह हज़रत ईसा की तरफ़ खिंच गई। साफ़ ज़ाहिर था कि उन्हें यह बात बिलकुल पसंद न थी। तोमा को भी इमामों की ख़फ़गी का एहसास हो रहा था। वह बार बार बच्चों को ग़ुस्से से घूरता रहा। उसने तंज़न कहा, "अगर आँखें आग उगल सकें तो यह बच्चे कब के भस्म हो गए होते।" वह फिर संजीदा हो गया।

उसकी आवाज़ में फ़िकरमंदी थी। "पता नहीं हमारे आक़ा का अंजाम क्या होगा! इन लीडरों को देखो। अब उनसे शिकायत करने लगे हैं। वह चाहते हैं कि बच्चों को उनकी तारीफ़ करने से रोक दें।"

हज़रत ईसा ने जवाब दिया, "क्या तुमने कलामे-मुक़द्दस में कभी नहीं पढ़ा कि 'तूने छोटे बच्चों और शीरख़ारों की ज़बान को तैयार किया है ताकि वह तेरी तमजीद करें'?"[1] यह कहकर हज़रत ईसा शागिर्दों को साथ ले बैतुल-मुक़द्दस से निकल गए। जब वह शहर से बाहर चलने लगे तो हर फ़रद अपने ही ख़यालात में ग़रक़ था। शागिर्दों के दिलों में हलचल मची हुई थी। उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। इसी हाल में वह ज़ैतून पहाड़ से गुज़रकर बैत-अनियाह की तरफ़ बढ़ गए। उन्हें इस बात की ख़ुशी थी कि एक और रात अपने ख़ास अज़ीज़ों के घर में ठहरेंगे।

दिन बड़ी हलचल और हंगामों में गुज़रा था। शागिर्द हैरानो-परेशान थे। एक बात वाज़िह हो गई थी कि उनके आक़ा को दुनियावी बादशाह बनने की ख़ाहिश नहीं है, वरना वह उन बातों का ज़िक्र न करते जो यरूशलम पर गुज़रने को थीं। शागिर्द इस ख़याल से थर्रा उठे कि मुक़द्दस शहर बिलकुल तबाहो-बरबाद होनेवाला है।

जहाँ तक यहूदाह इस्करियोती का सवाल था उसका दिल हज़रत ईसा से उचाट हो गया था कि उन्होंने इतना शानदार मौक़ा हाथ से

1 मत्ती 21:16

जाने दिया। वह दिल ही दिल में पेचो-ताब खा रहा था। “क्या हज़रत ईसा चाहते हैं कि उनके तमाम शागिर्द बैत-अनियाह की मरियम की तरह उनके क़दमों में बैठकर उनकी बातें सुनते रहें और बस? क्या वह चाहते हैं कि हम सब अपने मालो-असबाब से आएँ जैसे मरियम ने किया जिसने इतना क़ीमती इत्र उनके पाँवों पर डाला था?” यहूदाह की नफ़रत उसके दिल में पित का ज़हर घोल रही थी। क्या मुझे शागिर्द बनने का अच्छा मुआवज़ा नहीं मिलेगा? मुट्ठियाँ भींचते हुए उसके मन में बदले के ख़याल उभरने लगे। अब इबलीस उसके दिल पर पूरी तरह से क़ब्ज़ा करके उसे उसके आक़ा के ख़िलाफ़ क़दम उठाने के लिए उकसाने लगा। वह चाहता था कि वह उन्हें उसके दुश्मनों के हवाले कर दे। यों उस लमहे से यहूदाह किसी मौज़ूँ वक़्त की तलाश करने लगा कि हज़रत ईसा को उनके मुख़ालिफ़ों के हाथ में दे दे।

यहूदाह की ग़द्दारी

यहूदियों के लीडर बहुत ग़ुस्से में थे। एक मामूली से आदमी नासरत के ईसा को अल-मसीह की-सी इज़्ज़तो-ताज़ीम दी जा रही थी। उन्होंने अंदाज़ा लगाया कि अगर अवाम को इस तरह वरग़लाया जा सकता है तो हम भी उनकी इस कमज़ोरी का फ़ायदा उठाकर उन्हीं की आँखों के सामने उसकी इज़्ज़त को ख़ाक में मिला सकते हैं। उन्होंने एक मनसूबा बनाया। सदरे-अदालत के मुख़्तलिफ़ अफ़राद गुरोहों में बटकर हज़रत ईसा से ऐसे मुश्किल सवाल पूछें जिनसे वह रोमी क़ानून की ज़द में आ जाएँ और उनकी गिरिफ़्तारी आसान हो जाए। उन्होंने फंदे इस तरह तैयार किए कि एक न एक में तो वह ज़रूर ही फँस जाएँ।

यों जब हज़रत ईसा बैतुल-मुक़द्दस में आए तो बड़े बड़े इमाम, उलमा और बुज़ुर्ग उनके पास आए और पूछने लगे, "आप यह सब कुछ किस इख़्तियार से कर रहे हैं? किसने आपको यह करने का इख़्तियार दिया है?"

हज़रत ईसा ने जवाब दिया, “मेरा भी तुमसे एक सवाल है। इसका जवाब दो तो फिर तुमको बता दूँगा कि मैं यह किस इख़्तियार से कर रहा हूँ। मुझे बताओ, क्या यहया का बपतिस्मा आसमानी था या इनसानी?”[1]

बहुत-से लोग यह बहस सुनने को जमा हो गए थे। उनकी आँखों में अजीब ख़ुशी चमक उठी कि हज़रत ईसा ने कितना अच्छा जवाब दिया है। उनके लीडर सरगोशियों में इस मामले पर ग़ौरो-फ़िकर करने लगे। साफ़ मालूम होता था कि वह बहुत परेशान हैं। आख़िर वह हज़रत ईसा के पास वापस आकर कहने लगे, “हम नहीं जानते।”

हज़रत ईसा को मालूम था कि वह क्यों जवाब देने से कतराते हैं। उन रियाकारों ने सलाह की थी कि “अगर हम कहें कि यहया का बपतिस्मा आसमान की तरफ़ से था तो वह कहेगा कि फिर तुम ने उनका यक़ीन क्यों न किया जब उन्होंने तुम्हें बता दिया था कि मैं ख़ुदा का लेला हूँ? और न हम यह कहने का ख़तरा मोल ले सकते हैं कि यहया का बपतिस्मा आसमान की तरफ़ से नहीं था, क्योंकि अवाम उसकी बेहद इज़्ज़त करते हैं। वह सीधे हमारे ख़िलाफ़ उठ खड़े होंगे।”

उनके जवाब का इनकार करने पर हज़रत ईसा ने उनके सवाल का जवाब देने से भी इनकार कर दिया। अलबत्ता उन्होंने उन्हें एक तमसील सुनाई :

---

1 मरक़ुस 11:27-30

“किसी आदमी ने अंगूर का एक बाग़ लगाया। उसने उसकी चारदीवारी बनाई, अंगूरों का रस निकालने के लिए एक गढ़े की खुदाई की और पहरेदारों के लिए बुर्ज तामीर किया। फिर वह उसे मुज़ारेओं के सुपुर्द करके बैरूने-मुल्क चला गया। जब अंगूर पक गए तो उसने अपने नौकर को मुज़ारेओं के पास भेज दिया ताकि वह उनसे मालिक का हिस्सा वसूल करे। लेकिन मुज़ारेओं ने उसे पकड़कर उसकी पिटाई की और उसे ख़ाली हाथ लौटा दिया। फिर मालिक ने एक और नौकर को भेज दिया। लेकिन उन्होंने उसकी भी बेइज़्ज़ती करके उसका सर फोड़ दिया। जब मालिक ने तीसरे नौकर को भेजा तो उन्होंने उसे मार डाला। यों उसने कई-एक को भेजा। बाज़ को उन्होंने मारा-पीटा, बाज़ को क़त्ल किया। आख़िरकार सिर्फ़ एक बाक़ी रह गया था। वह था उसका प्यारा बेटा। अब उसने उसे भेजकर कहा, ‘आख़िर मेरे बेटे का तो लिहाज़ करेंगे।’ लेकिन मुज़ारे एक दूसरे से कहने लगे, ‘यह ज़मीन का वारिस है। आओ हम इसे मार डालें तो फिर इसकी मीरास हमारी ही होगी।’ उन्होंने उसे पकड़कर क़त्ल किया और बाग़ से बाहर फेंक दिया। अब बताओ, बाग़ का मालिक क्या करेगा? वह जाकर मुज़ारेओं को हलाक करेगा और बाग़ को दूसरों के सुपुर्द कर देगा।”[1]

अब तो लीडर आपे से बाहर हो गए। क्योंकि इस तमसील में हज़रत ईसा ने उन्हें बता दिया था कि तुम अल्लाह के मुख़तार हो। उसने

---

1 मरक़ुस 12:1-9

क़ीमती जानें तुम्हारे सुपुर्द की हैं। उसने बेशुमार नबी भेजे ताकि तुम से दरियाफ़्त करे कि तुम ने उन जानों का क्या किया। ख़ुदा तुम्हारी मुख़तारी में वफ़ादारी देखना चाहता था। लेकिन तुम ने उसे मायूस कर दिया। तुम मुख़तार होने की हैसियत को भुलाकर मालिक बन बैठे। जिनको अल्लाह ने भेजा था, उनको रद कर दिया यहाँ तक कि क़त्ल कर डाला। हज़रत यहया के साथ भी ऐसा ही सुलूक किया। लीडर इस बात पर भी पेचो-ताब खा रहे थे कि इस तमसील में हज़रत ईसा ने ख़ुद को “बेटा” कहा था। उनको यह भी मालूम हो गया कि वह हमारे इस मनसूबे को कि हम उसे क़त्ल करना चाहते हैं भाँप गया है। वह ग़ुस्से से इतना भर गए कि उसी वक़्त उन्हें गिरिफ़्तार कर लेना चाहते थे, लेकिन हुजूम के डर से उन पर हाथ न डाल सके। सदरे-अदालतवालों का पहला गुरोह तो शिकस्त खाकर चला गया। लेकिन उनको एतमाद था कि ग्रूप नंबर 2 या नंबर 3 ज़रूर हज़रत ईसा को फँसाने में कामयाब होगा।

जल्द ही दूसरा गुरोह आ पहुँचा। यह उन फ़रीसियों का था जो अपने आपको बहुत रास्तबाज़ समझते थे। उन्होंने कहा, “उस्ताद, हम जानते हैं कि आप सच्चे हैं और किसी की परवा नहीं करते। आप जानिबदार नहीं होते बल्कि दियानतदारी से अल्लाह की राह की तालीम देते हैं। अब हमें बताएँ कि क्या रोमी शहनशाह को टैक्स देना जायज़ है या नाजायज़? क्या हम अदा करें या न करें?”

अब वह ख़ामोशी से जवाब का इंतज़ार करने लगे। फ़िज़ा में एक तनाव था। अगर हज़रत ईसा कहते कि टैक्स देना जायज़ नहीं तो रोमी हुकूमत उनके ख़िलाफ़ हो जाती। और अगर यह कहते कि जायज़ है तो अवाम भड़क उठते, क्योंकि वह रोमी शहनशाह को अपना आक़ा तसलीम नहीं करते थे।

सामईन में खुसर-फुसर बुलंद हुई। उनको भी इस फंदे का एहसास हो गया था। उनकी आँखें आलिमों पर जमी रहीं जिन्होंने सच्चाई के मुतलाशियों का भेस बदल रखा था। देखें कि उस्ताद इस जाल से किस तरह बचते हैं!

हज़रत ईसा अपने मुख़ालिफ़ों की आँखों में आँखें डालकर देखते रहे, यहाँ तक कि उन्होंने निगाहें झुका लीं। फिर उन्होंने उनसे सवाल किया, "मुझे क्यों फँसाना चाहते हो? चाँदी का एक रोमी सिक्का मेरे पास ले आओ।"

उन्होंने एक सिक्का उन्हें दिया तो उन्होंने उसे ऊपर उठाया ताकि सब देख सकें और फिर उनसे सवाल किया, "किसकी सूरत और नाम इस पर कंदा है?"

उन्होंने हमज़बान होकर जवाब दिया, "शहनशाह का।" हज़रत ईसा ने उनसे कहा, "तो जो शहनशाह का है शहनशाह को दो और जो

अल्लाह का है अल्लाह को।" अब तो वह आलिम भी लाजवाब हो गए।[1]

यह कहकर हज़रत ईसा ने सियासी बहस में उलझने से इनकार किया। दूसरी तरफ़ सुननेवाले समझ गए कि शहरी हुक़ूक़ के साथ फ़रायज़ भी होते हैं। यह बात साफ़ थी कि हज़रत ईसा ऐसे इनसान को पसंद नहीं करते जो अपने शहरी फ़रायज़ पूरा करने से इनकार करता हो। वह यह भी समझ गए कि हम पर ख़ुदा की सूरत की छाप है। चाहे यह छाप कितनी भी घिस गई हो तो भी हम अल्लाह के हैं, इसलिए ज़रूर है कि हम अपना सब कुछ उसके हवाले कर दें। हमारा बदन, रूह, ज़हन और चाहतें सब उसी के लिए वक़्फ़ हों।

सदरे-अदालतवालों का यह दूसरा गुरोह भी मुँह की खाकर वापस चला गया। अब तीसरा गुरोह आ धमका। यह आज़ादख़याल सदूक़ियों पर मुश्तमिल था। वह मुरदों के जी उठने पर यक़ीन नहीं रखते थे। वह आला तबक़े से ताल्लुक़ रखते थे, इसलिए ज़्यादा ख़ुदएतमादी के साथ हज़रत ईसा के पास आए और कहने लगे, "उस्ताद, मूसा ने हमें हुक्म दिया कि अगर कोई शादीशुदा आदमी बेऔलाद मर जाए और उसका भाई हो तो भाई का फ़र्ज़ है कि वह बेवा से शादी करके अपने भाई के लिए औलाद पैदा करे। अब फ़र्ज़ करें कि सात भाई थे। पहले ने शादी की, लेकिन बेऔलाद फ़ौत हुआ। इस पर दूसरे ने उससे शादी

---

1 मरक़ुस 12:13-17

की, लेकिन वह भी बेऔलाद मर गया। फिर तीसरे भाई ने उससे शादी की। यह सिलसिला सातवें भाई तक जारी रहा। यके-बाद-दीगरे हर भाई बेवा से शादी करने के बाद मर गया। आख़िर में बेवा भी फ़ौत हो गई। अब बताएँ कि क़ियामत के दिन वह किसकी बीवी होगी? क्योंकि सात के सात भाइयों ने उससे शादी की थी।”[1]

हज़रत ईसा के चेहरे पर ताज्जुब के आसार साफ़ ज़ाहिर हुए। यह किताबे-मुक़द्दस के आलिम होते हुए ख़ुदा और उसकी पाक राहों से नावाक़िफ़ हैं! हज़रत ईसा थोड़ा-सा आगे बढ़कर उनसे कहने लगे, “तुम इसलिए ग़लती पर हो कि न तुम कलामे-मुक़द्दस से वाक़िफ़ हो, न अल्लाह की क़ुदरत से। क्योंकि जब मुरदे जी उठेंगे तो न वह शादी करेंगे न उनकी शादी कराई जाएगी बल्कि वह आसमान पर फ़रिश्तों की मानिंद होंगे। रही यह बात कि मुरदे जी उठेंगे। क्या तुमने मूसा की किताब में नहीं पढ़ा कि अल्लाह जलती हुई झाड़ी में से किस तरह मूसा से हमकलाम हुआ? उसने फ़रमाया, ‘मैं इब्राहीम का ख़ुदा, इसहाक़ का ख़ुदा और याक़ूब का ख़ुदा हूँ,’ हालाँकि उस वक़्त तीनों काफ़ी अरसे से मर चुके थे। इसका मतलब है कि यह हक़ीक़त में ज़िंदा हैं, क्योंकि अल्लाह मुरदों का नहीं, बल्कि ज़िंदों का ख़ुदा है। तुमसे बड़ी ग़लती हुई है।”[2]

1 मरक़ुस 12:18-23
2 मरक़ुस 12:24-27

ताईदी खुसर-फुसर की आवाज़ें उभरीं। उस्ताद ने सदूक़ियों को बहुत अच्छा जवाब दिया था। सामईन की बहुत हौसलाअफ़्ज़ाई हुई। वह समझ गए कि जो ख़ुदा के पास चले गए वह ज़िंदा हैं।

यह तीसरा गुरोह भी शिकस्त खाकर चला गया तो शरीअत का एक आलिम उठकर उनको आज़माने लगा। हर एक ने सुनने को कान खड़े कर लिए। सब हज़रत ईसा के और क़रीब आ गए। उसी वक़्त दाऊद भी अपने बाप और दोस्त यूहन्ना मरक़ुस के हमराह आ पहुँचा। उन्होंने शरीअत के आलिम की आवाज़ सुनी। वह हज़रत ईसा से पूछ रहा था, "उस्ताद, मैं क्या क्या करने से मीरास में अबदी ज़िंदगी पा सकता हूँ?"

हज़रत ईसा ने उससे कहा, "शरीअत में क्या लिखा है? तू उसमें क्या पढ़ता है?"

आलिम ने जवाब दिया, "'रब अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान, अपनी पूरी ताक़त और अपने पूरे ज़हन से प्यार करना।' और 'अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।'"

हज़रत ईसा ने कहा, "तूने ठीक जवाब दिया। ऐसा ही कर तो ज़िंदा रहेगा।"

शरीअत के आलिम के चेहरे से साफ़ ज़ाहिर हो रहा था कि वह इस बात पर ग़ौर कर रहा है। फिर भी वह बड़ी उलझन में पड़ गया। दाऊद मुसकराने लगा। उसे शरीअत के आलिम पर तरस आ रहा था। "मुझे

यक़ीन है कि उसे पसंद नहीं कि हर एक से भाई की-सी मुहब्बत रखी जाए।”

इफ़राईम भी हँस पड़ा, “लगता है कि बच निकलने का रास्ता ढूँड रहा है।”

और इसी तरह हुआ। शरीअत के आलिम की पेशानी पर बल पड़ गए। कहने लगा, “तो मेरा पड़ोसी कौन है?”

हज़रत ईसा ने जवाब में एक तमसील सुनाई :

“एक आदमी यरूशलम से यरीहू की तरफ़ जा रहा था।” सब लोग बड़ी तवज्जुह से सुनने लगे। यह सड़क वीरान और ख़तरनाक थी। वह बंजर पहाड़ी इलाक़े में से गुज़रती थी। वहाँ डाकू आज़ादाना घूमते-फिरते थे। उनकी तवक़्क़ो के मुताबिक़ हज़रत ईसा ने बात यों जारी की कि “यह बेचारा डाकुओं में घिर गया। उन्होंने उसके कपड़े उतार लिए और मारा भी और अध-मुआ छोड़कर चले गए।

“इत्तफ़ाक़ से एक इमाम भी उसी रास्ते पर यरीहू की तरफ़ चल रहा था। लेकिन जब उसने ज़ख़मी आदमी को देखा तो रास्ते की परली तरफ़ होकर आगे निकल गया। लावी क़बीले का एक ख़ादिम भी वहाँ से गुज़रा। लेकिन वह भी रास्ते की परली तरफ़ से आगे निकल गया।” हज़रत ईसा ने देखा कि सुननेवालों की निगाहों में उस मज़लूम के लिए रहम और ख़ुदा के संगदिल ख़ादिमों के लिए ग़ुस्सा झलक रहा है। सब लोग तवज्जुह से सुन रहे थे। उन्होंने बात जारी रखी, “फिर सामरिया

का एक मुसाफ़िर वहाँ से गुज़रा। जब उसने ज़ख़्मी आदमी को देखा तो उसे उस पर तरस आया। वह उसके पास गया और उसके ज़ख़्मों पर तेल और मै लगाकर उन पर पट्टियाँ बाँध दीं। फिर उसको अपने गधे पर बिठाकर सराय तक ले गया। वहाँ उसने उसकी मज़ीद देख-भाल की।" जब हज़रत ईसा ने सामरी का ज़िक्र किया तो सामईन हैरान रह गए। सामरी यहूदियों और ग़ैरयहूदियों के दरमियान शादियों की मख़लूत नसल थे, इसलिए यहूदी उनसे नफ़रत करते बल्कि उन्हें काफ़िर समझते थे। लेकिन यहाँ हज़रत ईसा एक सामरी की तारीफ़ कर रहे थे। इस सामरी ने उस मज़लूम को भाई जैसी मुहब्बत दिखाई और अपने फ़र्ज़ से बढ़कर उसकी ख़िदमत की। हज़रत ईसा ने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई। सब उनकी कहानी को समझ रहे थे। उन्होंने बात जारी रखी, "अगले दिन उसने चाँदी के दो सिक्के निकालकर सराय के मालिक को दिए और कहा, 'इसकी देख-भाल करना। अगर ख़र्चा इससे बढ़कर हुआ तो मैं वापसी पर अदा कर दूँगा।'"

शरीअत का आलिम बेज़ारी से सुन रहा था। अब हज़रत ईसा ने उसकी तरफ़ मुड़कर कहा, "अब तेरा क्या ख़याल है, डाकुओं की ज़द में आनेवाले आदमी का पड़ोसी कौन था? इमाम, लावी या सामरी?"

सबको साफ़ मालूम हो रहा था कि शरीअत के आलिम ने सामरी का नाम लेना भी गवारा न किया बल्कि बड़ी बेदिली से जवाब दिया, "वह जिसने उस पर रहम किया।"

हज़रत ईसा ने उससे कहा, “बिलकुल ठीक। अब तू भी जाकर ऐसा ही कर।”[1]

शरीअत का आलिम मायूस होकर चला गया। वह तमाम इनसानों के साथ भाइयों जैसा सुलूक करने और अल्लाह को सबका बाप मानने पर तैयार न था।

दाऊद हज़रत ईसा की तालीम की गहराई पर हैरान रह गया जबकि यूहन्ना मरक़ुस बहुत मुतमइन हुआ। वह बोला, “अब कोई आलिम हज़रत ईसा को आज़माने की फिर जुर्रत नहीं करेगा। उन्होंने सभों का मुँह फेर दिया है।”

अब हज़रत ईसा उन लीडरों से कुछ पूछने लगे, “तुम्हारा मसीह के बारे में क्या ख़याल है? वह किसका फ़रज़ंद है?”

उन्होंने जवाब दिया, “वह दाऊद का फ़रज़ंद है।”

उन्होंने पूछा, “तो फिर दाऊद रूहुल-क़ुद्स की मारिफ़त उसे किस तरह ‘रब’ कहता है? क्योंकि वह फ़रमाता है, ‘रब ने मेरे रब से कहा, मेरे दहने हाथ बैठ, जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँवों के नीचे न कर दूँ।’ दाऊद तो ख़ुद मसीह को रब कहता है। तो फिर वह किस तरह उसका फ़रज़ंद हो सकता है?”[2]

सब जानते थे कि अल-मसीह दाऊद बादशाह के घराने से आएगा। वह गोया दाऊद का फ़रज़ंद ठहरेगा। लेकिन साथ ही अल-मसीह अल्लाह

---

1 लूक़ा 10:25-37

2 मत्ती 22:41-45

का फ़रज़ंद भी होगा क्योंकि यसायाह नबी ने पेशगोई की थी कि 'वह अनोखा मुशीर, क़वी ख़ुदा, अबदी बाप और सुलह-सलामती का शहज़ादा कहलाएगा।'[1] लेकिन जब हज़रत ईसा दाऊद की नसल से पैदा हुए तो यहूदी लीडरों ने इस हक़ीक़त को मानने से इनकार कर दिया कि यह पेशगोई पूरी हो गई है। क्योंकि वह उनकी तवक़्क़ोआत पर पूरे नहीं उतरे थे। इसलिए उन्होंने उनके सवाल का जवाब देने से इनकार कर दिया।

इस नाज़ुक मसले पर बहस के दौरान शागिर्द बहुत बेचैन होते जा रहे थे। दाऊद, इफ़राईम और यूहन्ना मरक़ुस को उनकी जान की फ़िकर हुई। कहने लगे, "उस्ताद भूल गए हैं कि कैसे ख़तरनाक हालात में घिरे हुए हैं। लीडर पूरी ताक़त से उनके इर्दगिर्द घेरा डाले हुए हैं, और उनका ग़ुस्सा लमहा बलमहा बढ़ता जा रहा है।"

हज़रत ईसा ने इन सारी बातों को नज़रंदाज़ करते हुए उन पर एक और भरपूर वार किया। बोले, "शरीअत के उलमा से ख़बरदार रहो! क्योंकि वह शानदार चोग़े पहनकर इधर-उधर फिरना पसंद करते हैं। जब लोग बाज़ारों में सलाम करके उनकी इज़्ज़त करते हैं तो फिर वह ख़ुश हो जाते हैं। उनकी बस एक ही ख़ाहिश होती है कि इबादतख़ानों और ज़ियाफ़तों में इज़्ज़त की कुरसियों पर बैठ जाएँ। यह लोग बेवाओं

---

1 यसायाह 9 :6

के घर हड़प कर जाते और साथ साथ दिखावे के लिए लंबी लंबी दुआएँ माँगते हैं। ऐसे लोगों को निहायत सख़्त सज़ा मिलेगी।”[1]

यह एक अफ़सोसनाक हक़ीक़त थी कि अकसर लीडर सिर्फ़ अपने आप में मगन थे। उन्हें अल्लाह की इज़्ज़त की निसबत इबादतख़ाने में अपनी इज़्ज़त और मरतबे का ज़्यादा ख़याल होता था।

शागिर्दों के दिल धड़क रहे थे कि उनकी सारी बातों का अंजाम क्या होगा! यूहन्ना मरक़ुस ने वहाँ से चले जाने का फ़ैसला किया, क्योंकि वह हज़रत ईसा की इतनी सख़्त बातों का बुरा नतीजा नहीं देखना चाहता था। बा-दिले-नख़ास्ता इफ़राईम को भी उसके साथ जाना पड़ा। लेकिन दाऊद वहीं ठहरा रहा। उसने देखा कि सदरे-अदालत के दो रुकन नीकुदेमुस और अरिमतियाह का यूसुफ़ आ रहे हैं। दाऊद जानता था कि वह ख़ुफ़िया तौर पर हज़रत ईसा के पैरोकार हैं। जब भी मौक़ा मिलता वह हज़रत ईसा की हिमायत में बोलते लेकिन डरते डरते। अभी तक लोगों का ख़ौफ़ उन पर ग़ालिब था। दाऊद ने अपने मुंतशिर ख़यालात पर क़ाबू किया ताकि ध्यान से हज़रत ईसा की बातें सुन सके। अब हज़रत ईसा लीडरों को खरी खरी सुना रहे थे, “शरीअत के उलमा और फ़रीसी मूसा की कुरसी पर बैठे हैं। चुनाँचे जो कुछ वह तुमको बताते हैं वह करो और उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारो। लेकिन जो कुछ वह करते हैं वह न करो, क्योंकि वह ख़ुद अपनी तालीम के मुताबिक़ ज़िंदगी

1 लूक़ा 20:45-47

नहीं गुज़ारते।"[1] लीडरों का मज़हबी तसव्वुर सिर्फ़ ज़ाहिरदारी पर मबनी था लेकिन उनके दिल तलख़ी, हसद, ग़ुरूर और हटधर्मी से भरे हुए थे। ख़ुदापरस्ती के लबादे के नीचे ऐसे दिल छिपे हुए थे जो बेदीनी से लबरेज़ थे। हज़रत ईसा ने बड़े तीखे और चुभते हुए अलफ़ाज़ में इस रियाकारी की मज़म्मत की।

आख़िरकार उन्होंने कहा, "शरीअत के आलिमो और फ़रीसियो, तुम पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम नबियों के लिए क़ब्रें तामीर करते और रास्तबाज़ों के मज़ार सजाते हो। और तुम कहते हो, 'अगर हम अपने बापदादा के ज़माने में ज़िंदा होते तो नबियों को क़त्ल करने में शरीक न होते।' लेकिन यह कहने से तुम अपने ख़िलाफ़ गवाही देते हो कि तुम नबियों के क़ातिलों की औलाद हो। अब जाओ, वह काम मुकम्मल करो जो तुम्हारे बापदादा ने अधूरा छोड़ दिया था। साँपो, ज़हरीले साँपों के बच्चो! तुम किस तरह जहन्नुम की सज़ा से बच पाओगे? इसलिए मैं नबियों, दानिशमंदों और शरीअत के आलिमों को तुम्हारे पास भेज देता हूँ। उनमें से बाज़ को तुम क़त्ल और मसलूब करोगे और बाज़ को अपने इबादतख़ानों में ले जाकर कोड़े लगवाओगे और शहर बशहर उनका ताक़्क़ुब करोगे। नतीजे में तुम तमाम रास्तबाज़ों के क़त्ल के ज़िम्मेदार ठहरोगे ...।"[2]

1 मत्ती 23:2-3
2 मत्ती 23:29-35

हज़रत ईसा की आँखों से ग़म झलक रहा था। वह ख़ुदा के उस ग़ज़ब के बारे में सोच रहे थे जो कोई 40 बरस बाद यरूशलम और उसके बाशिंदों पर नाज़िल होनेवाला है। वह लीडरों के क़ातिलाना मनसूबे के बारे में भी सोच रहे थे। आनेवाले दिनों में वह न सिर्फ़ उन्हें बल्कि उनके बहुत-से पैरोकारों को भी क़त्ल कर देंगे।

फिर उनके ख़याल बह निकले, "हाय यरूशलम, यरूशलम! तू जो नबियों को क़त्ल करती और अपने पास भेजे हुए पैग़ंबरों को संगसार करती है। मैंने कितनी ही बार तेरी औलाद को जमा करना चाहा, बिलकुल उसी तरह जिस तरह मुरग़ी अपने बच्चों को अपने परों तले जमा करके महफ़ूज़ कर लेती है। लेकिन तुमने न चाहा। अब तुम्हारे घर को वीरानो-सुनसान छोड़ा जाएगा। क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ, तुम मुझे उस वक़्त तक दुबारा नहीं देखोगे जब तक तुम न कहो कि मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है।"[1]

यह आख़िरी लफ़्ज़ थे जो उन्होंने यहूदी लीडरों से कहे। वैसे भी अब से वह उनसे कुछ और सुनने को तैयार न थे। अब वह अपने मुख़ालिफ़ को मौत के घाट उतारने के लिए अदलो-इनसाफ़ के तमाम तक़ाज़ों को पीठ पीछे फेंकने पर आमादा थे। नीकुदेमुस और यूसुफ़ बहुत परेशान थे। वह जानते थे कि इन खरी खरी बातों से हज़रत ईसा ने उन्हें जगाने की आख़िरी कोशिश की थी। मगर सब बेसूद। सिर्फ़ एक उम्मीद बाक़ी

1 मत्ती 23:37-39

थी कि जिस तरह वह पहले उनके चंगुल से बच निकलते रहे शायद अब भी बच निकलें।

अब सदरे-अदालत ने हज़रत ईसा के मामले को पूरी संजीदगी के साथ अपने हाथ में ले लिया। लेकिन उनको गिरिफ़्तार करने का कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था। ऐन उसी वक़्त किसी ने हज़रत ईसा के एक शागिर्द यहूदाह इस्करियोती के आने की इत्तला दी। बड़ी ग़ैरमुतवक़्क़े जगह से इमदाद आ गई। जल्दी से यहूदाह को उनके सामने पेश किया गया। ख़ूबरू नौजवान, आँखों से ज़िहानत टपकती हुई वह बहुत अच्छा लग रहा था। उन्हें उसके आने के मक़सद पर शक होने लगा। लेकिन यहूदाह ने उनको ज़्यादा देर अंधेरे में नहीं रहने दिया। एक होशियार सौदागर की तरह वह सौदाबाज़ी करने लगा। "अगर मैं उसे तुम्हारे हवाले कर दूँ तो मुझे क्या दोगे?" लमहे-भर को मुकम्मल ख़ामोशी छा गई। यह शख़्स कितनी संगदिली से अपने मालिक को बेच रहा था! किस बात ने इसे ऐसा करने पर उभारा? जब लीडरों की हैरानी दूर हुई तो उन्होंने इस सुनहरी मौक़े से पूरा पूरा फ़ायदा उठाने का इरादा कर लिया। तय पाया कि अगर यहूदाह हज़रत ईसा को उनके हवाले कर दे तो उसे चाँदी के तीस सिक्के दिए जाएँगे।

उस वक़्त से यहूदाह मौक़ा तलाश करने लगा कि अपने आक़ा को उनके दुश्मनों के हवाले कर दे। हज़रत ईसा ने इतना अरसा उसे बरदाश्त किया था, उसके लिए दुआ माँगने में रातें गुज़ारी थीं, तो भी उनकी यह

मुहब्बत यहूदाह को इस घिनौने मनसूबे से न हटा सकी। हज़रत ईसा ने अल्लाह की वह बादशाही क़ायम नहीं की थी जिसमें यहूदाह को आला रुतबा मिलने की उम्मीद थी। अब उसने उस्ताद से इंतक़ाम लेने की तरफ़ पहला क़दम उठा लिया था।

सारा मामला ऐसे कारोबारी अंदाज़ में निमटाया गया कि कौंसल के बाज़ अर्कान के दिल भी काँप गए। "क्या कोई उतना भी गिर सकता है जितना कि यहूदाह इस्करियोती?"

लेकिन यहूदाह के साथ मामला दरअसल लीडरों की अपनी ख़राब हालत का आईनादार था। हज़रत ईसा ने उनके बारे में सच ही फ़रमाया था कि उनके दिलों से ख़ुदा से और सच्चाई से मुहब्बत उठ चुकी है।

फ़सह की ईद की ज़ियाफ़त

फ़सह की ईद का वह दिन आ पहुँचा जब यहूदी लेले क़ुरबान करते थे। शागिर्दों में उम्मीद की एक नई लहर उभरने लगी। यह उम्मीद लीडरों की शिकस्त से पैदा हुई थी। "हो सकता है कि आनेवाले ऐयाम में हज़रत ईसा अपनी क़ुव्वत ज़ाहिर करें और अल-मसीह के तौर पर अपना जायज़ मक़ाम हासिल कर लें।"

लेकिन यहूदाह इस्करियोती समझ गया था। उसने ज़मीन पर अल्लाह की बादशाही का ख़ाब देखना छोड़ दिया था। अगला क़दम उठाने के लिए ज़रूरी था कि उसे मालूम हो कि हज़रत ईसा अपने शागिर्दों के साथ फ़सह की ईद कहाँ मनाएँगे। उसके ख़याल में वह मौक़ा हज़रत ईसा को गिरिफ़्तार कराने के लिए बहुत मौज़ूँ होगा। यहूदाह लीडरों से तारीफ़ का बड़ा ख़ाहिशमंद था। इसलिए उसने फ़ैसला किया कि मैं अपने मनसूबे को पूरी सरगरमी से पूरा करूँगा। लेकिन एक बात से

बचना ज़रूरी था कि हज़रत ईसा की गिरिफ़्तारी के मौक़े पर अवाम भड़क न उठें।

आख़िर वह दिन आ पहुँचा जब घरों में लेले ज़बह किए जाते और रात के लिए ज़ियाफ़तों का एहतमाम किया जाता था। शागिर्दों ने हज़रत ईसा से पूछा कि फ़सह कहाँ तैयार किया जाए? थोड़ी देर तक हज़रत ईसा सबको गहरी नज़रों से देखते रहे। आख़िर में उनकी निगाह यहूदाह पर आकर रुक गई। उसके सरापा में एक तनाव था, और अंदाज़ में बेरुख़ी। हज़रत ईसा ने फ़ैसला किया कि हम अपने ग़द्दार शागिर्द को फ़सह की ज़ियाफ़त को ख़राब करने का मौक़ा नहीं देंगे। क्योंकि यह फ़सह की ईद मेरे और मेरे शागिर्दों के लिए बहुत अहम है। उन्होंने शमाऊन पतरस और यूहन्ना को यह पुरअसरार हिदायात दीं, "जब तुम शहर में दाख़िल होगे तो तुम्हारी मुलाक़ात एक आदमी से होगी जो पानी का घड़ा उठाए चल रहा होगा। उसके पीछे चलकर उस घर में दाख़िल हो जाओ जिसमें वह जाएगा। वहाँ के मालिक से कहना, 'उस्ताद आपसे पूछते हैं कि वह कमरा कहाँ है जहाँ मैं अपने शागिर्दों के साथ फ़सह का खाना खाऊँ?' वह तुमको दूसरी मनज़िल पर एक बड़ा और सजा हुआ कमरा दिखाएगा। फ़सह का खाना वहीं तैयार करना।"[1]

यहूदाह ने किसी तरह अपनी मायूसी को ज़ाहिर न होने दिया। लेकिन दिल ही दिल में वह अफ़सोस कर रहा था कि हज़रत ईसा को अपने

1 लूक़ा 22:10-12

शागिर्दों के हलक़े से ग़द्दारी का एहसास हो गया है, इसी लिए तो उन्होंने उस शख़्स से पहले ही इंतज़ाम कर रखा था। ख़ौफ़ की एक लहर यहूदाह के सर से पाँव तक गुज़र गई। उसने हिसाब लगाया कि कामयाबी हासिल करने के लिए बहुत तेज़ी मगर एहतियात के साथ क़दम उठाने की ज़रूरत है।

शमाऊन पतरस और यूहन्ना बिन ज़बदी बड़े दोस्ताना रूह में शहर की तरफ़ रवाना हुए। शमाऊन कहने लगा, "पहली फ़सह को मनाए बहुत अरसा हो गया है। तक़रीबन 1500 साल।"

यूहन्ना ने उसकी हाँ में हाँ मिलाकर कहा, "हम अंदाज़ा भी नहीं लगा सकते कि जब बेदीन फ़िरऔन ने हमारे बापदादा पर ग़ुलामी के जुए को सख़्त कर दिया तो उनको कैसे मुश्किल हालात और किस मुसीबत का सामना था! अल्लाह ने कितना रहम किया कि मूसा नबी को उनकी रिहाई के लिए बरपा किया। अपने उस अज़ीम नबी की मारिफ़त उसने फ़िरऔन और मिसरियों पर अपनी क़ुदरत ज़ाहिर की।"

यूहन्ना ने हैरानी से अपना सर हिलाया। "फ़िरऔन ने ख़ुदा की क़ुदरत को देखा, मगर फिर भी उसका हुक्म मानने से इनकार करता रहा। हालाँकि हज़रत मूसा ने उसे ख़बरदार भी किया था कि अगर वह अल्लाह के लोगों को रिहा नहीं करेगा तो उसी रात हर ख़ानदान का पहलौठा बच्चा हलाक हो जाएगा।"

शमाऊन पतरस ने यूहन्ना को याद दिलाया कि “हमारी क़ौम के लोग तो ख़ुदा से हिदायात लेते थे। उनको साफ़ साफ़ हिदायात दी गईं कि उस रात मौत के फ़रिश्ते से किस तरह बचना होगा। हुक्म मिला कि हर ख़ानदान एक एक लेला ज़बह करे और उस लेले का ख़ून दरवाज़े की चौखट के ऊपर और पहलुओं पर लगाया जाए। इस ख़ून के निशान से मौत का फ़रिश्ता उनको पहचान लेगा। इनसानी पहलौठों के एवज़ लेला पहले ही क़ुरबान हो चुका है। सज़ा पूरी हो चुकी है। अगर हमारे लोग भी अल्लाह की ना-फ़रमानी करते तो ज़रूर मौत का शिकार होते।”

वह ख़ुशी ख़ुशी आगे बढ़ रहे थे। यूहन्ना ने अपने साथी को याद दिलाया, “क्या अल्लाह के हक़ीक़ी लेले को सचमुच अभी क़ुरबान होना है? मुझे आज भी वह दिन याद है जब हमारे आक़ा दरियाए-यरदन पर आए थे। उस वक़्त यहया नबी किस तरह हज़रत ईसा की तरफ़ इशारा करके कहने लगे, ‘देखो, यह अल्लाह का लेला है जो दुनिया का गुनाह उठा ले जाता है।’”[1]

दोनों अपने अपने ख़यालात में गुम आगे बढ़ते गए। चलते चलते यूहन्ना को अपने आक़ा के बारे में एक नया ख़ौफ़ घेरने लगा। हाल ही में उन्होंने उन्हें यह कहकर चौंका दिया था कि “तुम जानते हो कि दो दिन के बाद फ़सह की ईद शुरू होगी। उस वक़्त इब्ने-आदम को दुश्मन के हवाले किया जाएगा ताकि उसे मसलूब किया जाए।”[2] यूहन्ना बोला,

---

1 यूहन्ना 1:29-30

2 मत्ती 26:2

“मैं तो तसव्वुर भी नहीं कर सकता कि सचमुच ऐसा ही होगा। सलीब तो संगीनतरीन मुजरिमों के लिए होती है!”

शमाऊन पतरस ने कहा, “भई, इस वक़्त हमें अपने ख़यालात फ़सह की तक़रीब पर मरकूज़ रखने चाहिएँ।”

मनज़िल पर पहुँचे तो सब कुछ बआसानी हो गया। जिस आदमी का ज़िक्र किया गया था वह भी मिल गया। वह उनका मुहतरम दोस्त यूसुफ़ बिन साऊल निकला। उसने हसबे-मामूल बड़े अदब के साथ उन्हें बालाखाना दिखाया। दोनों शागिर्द फ़ौरन मुख़्तलिफ़ खाने तैयार करने में लग गए। बड़े एहतियात से उन्होंने कड़वे साग-पात, चटनियाँ और मशरूब तैयार किए। लेले को पकाने और भूनने में तो ख़ास एहतियात की ज़रूरत थी। चंद घंटों की मेहनत के बाद उनको तसल्ली हुई कि अब हर चीज़ ठीक तरह से तैयार हो गई है। पानी का वह घड़ा भी मौजूद है जिससे आनेवालों के पाँव धोने हैं। चिलमची और तौलिया भी रखे हुए हैं।

आख़िर शमाऊन पतरस थककर बैठ गया। “आओ यूहन्ना, थोड़ी देर सुस्ता लें। देर हो रही है। चाँद निकल रहा है। हमारे साथी भी आते ही होंगे।” यूहन्ना उसके पास आ बैठा। पतरस ने हैरान होकर बात जारी रखी, “समझ में नहीं आता कि उस्ताद फ़सह खाने की जगह के लिए इतने मुहतात क्यों हैं! इसके अलावा मैं एक और बात से भी परेशान

हूँ। यूसुफ़ बिन साऊल भी हमारी वजह से कुछ परेशान है। क्या कोई बात ऐसी है जिससे हम बेख़बर हैं?”

यूहन्ना ने थकन से आँखें बंद कर लीं। कहने लगा, “बाज़ार में तो तरह तरह की बातें हो रही हैं। जितनी सुनो, उतना ही ख़तरे का एहसास होता है। लेकिन हमारे मालिक ख़ाहमख़ाह ख़तरा मोल नहीं लेंगे। अगर हालात ऐसे ही ख़राब होते तो वह हरगिज़ यरूशलम में न ठहरते।” यूहन्ना के होंटों पर हलकी-सी मुसकराहट आई। उसने बात जारी रखी, “दोस्त, फ़िकर न करो। चलो हम अपने आपको आज की ख़ास रात के लिए तैयार करें। क्या पता कि अल्लाह की बादशाही आज रात ही क़ायम हो जाए!”

शमाऊन पतरस ने मुँह बनाया। उसने यूहन्ना को याद दिलाया, “अल्लाह की बादशाही के मौज़ू पर तो हमारे अपने दरमियान कितनी बार झगड़े हो चुके हैं। ज़रा सोचो कितनी बहस हुई थी कि इस बादशाही में किस किस को ऊँचा मरतबा मिलेगा!”

यूहन्ना की त्योरी चढ़ गई। उसे याद थी कि इस बात से हज़रत ईसा किस क़दर ग़मगीन हुए थे। बड़ा बनने की इनसानी आरज़ू उनके दिलों में जड़ पकड़े हुए थी, और उनमें से कोई भी इस ख़ाहिश से बाज़ आने को तैयार न था। कुछ सोचते हुए यूहन्ना ने शमाऊन पतरस से पूछा, “क्या ख़याल है, दूसरे शागिर्द जलते तो नहीं कि तुम, तुम्हारा भाई याक़ूब और मैं हज़रत ईसा के इतने ज़्यादा क़रीब हैं?”

पतरस सोच में पड़ गया। “हाँ, यह हो तो सकता है। लेकिन उनको यह बात समझनी चाहिए कि कोई भी शागिर्द उस्ताद के जितना चाहे क़रीब हो सकता है।” फिर उसने ज़ोरदार आवाज़ में कहा, “एक बात तो साफ़ है कि हमारे आक़ा किसी की तरफ़दारी नहीं करते। वह हम सबसे यकसाँ मुहब्बत रखते हैं।” फिर उसने अपनी थकी हुई टाँगों को दबाते हुए कहा, “मुझे याद है कि एक दिन जब हम कफ़र्नहूम में अपने घर को जा रहे थे तो हज़रत ईसा अपनी मौत की बात करने लगे। लेकिन हमने तवज्जुह ही न दी। हम अपनी ही बातों में मगन थे। उस वक़्त हम यह तय करने की कोशिश कर रहे थे कि हममें से बड़ा कौन है? नतीजा यह निकला कि जब हम घर पहुँचे तो सब एक दूसरे से नाराज़ थे। हमारे आक़ा को हमारी गुफ़्तगू का पहले ही इल्म था। उन्होंने पूछा, ‘तुम लोग रास्ते में क्या बातचीत कर रहे थे?’ हमने शर्म के मारे मुँह बंद रखे। मगर वह हम सबको ऐसे देखते रहे जैसे कोई बड़ी अहम बात बतानेवाले हों। आख़िर उन्होंने फ़रमाया, ‘जो अव्वल होना चाहता है वह सबसे आख़िर में आए और सबका ख़ादिम हो।’”[1]

यूहन्ना को यह वाक़िया ख़ूब याद था। वह कहने लगा, “सबका ख़ादिम बनना तो बेहद मुश्किल है। लेकिन हमारे आक़ा बिलकुल ऐसा ही करते हैं। उन्होंने अपने बारे में फ़रमाया है कि ‘मैं हलीम हूँ और दिल

1 मरक़ुस 9:35

का फ़रोतन।’ और यह है भी बिलकुल सच। उनकी ज़िंदगी हिल्म और फ़रोतनी की मिसाल है।”

सीढ़ियों पर जूतियों की चाप सुनाई दी। तोमा और याक़ूब आ पहुँचे। उन्होंने बताया कि “आक़ा लोगों की तवज्जुह से बचना चाहते हैं, इसलिए फ़ैसला हुआ कि हम दो दो और तीन तीन होकर यहाँ आएँ। थोड़ी देर बाद दूसरे साथी भी आ जाएँगे।”

बातें करते करते सारे जमा हो गए। मेज़ पर बैठने से पहले शागिर्दों को यह देखकर अफ़सोस हुआ कि पाँव धोने के लिए कोई नौकर मौजूद नहीं। उनमें से हर एक ऐसी घटिया ख़िदमत करने के लिए तैयार नहीं था। उनके गर्द-आलूद पाँव और धोने-धुलाने का मौजूद इंतज़ाम उनको याद दिला रहा था कि कोई न कोई कमी रह गई है। उनके आक़ा के चेहरे पर भी उदासी छाई हुई थी।

ताहम फ़सह खाने की रस्म इस तरह शुरू हुई जैसे सब कुछ ठीक-ठाक हो। पहला प्याला भरा गया और बारी बारी सबको दिया गया। यूहन्ना हज़रत ईसा के पास बैठा था। उसने साग-पात और चटनी हज़रत ईसा को पकड़ाई। फिर वह बारी बारी मेज़ पर बैठे तमाम अफ़राद को दी गई।

वह सब खा रहे और बातें कर रहे थे कि अचानक हज़रत ईसा उठ खड़े हुए और कहने लगे, “यूहन्ना, मेरा चोग़ा उतारने में ज़रा मेरी मदद करना। शुक्रिया। उम्मीद है उस घड़े में पानी होगा।”

यूहन्ना का ज़मीर उसे मलामत करने लगा। आक़ा क्या करने लगे हैं? उसने जल्दी से कहा, "हाँ उस्ताद, पानी है। लाऊँ?"

मगर ख़ुदावंद ने कहा कि जाकर बैठ जा। इधर सारी आँखें हज़रत ईसा पर जम गईं। सब घबरा गए कि हमारे आक़ा ने एक ग़ुलाम की तरह तौलिया बाँध लिया है। अब वह बरतन में पानी लाकर यूहन्ना से मुख़ातिब हुए, "अपने पाँव मेरी तरफ़ कर।"

यूहन्ना ने कुछ न समझते हुए अपने पाँव बढ़ाए तो शमाऊन पतरस उसे झिड़कने लगा, "यूहन्ना, अपने आक़ा से पाँव धुलवाते शर्म नहीं आती!"

लेकिन अब उस्ताद शमाऊन पतरस के पास आ पहुँचे, "शमाऊन बिन यूनुस ..."

शमाऊन पतरस बात काटते हुए बड़े जोश से एतराज़ करने लगा, "मैं कभी भी आपको मेरे पाँव धोने नहीं दूँगा"

उसके आक़ा की निगाहें बड़ी संजीदगी से उस पर जम गईं, "क्यों नहीं, पतरस? अगर मैं तुझे न धोऊँ तो मेरे साथ तेरा कोई हिस्सा नहीं होगा।"

अब हैरान होने की बारी पतरस की थी। बड़े जोश से वह पुकार उठा, "ओह! ओह! ... मेरी समझ में तो कुछ नहीं आ रहा। तो फिर ख़ुदावंद, न सिर्फ़ मेरे पाँवों बल्कि मेरे हाथों और सर को भी धोएँ!"

लेकिन हज़रत ईसा ने विज़ाहत की, “जिस शख़्स ने नहा लिया है उसे सिर्फ़ अपने पाँवों को धोने की ज़रूरत होती है, क्योंकि वह पूरे तौर पर पाक-साफ़ है।” फिर याक़ूब की तरफ़ बढ़ते हुए बोले, “तुम पाक-साफ़ हो, लेकिन सबके सब नहीं।” हज़रत ईसा को तो मालूम था कि कौन उन्हें दुश्मन के हवाले करेगा। इसलिए उन्होंने कहा कि सबके सब पाक-साफ़ नहीं हैं।

यह सुनकर सब दंग रह गए। इसका क्या मतलब कि सबके सब पाक-साफ़ नहीं? हर एक महसूस करने लगा कि मेरी ज़िंदगी में अभी तक कितनी बातें हैं जो उस्ताद को ना-पसंद हैं। सिर्फ़ यहूदाह इस्करियोती का दिल सख़्त रहा। उसने बड़ी बेहिस्सी से अपने पाँव धुलवा लिए। अपने गुमराह शागिर्द के लिए उस्ताद की मुहब्बत का यह आख़िरी इज़हार था।

जब सबके पाँव धोए जा चुके तो हज़रत ईसा अपनी जगह पर आ बैठे और कहा, “क्या तुम समझते हो कि मैंने तुम्हारे लिए क्या किया है? तुम मुझे ‘उस्ताद’ और ‘ख़ुदावंद’ कहकर मुख़ातिब करते हो और यह सही है, क्योंकि मैं यही कुछ हूँ। मैं, तुम्हारे ख़ुदावंद और उस्ताद ने तुम्हारे पाँव धोए। इसलिए अब तुम्हारा फ़र्ज़ भी है कि एक दूसरे के पाँव धोया करो। मैंने तुमको एक नमूना दिया है ताकि तुम भी वही करो जो मैंने तुम्हारे साथ किया है। मैं तुमको सच बताता हूँ कि ग़ुलाम अपने मालिक से बड़ा नहीं होता, न पैग़ंबर अपने भेजनेवाले से। अगर तुम यह

जानते हो तो इस पर अमल भी करो, फिर ही तुम मुबारक होगे। मैं तुम सबकी बात नहीं कर रहा। जिन्हें मैंने चुन लिया है उन्हें मैं जानता हूँ। लेकिन कलामे-मुक़द्दस की इस बात का पूरा होना ज़रूर है, 'जो मेरी रोटी खाता है उसने मुझ पर लात उठाई है।'"[1]

अभी शागिर्द उस्ताद की ख़िदमत के धचके से नहीं निकले थे कि उन्हें हज़रत ईसा के परेशान चेहरे से एहसास होने लगा कि वह कोई हौलनाक ख़बर सुनानेवाले हैं। थोड़ी ही देर बाद वह कहने लगे, "मैं तुमको सच बताता हूँ कि तुममें से एक मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा।"

सब दम बख़ुद रह गए। वह घूर घूरकर एक दूसरे को देखने लगे। "अपने आक़ा से ग़द्दारी? नामुमकिन!"

किसी ने कहा, "हो सकता है कि भुल-चूक से हम कोई अहमक़ाना हरकत कर बैठें लेकिन आपसे दीदा-दानिस्ता ग़द्दारी कभी नहीं कर सकते।"

शमाऊन पतरस पुकार उठा, "मैं अकसर बेसोचे-समझे बोल उठता हूँ। कहीं वह मैं ही तो नहीं हूँ?"

सब फ़िकरमंद होकर बारी बारी पूछने लगे, "ख़ुदावंद! क्या मैं हूँ?"

आख़िर शमाऊन पतरस ने यूहन्ना को इशारा किया, क्योंकि वह हज़रत ईसा के क़रीब बैठा हुआ था, "पता करो कि उस्ताद किसके बारे में कह रहे हैं।"

---

1 यूहन्ना 13:12-18

यूहन्ना ने पूछा, "ख़ुदावंद, यह कौन है?"

हज़रत ईसा ने जवाब दिया, "जिसे मैं रोटी का लुक़मा शोरबे में डुबोकर दूँ, वही है।" जब वह लुक़मा डुबोने लगे तो सबने साँसें रोक लीं। फिर उसने लुक़मा यहूदाह इस्करियोती को पेश किया।

शागिर्दों ने लंबा साँस लिया, "यहूदाह इस्करियोती। हज़रत ईसा का ग़द्दार?" इस उम्मीद से कि शायद उन्हें समझने में ग़लती हुई है उन्हों इस दिल हिलानेवाले ख़याल को अपने ज़हन से झटक दिया।

लेकिन हज़रत ईसा ने यहूदाह से कहा, "जो कुछ करना है वह जल्दी से कर ले।" वह चाहते थे कि वह जल्द से जल्द उनकी हुज़ूरी से निकल जाए। लेकिन हैरानी की बात है कि यहूदाह के जाते वक़्त भी दूसरों को रत्ती-भर शक न हुआ कि उसकी नीयत बुरी है। बाज़ ने ख़याल किया कि वह कुछ ख़रीदने गया है। दूसरों ने सोचा कि वह ग़रीबों को ख़ैरात देने गया है। इस मौक़े पर भी हज़रत ईसा ने उसे अपने साथियों के सामने बेनिक़ाब न किया। ग़द्दार के लिए उनकी मुहब्बत ऐसा करने की इजाज़त न देती थी। उन्होंने बड़ी मुहब्बत से अपने ग्यारह अज़ीज़ों पर निगाह डाली। बहुत कड़ा वक़्त आ रहा था। उनको उन पर तरस आया, और वह बाप की तरह उनसे मुख़ातिब हुए, "मेरे बच्चो, मैं थोड़ी देर और तुम्हारे पास ठहरूँगा। तुम मुझे तलाश करोगे, और जो कुछ मैं यहूदियों

को बता चुका हूँ वह अब तुमको भी बताता हूँ, जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते।”[1]

लमहे-भर को ख़ामोशी तारी रही। सबके ज़हन में कितने ही सवाल उभरने लगे। फिर सबकी ज़बानें उनकी हैरानी की तरजुमानी करने लगीं, “आक़ा! क्या आप हमें छोड़ जाएँगे? कहाँ जा रहे हैं? हमें क्यों छोड़ रहे हैं?” यह उनके लिए कितनी हौलनाक बात थी! अब बादशाहत क़ायम होने को है कि उनके आक़ा उन्हें छोड़ जाने की बातें करने लगे। लगता था कि वह उन्हें छोड़कर किसी ऐसी जगह जा रहे हैं जहाँ वह उनके पीछे नहीं आ सकते।

उनके सवालात मधम होते होते ख़त्म होकर रह गए, और गहरी ख़ामोशी छा गई। फिर हज़रत ईसा ने कहा, “मैं तुमको एक नया हुक्म देता हूँ, यह कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो। जिस तरह मैंने तुमसे मुहब्बत रखी उसी तरह तुम भी एक दूसरे से मुहब्बत करो। अगर तुम एक दूसरे से मुहब्बत रखोगे तो सब जान लेंगे कि तुम मेरे शागिर्द हो।”[2]

सब हज़रत ईसा की निगाहों से निगाहें हटाकर एक दूसरे की आँखों में झाँककर अपने सवालों के जवाब ढूँडने लगे। मगर सिवाए-हैरत के कुछ नज़र नहीं आ रहा था। “क्या हज़रत ईसा बताना नहीं चाहते हैं कि मैं कहाँ जा रहा हूँ, इसी लिए बात बदल दी है?”

---

1 यूहन्ना 13:21-33
2 यूहन्ना 13:34-35

शमाऊन पतरस से रहा न गया, “ख़ुदावंद, आप कहाँ जा रहे हैं? यक़ीनन कोई न कोई राह निकलेगी कि हम भी आपके हमराह जा सकें!”

हज़रत ईसा ने नफ़ी में सर हिलाया, “जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तू मेरे पीछे नहीं आ सकता। लेकिन बाद में तू मेरे पीछे आ जाएगा।”

शमाऊन पतरस अपने ख़ुदावंद के यह अलफ़ाज़ क़बूल करने को तैयार न था। उसने पूछा, “ख़ुदावंद, मैं आपके पीछे अभी क्यों नहीं जा सकता? मैं आपके लिए अपनी जान तक देने को तैयार हूँ।”[1] यह मज़बूत मछेरा ख़ुद को दूसरों से ज़्यादा बहादुर ख़याल करता था। कोई ख़तरा उसे हज़रत ईसा के पीछे आने से रोक नहीं सकता था। उसने सीना तानकर एलान किया, “दूसरे बेशक सब आपकी बाबत बरगश्ता हो जाएँ, लेकिन मैं कभी नहीं हूँगा।”[2] यह कहकर उसने ज़ोर से साँस लेकर बारी बारी हर साथी को ग़ौर से देखा। दूसरे उसके बयान से बेहद मुतअस्सिर हुए। बहुत ख़ूब!

लेकिन उसकी इस बात का हज़रत ईसा पर कोई असर न हुआ। उनके चेहरे पर बेयक़ीनी नज़र आई। यह देखकर शमाऊन पतरस की ख़ुदएतक़ादी को ठेस लगी। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। उसकी हैरानी और बढ़ गई जब हज़रत ईसा ने कहा, “तू मेरे लिए

1 यूहन्ना 13:36-37
2 मत्ती 26:33

अपनी जान देना चाहता है? मैं तुझे सच बताता हूँ कि मुर्ग़ के बाँग देने से पहले पहले तू तीन मरतबा मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।"[1]

वह दिलेर शागिर्द अब एक लफ़्ज़ भी न कह सका। घबराहट से उसकी आँखें फैल गईं, "मुझे क्या पेश आने को है?" उसे हज़रत ईसा की आवाज़ बहुत दूर से आती हुई महसूस होने लगी, "शमाऊन, शमाऊन! इबलीस ने तुम लोगों को गंदुम की तरह फटकने का मुतालबा किया है। लेकिन मैंने तेरे लिए दुआ की है ताकि तेरा ईमान जाता न रहे। और जब तू मुड़कर वापस आए तो उस वक़्त अपने भाइयों को मज़बूत करना।"[2]

रात काफ़ी भीग चुकी थी। उनकी फ़िकर और अंदेशों की कोई इंतहा न थी, लेकिन ऐसे में हज़रत ईसा एक चटान की मानिंद थे जिसे कोई हिला नहीं सकता और जिस पर मुकम्मल भरोसा किया जा सकता है। वह उन्हें तमाम ख़तरों से साफ़ बचा ले जाएगा। उन्हें उम्मीद थी कि ऐसे ख़तरे के वक़्त हज़रत ईसा उन्हें हरगिज़ तनहा नहीं छोड़ेंगे। वह तसल्ली देनेवाली बातें सुनने के मुंतज़िर थे लेकिन उन्हें मायूसी हुई। हज़रत ईसा उनके सामने आनेवाले वाक़ियात पेश करने लगे ताकि वह तैयार रहें। उन्होंने उन्हें ख़बरदार किया, "आज रात तुम सब मेरी बाबत बरगश्ता हो जाओगे, क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में अल्लाह फ़रमाता है, 'मैं चरवाहे

1 यूहन्ना 13:38
2 लूक़ा 22:31-32

को मार डालूँगा और रेवड़ की भेड़ें तित्तर-बित्तर हो जाएँगी।' लेकिन अपने जी उठने के बाद मैं तुम्हारे आगे आगे गलील पहुँचूँगा।"[1]

शागिर्दों को इल्म था कि ज़करियाह नबी ने बहुत अरसा पहले पेशगोई की थी कि चरवाहे को मारा जाएगा और भेड़ें तित्तर-बित्तर हो जाएँगी। क्या अल-मसीह और उनके शागिर्दों के साथ सचमुच ऐसा सुलूक किया जाएगा? बेशक हज़रत ईसा के अलफ़ाज़ में उम्मीद की किरण नज़र आ रही थी लेकिन शागिर्दों ने ख़याल तक न किया कि वह जी उठेंगे। उनको यके-बाद-दीगरे बहुत-से झटके लगे थे। अब और सदमे बरदाश्त करने की सकत न थी। वह हैरान थे कि हज़रत ईसा कितने एतमाद के साथ मुस्तक़बिल का सामना कर रहे हैं।

फ़सह की ईद की तक़रीबात शुरू हो चुकी थीं। शागिर्दों ने सोचा कि क्या हम उनको पूरा भी कर सकेंगे? किसी लमहा भी कोई ख़ौफ़नाक वाक़िया पेश आ सकता है।

---

1 मत्ती 26:31-32

सदरे-अदालत का हंगामी इजलास

बहार का सुहाना मौसम था। चाँदनी छिटकी हुई थी। यहूदाह इस्करियोती तंग गलियों में से क़दम बढ़ाए जा रहा था। शराब में मस्त रोमी सिपाही भीड़ में इधर-उधर घूम-फिर रहे थे।

घरों के अंदर से रौशनी बाहर गलियों में पड़ रही थी। बाज़ ख़ानदान इस वक़्त फ़सह का लेला खा रहे थे। अगरचे ईदे-फ़सह की मुक़र्ररा तारीख़ अगले दिन थी मगर ज़्यादा कट्टर यहूदी एक दिन पहले मनाते थे। क्योंकि अगले दिन शाम छः बजे से सबत शुरू हो जाता था। ईद की तक़रीबात मनानेवाले जानते थे कि जिस तरह रब ने हमारे बापदादा को ग़ुलामी से रिहाई दिलाई, उसी तरह वह एक दिन हमें एक और भी बड़ी ग़ुलामी से आज़ादी दिलाएगा।

यहूदाह इस्करियोती अपनी क़ौम पर अल्लाह के बड़े फ़ज़ल की ख़ुशी नहीं मना सकता था। अब उसके दिल पर शैतान की हुक्मरानी थी। उसके दिमाग़ पर एक ही ख़ब्त सवार था कि हज़रत ईसा को गिरिफ़्तार

करवा दे। वह इमामे-आज़म और सदरे-अदालत के दीगर अर्कान को दिखाना चाहता था कि तुम मुझ पर एतमाद कर सकते हो। जो काम वह इतने महीनों में नहीं कर सकते थे, यहूदाह उसे एक रात में कर दिखाने पर तुला हुआ था।

इमामे-आज़म की शानदार रिहाइशगाह मौक़े की मुनासिबत से बड़ी ख़ूबसूरती से चराग़ाँ थी। यहूदाह ने देखा कि बेशुमार नौकर-चाकर इधर-उधर आ-जा रहे हैं। उसके होंटों पर एक तलख़ मुसकराहट नमूदार हुई। “सचमुच कायफ़ा, उसका सुसर और सदूक़ियों के दीगर अर्कान यहूदी मुआशरे का आलातरीन तबक़ा हैं। वह क़दीम शुरफ़ा से ताल्लुक़ रखते हैं।” वह बड़े हसद से सोचने लगा कि कायफ़ा को वह सब कुछ हासिल है जो मैं अल्लाह की बादशाही में पाने की उम्मीद रखता था—इज़्ज़त, ताक़त और दौलत। उसके दिल में ग़ुस्से की एक लहर उठी। हज़रत ईसा ने मेरी सारी उम्मीदें ख़ाक में मिला दी हैं। जल्द ही उसको अज़ीम आदमी की हुज़ूरी में पहुँचा दिया गया। इमामे-आज़म बड़ी बेसब्री से यहूदाह का इंतज़ार कर रहा था।

यहूदाह कहने लगा, “आलीजाह। आपको फ़ौरन अक़्दाम करना चाहिए। हज़रत ईसा को पहले ही मुझ पर शक होने लगा है। अगर जल्दी करें तो उन्हें उस बालाखाने पर जा लेंगे जहाँ वह फ़सह की ईद मना रहे हैं। लेकिन मेरा ख़याल है हम वक़्त पर नहीं पहुँच पाएँगे। ख़ैर,

रहने दीजिए। अगर वह उस जगह नहीं मिले तो गत्समनी बाग़ में तो ज़रूर मिल जाएँगे।"

"शाबाश! ज़रूरी है हम उसे ख़ामोशी से गिरिफ़्तार करें। अवाम को कानों-कान ख़बर नहीं होनी चाहिए। शहर की गलियों में इतने लोग हैं कि खवे से खवा छिलता है। इनमें से किसी को पता न चले। हर घर बाहर से आनेवाले ज़ायरीन से भरा हुआ है, और फ़सील के बाहर कितने लोग झोंपड़ियाँ लगाए पड़े हैं, इसलिए राज़दारी बहुत ज़रूरी है। अगर उनको ख़बर हो गई तो नामालूम क्या हंगामा खड़ा कर बैठें।"

लमहे-भर को कायफ़ा जैसे यहूदाह को भूल गया हो। वह ख़ुदकलामी के अंदाज़ में बोलने लगा, "हम सबत से पहले पहले किस तरह हज़रत ईसा का क़िस्सा पाक कर सकेंगे?" उसकी छोटी छोटी आँखें जैसे सारी बातों का हिसाब लगा रही हों। "हाँ। कर सकेंगे। सबत तो कल शाम से शुरू होगा। लेकिन हम अगले हफ़्ते तक उसे क़ैदख़ाने में बंद नहीं रख सकते। इसका तो सवाल ही पैदा नहीं होता। अवाम को पता चल जाएगा और बलवा हो जाएगा। हमें इतनी सुरअत से काम करना होगा कि किसी की समझ में न आए कि क्या हो रहा है।" कायफ़ा कमरे में टहलने लगा, "हाँ। सब कुछ मुमकिन है। गिरिफ़्तार करना, मुक़दमा चलाना, सज़ा सुनाना और फ़ैसले की तसदीक़ करवाके अमल दरामद करना, कल शाम छः बजे से पहले पहले सब कुछ अंजाम पाएगा। क़िस्मत साथ दे तो सब कुछ हो सकता है।"

यहूदाह को अंदाज़ा हो गया कि कायफ़ा अजलत से काम करनेवाला है। जल्दी से सैक्रटरी को तलब किया गया। इमामे-आज़म ने जल्दी से हुक्म दिया, "सदरे-अदालत के तमाम अर्कान के पास हरकारे दौड़ाओ। इसी मकान में एक हंगामी इजलास होगा। कहला भेजो कि एक घंटे के अंदर अंदर सब पहुँच जाएँ। हाँ ... चंद गवाह भी तैयार रखो जो हज़रत ईसा के ख़िलाफ़ गवाही दें। दिमाग़ पर ज़ोर दो कि किस किसने उसकी शिकायत की है।"

अब कायफ़ा एकदम यहूदाह की तरफ़ मुड़ा, "यहूदाह, ईसा के साथ कितने आदमी हैं? ... तुम ने कहा ग्यारह? अच्छा। लेकिन बेहतर है कोई ख़तरा मोल न लिया जाए।" उसने तेज़ी से सैक्रटरी को हुक्म दिया, "अब जल्दी करो। यह हुक्म बैतुल-मुक़द्दस के हिफ़ाज़ती दस्ते के कप्तान को पहुँचाओ कि उतने सिपाही लेकर आए जो बारह ताक़तवर आदमियों पर क़ाबू पाने के लिए काफ़ी हो। हो सकता है उसके साथ ज़्यादा आदमी हों ... याद रखो। बहुत जल्दी है। भागकर जाओ।"

यों नीकुदेमुस को भी फ़सह के खाने से जल्दी जल्दी बुला लाया गया। वह यहूदाह की ग़द्दारी के बाइस बहुत ग़मगीन हुआ। उसका दिल टुकड़े टुकड़े हो गया। साफ़ ज़ाहिर था कि अब अदलो-इनसाफ़ का ख़ून हो रहा है। उसकी बातिनी कशमकश बढ़ गई। कितना अफ़सोस कि सदरे-अदालत के अराकीन हज़रत ईसा की गिरिफ़्तारी के लिए एक ग़द्दार को रिश्वत देने पर उतर आए हैं। मूसा नबी ने रिश्वत लेने-देने से

साफ़ मना किया था। वह मुंसिफ़ थे और उनका फ़र्ज़ था कि मज़लूम की हिमायत करें न कि उसकी गिरिफ़्तारी के लिए असबाब ढूँडने लगें!

हरकारे वापस लौटे, लेकिन नीकुदेमुस का रोआँ रोआँ काँप रहा था। उसे ज़रूरत महसूस हुई कि अपने दोस्त इफ़राईम से बात करे। जल्दी से उसने चोग़ा पहना और रवाना हो गया। इफ़राईम के घर का दोस्ताना माहौल और गरमजोशी से उसका दिल ज़रूर बहल जाएगा।

अपने पुराने दोस्त को देख दाऊद और रूत हैरान रह गए। उसका चेहरा फ़क़ था, और दिली कैफ़ियत साफ़ ज़ाहिर थीं। इफ़राईम ने उसे आराम से बिठाया, लेकिन नीकुदेमुस ने बताया कि मैं ज़्यादा देर नहीं ठहर सकता। उसने बड़ी मुश्किल से थूक निगला और बताने लगा, "दोस्तो! हम अल्लाह और उसकी पाक राहों से बहुत दूर हैं, यहाँ तक कि हमें उसका ख़याल भी नहीं। यक़ीन करें कि ख़ुदा का ग़ज़ब हम पर ऐसा नाज़िल होनेवाला है कि हमें याद रहेगा।"

दाऊद उछलकर खड़ा हो गया। "क्यों चचा नीकुदेमुस। आप इतने परेशान क्यों हैं? हमें बताएँ। हम किसी से हरगिज़ ज़िक्र नहीं करेंगे।"

रूत भी कहने लगी, "ज़रूर बताएँ। शायद हम आपकी कोई मदद कर सकें।"

मगर उनके बाप ने बा-इख़्तियार अंदाज़ में हाथ घुमाकर उन्हें ख़ामोश कर दिया। नीकुदेमुस ने कपकपाती आवाज़ में बताया, "अज़ीज़ दोस्तो! लगता है कि आज रात कायफ़ा और दूसरे संगदिल लीडर अल्लाह के

तमाम क़वानीन को रौंद डालेंगे। जो काम कोई न कर सका वह हज़रत ईसा ने कर दिखाया। उन्होंने उनकी हक़ीक़त उनके मुँह पर बयान कर दी। अब उनकी नफ़रत और जज़बाए-इंतक़ाम हज़रत ईसा को मौत के घात उतार डालेगा।"

इफ़राईम ने अपना हाथ माज़रत-ख़ाह अंदाज़ में उठाया, "दाऊद देखो, फ़िलहाल कोई नौकर कमरे में न आए। मेरे दोस्त, अब तुम अपने दिल का बोझ हलका कर सकते हो।"

नीकुदेमुस ने आह भरी, "इसमें कोई शक नहीं कि हज़रत ईसा मर्दे-ख़ुदा हैं। मेरा ईमान है कि अल्लाह ने उन्हें भेजा है। यक़ीन करो कि इमामों और आला तबक़े में बहुत-से अफ़राद उनके ख़ुफ़िया माननेवाले हैं, लेकिन हम कितने बुज़दिल हैं कि कायफ़ा, हन्ना और सदरे-अदालत के दीगर अराकीन के डर से ख़ामोश हैं। लेकिन कौन इबादतख़ाने से ख़ारिज होना गवारा करेगा! कौन है जो इस बात के लिए तैयार हो कि उसके साथ काफ़िरों का-सा सुलूक किया जाए।" उसका लहजा और तलख़ हो गया। "अगर आज रात मेरे अंदेशों की तकमील हो गई तो मेरा दिल टूट जाएगा। अगर वह रात को हज़रत ईसा को गिरिफ़्तार करें तो यह सदरे-अदालत के क़ानून की सरीह ख़िलाफ़वरज़ी होगी। सूरज ग़ुरूब होने के बाद किसी पर मुक़दमा चलाने की तो सख़्त मुमानअत है।"

इफ़राईम की पेशानी पर बल पड़ गए, "कायफ़ा को ईद पर सदरे-अदालत का हंगामी इजलास बुलाने की क्या सूझी! यह फ़सह की ईद है। इसके अलावा सुबह की क़ुरबानी से पहले मुक़दमे की काररवाई करना शरीअत के बिलकुल ख़िलाफ़ है।" वह ग़ुस्से से मेज़ पर उँगलियाँ बजाने लगा, "ऐसे लीडरों से अल्लाह बचाए! हज़रत ईसा ने बिलकुल दुरुस्त फ़रमाया था कि यह रियाकार हैं। ज़ाहिर रहमान का बातिन शैतान का! नीकुदेमुस मेरे दोस्त, क्या हो सकता है! आज रात तुम उनके हक़ में आवाज़ उठानेवाले अकेले हो गए और मुख़ालिफ़ इतने बेशुमार।"

नीकुदेमुस के होंट कपकपा रहे थे, "हमें हुक्म मिला है कि इमामे-आज़म की रिहाइशगाह पर इकट्ठे हों। इसका मतलब है कि सदरे-अदालत का इजलास ख़ुफ़िया और ज़ाती जगह पर हो रहा है। यह भी शरीअत के ख़िलाफ़ है। क़ानूनी जगह तो बैतुल-मुक़द्दस के सहन में तराशे हुए पत्थरों का हॉल है। और इजलास भी दिन के वक़्त होना लाज़िमी है।" उसने आह भरी, "जहाँ तक मुझे इल्म है ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। सदरे-अदालत का मक़सद तो लोगों के हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त है। फिर अदालत का इजलास भी खुला और लोगों के सामने होना है। दोस्तो, मुझे माफ़ करें लेकिन लगता है कि कायफ़ा पर शैतान सवार है।" उसने बड़े थके हुए अंदाज़ में ज़रा दम लिया। "हमारी शरीअत के मुताबिक़ अगर सज़ाए-मौत का फ़ैसला देना हो तो उसी दिन सज़ा नहीं सुनाई

जा सकती। मुक़दमे की काररवाई और सज़ा सुनाने में कम-से-कम 24 घंटों का वक़्फ़ा लाज़िमी है। यह एक हिफ़ाज़ती अक़दाम है ताकि जल्दबाज़ी में ग़लत फ़ैसला न कर दिया जाए।" नीकुदेमुस उठ खड़ा हुआ, "मुझे तो साफ़ नज़र आता है कि आज रात यह क़ानून भी तोड़ दिया जाएगा और कल सबत शुरू होने से पहले पहले एक बेगुनाह आदमी को क़ब्र में पहुँचा दिया जाएगा।" अब उसके लहजे में तंज़ की काट थी, "लेकिन कायफ़ा इस बात का यक़ीनी ख़याल रखेगा कि लाश सलीब पर न लटकती रहे ताकि सबत न टूट जाए! कैसी रियाकारी! बस दोस्तो! मुझे जाना है। अल्लाह मेरी मदद फ़रमाए। बेटी रूत मत रोओ। मुझे अफ़सोस है कि मैंने आप सबको परेशान कर दिया। लेकिन आप सबकी तसल्ली की सख़्त ज़रूरत थी।"

दाऊद जोश के साथ अपनी निशस्त से उठ खड़ा हुआ। "चचा नीकुदेमुस। क्या यह सब कुछ टल नहीं सकता? मतलब है हज़रत ईसा की गिरिफ़्तारी। क्या आपको इल्म है कि वह कहाँ हैं? मैं उन्हें ढूँडने की हर मुमकिन कोशिश करूँगा।"

मगर फ़रीसी ने सर हिलाया, "अब तक तो वह दुश्मनों के हाथों में आ भी चुके होंगे। उनका एक शागिर्द ग़द्दार निकला।"

इफ़राईम ने बड़ी मुहब्बत से अपने दोस्त के कंधों पर हाथ रखा। "आप बहुत थक गए हैं। मैं अपने नौकरों से कहता हूँ कि मेरी पालकी में आपको कायफ़ा के घर पहुँचा आएँ।"

नीकुदेमुस ने पुरज़ोर इनकार किया, “नहीं। शुक्रिया। आज रात में पैदल चलने को तरजीह दूँगा। ताज़ा हवा से दिमाग़ को फ़रहत मिलेगी, और मैं बेहतर तौर से सोच सकूँगा। किसी को ख़बर न हो कि मैं आपसे मिलने आया हूँ।” यह कहकर नीकुदेमुस रात की तारीकी में गुम हो गया। आज उसकी ज़िंदगी की मुश्किलतरीन रात थी। एक बेगुनाह के लिए ज़िम्मेदारी का बोझ बड़ी सख़्ती से महसूस हो रहा था। तंग गलियों में से गुज़रते हुए लग रहा था कि पाक ख़ुदा की निगाहें मुझे छेद रही हैं। कि वह पूछ रहा है, “क्या तू मेरी निसबत इनसानों से ज़्यादा डरता है? क्या तू उसकी मौत के फ़ैसले से इत्तफ़ाक़ करेगा जिसे मैंने दुनिया में भेजा है?”

आख़िर नीकुदेमुस को सदरे-अदालत के दूसरे अराकीन के क़दमों की चाप सुनाई देने लगी। अब वह क़दरे मुतमइन हुआ, क्योंकि उनके साथ गुफ़्तगू ने उसके ज़मीर की आवाज़ को दबा दिया। लेकिन उसका दिल उसी तरह रोता रहा। उसे ख़ामोश कराना मुमकिन न था, क्योंकि उसे पता था कि आज रात इनसाफ़ का ख़ून हो रहा है।

तारीकी की क़ुव्वतें

ग़द्दार यहूदाह के बालाखाने से जाने के बाद हज़रत ईसा को क़दरे इतमीनान हुआ। इस आख़िरी घड़ी में वह अपने शागिर्दों से ख़ास प्यार की बातें करने लगे। वह जानते थे कि अनक़रीब ही वह उनसे जुदा हो जाएँगे। एक क़रीबुल-मर्ग जिस तरह अपने अज़ीज़ों को ज़रूरी बातें बताता है, उसी तरह हज़रत ईसा अपने शागिर्दों को वह बातें बताने को थे जिनको वह कभी भुला न सकें।

फ़सह की ईद की तक़रीबात अभी ख़त्म नहीं हुई थीं। यूहन्ना जो सबसे छोटा था घराने के पहलौठे का किरदार अदा कर रहा था। वह हज़रत ईसा के सबसे क़रीब बैठा था। दस्तूर के मुताबिक़ उसने हज़रत ईसा से अर्ज़ की, "उस्ताद! आप रोटी पर बरकत माँगें।"

हज़रत ईसा ने रोटी लेकर शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके कहा, “यह मेरा बदन है जो तुम्हारे लिए दिया जाता है। मुझे याद करने के लिए यही किया करो।”[1]

यूहन्ना का तो सर घूमने लगा। “क्या? हज़रत ईसा का बदन क़ुरबानी की तरह खाया जाए? थोड़ी देर में भुना हुआ लेला खाया जाएगा जो याद दिलाता है कि वह हमारे बदले मुआ। लेकिन हज़रत ईसा का बदन क़ुरबानी! यह किस तरह?” यूहन्ना ने दूसरों की सवालिया निगाहों को भी देखा।

पतरस ने सरगोशी में कहा, “मेरी समझ में तो यह बात आई नहीं। आक़ा से कहो कि विज़ाहत करें।”

यूहन्ना ने सर हिलाया, लेकिन सोचा कि शायद जब मैं रस्म के मुताबिक़ दूसरी दरख़ास्त करूँ तो हमारे सवाल का जवाब ख़ुद बख़ुद मिल जाए। फिर अपने साथी शागिर्द की तरफ़ झुककर सरगोशी की, “शमाऊन पतरस, मेरी समझ में तो कुछ नहीं आ रहा।”

फिर यूहन्ना ने काँपते हाथों से दूसरा प्याला भरा। “उस्ताद! प्याले के लिए भी शुक्र करें!” हज़रत ईसा ने दुआ माँगी। फिर यूहन्ना ने वह सवाल पूछा जो पहलौठा बेटा रस्मी तौर पर इस मौक़े पर पूछा करता था, “इस इबादत का मतलब क्या है?” हज़रत ईसा ने जवाब दिया, “तुम सब इसमें से पियो। यह मेरा ख़ून है, नए अहद का वह ख़ून जो

1 1 कुरिंथियों 11:24

बहुतों के लिए बहाया जाता है ताकि उनके गुनाहों को माफ़ कर दिया जाए। ... मेरी शदीद आरज़ू थी कि दुख उठाने से पहले तुम्हारे साथ मिलकर फ़सह का यह खाना खाऊँ। क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ कि उस वक़्त तक इस खाने में शरीक नहीं हूँगा जब तक इसका मक़सद अल्लाह की बादशाही में पूरा न हो गया हो।”[1]

अब तक शागिर्द न समझ सके कि हज़रत ईसा अपना ख़ून बहाकर ख़ुदा और इनसान के दरमियान एक नया अहद बाँधने को हैं। जिस तरह दरवाज़े पर ख़ून के निशान से उस ख़ानदान का पहलौठा बच गया था उसी तरह जो अल-मसीह पर ईमान लाएँगे वह उनके ख़ून के बाइस अल्लाह के ग़ज़ब से बच जाएँगे।

लेकिन हज़रत ईसा की बात शागिर्दों को अजीब और डरावनी मालूम हुई। यूहन्ना अपने आक़ा की तरफ़ मुड़ा, “ख़ुदावंद, आपकी बात ने हमें ख़ौफ़ज़दा कर दिया है।”

हज़रत ईसा उनकी कैफ़ियत से वाक़िफ़ थे। उन्होंने बेचैन शागिर्दों को बड़ी शफ़क़त भरी निगाह से देखा और तसल्ली दी, “तुम्हारा दिल न घबराए। तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो, मुझ पर भी ईमान रखो। मेरे बाप के घर में बेशुमार मकान हैं। अगर ऐसा न होता तो क्या मैं तुमको बताता कि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने के लिए वहाँ जा रहा हूँ? और अगर मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँ तो वापस

1 मत्ती 26 :27; लूक़ा 22:15,16

आकर तुमको अपने साथ ले जाऊँगा ताकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम भी हो। और जहाँ मैं जा रहा हूँ उसकी राह तुम जानते हो।”[1]

तोमा ने जल्दी से बात काटी, “ख़ुदावंद, हमें मालूम नहीं कि आप कहाँ जा रहे हैं। तो फिर हम उसकी राह किस तरह जानें?”

हज़रत ईसा ने जवाब दिया, “राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ। कोई मेरे वसीले के बग़ैर बाप के पास नहीं आ सकता। अगर तुमने मुझे जान लिया है तो इसका मतलब है कि तुम मेरे बाप को भी जान लोगे। और अब से ऐसा है भी। तुम उसे जानते हो और तुमने उसको देख लिया है।”[2]

अब फ़िलिप्पुस को बोलने का मौक़ा मिल गया। बोला, “क्या मुमकिन है कि कोई ख़ुदा को देखे और ज़िंदा रहे? ऐ ख़ुदावंद, बाप को हमें दिखाएँ। बस यही हमारे लिए काफ़ी है।”

हज़रत ईसा ने बड़े ताज्जुब से फ़िलिप्पुस को देखा, “फ़िलिप्पुस, मैं इतनी देर से तुम्हारे साथ हूँ, क्या इसके बावुजूद तू मुझे नहीं जानता? जिसने मुझे देखा उसने बाप को देखा है। तो फिर तू क्योंकर कहता है, ‘बाप को हमें दिखाएँ’? क्या तू ईमान नहीं रखता कि मैं बाप में हूँ और बाप मुझमें है? जो बातें मैं तुमको बताता हूँ वह मेरी नहीं बल्कि मुझमें रहनेवाले बाप की तरफ़ से हैं। वही अपना काम कर रहा है।”[3]

---

1 यूहन्ना 14:1-4
2 यूहन्ना 14:6,7
3 यूहन्ना 14:9,10

यह सुनकर सब पर हैबत तारी हुई। उनको याद आया कि किस तरह हज़रत ईसा पानी की लहरों पर चलते हुए उनके पास आए थे और किस तरह आँधी और तूफ़ान को हुक्म देकर थमा दिया था। उनको पाँच हज़ार को मोजिज़ाना तौर से सेर करने का वाक़िया भी याद आया, और यह भी कि किस तरह उन्होंने मुहब्बत से छूकर कोढ़ियों को पाक-साफ़ किया था। जिस मुहब्बत भरे आसमानी बाप का वह बयान करते थे वह सचमुच उसमें से होकर चमकता था। यह सच है कि कोई भी पाक ख़ुदा को देखकर ज़िंदा नहीं रह सकता, क्योंकि वह ऐसे नूर में रहता है जो इनसान बरदाश्त ही नहीं कर सकता। इसी लिए उसने हज़रत ईसा को भेज दिया ताकि उनकी मारिफ़त इनसान ख़ुदा को देखे, उसकी सुने और उसके दिल की गहरी आरज़ू को जान ले। इस भेद का कुछ हिस्सा हज़रत ईसा के क़रीबतरीन दोस्तों पर रौशन हो गया।

हज़रत ईसा की अगली बातों से उनके ख़यालात का सिलसिला टूट गया, “अगर तुम मुझे प्यार करते हो तो मेरे अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारोगे। और मैं बाप से गुज़ारिश करूँगा तो वह तुमको एक और मददगार देगा जो अबद तक तुम्हारे साथ रहेगा यानी सच्चाई का रूह, जिसे दुनिया पा नहीं सकती, क्योंकि वह न तो उसे देखती न जानती है। लेकिन तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और आइंदा तुम्हारे अंदर रहेगा।”[1] और एक यक़ीन दिलानेवाली मुसकराहट के साथ

---

1 यूहन्ना 14:15-17

उन्होंने उनसे वादा किया, “मैं तुमको यतीम छोड़कर नहीं जाऊँगा बल्कि तुम्हारे पास वापस आऊँगा। थोड़ी देर के बाद दुनिया मुझे नहीं देखेगी, लेकिन तुम मुझे देखते रहोगे। चूँकि मैं ज़िंदा हूँ इसलिए तुम भी ज़िंदा रहोगे।”[1]

शागिर्द इस बात को बिलकुल न समझ सके कि थोड़ी देर में हज़रत ईसा हमको तो दिखाई देंगे मगर दुनिया को नहीं। हज़रत ईसा ने बात जारी रखी, “अगर कोई मुझे प्यार करे तो वह मेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारेगा। मेरा बाप ऐसे शख़्स को प्यार करेगा और हम उसके पास आकर उसके साथ सुकूनत करेंगे। ... यह सब कुछ मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए तुमको बताया है। लेकिन बाद में रूहुल-क़ुद्स, जिसे बाप मेरे नाम से भेजेगा तुमको सब कुछ सिखाएगा। यह मददगार तुमको हर बात की याद दिलाएगा जो मैंने तुमको बताई है। ... अब से मैं तुमसे ज़्यादा बातें नहीं करूँगा, क्योंकि इस दुनिया का हुक्मरान आ रहा है। ... मैं तुम्हारे पास सलामती छोड़े जाता हूँ, अपनी ही सलामती तुमको दे देता हूँ। और मैं इसे यों नहीं देता जिस तरह दुनिया देती है। तुम्हारा दिल न घबराए और न डरे।”[2]

---

1 यूहन्ना 14:18,19

2 यूहन्ना 14:23,25,26,30,27

खाना ख़त्म हुआ तो हज़रत ईसा ने हल्लेल[1] का दूसरा हिस्सा गाना शुरू किया। वह मौत के इतने क़रीब होने के बावुजूद बड़े इतमीनान से ख़ुदा की हम्द करने लगे, "इसी दिन रब ने अपनी क़ुदरत दिखाई है। आओ, हम शादियाना बजाकर उसकी ख़ुशी मनाएँ। ... तू मेरा ख़ुदा है, और मैं तेरा शुक्र करता हूँ। ऐ मेरे ख़ुदा, मैं तेरी ताज़ीम करता हूँ। रब की सताइश करो, क्योंकि वह भला है और उसकी शफ़क़त अबदी है।"[2]

वह सब अपनी आरामदेह निशस्तों से उठे और छत पर चले गए। रात की ख़ुनुक हवा से परेशान और घबराए हुए शागिर्दों को कुछ राहत मिली। उन्होंने सुकून का साँस लिया। पूरे चाँद की रौशनी में यरूशलम उनकी आँखों के सामने फैला हुआ था। बैतुल-मुक़द्दस शहर में सबसे मुमताज़ नज़र आ रही थी। मशरिक़ में ज़ैतून पहाड़ चाँदनी में नहाया हुआ दिखाई दे रहा था। कई ख़ानदान अभी तक ईद की तक़रीबात मनाने में मसरूफ़ थे। इतनी रात गए भी गलियों में ख़ासी भीड़-भाड़ थी। लगता था कि हज़रत ईसा इस ख़ामोश और पुरसुकून जगह से हटना नहीं चाहते।

अचानक उन्होंने सितारों भरे आसमान की तरफ़ आँखें उठाईं और बड़े एतमाद और अक़ीदत से दुआ माँगने लगे, "ऐ बाप, वक़्त आ गया है। अपने फ़रज़ंद को जलाल दे ताकि फ़रज़ंद तुझे जलाल दे। क्योंकि

1 हल्लेल = हम्द करना। इबरानी में ज़बूर 113 ता-118 को हल्लेल कहा जाता है। यह फ़सह की ईद पर पढ़े जाते हैं।

2 ज़बूर 118:24,28,29

तूने उसे तमाम इनसानों पर इख़्तियार दिया है ताकि वह उन सबको अबदी ज़िंदगी दे जो तूने उसे दिए हैं। ... ऐ बाप, मैं चाहता हूँ कि जो तूने मुझे दिए हैं वह भी मेरे साथ हों, वहाँ जहाँ मैं हूँ, कि वह मेरे जलाल को देखें, वह जलाल जो तूने इसलिए मुझे दिया है कि तूने मुझे दुनिया की तख़लीक़ से पेशतर प्यार किया है। ”[1]

यह दुआ सुनकर शागिर्दों के दिल बेबयान इतमीनान से मामूर हो गए। ताहम वह हैरान थे कि क्या हज़रत ईसा उन्हें अभी छोड़ने को हैं! उन्होंने जाने का ज़िक्र किया तो था, मगर लगता था कि फ़िलहाल इरादा बदल लिया है। हसबे-मामूल हज़रत ईसा उनके आगे आगे सीढ़ियाँ उतरे। वह चाहते थे कि यहूदाह से मुलाक़ात गत्समनी के बाग़ में हो, क्योंकि वहाँ बाग़ से निकलने के बहुत-से रास्ते थे हालाँकि ख़ुद तो वह नहीं भागने के। उस शाम हज़रत ईसा ने अपने शागिर्दों को बताया, “अब से मैं तुमसे ज़्यादा बातें नहीं करूँगा, क्योंकि इस दुनिया का हुक्मरान आ रहा है। उसे मुझ पर कोई क़ाबू नहीं है, लेकिन दुनिया यह जान ले कि मैं बाप को प्यार करता हूँ।”[2] कोई भी अचानक आकर हज़रत ईसा को नहीं पकड़ सकता था और न कोई उन पर क़ाबू पा सकता था। वह अपनी मरज़ी से ही ख़ुद को उनके हवाले कर देने को थे।

---

1 यूहन्ना बाब 17
2 यूहन्ना 14:30-31

तक़रीबन आधी रात का वक़्त था कि हज़रत ईसा और शागिर्द शहर के मशरिक़ी दरवाज़े से बाहर निकले। कोई पाँच मिनट में एक ढलवाँ रास्ते से वह क़िदरोन वादी में उतरे। हवा और सर्दी से बचने के लिए ज़ायरीन ने हर तरफ़ झोंपड़ियाँ खड़े कर रखे थे।

चंद नौजवान आग के गिर्द बैठे थे। अंगारे बुझकर काले हो रहे थे कि एक ने चरवाहों की धुन शुरू कर दी। हवा की लहरों पर उसकी ख़ुशकुन आवाज़ बुलंद हुई कि अचानक किसी बच्चे के रोने की तेज़ आवाज़ ने सारे सुकून को दरहम-बरहम कर दिया। लगता था कि अकसर लोग थककर सोने को थे।

जब शागिर्दों को यह मंज़र छोड़कर आगे बढ़ना पड़ा तो उन्हें अफ़सोस हुआ। गत्समनी बाग़ में पहुँचने के लिए क़िदरोन नाले के ख़ुश्क पाट से गुज़रना ज़रूरी था। थोड़ी ही देर बाद वह गत्समनी में पहुँच गए। यह जगह चारों तरफ़ से ज़ैतून के एक बड़े बाग़ से घिरी हुई थी। इस मानूस जगह पहुँचने पर शागिर्दों को अपने परेशान ज़हनों की वजह से ज़ैतून के दरख़्तों के साय भी ग़ैरहक़ीक़ी और आसेबज़दा मालूम होने लगे। उनके दिल फिर किसी अनजाने ख़ौफ़ से लरज़ने लगे। उनको अपनी रूह और बदन दोनों में इंतहाई थकावट महसूस हो रही थी। अब तो उनकी सिर्फ़ एक ही ख़ाहिश थी कि बस सोकर सब कुछ भूल जाएँ। वह अपनी परेशानियों में इतने डूबे हुए थे कि बिलकुल ही भूल गए कि हमारे उस्ताद किस क़दर थक गए होंगे। इधर हज़रत ईसा सलीब की

सोचों के बोझ तले दबे हुए थे। ऐसे में भला उन्हें सोने का ख़याल कैसे आ सकता था! इसके बजाए उनका दिल अपने आसमानी बाप से बातें करने को तड़प रहा था, क्योंकि सिर्फ़ वही उनकी तनहाई और दुख की शिद्दत को समझ सकता था।

शागिर्दों की आँखें नींद से बोझल होने लगीं। मगर उनसे ज़रा आगे बढ़ने से पहले हज़रत ईसा ने उन्हें ख़बरदार किया, "दुआ करो ताकि आज़माइश में न पड़ो।"[1] उन्हें पूरा इल्म था कि यही वक़्त है कि शैतान की क़ुव्वतें मुझ पर भरपूर हमला करेंगी। यह नूर और तारीकी के दरमियान फ़ैसलाकुन जंग होगी। इसलिए उन्होंने अपने शागिर्दों से कहा, "यहाँ बैठकर मेरा इंतज़ार करो। मैं दुआ करने के लिए आगे जाता हूँ।"[2] फिर वह शमाऊन पतरस, याक़ूब और यूहन्ना को साथ लेकर दूसरे शागिर्दों से थोड़ा आगे बढ़े। जब उन तीनों ने अपने ख़ुदावंद को निहायत परेशान और बेक़रार देखा तो वह भी बहुत घबरा गए। उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। उन्होंने उनसे कहा, "मैं दुख से इतना दबा हुआ हूँ कि मरने को हूँ। यहाँ ठहरकर जागते रहो।"[3]

लेकिन वह तीनों न समझ सके कि हमारे मालिक को क्या हो रहा है। उन्हें इतना बेक़रार देखकर उनके दिल फटने लगे। उनको ख़याल आया कि वह हमेशा ही मर्दे-ग़मनाक रहे हैं। हलीमी और मुहब्बत से लोगों

---

1 लूक़ा 22:40
2 मरक़ुस 14:32
3 मरक़ुस 14:34

की ख़िदमत करने के एवज़ उन्हें सिवाए-नफ़रत, ठट्ठों, और हिक़ारत के कुछ न मिला था। बल्कि उन्हें संगसार करने और जान से मार डालने के अक़दामात भी किए गए थे। लेकिन अब इन तीनों को एहसास हुआ कि इस वक़्त जो ग़म हज़रत ईसा को दरपेश है वह उन दुखों से बिलकुल मुख़्तलिफ़ है जो पहले बरदाश्त करते आए हैं। उन्होंने सोचा कि काश हमारे ज़हन से तारीक ख़यालात के यह बादल उठ जाएँ और हमारे बेक़रार दिलों को दुबारा तसल्ली और इतमीनान हासिल हो। लेकिन अपने मालिक की हालत को देखकर उनको अंदाज़ा हो रहा था कि हालात बहुत ख़ौफ़नाक हो रहे हैं।

सचमुच हज़रत ईसा के लिए बहुत ही मुश्किल घड़ी आ पहुँची थी। वह शुरू ही से अपने अंजाम को जानते थे। लेकिन अब जबकि वह वक़्त बिलकुल क़रीब आ रहा था तो उन्हें और भी सफ़ाई से नज़र आने लगा कि मुझे कैसी ख़ौफ़नाक हालत में से गुज़रना है। उन्होंने जान लिया कि शैतान अपने पूरे ग़ैज़ो-ग़ज़ब से नया हमला कर रहा है। फिर हज़रत ईसा ने वह दुख और अज़ियत देखी जो तमाम इनसानों के गुनाह की ख़ातिर बरदाश्त करने को थे। यसायाह नबी ने अल-मसीह के बारे में कहा था कि "लेकिन रब ने उसे हम सबके क़ुसूर का निशाना बनाया।"[1] यह तजरिबा उस हस्ती के लिए कितना ख़ौफ़नाक था जिसके दिल में कभी गुनाह का ख़याल तक नहीं आया। अब वह अल्लाह के ग़ज़ब का प्याला

1 यसायाह 53:6

पीने को थे। उस घड़ी ख़ुदा, हज़रत ईसा पर तमाम इनसानों के गुज़श्ता और आइंदा गुनाहों का बोझ लादने को था।

इस बेक़रारी में वह अपने तीनों क़रीबी शागिर्दों से भी अलग हो गए। उनसे थोड़ी दूर आगे जाकर वह मुँह के बल गिरे और दुआ माँगने लगे, "ऐ मेरे बाप, अगर मुमकिन हो तो दुख का यह प्याला मुझसे हट जाए। लेकिन मेरी नहीं बल्कि तेरी मरज़ी पूरी हो।"[1] ख़ुदा बाप भी जानता था कि इस वक़्त हज़रत ईसा को तसल्ली और तक़वियत की कितनी ज़रूरत है। इनसानों से तो तसल्ली की तवक़्क़ो नहीं हो सकती थी। उनके शागिर्द थकावट के मारे सो गए थे, हाँ उनके तीन क़रीबी शागिर्द भी बार बार सो जाते थे। तब अल्लाह ने दुनिया अल-मसीह की तक़वियत के लिए एक फ़रिश्ता भेज दिया।

उनके दिल की यह कशमकश लमहा बलमहा शिद्दत इख़्तियार करती जा रही थी। इस हालत में वह और भी दिलसोज़ी से दुआ माँगने लगे यहाँ तक कि उनका पसीना गोया ख़ून की बड़ी बड़ी बूँदें बनकर टपकने लगा।

हज़रत ईसा उन तीन शागिर्दों के पास फिर आए, लेकिन अफ़सोस, वह सो गए थे। उन्होंने ना-उम्मीद होकर शमाऊन पतरस से कहा, "क्या तुम लोग एक घंटा भी मेरे साथ नहीं जाग सके? जागते और दुआ करते रहो ताकि आज़माइश में न पड़ो। क्योंकि रूह तो तैयार है लेकिन जिस्म

1 मत्ती 26:39

कमज़ोर।” शागिर्दों से तो किसी मदद की हरगिज़ उम्मीद न की जा सकती थी। वक़्त तेज़ी से गुज़र रहा था। बहुत जल्द दुश्मन उन पर आन पड़ेगा। तब वह फिर चाँदनी में डूबे हुए दरख़्तों के झुंड में चले गए। फिर मुँह के बल गिरकर दिलसोज़ी से दुआ करने लगे, “मेरे बाप, अगर यह प्याला मेरे पिए बग़ैर हट नहीं सकता तो फिर तेरी मरज़ी पूरी हो।”[1] उन्होंने ख़ुद को पूरे तौर पर बाप के सुपुर्द कर दिया तो उनकी रूह कामिल इतमीनान से मामूर हो गई।

आख़िरी बार दुआ करके हज़रत ईसा फिर अपने शागिर्दों के पास आए। उन्होंने देखा कि वह गहरी नींद सो रहे हैं। उन्हें उनकी फ़िकर थी, क्योंकि यह दुश्मन का सामना करने को तैयार नहीं थे। इसलिए उन्होंने उन्हें फिर कहा, “जागो और दुआ करो ताकि आज़माइश में न पड़ो।”

वह यह कह ही रहे थे कि बाग़ का सुकून दरहम-बरहम हो गया। एक बड़ी भीड़ के आने और करख़्त आवाज़ों का शोर गूँज उठा। शागिर्द फ़ौरन बेदार हो गए। सारी फ़िज़ा ख़तरे से भरी थी। वह रहा! मशालें बेक़रारी से बाग़ में लहरा रही थीं। यूहन्ना घबराकर चिल्ला उठा, “बाग़ में मशालें। वह नज़दीक आ रहे हैं।”

शमाऊन पतरस की आवाज़ भी ख़ौफ़ से काँप रही थी। “शोर से अंदाज़ा है कि बदमाशों की बड़ी जमात आ रही है।”

---

1 मत्ती 26:40-42

अब बैतुल-मुक़द्दस के मुहाफ़िज़ों का कप्तान दरख़्तों के नीचे दिखाई देने लगा। उसके साथ इमामे-आज़म, फ़रीसी और सरदार चले आ रहे थे। लाठियों, तलवारों और दीगर हथियारों से लैस यह हुजूम किस क़दर डरावना था!

एक दम शागिर्द समझ गए कि जिस ख़ौफ़नाक बात का बयान हज़रत ईसा ने किया था वही हो रही है। शमाऊन पतरस ने जोश से अपनी तलवार सूँत ली। लमहे-भर को वह ठिठका। "यहूदाह इस्करियोती भीड़ की राहनुमाई कर रहा है। इसका मतलब यह है कि यह हुजूम हमें नुक़सान पहुँचाने को नहीं आया। वह ऐसी भीड़ को अपने मालिक और अपने साथियों के पास तो हरगिज़ नहीं लाएगा।"

अगरचे गुज़श्ता चंद दिनों के दौरान उन्होंने यहूदाह में ज़बरदस्त तबदीली देखी थी लेकिन किसी को शक भी नहीं गुज़रा था कि वह ग़द्दारी करेगा। ईद की मेज़ पर जो कुछ हुआ था उसे सिर्फ़ चंद-एक अफ़राद ही मामूली-सा समझ पाए थे। अब जबकि यहूदाह हज़रत ईसा की तरफ़ बढ़ा तो यूहन्ना के पसीने छूट गए। क्या वह उसे नुक़सान पहुँचाएगा? फिर उसे तसल्ली हो गई। यहूदाह ने बड़े दोस्ताना अंदाज़ में हज़रत ईसा को सलाम किया, "ऐ उस्ताद! सलाम।" लगता था कि वह हज़रत ईसा को अपनी गहरी दोस्ती का यक़ीन दिला रहा है, क्योंकि आगे बढ़कर उसने उसका बोसा लिया। उसकी आँखों में बेचैनी झलक

रही थी। साथ ही भीड़ की बेचैनी बढ़ गई। उन्होंने यों ही हथियार पकड़ लिए जैसे हमला करने को तैयार हों।

हज़रत ईसा ने बड़े ग़म से अपने साबिक़ शागिर्द से पूछा, "यहूदाह, क्या तू इब्ने-आदम को बोसा देकर दुश्मन के हवाले कर रहा है?"[1]

घबराए हुए शागिर्द बड़ी फ़िकरमंदी से सारा माजरा देख रहे थे। वह भाँप गए कि अब क्या होगा, तो भी हौसला करके वह अपने मालिक को बचाने को तैयार हो गए। वह जोश से पुकारे, "ख़ुदावंद, क्या हम तलवार चलाएँ?"[2] जैसे कि पहले भी कई बार हो चुका था, अब भी हज़रत ईसा ने उन्हें हैरान कर दिया। बड़े सुकून से वह आगे बढ़कर दुश्मनों के सामने खड़े हुए। साफ़ ज़ाहिर था कि वह अपनी सारी बातिनी कशमकश को पीछे छोड़ आए हैं। उन्होंने निहायत बेख़ौफ़ी से सवाल किया, "तुम किस को ढूँड रहे हो?"

उन्होंने जवाब दिया, "ईसा नासरी को।"

हज़रत ईसा ने कहा, "मैं ही हूँ।" उनकी बात में एक अजीब रोब था, और उनके दुश्मन पीछे हटकर ज़मीन पर गिर पड़े। हज़रत ईसा ने फिर पूछा, "तुम किस को ढूँड रहे हो?"

उन्होंने जवाब तो दिया कि "ईसा नासरी को।" लेकिन उनका एतमाद डाँवाँडोल होने लगा।

---

1 लूक़ा 22:48
2 लूक़ा 22:49

हज़रत ईसा ने फिर कहा कि "मैं तुमको बता चुका हूँ कि मैं ही हूँ। अगर तुम मुझे ढूँड रहे हो तो इनको जाने दो।"[1]

अब शमाऊन पतरस अपने आक़ा पर साबित करना चाहता था कि मुझ पर भरोसा किया जा सकता है। बड़े ग़ुस्से से उसने तलवार चलाना शुरू कर दिया। अचानक इमामे-आज़म के नौकर मलख़ुस ने चीख़कर अपने दाहिने कान की तरफ़ हाथ बढ़ाया। कान उड़ चुका था। गरम गरम ख़ून का फ़व्वारा उबल रहा था। मलख़ुस लड़खड़ा गया। उसका रंग फ़क़ हो गया। उसने जल्दी से एक दरख़्त का सहारा ले लिया। इससे पहले कि दुश्मन और भी बिफर जाएँ हज़रत ईसा की आवाज़ साफ़ उभरी, "तलवार को मियान में रख। क्या मैं वह प्याला न पियूँ जो बाप ने मुझे दिया है?"[2] इस मौक़े पर भी हज़रत ईसा के प्यार में कोई फ़रक़ न आया। उन्होंने बड़े प्यार से मलख़ुस के कान को छूकर ठीक कर दिया। फिर वह बोले, "क्या मैं डाकू हूँ कि तुम तलवारें और लाठियाँ लिए मेरे ख़िलाफ़ निकले हो? मैं तो रोज़ाना बैतुल-मुक़द्दस में तुम्हारे पास था, मगर तुमने वहाँ मुझे हाथ नहीं लगाया। लेकिन अब यह तुम्हारा वक़्त है, वह वक़्त जब तारीकी हुकूमत करती है।"[3]

अब तक सिपाही और कप्तान अपने हवास पर क़ाबू पा चुके थे। उन्होंने हज़रत ईसा को पकड़कर एक ख़तरनाक मुजरिम की तरह बाँध

---

1 यूहन्ना 18:4-9
2 यूहन्ना 18:10
3 लूक़ा 22:52-53

लिया। शागिर्द जो बेबसी से सब कुछ देख रहे थे उनके पाँवों तले से ज़मीन निकल गई। उन्हें लगा जैसे कोई डरावना ख़ाब देख रहे हों। ज़ैतून के दरख़्तों के आसेबज़दा साय, तिलस्माती माहौल, मशालों की थरथराती रौशनी में सख़्त ज़ालिमाना और डरावने चेहरे। बेशक उनसे हर ज़ुल्म की तवक़्क़ो रखी जा सकती है। शागिर्दों की समझ में नहीं आ रहा था कि हज़रत ईसा और यहूदाह इस्करियोती क्योंकर इस डरावने ख़ाब का हिस्सा हो सकते हैं। उनका ज़हन उनका साथ छोड़ गया।

उधर सिपाही हज़रत ईसा को बाँधने में मसरूफ़ थे इधर शागिर्द निहायत ख़ौफ़ज़दा होकर जिसका जिधर मुँह उठा सब भाग गए। अब हुजूम हज़रत ईसा को साथ लेकर क़िदरोन की वादी में से होता हुआ शहर को वापस आ गया। उनके शोर से कई ज़ायरीन चौंककर जाग उठे। सँभल सँभल के वह अपने झोंपड़ियों से बाहर निकले। अंधेरे में आँखों पर ज़ोर देकर देखने की कोशिश की कि मुजरिम कौन है। हुजूम की लाठियों और तलवारों से अंदाज़ा हो रहा था कि यह कोई निहायत ही ख़तरनाक मुजरिम होगा। लेकिन जब उन्होंने अज़ीम उस्ताद और शफ़ा देनेवाले को एक मुजरिम की तरह बँधा देखा तो उन्हें अपनी आँखों पर यक़ीन न आया। हज़रत ईसा की गिरिफ़्तारी की ख़बर शहर के बाहर तमाम ज़ायरीन में आग की तरह फैल गई।

सदरे-अदालत के सामने पेशी

जुलूस अपने क़ैदी को लेकर फ़ातेहाना अंदाज़ से आगे बढ़ता गया। दाऊद बिन इफ़राईम पछता रहा था कि मैं वक़्त पर उस्ताद के पास न पहुँच सका। अब वह भीड़ में शामिल हुआ। उसका दिल हज़रत ईसा के लिए निहायत दुखी था, क्योंकि वह तजरिबे से जानता था कि बाँधे जाने, गालियाँ खाने और क़ैद किए जाने का मतलब क्या होता है। सज़ा के लायक़ तो उनके पकड़नेवाले थे जो नफ़रत और बेइनसाफ़ी से भरे हुए थे। मशालों की थरथराती रौशनियाँ अजीब ही समाँ पेश कर रही थीं।

हुजूम ज्यों-ज्यों आगे बढ़ रहा था उसके जोशो-ख़ुरोश में इज़ाफ़ा होता जा रहा था। अब किसी ने पीछे की तरह इशारा किया। वहाँ एक आदमी कुछ फ़ासले पर उनका पीछा कर रहा था। एकदम सबकी तवज्जुह उस पर मरकूज़ हो गई। एक तेज़ आवाज़ दीवानावार गूँजी, “यह भी नासरी का साथी है। पकड़ो इसे।”

किसी और ने कहा, "अरे नहीं, यार। यह उन बारह में से नहीं है।"

लेकिन हुजूम के जज़बात भड़क उठे। कई आवाज़ें एक साथ उभरीं। "पकड़ लो! यह भी नासरी का साथी है।" कोई उसकी तरफ़ लपका। दाऊद ने उसे पहचान लिया। अरे, ख़ुदाया रहम फ़रमा! यह तो यूहन्ना मरक़ुस है। मज़बूत हाथों ने उसकी चादर को पकड़ लिया तो वह दहशत के मारे चादर छोड़कर भाग गया। दाऊद जितना देखता उसे यक़ीन होता गया कि आज रात शैतान और उसकी क़ुव्वतें बेक़ाबू हो गई हैं। अंजाम क्या होगा!

दाऊद रात की ठंडक और बेक़रारी से काँपने लगा। लेकिन उसे इतनी तसल्ली ज़रूर थी कि कम-से-कम यूहन्ना मरक़ुस बच निकला है। हज़रत ईसा इतने ख़ुशक़िसमत नहीं होंगे। उनकी राह यक़ीनी मौत को जा रही है। साफ़ ज़ाहिर था कि उनका मुक़दमा अदलो-इनसाफ़ के उसूलों के मुताबिक़ नहीं होगा। जब सदरे-अदालत के बुज़ुर्ग और इमाम ख़ुद उन्हें गिरिफ़्तार करने आए थे तो इनसाफ़ से फ़ैसला किस तरह कर सकते हैं! दाऊद जानता था कि मुक़दमे की काररवाई ख़ुफ़िया होगी। यह भी क़ानून की सरीह ख़िलाफ़वरज़ी थी। उसे लगा कि सारे मामले के पीछे साबिक़ इमामे-आज़म हन्ना का शैतानी दिमाग़ काम कर रहा है। वह कोई 20 साल तक इमामे-आज़म रहा था। अब तो उसे यह लक़ब एज़ाज़ी तौर पर ही हासिल था, लेकिन फिर भी सदरे-अदालत में उसी की बात वज़नी साबित हुआ करती थी। उसके बाद उसके पाँच बेटे

इमामे-आज़म के मरतबे पर रहे थे। और मौजूदा इमामे-आज़म कायफ़ा उसका दामाद था। उस जैसा होशियार आदमी एक गलीली को अपनी जगह लेने की हरगिज़ इजाज़त नहीं देगा, चाहे वह बड़ा नबी या अल-मसीह ही क्यों न हो।

सरदार बेसब्र हो रहे थे। वह बोले, “अरे कप्तान, अगर देर हो गई तो कुछ हासिल नहीं होगा। अगर नहीं चाहते कि ज़ायरीन तुम्हें संगसार कर दें तो जल्दी करो।”

कप्तान ने भी उनसे इत्तफ़ाक़ किया और क़ैदी को पसलियों में टहोका दिया जिससे उसे आगे को धक्का लगा, “अरे। तेज़ क़दम उठा” उसने रोब जमाया।

बैतुल-मुक़द्दस के एक मुलाज़िम ने उखड़कर तंज़ किया, “ऐ अल-मसीह! तू तो बहुत तेज़ चलता होगा। इतने पैरोकार बनाने के लिए हज़ारों मील चला होगा।” लेकिन इन सख़्तमिज़ाजों में से कई हज़रत ईसा का मज़ाक़ उठाने की हिम्मत नहीं रखते थे। उन्होंने उन्हें बैतुल-मुक़द्दस में तालीम देते सुना था, और उनकी तालीम उनके दिल में उतर गई थी। उन्होंने देखा था कि वह हर एक की बड़ी मुहब्बत से फ़िकर करते हैं, और अब भी वह बिलकुल पुरसुकून हैं। उन्हें अपने आप पर पूरा क़ाबू था। उन्हें इस बेइनसाफ़ी का जवाब देने की ज़रूरत महसूस नहीं हो रही थी। हाँ, उन्होंने यहूदाह इस्करियोती को भी “मेरे दोस्त”

कहा था जब उसने अपने उस्ताद को पकड़वाया था। सचमुच, यह आम इनसान का रवैया नहीं था।

अब जबकि हज़रत ईसा को धक्के मार मारकर आगे चलाया जा रहा था, उनको ठट्ठों में उड़ाया जा रहा था और हर तरह से उनकी बेइज़्ज़ती की जा रही थी तो उन्हें इस बात का बहुत ज़्यादा दुख हो रहा था कि मेरे शागिर्द मेरा साथ छोड़ गए हैं। उन्हें शुरू से ही इल्म था कि ऐसा होगा, लेकिन जब हो गया तो उनका दिल टूटने लगा। यहूदाह का बोसा भी उन्हें चुभ रहा था। यह उनके लिए निहायत अज़ियत का ख़याल था कि अब यहूदाह के लिए कोई उम्मीद बाक़ी नहीं रही है।

इस बेक़ाबू भीड़ से बहुत पीछे हज़रत ईसा के दो शागिर्द सहमे सहमे आ रहे थे। यह शमाऊन पतरस और यूहन्ना थे। यूहन्ना ने ग़मज़दा आवाज़ में कहा, “हम सभों ने अपने मालिक को अकेला छोड़ दिया। हम कैसे बुज़दिल हैं। हम कैसे बेवुक़ूफ़ों की तरह बढ़ बढ़कर उनके साथ मरने के वादे कर रहे थे।” उसके दाँत बज रहे थे। “आज रात कैसी हौलनाक है! इससे ज़्यादा दहशतनाक रात न कभी आई है न आएगी। हमारे उस्ताद ने अपने पकड़नेवालों से दुरुस्त ही कहा था, ‘यह तुम्हारी घड़ी और तारीकी की क़ुव्वत का इख़्तियार है।’ मुझे तो तारीकी की क़ुव्वतें अपने चारों तरफ़ महसूस हो रही हैं। ख़ौफ़ से मेरा तो दम निकला जा रहा है।”

लेकिन शमाऊन पतरस अब भी यह मानने को तैयार न था कि मुकम्मल शिकस्त हो गई है। "अभी भी सब कुछ नहीं गया," उसने अपनी और यूहन्ना की हौसलाअफ़्ज़ाई की। "मेरी सलाह है कि हम उस्ताद के पीछे जाएँ और मालूम करें कि क्या कुछ किया जा सकता है।" इस वक़्त भी वह इस बात का अफ़सोस कर रहा था कि मालिक ने क्यों दुश्मन के ख़िलाफ़ तलवार इस्तेमाल नहीं करने दी थी। उसे अभी तक एतमाद था कि मैं अपनी ताक़त से आगे बढ़ सकता हूँ। अब जबकि उसका साँस दुरुस्त हो गया था तो वह हैरानी से सोच रहा था कि मैं क्यों भाग खड़ा हुआ था।

उधर बुज़ुर्गों को तसल्ली हो रही थी कि हुजूम के शोर से शहर के लोग जाग नहीं उठे। वरना बलवा हो जाने का ख़तरा था। उम्मीद थी कि जब कायफ़ा के महल में पहुँच गए तो काम बन गया। कप्तान ने ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाकर अंदर जाने का मुतालबा किया। ख़ादिमा ने फ़ौरन दरवाज़ा खोल दिया। "कप्तान, आपने तो बहुत फुरती दिखाई है। मालिक हन्ना चाहते हैं कि क़ैदी को फ़ौरन उनके सामने पेश किया जाए।"

कप्तान ने सर हिलाया, "चलो, बहादुरो! पाँच-छह प्यादे इस नासरी को ले चलें। जल्दी करो! बाक़ी सहन में ठहरें। ठंड बहुत है। अलाव रौशन करो।"

सिपाही क़ैदी को लेकर अंदर ग़ायब हो गए। सब जानते थे कि अगर हन्ना इस वक़्त हज़रत ईसा पर मुक़दमा चलाए तो ग़ैरक़ानूनी बात है। मगर फिर भी उनको उसके सामने जा पेश किया। काररवाई का यह हिस्सा ग़ैररस्मी था। लेकिन सब जानते थे कि सारे मामले के पीछे हन्ना की ताक़त काम कर रही है, और वह सीधे ही काररवाई करेगा। रात आधी से ज़्यादा गुज़र चुकी थी, मगर जब क़ैदी उसके सामने लाया गया तो यह बूढ़ा आदमी बिलकुल चाक़ो-चौबंद और अपनी धुन का पक्का दिखाई दे रहा था। सरसरी-सी तफ़तीश के बाद उसने हज़रत ईसा को कायफ़ा के पास भेज दिया। वहाँ सदरे-अदालत के 71 अराकीन पहले ही जमा होकर मुक़दमे के शुरू होने का इंतज़ार कर रहे थे।

दाऊद घर चला गया। वह बेहद परेशान था। उसकी तो गोया दुनिया ही दरहम-बरहम हो गई थी। एक इनसान, एक नबी, हाँ शायद अल-मसीह पर मुक़दमा चलाया जा रहा है जबकि शैतानसिफ़त मुंसिफ़ फ़ैसला करने को बैठे हैं। अल्लाह कहाँ है? वह ऐसी बेइनसाफ़ी क्यों होने देता है?

जब बैतुल-मुक़द्दस के मुहाफ़िज़ दस्ते को अंदर बुलाया गया तो शमाऊन पतरस और यूहन्ना बाहर ही रहे। पतरस ने मायूस होकर कहा, “बस, बस। इससे आगे नहीं जा सकते।”

मगर यूहन्ना ने फ़ैसलाकुन अंदाज़ में कहा, “जा सकते हैं। पहले भी जा चुका हूँ। नौकर मुझे जानते हैं।”

शमाऊन पतरस की आँखों में उम्मीद की एक किरण चमकी, "मैं भूल गया था। तुम ज़बदी हो, यानी इमामों की नसल हो। लेकिन मेरा क्या होगा? क्या मुझे भी अंदर आने देंगे?"

यूहन्ना ने उसे वहीं इंतज़ार करने को कहा और अंदर जाकर दरवाज़े की मुहाफ़िज़ ख़ादिमा से बात की। ख़ुशक़िसमती से उसने उसे एकदम पहचान लिया। "अरे यूहन्ना बिन ज़बदी! मुद्दत हुई तुम्हें देखा ही नहीं। तुम कब से बैतुल-मुक़द्दस के मुहाफ़िज़ दस्ते में शामिल हो गए हो?"

यूहन्ना की फ़िकर कम हो गई। वह बोला, "दस्ते में तो शामिल नहीं हुआ। लेकिन अंदर आना चाहता हूँ।"

ख़ादिमा ने सर हिलाया, "क्यों नहीं! ज़रूर आओ। तुम्हारे तो इस घराने से देरीना ताल्लुक़ात हैं।"

यूहन्ना ने सिफ़ारिशी अंदाज़ में कहा, "मेरे साथ एक दोस्त भी है ..."

ख़ादिमा बड़ी फ़ैयाज़ी से मुसकराई, "उसे भी ले आओ।"

शुक्रिया अदा करके यूहन्ना शमाऊन पतरस को भी ले आया। जब शमाऊन दरवाज़े से गुज़रा तो ख़ादिमा बड़ी हैरान होकर बोली, "हैं! क्या तुम भी उसी के शागिर्दों में से नहीं हो?"

शमाऊन को सोचने का मौक़ा ही न मिला। उसके मुँह से जवाब निकल गया, "मैं नहीं हूँ।" उसकी आवाज़ उखड़ी उखड़ी-सी थी। उस्ताद का इनकार करके उसके दिल को धचका लगा।

“कोई बात नहीं।” ख़ादिमा की सुरीली आवाज़ उसका पीछा करती हुई उसके कानों से टकराई। लेकिन उसे कुछ ख़ुशी न हुई।

यूहन्ना तो हज़रत ईसा की ख़बर लेने गया और शमाऊन पतरस आग तापने बैठ गया। वह अंदर ही अंदर काँप रहा था। वह समझा था कि मैं बहुत ही दिलेर हूँ। लेकिन आज रात उसके अंदर का बुज़दिल इनसान उसे डराए जा रहा था।

एक दाढ़ीवाले ने इस काँपते हुए शागिर्द को हमदर्दी से देखा। उसने दोस्ताना आवाज़ में उसे दावत दी, “आग के नज़दीक आ जाओ, दोस्त।”

उसने बड़ी शुक्रगुज़ारी से दावत क़बूल कर ली। ज्योंही वह आग के क़रीब हुआ तो एक शोले ने भड़ककर उसका चेहरा साफ़ दिखाई दिया।

पास से गुज़रती हुई एक लौंडी चौंककर कहने लगी, “तुम भी तो हज़रत ईसा के साथी हो। क्योंकि गलीली हो।”

शमाऊन पतरस और भी डर गया कि आस-पास बैठे हुए लोग उसे दबोच लें। उसकी समझ-बूझ यही कह रही थी कि इस वक़्त बच निकलना ही ग़नीमत है। उसने कहा, “मैं नहीं जानता तुम क्या कह रही हो।” उसका दिल धक धक कर रहा था। लगता था मौत उसका पीछा कर रही है।

अब शमाऊन को अपने आपसे बेबयान नफ़रत होने लगी। उसने जान लिया कि मैं उतना दिलेर नहीं जितना समझता था। वह बहुत शरमिंदा हुआ। थोड़ी ही देर में मैंने अपने मालिक का दो बार इनकार कर दिया

है। मैं भी तो तक़रीबन यहूदाह इस्करियोती की सतह तक गिर गया हूँ। साथ साथ वह हैरान था कि हज़रत ईसा किस तरह अपने दुश्मनों का सारा बुरा बरताव बरदाश्त कर रहे हैं। इस वक़्त भी वह किसी तरह उन पर लानत नहीं कर रहे।

अब हज़रत ईसा रस्सियों से बँधे हुए सदरे-अदालत के सामने लाए गए थे। वह ज़रद रंग मगर पुरसुकून थे। अदालत के अराकीन नीमदायरे में बैठे थे। यों हर एक दूसरे को देख सकता था। क़ैदी अदालत की तरफ़ मुँह किए खड़े थे। उनके पीछे उलमा के तालिब-इल्म बैठे थे। उनको अकसर क़ैदी की हिमायत में बोलने की इजाज़त होती थी ताकि ऐसे मामलात में सूझ-बूझ पैदा करें। मगर क़ैदी की मुख़ालफ़त में बोलने की इजाज़त नहीं होती थी। लाज़िम था कि इलज़ाम की तसदीक़ गवाहों से की जाए। गवाहियों के लिए दो गवाहों की ज़रूरत होती थी। उनको अलग अलग परखा जाता था। जब फ़ैसला करने का मरहला आता तो हर रुकन अपनी राय देता। यह अमल सबसे कमउम्र रुकन से शुरू होकर सबसे उम्ररसीदा रुकन पर ख़त्म होता था।

यहूदी क़ानून की रू से मुलज़िम के ख़िलाफ़ साफ़ इलज़ाम का होना लाज़िमी था। यह सोचकर कायफ़ा ने हज़रत ईसा से उनके शागिर्दों और तालीमात के मुताल्लिक़ सवाल शुरू किए। उसे उम्मीद थी कि यह अपनी तालीमात के बारे में कोई ऐसा बयान देंगे जिसको तोड़-मरोड़ कर यह साबित किया जा सकेगा कि यह आदमी हुकूमत का दुश्मन है। यों

बाद में रोमी गवर्नर के सामने पेशी के मौक़े पर इस बयान को इस्तेमाल किया जा सकेगा। कायफ़ा हज़रत ईसा से मुख़ातिब हुआ, "हज़रत ईसा बिन यूसुफ़, तुम पर मूसा की शरीअत को तोड़ने का इलज़ाम है। ठीक ठीक बताओ कि दरअसल तुम ने लोगों को क्या क्या तालीम दी है? तुम ने अपने गिर्द इतने शागिर्द क्यों जमा कर रखे हैं? तुम्हारी सारी हरकतों के पीछे क्या है?"

हज़रत ईसा ने जवाब दिया कि "मैंने दुनिया में खुलकर बात की है। मैं हमेशा यहूदी इबादतख़ानों और बैतुल-मुक़द्दस में तालीम देता रहा, वहाँ जहाँ तमाम यहूदी जमा हुआ करते हैं। पोशीदगी में तो मैंने कुछ नहीं कहा। आप मुझसे क्यों पूछ रहे हैं? उनसे दरियाफ़्त करें जिन्होंने मेरी बातें सुनी हैं। उनको मालूम है कि मैंने क्या कुछ कहा है।"[1]

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता था, तो भी मुहाफ़िज़ों के कप्तान ने हज़रत ईसा के मुँह पर तमाँचा मार दिया और झिड़ककर कहा, "क्या यह इमामे-आज़म से बात करने का तरीक़ा है जब वह तुमसे कुछ पूछे?"[2]

कमरे में ग़ुस्से की लहर दौड़ गई। मुंसिफ़ों को हमदर्द होना चाहिए। हज़रत ईसा इस बेइनसाफ़ी पर क्या रदे-अमल दिखाएंगे? लेकिन क़ैदी ने एक बार फिर उन्हें हैरान कर दिया। बड़े वक़ार के साथ उसने जवाब

1 यूहन्ना 18:20-21
2 यूहन्ना 18:22

दिया, “अगर मैंने बुरी बात की है तो साबित कर। लेकिन अगर सच कहा, तो तूने मुझे क्यों मारा?”[1]

कायफ़ा को एहसास हो गया कि फाँसने की मेरी पहली कोशिश नाकाम रही है। वक़्त गुज़रता जा रहा था। अब उन गवाहों को मौक़ा देना चाहिए जो उनके ख़िलाफ़ गवाही देने को खड़े हैं। लेकिन बदक़िस्मती से उनके बयानों में इख़्तिलाफ़ रहा।

इमामे-आज़म बहुत मायूस होने लगा। बात नहीं बन रही थी। वह एक क़दम आगे नहीं बढ़ रहे थे। और वक़्त तेज़ी से निकला जा रहा था। उसने क़ैदी को चित करने के लिए आख़िरी कोशिश की। उसने सीधे सवाल किया, “मैं तुझे ज़िंदा ख़ुदा की क़सम देकर पूछता हूँ कि क्या तू अल्लाह का फ़रज़ंद मसीह है?” बड़ी उम्मीदों के साथ तमाम आँखें उन पर जमी रहीं कि वह क्या जवाब देंगे। वह हैरान थे कि जब झूठे गवाह उनके ख़िलाफ़ बदज़बानी कर रहे थे तो वह सारा वक़्त ख़ामोश रहे। अब भी यक़ीनन ख़ामोश ही रहेंगे। कौन उन्हें ऐसे ख़तरनाक सवाल का जवाब देने पर मजबूर कर सकता था! इसके अलावा मुलज़िम को क़सम खाना भी ग़ैरक़ानूनी बात थी। लेकिन उनकी तवक़्क़ो के ख़िलाफ़ हज़रत ईसा ने अब बोलना मुनासिब समझा। उन्होंने साफ़ आवाज़ में जवाब दिया कि “जी, तूने ख़ुद कह दिया है। और मैं तुम सबको बताता हूँ कि आइंदा तुम इब्ने-आदम को क़ादिरे-मुतलक़ के दहने हाथ बैठे और

1 यूहन्ना 18:23

आसमान के बादलों पर आते हुए देखोगे।”[1] दूसरे लफ़्ज़ों में हज़रत ईसा उनको बता रहे थे कि इस वक़्त तो तुम मेरी अदालत कर रहे हो। मगर एक वक़्त आएगा जब पाँसा पलट जाएगा। इस बात का ख़याल कर! ऐ बुज़ुर्गो, होश में आओ। ऐसा न हो कि यह ख़ून तुम्हारी गरदन पर आए।

लेकिन वह उनकी तंबीह पर कान धरने को तैयार न थे। बड़े ड्रामाई अंदाज़ में इमामे-आज़म ने अपना चोग़ा फाड़ दिया (यह भी ग़ैरक़ानूनी हरकत थी) और बड़े जोश से चीख़ा, “इसने कुफ़र बका है! हमें मज़ीद गवाहों की क्या ज़रूरत रही! आपने ख़ुद सुन लिया है कि इसने कुफ़र बका है। आपका क्या फ़ैसला है?”

ग़ुस्से से भरे हुए बुज़ुर्गों ने गले फाड़कर जवाब दिया, “यह सज़ाए-मौत के लायक़ है।”[2]

हाज़िरीन हज़रत ईसा को नफ़रत से घूरने लगे मगर वह उनको रहम और तरस भरी निगाहों से देखते रहे। वह आदमी जो अपने ख़ालिक़ की शबीह पर पैदा किए गए थे, अब गुनाह, ख़ुदग़रज़ी, नफ़रत और झूठ ने उन्हें बदल डाला था। अब उनमें न अल्लाह की मुहब्बत बाक़ी थी न इनसान की, और नतीजे में उनकी फ़ितरत बिगड़ गई थी। कायफ़ा जो क़ौम की रूह का रखवाला था और जिसे ख़ुदा का नुमाइंदा होने के लिए मख़सूस किया गया था वह संगदिली से एक बेगुनाह को मौत के हवाले

1 मत्ती 26:63,64
2 मत्ती 26:65-66

करने पर तुला हुआ था। बेहतरीन माहौल भी न तो इनसान की नजात का ज़ामिन हो सकता है न उसकी रूह को आला बना सकता है।

नीकुदेमुस और अरिमतियाह के यूसुफ़ ने मंज़ूरी नहीं दी। वह हज़रत ईसा के वक़ार, ख़ामोशी और अंदाज़ पर हैरान थे जिनकी आँखों में नफ़रत न थी बल्कि अपने इलज़ाम लगानेवालों के लिए रहम और तरस। लगता था कि लमहे-भर को वह इनसानी लबादा उठ गया था और नीचे से आसमानी शानो-शौकत की किरणें निकल रही थीं। लेकिन सिर्फ़ उन दोनों ही को यह नज़र आ रहा था। बाक़ियों को नफ़रत, ख़ुदग़रज़ी और तकब्बुर ने अंधा कर दिया था। हज़रत ईसा अब भी ख़ुदा बाप पर ईमान में मज़बूत खड़े थे जिसकी इजाज़त से यह सब कुछ हो रहा था। वह तमाम इनसान के गुनाह के लिए अपनी जान क़ुरबान करने पर आमादा थे। हाँ, मुहब्बत, नफ़रत से ताक़तवर है बल्कि दुनिया की बड़ी से बड़ी क़ुव्वत से भी ज़ोरावर है। यह मुहब्बत निहायत अक्खड़ आदमियों को भी जीत लेगी। इस वक़्त भी दो शख़्स मौजूद थे जो उनके ख़ैरख़ाह थे। मगर फ़िलहाल उनमें जुर्रत न थी कि उनकी हिमायत करते।

कायफ़ा ने सज़ाए-मौत का एलान किया, “ईसा बिन यूसुफ़, तू अपने मुँह की बातों से मुजरिम ठहरता है, क्योंकि तूने कुफ़्र बका है। अदालत के फ़ैसले के मुताबिक़ तुझे सज़ाए-मौत दी जाती है।” दिन निकलने पर अदालत एक बार फिर रस्मी इजलास करने को थी ताकि रात-भर की काररवाई को क़ानूनी शक्ल दी जा सके। लेकिन इससे इस बात

को छिपा न सका कि अदालत की सारी तफ़तीश यहूदी शरीअत के ख़िलाफ़ थी।

दिन निकलने तक हज़रत ईसा को बैतुल-मुक़द्दस के मुहाफ़िज़ों के सुपुर्द कर दिया गया कि उनसे जो सुलूक चाहें करें। हज़रत ईसा जानते थे कि मुझे भारी अज़ियत का सामना करना होगा। लेकिन अभी उन्हें शमाऊन पतरस की फ़िकर थी। उन्हें इल्म था कि वह बाहर सहन में है। यह भी जानते थे कि वह दो बार मेरा इनकार कर चुका है और अब तीसरी बार इनकार कर रहा है। एक और ख़ादिमा ने उसे पहचान लिया था और बड़ी हिक़ारत से पास खड़े लोगों को सुनाकर कह रही थी, "तू हज़रत ईसा के साथ था।"

बहुत-सी सवालिया नज़रें उस पर मरकूज़ हो गईं। वह ख़ौफ़ से काँप उठा। अगर मुहाफ़िज़ों ने मुझे पकड़ लिया तो बच निकलने की कोई सूरत नहीं होगी। मेरी क़िस्मत का फ़ैसला हो जाएगा। एक बार फिर उसने बड़ी सख़्ती से इनकार किया, "हरगिज़ नहीं, मुझे पता नहीं तुम क्या कह रही हो।"

लेकिन पतरस जितना इनकार करता रहा लोगों की उसमें दिलचस्पी उतनी ही ज़्यादा होती गई। एक सिपाही ने उसे ग़ौर से देखकर कहा, "हाँ, यह ठीक कहती है। तुम भी उसके साथी हो। क्या आज रात मैंने तुझे बाग़ में उसके साथ नहीं देखा था? मलख़ुस, ज़रा यहाँ आना। क्या यही वह आदमी नहीं जिसने तेरा कान उड़ा दिया था?"

शागिर्द ने निहायत ख़ौफ़ज़दा होकर बड़े जोश से कहा, "लानत है। मेरा पीछा छोड़ दो। मैंने तो हज़रत ईसा को कभी देखा तक नहीं। मैंने कभी ..." लेकिन मुर्ग़ की आवाज़ सुनकर वह जुमला पूरा किए बग़ैर चुप हो गया। फ़ौरन उसे याद आया कि हज़रत ईसा ने ख़बरदार किया था कि आज मुर्ग़ के बाँग देने से पहले तू तीन बार मेरा इनकार करेगा। शमाऊन पतरस ने एक सिपाही को कहते सुना, "अगर तूने नासरी को पहले नहीं देखा तो अब मौक़ा है।" ऐन उस वक़्त सिपाही हज़रत ईसा को सहन में से ले जा रहे थे। लमहे-भर को हज़रत ईसा की दिल को छेदनेवाली निगाहें शमाऊन की निगाह से टकराईं। उनकी आँखों में गहरा रंज और बेबयान दर्द था। शमाऊन शर्मसार होकर लड़खड़ाता हुआ बाहर अंधेरे में निकल गया और ज़ार ज़ार रोने लगा। हाय, मैं कैसा बड़ा हाँकनेवाला बन गया था! मैंने सोचा था कि दूसरों से ज़्यादा दिलेर हूँ। बड़े एतमाद से हज़रत ईसा से कहा था, "हरगिज़ नहीं! मैं आपको जानने से कभी इनकार नहीं करूँगा, चाहे मुझे आपके साथ मरना भी पड़े।"[1] शमाऊन पतरस अब बिलकुल शिकस्तादिल बन गया था। आज रात उसे अपनी वह पहचान हासिल हुई जो पूरी ज़िंदगी न हुई थी। उसे पता चल गया कि मुझमें न कोई ख़ूबी है न क़ुव्वत। लेकिन अब भी उसके दिल में हज़रत ईसा की बेहद मुहब्बत मौजूद थी। उसके कलाम ने उसकी रूहानी भूक मिटाई थी। उसकी मौजूदगी से पतरस के दिल में

1 मरक़ुस 14:31

दूसरों के लिए मुहब्बत और रहम भर गया था। हज़रत ईसा के साथ रहने से उसने अपने आपको और अपने फ़वाइद को भूल जाना और ख़ुदा की मरज़ी पूरा करने में ख़ुशी हासिल करना सीख लिया था। लेकिन हज़रत ईसा के बग़ैर अब उसकी ज़िंदगी ख़ाली और बेमक़सद थी। और अब उसका मालिक दुख उठा रहा था। तमाम दोस्तों ने उसे छोड़ दिया था।

वह अंधेरे में जल्दी जल्दी आगे बढ़ रहा था कि उम्मीद की एक किरण नज़र आने लगी। उसे याद आया कि ख़ुदावंद ने न सिर्फ़ मेरे गिर जाने की पेशगोई की बल्कि यह यक़ीन भी दिलाया कि “मैंने तेरे लिए दुआ की है ताकि तेरा ईमान जाता न रहे।” सिसकियों के दरमियान वह सोच रहा था कि क्या मैं फिर अल्लाह की ख़िदमत कर सकूँगा? उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। हज़रत ईसा ने एक अजीब बात भी कही थी कि “जब तू मुड़कर वापस आए तो उस वक़्त अपने भाइयों को मज़बूत करना।”[1]

उसने सोचा, “क्या मुमकिन है कि सब कुछ बहाल हो जाएगा? नहीं, किस तरह बहाल हो जाएगा जबकि हज़रत ईसा तो मरने को हैं!! नहीं। सब कुछ ख़त्म हो गया है।” शमाऊन पतरस को मालूम हुआ था कि मैं अल्लाह की ख़िदमत के बिलकुल लायक़ नहीं। मैं तो झूठा और बुज़दिल हूँ। मैंने अपने आक़ा का इनकार कर दिया है!

1 लूक़ा 22:32

उधर हज़रत ईसा अल-मसीह नजात का काम मुकम्मल कर रहे थे। वह रास्ता खुलनेवाला था जिस पर चलकर कमज़ोर इनसान और बड़े से बड़ा गुनाहगार का भी अल्लाह के साथ दुबारा मेल हो सकता है। यह नजात उन्हें पाकीज़गी और कसरत की ज़िंदगी दिलानेवाली थी। लेकिन उसे मुहैया करने के लिए इबलीस पर फ़तह पाना ज़रूरी था। इस राह पर चलते हुए हज़रत ईसा को तारीकी की क़ुव्वतों की ज़द में आना था।

सिपाहियों का दस्ता और बुज़ुर्ग, हज़रत ईसा को ठट्ठों में उड़ाने लगे। एक ने उनके मुँह पर तमाँचा मारा, "यह ले। अल-मसीह!" क़ौम के लीडर और बुज़ुर्ग उनके मुँह पर थूकने लगे। फिर उनकी आँखों पर कपड़ा बाँध दिया गया और साथ ही मुक्कों की बारिश शुरू हो गई। वह मज़ाक़ में पूछने लगे, "नबुव्वत कर! किसने तुझे मारा?" उस वक़्त हज़रत ईसा इनसान की सारी कमीनगी, ज़ुल्म और घिनौनेपन को सह रहे थे। उनके चेहरे पर से उनका थूक टपक रहा था, और बदन मुक्कों और लातों से दुख रहा था। ख़ुद वह तो गुनाह से सरासर पाक थे, इसलिए दूसरों की पलीदगी शिद्दत से महसूस हो रही थी। उनके दिल में नफ़रत या ग़ुस्से का गुज़र तक न था। हज़रत ईसा ने न तो दाँत भींचे, न अपने सतानेवालों को हक़ीर जाना बल्कि जितना वह उन्हें सताते उतना ही उन्हें उन पर रहम आता। वह जानते थे कि इस वक़्त वह कौन-सी क़ुव्वत के क़ब्ज़े में हैं और तारीकी की यह क़ुव्वत उन्हें किस क़दर कमीनगी पर उकसा रही है।

ग़द्दार यहूदाह को अदालत का फ़ैसला सुनकर बड़ा सदमा हुआ। वह निकल आया और गलियों में बेमक़सद इधर-उधर घूमने लगा। अब वह ख़ुद को हक़ीर समझने लगा। उसकी इज़्ज़ते-नफ़्स जाती रही। लगता था कि दोज़ख़ की आग उसके दिल को चाट रही है। “क्या कोई मेरे जैसा घिनौना इनसान भी है जिसने अपने दिली दोस्त को पकड़वाया?” वह अपने आपको कोसने लगा। “उस्ताद ने मुझे ख़बरदार भी किया था लेकिन मैंने उनकी न सुनी। मैं तो इबलीस से भी गया-गुज़रा हूँ।” यहूदाह जल्दी से वापस मुड़ा। लावी क़बीले के मुहाफ़िज़ ने उसे अंदर जाने दिया।

कायफ़ा का ख़याल था कि यहूदाह मुझसे शायद और रक़म का मुतालबा करेगा। “हाँ दोस्त, क्या बात है?” उसने ख़ुशमिज़ाजी से सवाल किया। यहूदाह की बेक़रार नज़रों ने उसे बेचैन कर दिया।

फिर यहूदाह सख़्त आवाज़ में कहने लगा, “मैंने गुनाह किया कि बेक़ुसूर को क़त्ल के लिए पकड़वाया।” क्या उसके अलफ़ाज़ सज़ाए-मौत के फ़ैसले को बदल देंगे? यह नामुमकिन-सी उम्मीद थी। उसे कायफ़ा के अलफ़ाज़ सुनकर बड़े अफ़सोस के साथ एहसास हुआ कि यह उम्मीद कभी पूरी नहीं हो सकती।

कायफ़ा ने तसल्ली देते हुए कहा, “यहूदाह, ऐसे वाक़ियात के बाद दिल मायूस होना क़ुदरती बात है। कल तेरी तबीयत सँभल जाएगी।”

यहूदाह दीवानावार चिल्ला उठा, “हज़रत ईसा बेक़ुसूर हैं।”

“सब्र करो, यहूदाह। उन बातों के बारे में क्यों परेशान होते हो जिनके साथ तुम्हारा कोई वास्ता नहीं। इस सारे मामले में तुम्हारा हिस्सा तो बस इतना था कि हज़रत ईसा का ठिकाना बता दिया और बस। और अब उस नासरी के साथ जो कुछ होगा, उसके ज़िम्मेदार हम हैं। मुक़दमा पूरे तौर से सदरे-अदालत के इख़्तियार में है, इसलिए अब सलामती से चले जाओ और अल्लाह के लिए इतना शोरो-ग़ुल मत मचाओ। बहादुर बनो। ख़ुद को सँभालो।”

यह अलफ़ाज़ तो यहूदाह को ठंडा करने के लिए थे। मगर उन्होंने जलती पर तेल का काम किया। वह गज़बनाक होकर तेज़ तेज़ बोलने लगा, “हज़रत ईसा तुम्हें क्या ख़ूब जानते थे। उन्होंने तुम्हें रियाकार कहा और ख़ूब कहा। उन्होंने तुम्हें सफ़ेदी फिरी हुई क़ब्रें कहा, बिलकुल मुनासिब कहा। क्या तुम्हें नज़र नहीं आता कि दोज़ख़ भी मुझे क़बूल नहीं करेगा। कुत्ता भी अपने मालिक का वफ़ादार होता है लेकिन मैं ...”

लीडरों की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। लगता था यहूदाह का दिमाग़ चल गया हो। काश कोई उसको ठंडा कर सकता! अब अदालत का एक और रुकन उसे समझाने लगा कि तुम ने सब कुछ अच्छी नीयत से और नेक इरादे से किया है। यहूदाह जानता था कि यह बात झूठ है। ग़ुस्से से उसने फ़र्श पर थूक दिया। उसकी सुर्ख़ सुर्ख़ आँखें बाहर को

उबल रही थीं और सारा जिस्म थर-थर काँप रहा था। वह दहाड़ा, "तुम बिलकुल ग़लत कहते हो। मेरा मक़सद सिर्फ़ ख़ुदग़रज़ी और नफ़रत थी। हाय, जहन्नुम के शोले मेरे ज़मीर को झुलस रहे हैं। मैं यह बरदाश्त नहीं कर सकता।" उसने इल्तिजा करनेवाली नज़रों से इमामे-आज़म की तरफ़ देखा। क्या यह भी मदद नहीं कर सकता? क्या यह इसराईल का चरवाहा नहीं? क्या यह हर साल ख़ून लेकर पाकतरीन मक़ाम में दाख़िल नहीं होता कि इसराईल के कफ़्फ़ारे के लिए उसे रहमगाह के सामने छिड़के? मगर जब यहूदाह ने उसकी आँखों में सख़्ती देखी तो वह जाने को मुड़ा। उसने बेदिली से सोचा कि कायफ़ा बैलों और बछड़ों के ख़ून से अपने और मेरे गुनाह नहीं धुला सकता। उसे तो गुनाह की परवा भी नहीं। उसका दिल तो पत्थर की तरह सख़्त है।

यहूदाह ने देखा कि मेरे जैसे ना-उम्मीद गुनाहगार के लिए इन बुज़ुर्गों के दिल बिलकुल सख़्त हैं तो वह और सीख़पा हो गया। लगता था कि ख़ून सर को चढ़ आ रहा है और उसके दबाव से कनपटियाँ फट जाएँगी। उसे अपनी आवाज़ भी किसी अजनबी की आवाज़ मालूम हो रही थी। "यह लो। अपने पैसे। लानत की रक़म है। मैं तो अपनी जगह को जा रहा हूँ। यहूदाह इस्करियोती के लिए कोई माफ़ी नहीं।" इससे पहले कि किसी को पता चलता कि क्या हो रहा है चाँदी के सिक्के छनछनाते हुए फ़र्श पर लुढ़क रहे थे और यहूदाह जा चुका था।

यहूदाह की रूह उसे कचोके लगा रही थी। वह किसी आसेबज़दा जानवर की तरह गलियों में मारा मारा फिरने लगा। उसने पहचान लिया था कि मैं कैसा आदमी बन गया हूँ। मत्ती ने मुझे ख़बरदार किया था कि अपना ख़याल रखूँ। मैं कैसा बेवुक़ूफ़ हूँ। हटधर्म और मग़रूर, सिर्फ़ अपना ख़याल करनेवाला हूँ। वह तंज़न हँसा और अपनी ही हँसी पर चौंक पड़ा। फिर अपने आपको कोसने लगा, "मेरा ख़याल था कि मैं अपने आपको जानता हूँ और हमेशा अपने आप पर क़ाबू रख सकूँगा। हा हा। क्या हमाक़त थी!" वह दीवानों की तरह हँसा। "हा हा हा। इबलीस ने मेरी ज़िंदगी और रूह पर क़ब्ज़ा कर लिया। मैं तो जहन्नुम में फँस गया हूँ। जिस यहूदाह को मैं जानता था वह तो रहा ही नहीं।" अब वह अपनी हालत को सही तरह से समझने लगा था। उस पर कपकपी तारी हो गई। उसके दाँत बजने लगे।

वह तेज़ी से आगे ही आगे बढ़ रहा था। अब उसकी ज़बान ज़्यादा तेज़ी से चलने लगी, "अल्लाह ने मेरी ज़िंदगी के लिए बड़े बड़े मनसूबे बना रखे थे। वह मुझे अपने क़रीब ले आया बल्कि मुझे ख़ुशख़बरी की मुनादी करने का मौक़ा दिया। हा हा। क्या सितमज़रीफ़ी है! मैं दूसरों के सामने मुनादी करता था कि आसमान की बादशाही नज़दीक आ गई है और ख़ुद उसमें दाख़िल होने की परवा न की। हाय, कैसा अहमक़ था। हज़रत ईसा ने मुझे ज़हनी और जिस्मानी मरीज़ों को शफ़ा देने का इख़्तियार

दिया ...” वह अपने दाँत पीसने लगा। “लेकिन यहूदाह इस्करियोती, अज़ीम यहूदाह ख़ुदा के बजाए अपना जलाल चाहता रहा।”

रास्ते में रस्सा पड़ा था। यहूदाह का पाँव उसमें उलझ गया। वह लड़खड़ाया और गिर पड़ा। उसने टटोलकर उसे उठा लिया और ठट्ठा मारकर मोटी-सी आवाज़ में कहने लगा, “जिस दुकानदार ने यह रस्सा यहाँ फेंका उसने यहूदाह पर बड़ी मेहरबानी की है। वह अपना वुजूद बरदाश्त नहीं कर सकता।” वह लंबे लंबे साँस लेता ज़मीन से उठा। ख़ौफ़ की सर्द लहर उसके बदन में दौड़ गई। यहूदाह को पहली बार पूरा एहसास हुआ कि अल्लाह से जुदाई का क्या मतलब होता है। उसे अपनी दहशतनाक तनहाई का एहसास हुआ। उसके घुटे हुए सीने से एक ख़ुश्क आह उभरी। उसने रस्सा मज़बूती से पकड़ लिया और अपनी मनज़िल को रवाना हो गया। लेकिन उसकी रूह इस ख़याल से पेचो-ताब खाने लगी कि जल्द ही मुझे पाक ख़ुदा के रूबरू पेश होना है। थोड़ी देर बाद वह एक दरख़्त से झूल रहा था। उसने अपनी जान ले ली थी।

बर-अब्बा डाकू

आज रात क़ैदख़ाने की कोठरी में बर-अब्बा अजीब तौर से बेचैन हो रहा था। सलाखों में से होती हुई पूरे चाँद की रौशनी ने लड़कपन की यादें ताज़ा कर दीं, जब वह फ़सह की ईद मनाया करता था। पूरा चाँद और फ़सह की ईद का साथ होता है। उसे अपने वालिदैन की याद सताने लगी। वह उसे साथ लेकर फ़सह की ईद मनाने बैतुल-मुक़द्दस को जाया करते थे। वालिदैन के लिए भूली हुई मुहब्बत फिर जोश मारने लगी। उसने आह भरी और उन दिनों की तमन्ना करने लगा जब वह बच्चा था और उस पर भरोसा और एतबार किया जाता था, जब आज की तरह नफ़रत उसकी ज़ात का हिस्सा नहीं थी। वह ख़ुद को दलीलें देने लगा कि नफ़रत जायज़ है। इसका निशाना रोमी दुश्मन है। लेकिन रात की इन ख़ामोश घड़ियों में यह दलील उसे मुतमइन न कर सकी। बर-अब्बा ने मान लिया कि इन इनक़लाबी सरगरमियों से मुझे कुछ हासिल नहीं हुआ बल्कि इसके बरअक्स बहुत-से आदमियों की ज़िंदगियाँ तबाह कर

दी हैं और अपने लिए क़ैदख़ाना बल्कि मुमकिन है कि मौत कमाई है। उसने अपना बोझ दूसरे पाँव पर मुंतक़िल किया तो उसकी हथकड़ियाँ बज उठीं। "लानत हो इन बदबख़्तों पर," उसने गाली दी। उसके दिल में आज़ाद होने की ज़बरदस्त ख़ाहिश उभरी, "काश घड़ी-भर के लिए ही आज़ादी मिल जाए।" उसके दिल ने चाहा कि चीख़ उठे। वह ख़ुशगवार हवा में थोड़ी-सी चहलक़दमी के लिए हर क़ीमत अदा करने को तैयार था। "इन ज़ालिमों पर लानत," वह बुड़बुड़ाया। "इन लोगों को इनसान की रूह को तोड़ना ख़ूब आता है। इसे गलने-सड़ने को कोठरी में बंद कर देते हैं। अफ़सोस उस पर जो अपने हवास पर क़ाबू न रख सके।"

उसके सामनेवाली दो कोठरियों में शेबा और अकीम बंद थे। बर-अब्बा सलाखों में से मुहाफ़िज़ सिपाहियों को देखने लगा। उनकी नज़रों में अच्छा रहने के लिए बड़ी एहतियात की ज़रूरत थी। इंतक़ाम लेने के उनके अपने ही तरीक़े थे। अगर थोड़े अरसे के लिए पानी बंद कर दिया जाए तो क़ैदी की ज़बान सूखकर लकड़ी हो जाती है। इनसान पागल हो जाता है। सिपाहियों को दूर दूर से देखने ही में भलाई होती है। उसने दबी आवाज़ से पुकारा, "अकीम। जाग रहे हो?"

उसके सामनेवाली कोठड़ी में ज़ंजीरें खनखनाईं। फिर सलाखों के दरमियान अकीम का चेहरा नमूदार हुआ। "मैं तो यहाँ जानवरों जैसी ज़िंदगी गुज़ारते हुए तंग आ गया हूँ।" उसने भी दबी आवाज़ में जवाब दिया। और गिला करने लगा, "कल फ़सह की ईद का अज़ीम दिन

मनाया जाएगा। चाँदी के नरसिंगे बजाए जाएँगे और हमें पता चल जाएगा कि बैतुल-मुक़द्दस में फ़सह की तक़रीबात शुरू हो चुकी हैं। लेकिन हम उनमें शामिल नहीं हो सकेंगे।" चाँदनी में अकीम की बदबख़्त शक्ल नज़र आ रही थी। उलझी हुई दाढ़ी और खड़े खड़े बाल। बर-अब्बा ने ख़याल किया कि अकीम को ज़िंदगी से कोई दिलचस्पी बाक़ी नहीं रही। वरना वह दाढ़ी में पड़े हुए ख़ुराक के टुकड़े तो झाड़ देता और अपने हुलिये का थोड़ा-बहुत तो ख़याल रखता। पता नहीं कि वह इस क़ैद को और कितनी देर बरदाश्त कर सकेगा इससे पेशतर कि उसके हवास जवाब दे जाएँ।

अकीम शिकायत करता रहा और बर-अब्बा सुनता रहा। "हम ज़ेलोतेसियों ने अपने मुल्क की ख़ातिर सब कुछ क़ुरबान कर दिया है, लेकिन हमारे हमवतनों को हमारी बिलकुल कोई फ़िकर नहीं। वह हमें भूल गए हैं! किसी दिन तीरंदाज़ हमें निशाना बना लेंगे या हमें लानती सलीब पर लटका दिया जाएगा।" उसकी साँस तेज़ तेज़ चलने लगी और छाती समुंदर की लहरों की तरह ऊपर नीचे होने लगी। "बर-अब्बा, क्या कोई हम पर एक आँसू भी बहाएगा? आजकल मैं यही सोचता रहता हूँ। हम मर जाएँगे तो किसी को हमारी याद भी नहीं आएगी।" उसका चेहरा सलाखों के और क़रीब आ गया। "लेकिन आजकल मुझे एक और बात की फ़िकर सता रही है। क्या हमें ज़िंदगी से यही कुछ

हासिल होना था? मैं यह सोचे बग़ैर नहीं रह सकता कि यह ज़िंदगी बिलकुल बेकार थी।"

शेबा भी अपनी कोठरी में हिला। वह ग़ुर्राया, "ऐसे नरमदिल न बनो। अगर मरने को तैयार न थे तो बेहतर था कि चूड़ियाँ पहनकर घर में बैठे रहते और ज़ेलोतेस के गुरोह में शामिल न होते। दोस्त! याद रखो कि बहादुर न बुड़बुड़ाया करते हैं न अपने अज़ियत देनेवालों के सामने झुका करते हैं बल्कि दिलेराना ख़ामोशी से मौत को गले लगाया करते हैं। हूँ! क्या परवा है कि लोग हमारे बारे में क्या सोचते हैं। अगर हम दुश्मनों के ख़िलाफ़ सरगरम रहते हैं तो बाज़ अपने ही लोग हमें दहशतगर्द के लक़ब से नवाज़ने लगते हैं। थू! हमें उनकी क्या परवा! अगर आज़ादी दुबारा हासिल करने में चंद जानें भी चली जाएँ तो क्या हुआ।"

मुहाफ़िज़ सिपाही अंगीठी के गिर्द बैठे थे। उसमें कोयले दहक रहे थे। पत्थर के ख़ानों में टिकी हुई मशालों की थरथराती रौशनी उनके चेहरों को अजीब तरह रौशन कर रही थी। फिर एक और सिपाही बड़े ज़ोर-शोर से दाख़िल हुआ। ऊँघते हुए मुहाफ़िज़ होशियार हो गए। उनकी आवाज़ें इतने बुलंद थीं कि क़ैदी भी सुन सकते थे।

सिपाही सहन में आते ही ज़ोर से बोला, "पता कि क्या हुआ?" वह अंगीठी पर ख़ुद को गरम करने के लिए रुक गया। वह उनके तजस्सुस से लुत्फ़अंदोज़ होते हुए बारी बारी अपने एक एक साथी को देखने लगा। "देवताओं की क़सम तुम कभी नहीं बूझ सकते कि क्या हुआ।" आख़िर

बता ही दिया, "इमामे-आज़म कायफ़ा ने ईसा को गिरिफ़्तार कर लिया है। यहूदी सदरे-अदालत ने उस पर मौत का फ़तवा भी दे दिया है।"

"अगर समझते हो कि हमें इस तरह धोका दे सकते हो तो ग़लती पर हो," एक ने एहतजाज किया। "ज़ियूस की क़सम, मैंने उस गलीली नबी को तो कल ही देखा। सदरे-अदालत एक ही रात में किसी पर मौत का फ़तवा कभी नहीं लगा सकती।"

पहले सिपाही अपने साथी को ज़रा ख़फ़गी से देखने लगा, "तो मैं झूठ बोल रहा हूँ?" वह दम लेने को रुका। "मैं कहता हूँ यहूदियों के लीडरों ने ईसा को गिरिफ़्तार किया, उस पर मुक़दमा चलाया, तफ़तीश की और सज़ाए-मौत सुनाई। और सब कुछ सिर्फ़ एक ही रात में हो गया।" उसका चेहरा ग़ुस्से से सुर्ख़ हो गया, "अब यहूदियों के लीडर सज़ा का घिनौना काम अपने दुश्मन रोमियों के हाथों करवाना चाहते हैं। अभी अभी वह अपने क़ैदी को गवर्नर पीलातुस के पास ले जा रहे थे।"

एक मुहाफ़िज़ बोल उठा, "इस इमामे-आज़म पर देवताओं की लानत! मैं क़सम खाता हूँ कि वह इस गलीली से जलता है। किस वक़्त गिरिफ़्तार किया उन्होंने उसे?"

"आधी रात के बाद। गत्समनी के बाग़ से गिरिफ़्तार किया।" सिपाही हँसा, "काश तुम बैतुल-मुक़द्दस के मुहाफ़िज़ दस्तों और यहूदियों के इन

बुज़ुर्गों को देखते। डाकुओं की तरह लाठियों और पता नहीं कैसे कैसे हथियारों से मुसल्लह होकर गए थे।”

एक और मुहाफ़िज़ ने पूछा, “क्या उसके शागिर्द भी पकड़े गए?”

ख़बर लानेवाले ने जवाब दिया, “नहीं। सब भाग निकले। अगर ईसा भी बच निकलना चाहता तो बआसानी ऐसा कर सकता था। पता नहीं वह क्यों रुका रहा।”

सिपाहियों की आवाज़ें मधम पड़ गईं। बर-अब्बा ने एक सलाख को आहिस्ता से बजाकर पूछा, “सुना तुमने क्या कह रहे हैं?”

शेबा उठा तो उसकी बेड़ियाँ झुनझुना उठीं। “क्या तुम अपनी बक बक बंद नहीं कर सकते? किसी को सोने भी नहीं देते। तुम्हारी ज़बान तो औरतों की तरह चलती ही रहती है।” वह बुड़बुड़ाया, “अगर रोमी इस नासरी को ठिकाने लगाने पर तुल जाएँ तो क्या पता हमारी भी यह आख़िरी रात हो। यह वहशी रोमी हममें से भी कितनों ही का उसके साथ ही सफ़ाया करने का फ़ैसला कर सकते हैं। ऐसा हुआ तो मैं तो उनके घिनौने चेहरों पर थूक दूँगा। मैं उनका मुँह नोच लूँगा, काट खाऊँगा। किसी के दाँत तोड़ूँगा और किसी काफ़िर की आँख फोड़ दूँगा। बहुत मज़ा आएगा।”

बर-अब्बा ने हँसकर मूँछों को ताव दिया, “यह हुआ न जज़बा!” उसने हौसलाअफ़्ज़ाई की, “क़सम है, नासरी में तुम्हारे जज़बे का मामूली-सा हिस्सा भी हो तो इस घिनौनी मौत का डटकर मुक़ाबला

कर सकता है।" शेबा ने अजीब-सी आवाज़ निकालकर अपने लीडर की तारीफ़ को क़बूल किया। चंद लमहों बाद उसके ख़र्राटे साथियों को बता रहे थे कि वह सो गया है।

बर-अब्बा ख़ुदकलामी में आहिस्ता आहिस्ता बोलने लगा, "तो उन्होंने हज़रत ईसा को पकड़ ही लिया। इसमें शक नहीं कि उन्हें ख़त्म करके ही छोड़ेंगे। एक वक़्त था कि मैं सोचता था कि शायद यही अल्लाह की मख़लसी देनेवाले हैं। वह तो बड़े से बड़े हुजूम पर गोया जादू कर देते थे। उन्हें तो बीमारियों बल्कि शयातीन पर क़ुदरत हासिल है। और उस जैसी दिलेरी शायद ही किसी में हो। ख़तरे को सामने देखकर भी सच्ची बात कह देते हैं। अफ़सोस, वह हमारे साथ कोई वास्ता नहीं रखते थे। उन्हें तो बाज़ू के ज़ोर से हासिल की हुई क़ुव्वत पर यक़ीन ही नहीं। ऐसी ज़िंदगी का क्या फ़ायदा!"

आहनी सलाखों के पीछे फिर अकीम का चेहरा नमूदार हुआ, "कम-से-कम उन्होंने बहुत-से लोगों की ज़िंदगियों में ख़ुशियाँ तो भर दीं। अगर कल मेरी जान चली गई तो मैं तो अपने बारे में ऐसा नहीं कह सकता। लानत है।"

बर-अब्बा ने उसे तसल्ली दी, "सब्र करो दोस्त, सब्र करो। तुम तो बहादुर इनसान हो। तुम ने वतन की ख़ातिर सब कुछ किया है।"

अकीम बोला, "इन दिनों मैं यहया नबी और हज़रत ईसा के बारे में बहुत सोचता रहा हूँ। जब मैं कोई दस बरस की उम्र का लड़का था तो

हमारा घर नबी के घर के क़रीब था। उनके बाप ज़करियाह इमाम थे, और उनकी माँ इलीशिबा भी इमामों की नसल से थीं।” अकीम खुरदरी-सी आवाज़ में बोल रहा था, “तुम मुझे दीवाना समझ रहे होंगे कि नबी और उनके वालिदैन के बारे में यों ही बोले जा रहा हूँ। लेकिन ...”

बर-अब्बा ने उसे तसल्ली दी, “नहीं नहीं। इस इमाम और उनकी बीवी की ज़िंदगी में ज़रूर कोई ग़ैरमामूली वाक़िया पेश आया होगा। मैंने भी कुछ सुना था लेकिन ठीक से याद नहीं। ख़याल है कि जब यहया पैदा हुए तो ज़करियाह और इलीशिबा बहुत उम्ररसीदा हो चुके थे। उस उम्र में औलाद पैदा नहीं होती।”

“बिलकुल यही बात है। दुआ के वक़्त एक अजीब बात हुई। ज़करियाह बैतुल-मुक़द्दस के पाक मक़ाम में बख़ूर जला रहे थे कि अचानक अल्लाह का फ़रिश्ता उस पर ज़ाहिर हुआ। बुज़ुर्ग इमाम तो निहायत डर गए। मगर फ़रिश्ते ने उसे तसल्ली दी और बताया कि तेरी दुआएँ सुनी गई हैं। तेरी बीवी इलीशिबा के बेटा होगा। उसका नाम यहया रखना।” अकीम कुछ झिझका, “मुझे अभी तक याद है कि फ़रिश्ते ने उस वक़्त यहया के बारे में क्या क्या बताया। मैंने यह सारी बात कई बार सुनी है।”

बर-अब्बा बोला, “तो बताओ फिर। हम भी सुनें।”

“उसने कहा था कि ‘वह न सिर्फ़ तेरे लिए ख़ुशी और मुसर्रत का बाइस होगा, बल्कि बहुत-से लोग उसकी पैदाइश पर ख़ुशी मनाएँगे।

क्योंकि वह रब के नज़दीक अज़ीम होगा। लाज़िम है कि वह मै और शराब से परहेज़ करे। वह पैदा होने से पहले ही रूहुल-क़ुद्स से मामूर होगा और इसराईली क़ौम में से बहुतों को रब उनके ख़ुदा के पास वापस लाएगा। वह इलयास की रूह और क़ुव्वत से ख़ुदावंद के आगे आगे चलेगा। उसकी ख़िदमत से वालिदों के दिल अपने बच्चों की तरफ़ मायल हो जाएँगे और ना-फ़रमान लोग रास्तबाज़ों की दानाई की तरफ़ रुजू करेंगे। यों वह इस क़ौम को रब के लिए तैयार करेगा।'"[1]

"यहया नबी थे। इसमें हरगिज़ कोई शक नहीं," बर-अब्बा ने तसलीम किया। "सदियों पहले मलाकी नबी नबुव्वत कर चुका था कि रब का पैग़ंबर आएगा जो अल-मसीह के लिए राह तैयार करेगा। अब फ़रिश्ते ने अपनी बातों से मलाकी नबी की इस नबुव्वत की तरफ़ इशारा किया। लेकिन यहया नबी ने क्या हासिल किया? उन्हें क्या कामयाबी हुई? उन्होंने अपनी जान की बाज़ी लगाकर सच्चाई का झंडा सरबुलंद किया, लेकिन जल्द ही उनका नाम फ़रामोश हो जाएगा।"

अकीम ने उसके साथ इत्तफ़ाक़ किया। मगर वह हैरान था कि यहया नबी या हज़रत ईसा की कोशिशों से कुछ भी हासिल नहीं हुआ। वह सोचने लगा, "क्या उस ख़ुदापरस्त इमाम ने फ़रिश्ता देखा जबकि हक़ीक़तन वहाँ कुछ भी न था? और फ़रिश्ते की आवाज़ सुनी जबकि कोई आवाज़ थी ही नहीं? क्या यह सब कुछ नज़र का धोका था? तो

1 लूक़ा 1:14-17

फिर उस जोड़े के हाँ फ़रिश्ते के कहने के मुताबिक़ मुक़र्ररा वक़्त पर बच्चा किस तरह पैदा हुआ? हज़रत यहया ने हज़रत ईसा के अल-मसीह होने की तसदीक़ क्यों की? और हज़रत ईसा में अल्लाह की क़ुदरत क्यों सुकूनत करती है?" अकीम ने मुँह बनाया, "इन सारी बातों के बावुजूद हज़रत ईसा मरेंगे। कुछ समझ में नहीं आता। मुझे तो सारी बातें हमाक़त लगती हैं। क्या यह बात क़ाबिले-तसव्वुर है कि अल्लाह अपने अल-मसीह पर यह सब कुछ आने दे?"

"नहीं नहीं। हम जानते हैं कि अल-मसीह हमेशा तक ज़िंदा रहेगा। इस बात में तो शक की गुंजाइश ही नहीं। अगर ख़ुदावंद ख़ुदा ने हज़रत ईसा को न बचाया तो यह साबित होगा कि वह अल-मसीह नहीं बल्कि फ़रेबी हैं।" बर-अब्बा एक ही रुख़ बैठे बैठे एंठ गया था। उसने करवट बदली। "लेकिन जहाँ तक हज़रत ईसा का ताल्लुक़ है हमें हैरानकुन बातों के लिए तैयार होना चाहिए। हो सकता है कि रब अब भी उन्हें बचा ले।" कुछ हैरान होकर वह कहने लगा, "उनके पास अपने दुश्मनों को कुचल डालने की क़ुदरत है। फिर इस्तेमाल क्यों नहीं करते? वह गत्समनी बाग़ से बआसानी बचकर जा सकते थे, फिर क्यों न गए?" उसने आह भरी। उसकी मुसलसल बेड़ियों में जकड़ी हुई टाँगें दर्द करने लगीं। थोड़ी देर के बाद वह बोला, "मैंने हज़रत ईसा को अपने मक़सद के लिए जीतने की कोशिश की थी। लेकिन वह अल्लाह की बादशाही के आने के बारे में और ही ख़यालात रखते हैं। वह कहते हैं कि अल्लाह

की बादशाही बड़ी ख़ामोशी से आएगी। किसी को उसके आने का पता नहीं लगेगा।” बर-अब्बा बेदिली से हँसा। “उस्ताद तमसीलों की मदद से बातें ख़ूब समझाते हैं। एक बार उन्होंने कहा कि ‘आसमान की बादशाही उस ख़मीर की मानिंद है जिसे एक औरत गुँधे हुए आटे में मिला देती है। बस वह थोड़ा-सा ख़मीर मिलाती है और आटा रख देती है। होते होते सारा आटा ख़मीर हो जाता है। और पता भी नहीं चलता। इसी तरह अल्लाह की बादशाही आनेवाली है।’” बर-अब्बा ने सर हिलाया और बोला, “हम जानते हैं कि इस दुनिया में ताक़त के बग़ैर कुछ भी हासिल नहीं होता।”

शेबा अपनी कोठरी से ग़ुर्राया, “तुम दोनों क्या अभी तक अपनी ऊट-पटाँग बातों में लगे हुए हो? परियों के क़िस्से सुना रहे हो। मैं कहता हूँ कि अल-मसीह तो बारोब और पुर-जलाल बादशाह होगा। किसी ग़रीब साधू की मानिंद नहीं होगा जो किसी नीम-हकीम की तरह जगह जगह घूमता-फिरता और बीमारों को शफ़ा और ग़रीबों को तसल्ली देता फिरे। अल-मसीह के पास ऐसी बेहूदा बातों के लिए वक़्त ही नहीं होगा। वह ज़बरदस्त बादशाह और मर्दे-मैदान होगा।”

बर-अब्बा ने उसका ग़ुस्सा ठंडा करते हुए कहा, “ठीक है, ठीक है शेबा। जैसा कहते हो वैसा ही होगा। चाँद मधम पड़ रहा है। सुबह होनेवाली है। चलो कुछ सो लें।” फिर जैसे अचानक कोई ख़याल आ

गया हो उसने सलाखों को बजाया, “अरे दोस्तो! मुमकिन है हममें से किसी एक के लिए आज़ादी बाहर खड़ी इंतज़ार कर रही हो।”

शेबा हँस दिया, “आज़ादी, हैं! लगता है फ़सह की ईद ने तुम सबको जज़बाती बना डाला है।”

बर-अब्बा ने ग़ुर्राहट की अजीब-सी आवाज़ निकाली। “मेरे पास कोड़ा होता और तुम पर हाथ डाल सकता तो मार मारकर तुम्हें सीधा कर देता। आज रात तुम ने इतने हटधर्मी दिखाई है कि तुम्हारी चमड़ी उधेड़ डालनी चाहिए,” उसने शेबा को झिड़का। फिर गला साफ़ किया, “जैसा कि तुम भी जानते हो, यहूदियों को इजाज़त है कि हर फ़सह की ईद पर एक क़ैदी को रिहा करा लिया करें।”

“आख़।” शेबा खनकती ज़ंजीरों के साथ लेट गया। “अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो अपनी क़ौम से किसी रिआयत की उम्मीद न रखता। आख़िर तुम क़ातिल हो।”

लेकिन बर-अब्बा को कोई शक न था, “मुझे यक़ीन है कि लोग मुझे बहुत चाहते हैं,” उसने जवाब दिया।

अकीम ने जमाई लेकर उन्हें ख़बरदार किया, “दोस्त, मत भूलो कि इस वक़्त हज़रत ईसा भी क़ैद हैं। वह पीलातुस से उन्हीं की रिहाई की दरख़ास्त करेंगे। सारे अवाम उनके पीछे हैं।”

बर-अब्बा ने आह भरी, “दुरुस्त कहते हो। मैं तो भूल ही गया था।”

मौत का फ़तवा

सुबह-सवेरे कोई तीन बजे एक नौकर ने रोमी गवर्नर पीलातुस को जगा दिया। "हुज़ूरवाला। क्या आप यहूदी लीडरों से मुलाक़ात के लिए तैयार हैं? कायफ़ा और उसके साथी आए हैं। वह अपने फ़तवा की तसदीक़ करवाना चाहते हैं।"

पीलातुस नीम-बेदारी में ग़ुर्राया, "क्या? रात को इस वक़्त!" नौकर ने फिर दोहराया, "आलीजाह ने इमामे-आज़म से वादा किया है कि बहुत ज़रूरी काम हो तो सुबह-सवेरे भी निमटा देंगे। क्या उन्हें अंदर ले आऊँ?"

पीलातुस फिर ग़ुर्राया और उठकर बैठ गया। "यह यहूदी! देवता इन्हें ग़ारत करें। नहीं, वह इस जगह में दाख़िल नहीं होंगे। यह तो उनकी नज़र में बेदीनों का घर है। ऐसी जगह उन्हें नापाक कर देगी, और वह अपने मज़हबी फ़रायज़ अदा करने के क़ाबिल नहीं रहेंगे। लेकिन मैं जो रोम का वफ़ादार मुलाज़िम हूँ उनके पास बाहर निकलूँगा," उसने तंज़न

कहा। “जल्दी करो। कपड़े पहनने में मेरी मदद करो। फिर मुंशी को भी बिस्तर से निकालो ... यहूदी बहुत गरदनकश क़ौम हैं। वह हरगिज़ पीछे नहीं हटेंगे। जितनी जल्दी यह मामला तय हो जाए उतना ही अच्छा होगा। हम भी चाहते हैं कि फ़सह की ईद पर कोई बलवा न हो।”

नौकर ने सर हिलाया और मालिक के इर्दगिर्द फिरने लगा। “जनाबे-वाला! यरूशलम तो दुनिया के कोने कोने से आए हुए ज़ायरीन से खचाखच भरा हुआ है। देवता इस मामले में आपकी मदद फ़रमाएँ।”

पीलातुस ने मुँह बनाया, “छः बरस से यहूदिया का गवर्नर रहा हूँ। ज़ियूस की क़सम, इस इलाक़े को सँभालना आसान काम नहीं। ख़ैर, किसी न किसी तरह इस मामले से भी निपटूँगा।” आख़िर में पीलातुस लिबास ज़ेबतन करके तैयार हो गया। वह बोला, “देखो कि सिपाहियों का एक दस्ता बाहर सहन में तैनात हो। फिर उन्हें कहो कि क़ैदी को ले आएँ और मुक़दमे की रिपोर्ट भी मुझे दे दो।”

पीलातुस पूरे तौर से बेदार हो चुका था। पहले उसने रिपोर्ट का जायज़ा लिया। फिर बड़ी दिलचस्पी से क़ैदी को देखने लगा। यह जवान किसी तरह से भी सज़ाए-मौत का हक़दार नहीं लगता था। उसकी आँखें सीधी पीलातुस की आँखों में देख रही थीं। लगता था कि उसकी कोई ऐसी बात नहीं जिसे छिपाना ज़रूरी हो। रोमी गवर्नर परेशान हो गया। मुक़दमे की रिपोर्ट बड़ी बेक़ायदा-सी लगती थी। क़ैदी का जुर्म गवाहों के बयानात से नहीं बल्कि उसके अपने मुँह की बातों से क़ायम किया

गया था। और अदालत की तरफ़ से क़सम दिलाकर उसका बयान लिया गया था। दाल में ज़रूर कुछ काला है। पीलातुस मेज़ पर उँगलियाँ बजाने लगा।

सब कुछ इतनी जल्दी से क्यों किया गया है? यह तो यहूदी क़ानून की सरीहन ख़िलाफ़वरज़ी है। उसका शक बढ़ने लगा। "यह लोग ज़रूर किसी शरारत पर आमादा हैं," उसने दिल में कहा। बड़ी होशियारी की ज़रूरत थी। वह फ़ैसलाकुन अंदाज़ में उठ खड़ा हुआ। "मुंशी! हम सज़ाए-मौत के परवाने पर दस्तख़त नहीं करेंगे। इस मुक़दमे की अज़ सरे-नौ तफ़तीश होगी। हम ख़ुद बाहर जाकर यहूदियों से बात करेंगे। क़ैदी यहीं इंतज़ार करे।"

मुहाफ़िज़ों के हमराह पीलातुस बाहर सहन में आया। सिपाहियों का एक और दस्ता वहाँ पहले ही सरो-क़द खड़ा था। यहूदी लीडरों ने बड़े शको-शुबहा के साथ पीलातुस से अलैक-सलैक की। उसने बाहर आने में इतनी देर क्यों लगाई? क्या वह हमारे लिए कोई मुश्किल खड़ी करना चाहता है? सज़ाए-मौत का परवाना कहाँ है? सब यकदिल थे कि उससे अपनी मरज़ी मनवाकर रहेंगे। हम भी ताक़त रखते हैं। आज इसे हमारी ताक़त का पता लग जाए।

पूरी रोमी हुकूमत का इख़्तियार पीलातुस के कंधों पर था। उसने रोब के साथ सवाल किया, "इस आदमी पर क्या इलज़ाम है?"

यहूदी लीडरों में से नूर ने तुनककर जवाब दिया, "अगर यह बदकार न होता तो हम इसे हुज़ूर के हवाले न करते।"

गवर्नर ने महसूस किया कि सूरते-हाल मेरे क़ाबू में है। "मेरे ख़याल में तो यह ख़ाली यहूदी मसला है। क़ैदी को ले जाओ और अपनी शरीअत के मुताबिक़ फ़ैसला करो। रोम का इससे कोई ताल्लुक़ नहीं!"

कायफ़ा ने एक क़दम आगे बढ़कर कहा, "जनाबे-आली! हमने अपनी शरीअत के मुताबिक़ इसका फ़ैसला कर दिया है। यह जान से मारे जाने के लायक़ है। लेकिन रोमी क़ानून हमें इजाज़त नहीं देता कि इस फ़ैसले पर अमल करें।" इमामे-आज़म ने बात पूरी ही की थी कि दूसरे बुज़ुर्ग हज़रत ईसा पर इलज़ाम लगाने लगे, "हमने मालूम किया है कि यह आदमी हमारी क़ौम को गुमराह कर रहा है। यह शहनशाह को टैक्स देने से मना करता और दावा करता है कि मैं मसीह और बादशाह हूँ।"[1]

अब पीलातुस फ़िकरमंद दिखाई देने लगा। अगर हज़रत ईसा यहूदियों का बादशाह होने का दावा करता है तो रोम से ग़द्दारी का मुरतकिब है। लेकिन उनकी यह बात उसे सच मालूम न हुई। यह लोग तो ख़ुद रोम से आज़ाद होने को बेक़रार हैं। अब उसने मुनासिब समझा कि जाकर क़ैदी से पूछ-गछ करे। क़िले में दाख़िल होकर पीलातुस ने हज़रत ईसा से पूछा, "क्या तुम यहूदियों के बादशाह हो?"

---

1 लूक़ा 23:2

हज़रत ईसा ने आहिस्ता से सवाल किया, "क्या आप अपनी तरफ़ से यह सवाल कर रहे हैं, या औरों ने आपको मेरे बारे में बताया है?"

क़ैदी की निगाहों के असर से पीलातुस घबराने लगा। उसने जवाब दिया, "क्या मैं यहूदी हूँ? तुम्हारी अपनी क़ौम और राहनुमा इमामों ही ने तुम्हें मेरे हवाले किया है।" वह क़ैदी को जितना देखता उतना ही उसे यक़ीन होने लगता कि यह बेगुनाह है। वह कुछ भी छिपा नहीं रहा है। यह बाहर खड़े अपने इलज़ाम लगानेवालों से किस क़दर मुख़्तलिफ़ है। दूसरी तरफ़ अगर इस पर ज़्यादती हुई होती तो वह अपने हुक़ूक़ का मुतालबा क्यों नहीं कर रहा? अब उसे बोलने का मौक़ा है। वह समझदार है और जानता है कि अगर मेरे इलज़ाम लगानेवाले कामयाब हो गए तो मेरा अंजाम क्या होगा। पीलातुस ने निहायत मुतअज्जिब होकर हज़रत ईसा से पूछा, "तुमसे क्या कुछ सरज़द हुआ है?"

हज़रत ईसा ने पीलातुस के जवाब को नज़रंदाज़ करते हुए कहा, "मेरी बादशाही इस दुनिया की नहीं है। अगर वह इस दुनिया की होती तो मेरे ख़ादिम सख़्त जिद्दो-जहद करते ताकि मुझे यहूदियों के हवाले न किया जाता। लेकिन ऐसा नहीं है। मेरी बादशाही यहाँ की नहीं है।"

पीलातुस और भी हैरान हुआ। कहने लगा, "तो फिर तुम वाक़ई बादशाह हो?"

हज़रत ईसा ने जवाब दिया, “आप सही कहते हैं, मैं बादशाह हूँ। मैं इसी मक़सद के लिए पैदा होकर दुनिया में आया कि सच्चाई की गवाही दूँ। जो भी सच्चाई की तरफ़ से है वह मेरी सुनता है।”

गवर्नर इधर-उधर टहलने लगा। अचानक वह हज़रत ईसा के सामने आकर रुक गया और बोला, “सच्चाई क्या है?”[1] सच्चाई निहायत कमयाब चीज़ थी। सारी दुनिया का अख़लाक़ी दीवालिया निकल गया था। ख़ुद पीलातुस महसूस कर रहा था कि बाहर खड़े लीडर हर जायज़ और नाजायज़ तरीक़े से हज़रत ईसा को मरवा डालना चाहते हैं। लेकिन यह क़ैदी बिलकुल मुख़्तलिफ़ है। झूठ तो उसे छूकर भी नहीं गया है। यह तो अपने हुक़ूक़ के लिए भी नहीं लड़ता।

गवर्नर ने सर हिलाया। हज़रत ईसा की मदद का पक्का इरादा करके वह बाहर गया और कायफ़ा से मुख़ातिब हुआ, “जनाब इमामे-आज़म साहब! हम ऐसी तेज़ी और बेक़ायदगी से पेश किए गए मुक़दमे को क़बूल नहीं कर सकते। हम क़ैदी को छोड़ देते हैं।”

यहूदियों के नुमाइंदे एकदम चिल्लाने लगे, “वह पूरे यहूदिया में तालीम देते हुए क़ौम को उकसाता है। वह गलील से शुरू करके यहाँ तक आ पहुँचा है।”[2]

जब पीलातुस को इल्म हुआ कि हज़रत ईसा गलीली हैं तो उसे तसल्ली हुई, क्योंकि ऐसी सूरत में हेरोदेस बादशाह इस सारे मामले

1 यूहन्ना 18:33-38
2 लूक़ा 23:5

का ज़िम्मेदार होगा। हेरोदेस भी फ़सह की ईद के मौक़े पर यरूशलम में था, इसलिए क़ैदी को सीधे उसके पास भेज दिया गया।

हेरोदेस बादशाह ने अपनी बीवी के कहने पर यहया नबी को क़त्ल करवाया था। इस बात से उसे चोट लगी थी। अब उसकी आँखों पर गुनाह के ऐसे गहरे बादल छा चुके थे कि उसे नेकी और पाकीज़गी की पहचान ही न रही थी। जब हज़रत ईसा उसके सामने पेश किया गया तो वह सिर्फ़ मोजिज़े देखने को बेक़रार था। मगर हज़रत ईसा ने उसकी ख़ाहिश पूरी न की। गो हज़रत ईसा की ज़िंदगी हेरोदेस बादशाह के रहमो-करम पर मबनी थी तो भी उन्होंने मुँह से एक लफ़्ज़ न निकाला। इस पर हेरोदेस बेहद तैश में आया। उसने अपने आदमियों समेत हज़रत ईसा को ठट्ठों में उड़ाकर उनका खुला तमाशा बनाया। आख़िर उन्होंने हज़रत ईसा का शाही लिबास पहनाकर मज़ाक़ उड़ाया, फिर पीलातुस के पास वापस भेज दिया। बादशाह ने गवर्नर को सलाम भेजा और कहा कि ख़ुद ही इस मुक़दमे का फ़ैसला करो। पहले तो इन दोनों में दुश्मनी चली आई थी, लेकिन उस दिन से वह दोस्त बने रहे।

एक बार फिर यहूदी अपने क़ैदी समेत पीलातुस की रिहाइशगाह के सामने खड़े हुए। हर लमहे उनकी बेसब्री बढ़ती जा रही थी। सुबह के वक़्त तो यह जगह ख़ाली थी। लेकिन अब बेशुमार लोग वहाँ जमा होना शुरू हो गए थे। कायफ़ा का ग़ुस्सा बढ़ रहा था। फिर जैसे उसे कोई मुकाशफ़ा हुआ हो, वह अपने सुसर हन्ना से कहने लगा, “अब बात

समझ आई है—अवाम एक क़ैदी की रिहाई का मुतालबा करने आए हैं। और भी आएँगे।”

हन्ना ने बड़ी ऐयारी से जवाब दिया, “इनमें से बहुत-से तो नासरी के हामी होंगे, इसलिए हमें अपने साथियों को उकसाना चाहिए कि वह बर-अब्बा को माँग लें। अगर लोगों ने इस नासरी को रिहा करने का मुतालबा कर दिया तो हमारे सब किए-कराए पर पानी फिर जाएगा।”

कायफ़ा ने फ़ैसला किया, “हम नासरी के हामियों से ज़्यादा ज़ोरदार नारे लगाएँगे। उनकी आवाज़ को दबा देंगे।” उसने कई आदमियों को बुलाकर हुक्म दिया, “लोगों में फैल जाओ। उन्हें कहो कि बर-अब्बा की रिहाई का मुतालबा करें। अगर कोई हज़रत ईसा के हक़ में हो तो चिल्ला चिल्लाकर उसे चुप करा दो। भीड़ में बर-अब्बा के हक़ में जोश पैदा करो। सब कुछ तुम्हारे हाथ में है। मैं तुम ही पर भरोसा करता हूँ।”

दाऊद और उसका बाप भी यह मालूम करने को आ गए थे कि हज़रत ईसा का मुक़दमा कहाँ तक पहुँचा है। यूहन्ना बिन ज़बदी भी आ गया। वह थका हुआ और फ़िकरमंद दिखाई दे रहा था। रोमी गवर्नर ने भी देखा कि हुजूम बढ़ता जा रहा है। इस मुक़दमे को जल्दी ख़त्म करना चाहिए। उसने सरदारों और आम लोगों को बुलाया और कहा, “तुमने इस शख़्स को मेरे पास लाकर इस पर इलज़ाम लगाया है कि यह क़ौम को उकसा रहा है। मैंने तुम्हारी मौजूदगी में इसका जायज़ा लेकर ऐसा कुछ नहीं पाया जो तुम्हारे इलज़ामात की तसदीक़ करे। हेरोदेस भी कुछ

नहीं मालूम कर सका, इसलिए उसने इसे हमारे पास वापस भेज दिया है। इस आदमी से कोई भी ऐसा क़ुसूर नहीं हुआ कि यह सज़ाए-मौत के लायक़ है। इसलिए मैं इसे कोड़ों की सज़ा देकर रिहा कर देता हूँ।"[1]

दाऊद ने अपने बाप की तरफ़ देखा, "यह कैसा इनसाफ़ है कि एक शख़्स को एक तरफ़ तो बेक़ुसूर क़रार दिया जाए और दूसरी तरफ़ उसे कोड़े भी लगवाए जाएँ?"

लीडरों ने ख़तरा सूँघ लिया। वह कहने लगे, "ऐसे तो काम नहीं चलेगा। सबत नज़दीक आ रहा है। वक़्त निकलता जा रहा है। अगर हम सबत शुरू होने से पहले पहले उसे मसलूब न करवा सके तो क्या होगा? मुसीबत में पड़ जाएँगे। अवाम को सोचने का मौक़ा मिल जाएगा, और वह हमारे ख़िलाफ़ उठ खड़े होंगे। अब मौक़ा है कि गवर्नर को घेर लिया जाए। हम उस पर वाज़िह कर देंगे कि अगर उसने हमारी बात न मानी तो हम उसका सारा कच्चा-चिट्ठा रोम में क़ैसर को पहुँचा देंगे। यही चाल कामयाब हो सकती है।"

उसी वक़्त पीलातुस दुबारा बाहर निकला ताकि हज़रत ईसा की रिहाई के सिलसिले में यहूदियों से बात करे। उसके पास बहुत अच्छी तजवीज़ थी। कहने लगा, "यहूदियो! सुनो। दस्तूर है कि ईद पर मैं तुम्हारी मरज़ी के मुताबिक़ एक क़ैदी छोड़ दूँ। किस को छुड़ाना चाहते हो, ईसा को या बर-अब्बा को?"

---

1 लूक़ा 23:13-18

ख़ामोशी छा गई। लोग सोचने लगे। लेकिन जल्द ही पीलातुस की हज़रत ईसा को बचाने की उम्मीद पर ओस पड़ गई। उसने देखा कि यहूदी सरदारों के गुमाश्ते हुजूम में फिरकर उन्हें उकसा रहे हैं। "अगर तुम्हें क़ौम की थोड़ी-सी भी ग़ैरत है तो बर-अब्बा को माँग लो। बर-अब्बा मुहिब्बे-वतन है। वह इसराईल के लिए लड़ता रहा है और फिर भी लड़ेगा। हज़रत ईसा ने तो तुम्हें ना-उम्मीद कर दिया है। अपनी सारी तालीम और ताक़त के मुज़ाहरे के बावुजूद उसने हमें रोम से छुड़ाने के लिए एक उँगली भी नहीं हिलाई। बर-अब्बा के लिए नारे मारो। हाँ दोस्तो। हम बर-अब्बा को चाहते हैं!"

उनकी कोशिशों का नतीजा फ़ौरन ज़ाहिर हो गया। सारा हुजूम एक आवाज़ होकर चिल्लाने लगा, "बर-अब्बा को छोड़ दे। बर-अब्बा को छोड़ दे।"

पीलातुस ने पुकारकर जवाब दिया, "क्या तुम चाहते हो कि एक क़ातिल को तुम्हारी ख़ातिर छोड़ दूँ? तो फिर इस आदमी का क्या करूँ जिसे तुम यहूदियों का बादशाह कहते हो?"

हुजूम की नाराबाज़ी ख़तरनाक हद तक बुलंद हो गई, "इसे सलीब दें।"

पीलातुस को एहसास होने लगा कि भीड़ दीवानी हो गई है। वह नहीं जानती कि क्या माँग रही है। उसने फिर बुलंद आवाज़ से पुकारा, "हज़रत ईसा बेगुनाह है। उसने किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा।"

जवाबी नारा उभरा, “बर-अब्बा को छोड़ दें। हमें हज़रत ईसा नहीं चाहिए! इसे सलीब दें! सलीब दें!” अब पीलातुस मजबूर हो गया। उन्होंने उन्हें मुतमइन करने के लिए बर-अब्बा की रिहाई का हुक्म दे दिया।

उधर हज़रत ईसा को कोड़े मारने को ले गए। कोड़े में सीसे के टुकड़े लगे हुए थे। यह कोड़ा उनके बदन पर बरसने लगा। कोड़ा अपने ज़ोर से पड़ता कि गोश्त कट जाता और ख़ून की धारें बहने लगतीं। मज़लूम इनसान की पेशानी ठंडे पसीने से तर हो रही थी। दिल बड़े दुख और दर्द के साथ धड़क रहा था। साँस लेना भी दूभर हो रहा था। सूबेदार ग्लौकुस ज़रा आगे बढ़ा। “यह आदमी न चीख़ता-चिल्लाता है, न गालियाँ देता और न दूसरे मुजरिमों की तरह चिंघाड़ता और मारनेवालों पर थूकता है। क्या मामला है? बेहोश तो नहीं हो गया?” उसने कोड़े मारनेवाले सिपाही से पूछा।

सिपाही ने सर हिलाया, “नहीं, लेकिन इसका मामला ख़त्म ही समझो। अभी इसे तेज़ बुख़ार हो जाएगा … उन्नीस बीस। सूबेदार साहब बीस कोड़े हो गए। बस या और?”

ग्लौकुस ने सर हिलाया। उस क़ैदी की कुछ समझ में नहीं आ रही थी। कफ़र्नहूम से उसके दोस्त सूबेदार प्रिस्कस ने तो उसे बताया था कि इस ईसा ने उसके ग़ुलाम को मोजिज़े से शफ़ा दी थी। अब इसने क्या किया है कि इसके साथ ऐसा सुलूक किया जा रहा है? बल्कि

सज़ाए-मौत दी गई है? ईज़ा सहने में भी वह दूसरे क़ैदियों से बिलकुल मुख़्तलिफ़ है। ग्लौकुस ने कंधे उचकाए। मुझे तो अपना फ़र्ज़ अदा करना है।

क़ैदी को लहू-लुहान देखकर भी सिपाहियों पर कुछ असर न हुआ। उन्हें तो उसका मज़ाक़ उड़ाकर लुत्फ़ उठाने से ग़रज़ थी। उन्हें शाही चोग़ा पहनाकर उनका तमस्ख़ुर उड़ाने लगे। “लीजिए बादशाह सलामत! यह रहा आपका लिबास! क्या हुआ? क्या हुज़ूर के मिज़ाज अच्छे नहीं? तो हम बादशाह सलामत को ख़ुद लिबास पहनाए देते हैं। क्या हुज़ूर सीधे खड़े नहीं हो सकते? आप तो यहूदियों के बादशाह हैं। लाओ दोस्तो। बादशाह के लिए तख़्त का इंतज़ाम करो। वह डिब्बा उठा लाओ।” एक सिपाही काँटेदार शाख़ों से ताज बना रहा था। उसकी अपनी उँगलियों से ख़ून रिस रहा था। उसने काँटों को गाली दी और ताज क़ैदी के सर पर रखकर ज़ोर से दबा दिया। ख़ून की धारें हज़रत ईसा के चेहरे पर बहने लगीं। उनका सर दर्द से फटने लगा। लेकिन मुँह से एक लफ़्ज़ न निकला। फिर शाही असा की जगह एक सरकंडा उनके हाथ में थमा दिया गया। सिपाही हज़रत ईसा के सामने झुकते और ठट्ठा मारकर कहते, “ऐ यहूदियों के बादशाह, आदाब!”

लेकिन हज़रत ईसा को अपने ईज़ा देनेवालों पर भी तरस आ रहा था। वह उनसे इतने मुहब्बत रखते थे कि उनकी ख़ातिर भी अपना ख़ून बहाने को तैयार थे ताकि वह भी शैतान के पंजे से आज़ाद हो जाएँ।

उफ़! हज़रत ईसा कितने कमज़ोर लग रहे थे जैसे बिलकुल ताक़त न रही हो।

एक दरबारी नमूदार हुआ, "सूबेदार साहब! गवर्नर कहते हैं कि क़ैदी को फ़ौरन हाज़िर किया जाए।" पीलातुस ने हज़रत ईसा को देखा तो सोचने लगा कि शायद यहूदियों को भी इस पर रहम आ जाए। उसने पुकारकर कहा, "लो यह है वह आदमी।"

दाऊद और उसके बाप ने जब हज़रत ईसा की यह हालत देखी तो सकते में रह गए। यूहन्ना बिन ज़बदी का गला ख़ुश्क हो गया। हज़रत ईसा तो हमेशा इतने नरमदिल थे। इसके बदले अब उन्हें ईज़ा दे देकर मौत के घाट उतारा जा रहा था। आज तो इनसान हैवान हो गए थे। हज़रत ईसा को देखते ही अवाम चिल्लाने लगे, "इसे मसलूब करें, इसे मसलूब करें!"

दाऊद ने हाथों से अपने कान बंद कर लिए। वह कहने लगा, "अब्बा जान, लोग अपने आप में नहीं। शैतान बने हुए हैं। मुझे तो ख़ौफ़ आने लगा है!"

पीलातुस बड़े तैश में आकर दहाड़ा, "तुम ही इसे ले जाकर मसलूब करो। क्योंकि मुझे इसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली।"

लीडरों ने जवाब दिया, "हमारे पास शरीअत है और इस शरीअत के मुताबिक़ लाज़िम है कि वह मारा जाए। क्योंकि इसने अपने आपको अल्लाह का फ़रज़ंद क़रार दिया है।"

जब पीलातुस ने यह बात सुनी तो और भी डर गया। वह फिर अंदर गया और हज़रत ईसा से पूछा, "तुम कहाँ से आए हो?" मगर हज़रत ईसा ने उसे कुछ जवाब न दिया।

अब पीलातुस बरहम हो गया। "अच्छा, तुम मेरे साथ बात नहीं करते? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मुझे तुम्हें रिहा करने और मसलूब करने का इख़्तियार है?"

हज़रत ईसा ने उसे जवाब दिया, "आपको मुझ पर इख़्तियार न होता अगर वह आपको ऊपर से न दिया गया होता। इस वजह से उस शख़्स से ज़्यादा संगीन गुनाह हुआ है जिसने मुझे दुश्मन के हवाले कर दिया है।"

पीलातुस ने ऐसा आदमी कभी नहीं देखा था। उमूमन क़ैदी रहम के लिए फ़रियाद करते और ग़ुलामों की तरह आजिज़ी से मिन्नतें करते हैं। लेकिन यह शख़्स इतने कोड़े खाने और ईज़ा बरदाश्त करने के बाद भी अपने आप पर पूरा पूरा क़ाबू रखता है। यह है कौन? पीलातुस बेचैन होने लगा। उसने उसे छुड़ाने की आख़िरी कोशिश करने का इरादा कर लिया।

दाऊद ने सख़्त हैरान होकर अपने बाप से पूछा, "अब्बा। पीलातुस अब भी हुजूम पर क़ाबू पाने की ताक़त रखता है। अभी 600 सिपाहियों की पलटन को हुक्म करे तो आँख झपकने में सारी जगह ख़ाली करा

ले। हज़रत ईसा को ऐसी बदसुलूकी से बचाना इसके बाएँ हाथ का खेल है। वह इतना हिचकिचा क्यों रहा है?"

इफ़राईम ने भारी-सी आवाज़ में जवाब दिया, "ऐसा जुर्रतमंदाना क़दम उठाना पीलातुस के बस की बात नहीं। वह ख़ौफ़ का शिकार है। वह नहीं चाहता कि हमारे लीडर उसके करतूत क़ैसर को बताएँ। उसे अपनी जान के लाले पड़े हैं।"

पीलातुस ने यहूदियों से बात करने की कोशिश की तो वह उसके सर होने लगे, "अगर आप इसे रिहा करें तो आप रोमी शहनशाह क़ैसर के दोस्त साबित नहीं होंगे। जो भी बादशाह होने का दावा करे वह शहनशाह की मुख़ालफ़त करता है।" इस पर पीलातुस ने हथियार डाल दिए। उसका किरदार किसी जाँच-पड़ताल की ताब नहीं ला सकता था। अब उसको अपना रुतबा बचाने की फ़िकर पड़ गई। वह यहूदियों की मुख़ालफ़त किसी क़ीमत पर भी मोल लेने को तैयार नहीं था। चुनाँचे हज़रत ईसा को सलीब पर चढ़ना होगा।

बिल-आख़िर पीलातुस तख़्ते-अदालत पर बैठ गया। इतनी देर में उसकी बीवी ने अंदर से पैग़ाम भेजा, "इस बेक़ुसूर आदमी को हाथ न लगाएँ, क्योंकि मुझे पिछली रात इसके बाइस ख़ाब में शदीद तकलीफ़ हुई।" पीलातुस शशो-पंज में पड़ गया लेकिन जल्द ही सँभल गया। उसको बलवा होता नज़र आ रहा था। चुनाँचे उसने पानी मँगवाया और बड़े ड्रामाई अंदाज़ में हाथ धोए और लोगों के शोरो-ग़ुल से भी बुलंद

आवाज़ से पुकारकर कहा, “अगर इस आदमी को क़त्ल किया जाए तो मैं बेक़ुसूर हूँ, तुम ही उसके लिए जवाबदेह ठहरो।”

सब लोगों ने चिल्लाकर जवाब दिया, “हम और हमारी औलाद उसके ख़ून के जवाबदेह हैं।”[1]

इफ़राईम जज़बात से मग़लूब होकर काँपने लगा। क्या यह इनसान हैं या हैवान जो एक बेगुनाह के ख़ून के प्यासे हो रहे हैं? क्या यह हमारे लीडर हैं जिनका बातिन बिलकुल सड़-गल गया है? वह ख़ौफ़ज़दा हो गया। पीलातुस जैसा ज़हीन आदमी भी यह समझता है कि पानी उसके गुनाह को धो सकता है! इफ़राईम की आवाज़ में करब था। वह पूछने लगा, “अगर हज़रत ईसा सचमुच अल्लाह के फ़रज़ंद हैं तो क्या होगा?” यूहन्ना बिन ज़बदी भी मुट्ठियाँ भींचे वहाँ खड़ा था। उसे लगता था जैसे कोई भयानक ख़ाब देख रहा हो। दफ़तन वह पलटा और यूहन्ना मरक़ुस के घर की तरफ़ दौड़ा। वहाँ हज़रत ईसा की माँ और दूसरी औरतें हज़रत ईसा के बारे में ख़बर सुनने के इंतज़ार में थीं।

इतने में हज़रत ईसा को मसलूब करने के लिए सूबेदार के सुपुर्द किया गया। वह उन्हें अदालत से बाहर सहन में लाए, सलीब उनके कंधों पर रखी और गुलगुता की तरफ़ ले चले। गुलगुता वह जगह थी जहाँ मुजरिमों को सलीब दी जाती थी।

---

1 मत्ती 27:12,19, 24-25

पीलातुस ने हज़रत ईसा को बोझ के नीचे लड़खड़ाकर गिरते देखा। फिर वह गली में उसकी नज़रों से ओझल हो गए। उनके साथ अकीम और शेबा भी थे। उन्हें भी मौत की सज़ा हुई थी। गवर्नर को अब भी महसूस हो रहा था कि हज़रत ईसा की आँखें मेरे बातिन में झाँक रही हैं। वह मुझसे सवाल कर रहा है कि "पीलातुस, क्या तुझे सचमुच सच्चाई की परवा नहीं? क्या तुझे अपना रुतबा इतना ही अज़ीज़ है कि उसकी ख़ातिर तू इस हद तक गिर गया कि एक बेगुनाह इनसान की सज़ाए-मौत के परवाने पर दस्तख़त कर दिए? इसका अंजाम क्या होगा? ज़रा सोच। ज़िंदगी थोड़ी है। क्या तू कह सकेगा कि मैंने ज़िंदगी लायक़ तौर से गुज़ारी है?"

रोमी गवर्नर के पसीने छूटने लगे। वह उठ खड़ा हुआ। "सच्चाई," वह कहने लगा, "सच्चाई क्या है! ऐ नासरी, क्या सच्चाई इतने क़ाबिले-क़दर है कि इसकी ख़ातिर जान दी जाए!" लगता था कि उसे इसबात में जवाब मिला है। हज़रत ईसा सच्चाई की राह पर गामज़न थे। वह अज़ियत और दुख उठाने के बावुजूद आज़ाद थे। उनकी रूह मग़लूब नहीं हो सकती थी। उनकी रूह पीलातुस की तरह ग़ुलाम नहीं बनाई जा सकती थी। मौत भी उनके किरदार को नहीं झुका सकती न उनकी रूह को दाग़दार कर सकती थी।

तसलीब

सुबह के तक़रीबन नौ बज गए कि यूहन्ना बिन ज़बदी तमाशबीनों के उस रेले में शामिल हो गया जो मसलूब करने की जगह को जा रहे थे। शमाऊन पतरस की बीवी नओमी और उसकी माँ मीरब भी उसके साथ थीं। वह फ़सह की ईद के लिए यरूशलम आई हुई थीं। यूहन्ना बिन ज़बदी ने उनको मनाने की कोशिश की थी कि यूहन्ना मरक़ुस के घर में रहें, लेकिन नओमी और उसकी माँ ने इरादा कर लिया कि हम अपनी मौजूदगी से हज़रत ईसा का हौसला बढ़ाएँगी। नओमी तो हिल गई थी। हज़रत ईसा के बारे में उसके ख़दशात सही साबित हुए थे। उधर वह अपने शौहर के गुज़श्ता रात के बुज़दिलाना किरदार से मायूस भी थी। पहले उसे अपने ख़ावंद के इस पहलू का बिलकुल इल्म नहीं था। आँसू पोंछते हुए वह यूहन्ना से कहने लगी, “पता नहीं मेरा ख़ावंद कहाँ है। उसकी ज़हनी हालत बहुत बुरी होगी।”

यूहन्ना ने उसे तसल्ली दी। “मुमकिन है आज वह और दूसरे बिखरे हुए शागिर्द यूहन्ना मरक़ुस के अज़ीज़ों के ज़रीए हमारे साथ राबता क़ायम करें।”

“अल्लाह शमाऊन पतरस और दीगर शागिर्दों की हिफ़ाज़त करे,” मीरब ने सिसकियाँ लेते हुए कहा। “उस्ताद की माँ, सलोमी, मग्दलीनी और युअन्ना पहले ही चली गई हैं कि उनके आख़िरी सफ़र में उनके साथ साथ रहें। इस ग़मनाक वक़्त में हम भी उनके क़रीब रहेंगे।”

नओमी भी रोने लगी, “अम्मी, मरियम का दिल पाश पाश हो जाएगा। किस तरह वह अपने बेटे के साथ ऐसा दरिंदों का-सा सुलूक बरदाश्त करेगी!”

यूहन्ना ने बेयक़ीनी से अपना सर हिलाया। “देखो, लोग किस तरह से भागे जा रहे हैं कि किसी अच्छी जगह से आनेवाले वाक़ियात को देख सकें। हम यहीं खड़े होकर अपने आक़ा के यहाँ से गुज़रने का इंतज़ार करें। फिर उनके साथ साथ चलते रहेंगे।” उसने ज़ोर से अपनी मुट्ठियाँ बंद कीं। कोशिश की कि अपने जज़बात पर क़ाबू रखे। फिर भी उसकी सर्द आह निकल गई।

उन्होंने देखा कि एक बड़ी भीड़ जमा है। हर शख़्स एक सनसनी का ख़ाहाँ है। सब हज़रत ईसा, शेबा और अकीम के इंतज़ार में क़तार दर क़तार खड़े थे। उन्होंने सोचा था कि हज़रत ईसा ही अज़ीम और पुर-जलाल अल-मसीह हैं जो रोमियों को हाँककर निकाल देंगे और हमें एक

रोबदार क़ौम बनाएँगे। लेकिन उन्होंने उन्हें मायूस किया था। अब वह बदला लेने को आए थे।

यूहन्ना के नज़दीक खड़े किसी ने पुकारकर एलान किया, "वह आ रहे हैं! शेबा और अकीम भी अपनी आख़िरी सैर कर रहे हैं!"

एक औरत बोली, "ज़ेलोतेसियों का सरदार बर-अब्बा अपने साथियों की हिम्मत बढ़ा रहा है। लोगो, जब उसको रिहा किया गया तो उसकी शक्ल देखते! लगता है उसे अभी तक यक़ीन नहीं आ रहा है कि मैं ही वह ख़ुशक़िसमत हूँ जिसे आज रिहाई मिली है ... लो वह आ रहे हैं।"

नओमी ने ख़ून में लिथड़े हुए तीनों अफ़राद को देखा तो उसकी चीख़ निकल गई। उसने सख़्ती से अपनी माँ का बाज़ू थाम लिया। हर मुजरिम के आगे आगे एक सिपाही चल रहा था। उसके हाथ में कतबा था जिस पर मुजरिम का जुर्म लिखा हुआ था। इसका मक़सद दूसरों को इबरत दिलाना था।

लोग गरदनें उठा उठाकर देखने लगे कि उस्ताद का क्या जुर्म है। उनके कतबे पर मोटे मोटे हुरूफ़ में लिखा था, "हज़रत ईसा। यहूदियों का बादशाह।" तमाशाई त्योरियाँ चढ़ाने लगे। क्या पीलातुस हमारा मज़ाक़ उड़ा रहा है? लेकिन उनको फ़ुरसत न थी कि इस पर आगे सोचते। दोनों ज़ेलोतेस को आते देखकर उनका जोशो-ख़ुरोश बढ़ गया।

एक तेज़ आवाज़ बुलंद हुई, "हमारे क़ौमी बहादुर आ रहे हैं।"

एक बुज़ुर्ग औरत ने जोश से पुकारा, "यह लो अकीम, यह फूल तुम्हारे लिए हैं। इनको दिखा दो कि एक सच्चा यहूदी किस तरह मौत को गले लगाता है।"

दर्द के बावुजूद अकीम की आवाज़ उभरी, "शुक्रिया बहन, लेकिन ठंडा पानी मिल जाता तो इससे बेहतर होता।"

भारी बोझ के नीचे शेबा के चेहरे पर बल पड़ रहे थे। बड़ी कोशिश से वह मज़ाहिया अंदाज़ इख़्तियार करने में कामयाब हुआ, "हट जाओ। हम मुअज़्ज़ज़ लोगों के लिए रास्ता छोड़ दो। दोस्तो, हमें मत रोको। हमें बहुत अहम काम से जाना है।" शेबा ने एक हाथ हुजूम की तरफ़ लहराया, "अल्लाह यहूदी क़ौम को बचाए रखे।" उसने नारा लगाया, "यहूदी क़ौम ज़िंदाबाद!"

लोग भी हँस हँसकर उसकी हौसलाअफ़्ज़ाई करने लगे, "बहुत ख़ूब शेबा। शाबाश। ऐसे ही हौसला रखो ... अरे बर-अब्बा! तुम हरावल की तरह अल-मसीह के आगे आगे क्यों भाग रहे हो? क्या आजकल ज़ेलोतेस और अल-मसीह मिलकर काम कर रहे हैं?"

आख़िर हुजूम की पूरी तवज्जुह हज़रत ईसा पर मरकूज़ हो गई। किसी ने पुकारकर कहा, "जो लकड़ी पर लटकाया गया वह लानती है। लोगो! क्या तुम एक लानती अल-मसीह चाहते हो?"

लोगों को यह बात पसंद न आई। वह नारे लगाने लगे। "इसे ले जाओ। इसे सलीब दो!" आवाज़ें ख़तरनाक हद तक बुलंद हो गईं तो

सिपाही जल्दी करने लगे ताकि जल्द अज़ जल्द अपनी मनज़िल पर पहुँच जाएँ। हुजूम हज़रत ईसा का और भी मज़ाक़ उड़ाने लगा।

एक पस्तक़द आदमी कहने लगा, "देखो लोगो। सुनो! ईसा आज साबित कर सकता है कि वह सचमुच मौत से ताक़तवर और इस लानती सलीब से ज़ोरावर है या नहीं।"

तमाशाई एकदम शोर मचाने लगे, "हमें मोजिज़ा दिखा। दिखा कोई मोजिज़ा!"

तीनों हाँपते हुए आगे बढ़ गए। अचानक हज़रत ईसा लड़खड़ाए। उन्होंने बड़ी मुश्किल से ख़ुद को गिरने से बचाया। एक रोमी ने उन्हें फ़ौरन टहोका दिया कि तेज़ चले। कोड़े इतने शदीद मारे गए थे कि उनका इस वक़्त तक ज़िंदा रह जाना भी हैरत की बात थी। सिपाहियों को जल्दी थी। वह चाहते थे कि हुजूम के बेक़ाबू हो जाने से पहले पहले इस घिनौने काम से फ़ारिग़ हो जाएँ। फिर गरमी भी बहुत ज़्यादा थी।

सूबेदार ग्लौकुस ने अपनी पेशानी से पसीना पोंछा और बोला, "लगता है तूफ़ान आनेवाला है।" उसने देखा कि बहुत-से ज़ायरीन ऐसे भी हैं जो हज़रत ईसा का मज़ाक़ नहीं उड़ा रहे बल्कि बड़े मायूस हैं। वह सर झुकाए उनके पीछे पीछे गुलगुता को जा रहे हैं। यह वह लोग थे जिनको उन्होंने बीमारियों से शफ़ा दी थी या बदरूहों से छुड़ाया था, जिनकी ज़िंदगियाँ उन्होंने बदल डाली थीं। उनके दिल उनकी तालीम से मुतअस्सिर हुए थे। वह जानते थे कि यह ख़ुदा का ज़िंदा कलाम है जो

इनसान की रूह को सेर करता है। गो वह हज़रत ईसा की मुसीबत से हिरासाँ और ख़ौफ़ज़दा थे तो भी वह उन्हें छोड़ नहीं सकते थे।

सिपाही हज़रत ईसा को क़त्लगाह की तरफ़ हाँकते रहे। लगता था कि वह बेबस और मजबूर हैं। कि उनकी क़िस्मत उनके दुश्मनों के हाथों में है। लेकिन हक़ीक़त में वह उस काम को फ़ातेहाना तौर पर पूरा करने को थे जिसे करने को उन्हें भेजा गया था। बहुत पहले वह कह चुके थे कि "लाज़िम है कि इब्ने-आदम बहुत दुख उठाकर बुज़ुर्गों, राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा से रद किया जाए। उसे क़त्ल भी किया जाएगा।"[1] वह दुनिया का फ़िद्या देने के लिए तैयार थे। अब वह ज़रा न हिचकिचाए। गुनाहगार इनसान की ख़ातिर उन्होंने अपनी इज़्ज़त, अपना जलाल, अपना ख़ून, सब कुछ क़ुरबान कर दिया।

लोगों के रेले में लड़खड़ाता हुआ नीकुदेमुस, दाऊद और उसके बाप के क़रीब आ पहुँचा। वह ख़ुद को कोस रहा था, "मैंने हज़रत ईसा की ख़ातिर कुछ नहीं किया। आख़िर उन पर क्यों फ़तवा लगाया गया? और सितमज़रीफ़ी तो यह है कि उन पर चार बार मुक़दमा चला और तीन बार बेगुनाह साबित हुए। न सिर्फ़ यह बल्कि सदरे-अदालत ने उन्हें सिर्फ़ इस बात पर मुजरिम ठहराया कि उन्होंने कहा कि मैं ख़ुदा का फ़रज़ंद हूँ। लेकिन अगर उनकी बात सच है तो इसका क्या अंजाम होगा! मुझे

1 लूक़ा 9:22

तो यक़ीन है कि हम अपने अल-मसीह को मसलूब कर रहे हैं! कितना दहशतनाक ख़याल!”

दाऊद ने सर हिलाया, “सलीब की सज़ा तो सिर्फ़ ग़ुलामों और बदतरीन मुजरिमों के लिए मख़सूस है। यह ऐसी शर्मनाक और ज़ालिमाना सज़ा है जिसका बयान नहीं किया जा सकता।”

इफ़राईम ने औरतों के एक छोटे-से गुरोह की तरफ़ इशारा किया। वह सिपाहियों के बिलकुल पीछे पीछे आ रही थीं। “वह हज़रत ईसा की माँ है। कोई उसे मज़ीद आगे जाने से रोके। अपने बेटे का दुख देखकर कहीं वह ज़िंदगी-भर के लिए ज़हनी तवाज़ुन न खो बैठे। मैं हैरान हूँ कि यह सब कुछ देखते हुए भी ख़ुद पर कितना क़ाबू रखे हुए है। आह। माँ की ममता, अपना आप भूल जाती है। सिर्फ़ बेटे के बारे में सोचती है। रोने और आहो-बुका करने से उसके दुख में इज़ाफ़ा नहीं करती। कैसी क़ाबिले-तारीफ़ माँ है!”

नीकुदेमुस ने काँपती आवाज़ में कहा, “ख़ुदावंद उन बहादुर औरतों को बरकत बख़्शे जो इस शर्मनाक घड़ी में भी उनके साथ साथ हैं।”

दाऊद ने देखा कि लाज़र और उसकी बहनें भी औरतों के साथ साथ आ रहे हैं। लाज़र को देखकर उसे याद आया कि हज़रत ईसा सचमुच मौत से भी ताक़तवर हैं। उन्होंने लाज़र को मुरदों में से ज़िंदा किया था तो अब क्यों एक बेबस इनसान की तरह अपनी मौत की तरफ़ जा रहे हैं?

सलीब का भारी शहतीर उठाए हज़रत ईसा आहिस्ता आहिस्ता क़दम उठा रहे थे। उनकी आँखें दूर ख़ला में ऐसे महव थीं जैसे अब वह किसी को देख नहीं रहीं। बोझ के बाइस उनका कमज़ोर बदन पसीना पसीना हो रहा था। लेकिन उनका दिल पुरसुकून था। वह अपने आसमानी बाप की राह पर चल रहे थे, इसलिए वह आख़िर तक बढ़ते ही गए। कोई भी ख़ुदा बाप को हज़रत ईसा की तरह नहीं जानता था। वह जानते थे कि अल्लाह गुनाहगार से कितनी मुहब्बत रखता है और कि वह उसके बचने का कितना आरज़ूमंद है। लेकिन साथ ही यह भी जानते थे कि वह क़ुद्दूस ख़ुदा है जो गुनाह को बरदाश्त नहीं कर सकता। अदल और रहम के मिलाप के लिए एक रास्ता तलाश करना ज़रूरी था। और यह काम सलीब पर ही अंजाम पा सकता था। सलीब पर ही अल्लाह का अदल पूरा हो जाएगा और साथ साथ उसकी मुहब्बत इनसान को गले लगाने के लिए आज़ाद हो जाएगी। ख़ुदा का लेला जो बेगुनाह और बेऐब है, वह तमाम गुनाहगारों के लिए ज़बह किया जाएगा। जिस तरह ख़ानदान का पहलौठा फ़सह की ईद पर लेले को हाथ लगाकर तसदीक़ करता था कि “यह लेला मेरी जगह मरा है” उसी तरह हर उसको हज़रत ईसा के ख़ून के वसीले से माफ़ी मिलेगी जो उन पर ईमान लाकर अल्लाह से रहम की दरख़ास्त करता है।

अब तक तो यही लगता था कि हज़रत ईसा अल-मसीह का मक़सद पूरा नहीं हुआ। वह बेइनसाफ़ी और ज़ुल्म का शिकार हो गए। निहायत

नहीफ़ होकर आख़िर वह लड़खड़ाए और गिर पड़े। एक सिपाही दहाड़ा, “अबे उठ!”

लेकिन एक और रोमी ने झिड़का, “नज़र नहीं आता कि उसके बस की बात नहीं। उसे होश में लाने के लिए पानी की बालटी लाओ।”

ज़ाहिर था कि सलीब उठाने के लिए किसी दूसरे को पकड़ना पड़ेगा, क्योंकि क़ैदी इस क़दर कमज़ोर हो गया था कि इतना बोझ नहीं उठा सकता था। किसे पकड़ें? कोई रोमी तो नहीं हो सकता क्योंकि यह निहायत शर्मनाक काम है।

उसी वक़्त शमाऊन कुरेनी नज़दीक आ रहा था। उसने सारी उम्र पैसा पैसा जोड़ा था ताकि यरूशलम में फ़सह की ईद मना सके। वह बड़ी तमन्नाओं के साथ आया था। अफ़्रीक़ा के दूर-उफ़तादा इलाक़े में वह यरूशलम और बैतुल-मुक़द्दस के ख़ाब देखा करता था। अब वह सब कुछ देखना चाहता था। लेकिन अचानक वह क़त्लगाह की तरफ़ बढ़नेवाले हुजूम में उलझ गया। यह देखकर वह जल्द से जल्द बच निकल जाना चाहता था, लेकिन बेफ़ायदा। अगले ही लमहे सूबेदार उस पर रोब जमा रहा था। उसने उसके नेज़े की चौड़ी-सी अनी का दबाव अपने कंधे पर महसूस किया। शमाऊन कुरेनी के दिल में ग़ुस्सा भड़क उठा।

सूबेदार ने गरजकर कहा, “ओए! इधर आओ। बहुत मज़बूत और हट्टे-कट्टे हो। चलो, यहूदियों के बादशाह की यह बदबख़्त सलीब उठाओ। चलो। जल्दी करो।”

दिल में रोमियों को कोसता हुआ और भारी शहतीर के बोझ के बाइस दोहरा हुआ शमाऊन कुरेनी आगे बढ़ने लगा। दिल में उस क़ैदी के लिए नफ़रत उभरने लगी जिसका बोझ उठाना पड़ा था। लेकिन सलीब उठाने की शर्म बरदाश्त करना सबसे मुश्किल था। यह ठट्ठों और मज़ाक़ करती हुई भीड़ उसे ज़हर लग रही थी। कितनी तवक़्क़ोआत लेकर वह अपने बापदादा की सरज़मीन में आया था। उसकी सारी उम्मीदें कितनी जल्दी ख़ाक में मिल गईं। सचमुच यह यहूदी उन अफ़्रीक़ियों से किसी तरह बेहतर नहीं जिनके दरमियान वह ज़िंदगी बसर कर रहा था।

थोड़ी देर बाद उसे उस क़ैदी के बारे में जानने की आरज़ू हुई जिसकी सलीब वह उठाए हुए था। यह किस क़िस्म का इनसान है? बड़ी मुश्किल से उसने मुड़कर देखा। उसकी आँखें सीधी हज़रत ईसा की आँखों से टकराईं। वह हैरान रह गया। उनमें न नफ़रत थी, न हिक़ारत, न ग़ुस्सा। उसने क्या किया है कि ऐसी मौत की सज़ा मिली? उसका जुर्म अजीब मालूम होता था। उस पर यहूदियों का बादशाह होने का इलज़ाम था!

अब शमाऊन कुरेनी ने कान खड़े किए। यरूशलम की औरतों का एक बड़ा गुरोह रोता हुआ साथ साथ चल रहा था। लगता था कि क़ैदी अब उनकी तरफ़ मुतवज्जिह है। क्योंकि उनका आहो-नाला मधम होकर सिसकियों में बदल गया। क़ैदी उनसे कहने लगा, “ऐ यरूशलम की बेटियो! मेरे लिए न रोओ बल्कि अपने और अपने बच्चों के लिए रोओ। क्योंकि जब उन्होंने बेक़ुसूर और बेगुनाह के साथ ऐसा सुलूक किया तो

क़ुसूरवारों के साथ क्या सुलूक न करेंगे!” क्या यह इस तरफ़ इशारा नहीं था कि यरूशलम की तबाही आ रही है, कि यहूदियों पर बड़ा ग़ज़ब नाज़िल होगा।

शमाऊन कुरेनी भारी बोझ तले हाँपने लगा। उसका बदन पसीने से शराबोर हुआ। वह हैरान होने लगा कि इस वक़्त भी क़ैदी अपने लिए रहम और तरस का ख़ाहाँ नहीं बल्कि उसे उन रोती हुई औरतों का ख़याल है। उसने हज़रत ईसा, उनके हैरतनाक मोजिज़ों और उनकी नई तालीम के बारे में सुन रखा था। लोगों को हज़रत ईसा की ज़ात बिलकुल बेमिसाल और यकता लगती थी। शमाऊन कुरेनी ने तसलीम किया कि लोग ठीक कहते हैं। जिनकी वह ख़िदमत करते रहे थे वही उनको बेइज़्ज़त कर रहे और उनके साथ शर्मनाक सुलूक कर रहे थे। लेकिन उस्ताद अब भी मुहब्बत की रूह दिखा रहे थे। शमाऊन कुरेनी को अल-मसीह के बारे में यसायाह नबी की एक पेशगोई याद आई, “उस पर ज़ुल्म हुआ, लेकिन उसने सब कुछ बरदाश्त किया और अपना मुँह न खोला, उस भेड़ की तरह जिसे ज़बह करने के लिए ले जाते हैं। जिस तरह लेला बाल कतरनेवालों के सामने ख़ामोश रहता है उसी तरह उसने अपना मुँह न खोला। उसे ज़ुल्म और अदालत के हाथ से छीन लिया गया। अब कौन उसकी नसल का ख़याल करेगा? क्योंकि

उसका ज़िंदों के मुल्क से ताल्लुक़ कट गया है। अपनी क़ौम के जुर्म के सबब से वह सज़ा का निशाना बन गया।"[1]

आख़िरकार वह गुलगुता जा पहुँचे, और शमाऊन कुरेनी को सलीब से रिहाई मिल गई। अब वह आज़ाद था कि जो चाहे करे। लेकिन वह सहरज़दा होकर इसी हौलनाक जगह पर खड़ा रहा। सलीब ने एक तरह उसे हज़रत ईसा के साथ बाँध दिया था। अब उनके दरमियान एक दिली बंधन क़ायम हो गया था। वह इस अजीब इनसान का अंजाम देखने को रुक गया।

सिपाही अपने काम में लग गए। हुजूम के वहशियाना ठट्ठों के दरमियान शेबा को पकड़कर खींच लिया गया। मुजरिम की आँखों से शोले बरसने लगे। अपनी पूरी क़ुव्वत से उसने सख़्त दंगा बरपा कर दिया। "रोमी कुत्तो! तुम मुझे इस लकड़ी पर लेले की तरह कीलों से नहीं जोड़ोगे। तुम पर लानत!" उसने पास खड़े एक सिपाही के पेट में ज़ोरदार मुक्का जड़ दिया।

सारे लोग हँसने लगे, "शाबाश! इनको दिखा दो कि ग़ैरतमंद यहूदी किस चीज़ के बने होते हैं।"

रोमी अपने देवताओं का नाम लेकर उस पर लानत करने लगे। बड़ी जिद्दो-जहद के साथ वह उसके हाथों और पैरों में मेख़ें ठोंकते ठोंकते पसीने में शराबोर हो गए। आख़िर सलीब ज़मीन में खुदे गढ़े में खड़ी

---

1 यसायाह 53:7-8

कर दी गई। “अख़-थू। एक का काम तो ख़त्म हुआ। दोस्तो होशियार! अभी वह अपना गंदा मुँह इस्तेमाल कर सकता है। हट जाओ। वह हम पर थूक रहा है!”

जब अकीम को सलीब पर चढ़ाने लगे तो उसने भी ख़ूब गालियाँ दीं और बड़े हाथ-पैर मारे। उसके बाद हज़रत ईसा की बारी आई। एक सिपाही ने कहा, “शुक्र है अब एक ही रह गया है। क्या इसने दवा पी ली है?”

उसका साथी बोला, “यह मै और सिरका मिला हुआ पीना नहीं चाहता। कहता है कि मैं अपना होश क़ायम रखना चाहता हूँ।”

उसके साथी ने जवाब दिया, “इसे पता नहीं कि इस पर क्या बीतने को है।”

एक और सिपाही प्याला भरकर हज़रत ईसा के पास ले गया। “लो भई, पी लो। ज़िद मत करो। इससे आसानी हो जाएगी। दर्द का एहसास मर जाएगा। लो। नहीं? चलो ठीक है। अपनी मरज़ी करो। लेकिन मैं यह कहे बग़ैर नहीं रह सकता कि तुम ही पहले मुजरिम हो जिसने दर्द के एहसास मारनेवाली दवा पीने से इनकार किया है।” रोमियों को यक़ीन था कि हज़रत ईसा भी जल्द ही गालियाँ देने और थूकने लगेंगे।

फिर हज़रत ईसा को गर्दो-ग़ुबार में लिटाकर कीलों से सलीब पर जड़ दिया गया। उनकी आँखें बंद थीं। हथोड़ों की ठक-ठक के दरमियान उन्होंने मुँह खोला। सब इस इंतज़ार में थे कि क्या कहेंगे। क्या गालियाँ

देंगे? ठोकेंगे? रहम या इनसाफ़ के लिए फ़रियाद करेंगे? चारों तरफ़ मुकम्मल ख़ामोशी छा गई। दर्द की शिद्दत से उनकी आवाज़ रुक रुककर निकल रही थी। लेकिन क़रीब खड़े लोगों को साफ़ सुनाई देने लगी। "ऐ बाप, … इन्हें … माफ़ कर, … क्योंकि … यह … जानते नहीं … कि क्या … कर रहे हैं।"[1]

नीकुदेमुस ने इफ़राईम से सरगोशी की, "सुना आपने? उन्होंने अपने दुश्मनों से मुहब्बत करने की तालीम दी और अब इंतहाई दर्दनाक हालात में इस पर अमल कर रहे हैं। ओह। मेरा ख़याल है हम भी इसमें शामिल हैं इसलिए कि हमें भी माफ़ी की ज़रूरत है।"

सलीब को दोनों ज़ेलोतेसियों के दरमियान खड़ा कर दिया गया। शमाऊन कुरेनी की निगाहें हज़रत ईसा के चेहरे पर जमी थीं। "कैसी शाहाना ख़ामोशी है," उसने सोचा। "बिलकुल उस ख़ुदा के ख़ादिम की मानिंद जिसका बयान यसायाह नबी ने किया, "जिस तरह लेला बाल कतरनेवालों के सामने ख़ामोश रहता है उसी तरह उसने अपना मुँह न खोला।"[2] उसे याद आया कि यसायाह नबी ने यह भी कहा था, "हम सब भेड़-बकरियों की तरह आवारा फिर रहे थे, हर एक ने अपनी अपनी राह इख़्तियार की। लेकिन रब ने उसे हम सबके क़ुसूर का निशाना बनाया।[3] … उसे हमारे ही जरायम के सबब से छेदा गया, हमारे

---

1 लूक़ा 22:37
2 यसायाह 53:7
3 यसायाह 53:6

ही गुनाहों की ख़ातिर कुचला गया। उसे सज़ा मिली ताकि हमें सलामती हासिल हो, और उसी के ज़ख़मों से हमें शफ़ा मिली।”[1] लगता था कि यह बातें इस अजनबी पर बिलकुल सादिक़ आती हैं।

एक नामालूम आदमी अचानक धक्का देकर उसके सामने आ खड़ा हुआ। उसे बहुत ग़ुस्सा आया। यह खड़ा हज़रत ईसा के चेहरे की तरफ़ यों क्यों घूर रहा है? उसके चेहरे का रंग उड़ा हुआ था। आँसू बेहिजाबाना बह रहे थे। उसके होंट हिल रहे थे। शमाऊन कुरेनी कान लगाकर सुनने लगा। अजनबी कह रहा था, “हज़रत ईसा ... हज़रत ईसा तू इस सलीब पर मेरी जगह लटक रहा है। तू मर रहा है और बर-अब्बा आज़ाद घूम रहा है।”

1 यसायाह 53:5

वफ़ात

गरमी बेहाल कर रही थी। रोमी काम से फ़ारिग़ हो गए। उन्हें इल्म नहीं था कि अब वह ऐसे वाक़ियात का सामना करनेवाले हैं जिनको दुनिया की काया पलटनी थी। वह वक़्त गुज़ारने के लिए जुआ खेलने में लग गए।

हुजूम में याईर और सलमा बिन राम और उसका बेटा भी मौजूद थे। उनके दिल हज़रत ईसा पर लगे थे। नाइन शहर की बेवा ज़िलफ़ा और उसका बेटा आसा भी हाज़िर थे। वह खुले तौर पर रो रहे थे। लेकिन सलोमी हज़रत ईसा की माँ मरियम के क़रीब चटान की तरह खड़ी थी। वह बार बार मग्दलीनी को तसल्ली देती रही। नज़दीक ही युअन्ना भी थी। वह जप रही थी, “हम अपने मालिक के लिए क्या कर सकते हैं? उन्होंने तो हमें नई और भरपूर ज़िंदगी अता की, और हम बिलकुल बेबस हैं। इसके बदले कुछ भी नहीं कर सकते।”

अरिमतियाह का यूसुफ़ भी दाऊद, उसके बाप और नीकुदेमुस के पास पहुँच गया था। उसने सर हिलाया, “मुझे तो सदरे-अदालत से घिन आने लगी है। इमामे-आज़म और बुज़ुर्ग हज़रत ईसा की मौत का मज़ाक़ उड़ाने और उन पर ठट्ठे मारने को आ गए हैं।” क़दरे मधम आवाज़ से बात जारी रखते हुए उसने कहा, “मैं तो इनका भोंडा मुँह भी देखना नहीं चाहता। सलीब पर लटके उस्ताद के पास खड़े कैसे कमीने और घिनौने लगते हैं। वह अपना इंतक़ाम नहीं लेते। हरगिज़ नहीं। वह अब भी ख़ामोशी से सब कुछ सह रहे हैं।”

तेज़ तेज़ आवाज़ें आने लगीं, “ईसा नासरी, अपनी क़ुदरत दिखा! ऐ मोजिज़े दिखानेवाले! हमें भी मोजिज़ा दिखा! उसने औरों को बचाया है। अगर यह अल्लाह का चुना हुआ और मसीह है तो अपने आपको बचाए।”

भीड़ के ठट्ठे सुनकर फ़ौजियों को भी मज़ाक़ करने का शौक़ आ गया। वह हज़रत ईसा को सिरका पेश करके कहने लगे, “अगर तू यहूदियों का बादशाह है तो अपने आपको बचा ले।”[1] उनको क्या मालूम कि हज़रत ईसा अपने आपको आसानी से बचा सकते लेकिन बचाना नहीं चाहते। उन्हें कीलों ने नहीं बल्कि अल्लाह और इनसान की मुहब्बत ने सलीब पर जकड़ रखा है। जब तक इनसान की नजात का काम मुकम्मल न

1 लूक़ा 23:35-37

हुआ वह सलीब से नहीं उतरें। यहाँ सलीब पर वह खोई हुई दुनिया के लिए ख़ुदा की बेक़यास मुहब्बत को ज़ाहिर कर रहे थे।

पीलातुस ने हज़रत ईसा के सर पर कतबा लगाकर उनका मज़ाक़ उड़ाया था। क्योंकि कतबे पर लिखा था, "ईसा नासरी, यहूदियों का बादशाह।" यह देखकर यहूदियों के राहनुमा इमाम नाराज़ हुए। उन्होंने एतराज़ किया, "'यहूदियों का बादशाह' न लिखें बल्कि यह कि 'इस आदमी ने यहूदियों का बादशाह होने का दावा किया।'"

लेकिन गवर्नर ने हँसकर उन्हें टाल दिया। अब बदला लेने का मौक़ा था। उसने जवाब दिया, "जो कुछ मैंने लिख दिया सो लिख दिया।"[1]

सिपाही बोर होने लगे, अगरचे यहूदी लीडरों की नाख़ुशी देखकर वह ख़ुश हुए। यह रोमी गवर्नर को तंग करके किस तरह उम्मीद कर सकते थे कि बचे रहेंगे। मुजरिमों के कपड़े सिपाहियों में तक़सीम हो चुके थे। अब वक़्त गुज़ारने के लिए क्या किया जाए?

लेकिन भीड़ हज़रत ईसा का मज़ाक़ उड़ाती जा रही थी जो दोनों मुजरिमों के दरमियान लटके हुए थे। उम्मत के लिए मरने का यह तरीक़ा अल्लाह की मरज़ी था। सारी उम्र वह गुनाहगारों के दोस्त रहे थे और अब मौत में भी उन्होंने उन्हें न छोड़ा। सलीब पर लटके हुए तीनों अफ़राद के जिस्म बुरी तरह तप रहे थे। मक्खियाँ उन्हें सताए जा रही थीं। प्यास की शिद्दत किसी जहन्नुम से कम न थी। ऐसे में शेबा ने अपनी अज़ियत

1 यूहन्ना 19:19-22

को ग़ुस्से में बदलकर हज़रत ईसा की तरफ़ मुँह फेरा और हाँपते हुए तंज़ की, “क्या … तू … मसीह … नहीं है? … तो फिर अपने … आपको … और हमें भी बचा ले।”

लेकिन अकीम ने ईसा बादशाह की एक झलक देखी। उसे महसूस हुआ कि हज़रत ईसा पाक बादशाह की हैसियत से फ़तह की तरफ़ बढ़ रहे हैं। वह शेबा को झिड़कने लगा, “क्या तू अल्लाह से भी नहीं डरता? … जो सज़ा … उसे दी गई है … वह तुझे भी मिली है। … हमारी सज़ा तो वाजिबी है, … क्योंकि हमें अपने कामों … का बदला मिल रहा है, … लेकिन इसने कोई … बुरा काम नहीं किया।” अकीम ने अपनी फूली हुई आँखें हज़रत ईसा की तरफ़ उठाईं। वह बुख़ार से तप रही थीं। वह इल्तिजा करने लगा, “जब … आप अपनी बादशाही … में आएँ तो … मुझे याद करें।”

एक लमहे तक हज़रत ईसा अकीम को देखते रहे। उनके ज़ख़मी और ख़ून से लिथड़े हुए चेहरे पर ख़ुशी की लहर उभरी, और उन्होंने घुटी घुटी साँसों के साथ जवाब दिया, “मैं तुझे … सच बताता … हूँ कि तू … आज ही मेरे … साथ फ़िरदौस में … होगा।”[1]

झिलमिलाती धूप थी। उनके आज़ा सूज गए थे, और हड्डियाँ चटख़ रही थीं। अंग अंग में ख़ौफ़नाक टीसें उठ रही थीं। साँस रुक रुककर आ रही थी और हर आह पूरे बदन में दर्द की लहर दौड़ा रही थी। एक

---

1 लूक़ा 23:39-43

एक साँस खींचने के लिए सख़्त जिद्दो-जहद करनी पड़ रही थी। इसके बावुजूद अकीम का दिल एक अजीब इतमीनान और तसल्ली से मामूर हो गया। वह हज़रत ईसा को बताना चाहता था कि मैं कैसा बदकार हूँ। लेकिन हज़रत ईसा की आँखों ने उसे समझा दिया कि मैं तेरा अंदर बाहर, सब कुछ जानता हूँ। सब कुछ माफ़ हो चुका है। किसी न किसी तरह अकीम की समझ में आ गया कि हज़रत ईसा मेरा बोझ उठा रहा है।

हज़रत ईसा की माँ मरियम, यूहन्ना बिन ज़बदी और कई दीगर दोस्त सलीब के पास ही खड़े रहे। मरियम महसूस कर रही थी कि एक तलवार मेरे दिल को छेद रही है। उसको वह दिन याद आया जब बुज़ुर्ग शमाऊन ने बैतुल-मुक़द्दस में हज़रत ईसा के बारे में पेशगोई की थी कि "यह बच्चा मुक़र्रर हुआ है कि इसराईल के बहुत-से लोग इससे ठोकर खाकर गिर जाएँ, लेकिन बहुत-से इससे अपने पाँवों पर खड़े भी हो जाएँगे। गो यह अल्लाह की तरफ़ से एक इशारा है तो भी इसकी मुख़ालफ़त की जाएगी। यों बहुतों के दिली ख़यालात ज़ाहिर हो जाएँगे। इस सिलसिले में तलवार तेरी जान में से भी गुज़र जाएगी।"[1] अब मरियम ने वह तलवार महसूस की जिसका ज़िक्र शमाऊन ने किया था। कीलों से छिदे हुए हाथ कभी मुझे प्यार किया करते थे। बाद में इन्हीं हाथों ने कितने लोगों को छूकर शफ़ा बख़्शी। और यह मुँह जो अब ख़ुश्क और

1 लूक़ा 2:34-35

सूजा हुआ है कभी मुझे 'माँ' कहा करता था। उसने हज़ारों को ख़ुदा की मुहब्बत, वफ़ादारी और माफ़ी की बातें सुनाई हैं। जिन पाँवों में इस वक़्त मेख़ें गड़ी हैं, उन्होंने मेरे ही घर में पहले क़दम उठाए थे। बाद में उन्होंने मीलों मील सफ़र करके अनगिनत लोगों तक अल्लाह की माफ़ी की ख़ुशख़बरी पहुँचाई है। अब मरियम सलीब के पास खड़ी थी। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। "ऐ ख़ुदा! क्यों?"

उसे वह वक़्त भी याद आया जब जिबराईल फ़रिश्ते ने उसे बताया था, "तू उम्मीद से होकर एक बेटे को जन्म देगी। तुझे उसका नाम ईसा (नजात देनेवाला) रखना है। वह अज़ीम होगा और अल्लाह तआला का फ़रज़ंद कहलाएगा। रब हमारा ख़ुदा उसे उसके बाप दाऊद के तख़्त पर बिठाएगा और वह हमेशा तक इसराईल पर हुकूमत करेगा। उसकी सलतनत कभी ख़त्म न होगी।"[1]

उनकी पैदाइश पर फ़रिश्तों ने कुछ चरवाहों को भी ख़ुशख़बरी सुनाई थी कि "आज ही दाऊद के शहर में तुम्हारे लिए नजातदहिंदा पैदा हुआ है यानी मसीह ख़ुदावंद।"[2]

मरियम की आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई थी। वह बड़ी मुहब्बत से अपने बेटे को देख रही थी। इस वक़्त भी वह पुरएतमाद लगते थे। ख़ुदा पर उनके भरोसे और यक़ीन में रत्ती-भर फ़रक़ नहीं आया था। उन्हें कोई शुबहा नहीं था कि मेरे आसमानी बाप ही ने मेरे लिए मौत का

---

1 लूक़ा 1:31-33
2 लूक़ा 2:11

यह रास्ता मुंतख़ब किया है। फिर मरियम ने देखा कि मेरे बेटे की निगाहें मुझ पर और यूहन्ना पर लगी हैं। मुश्किल से साँस लेते हुए वह बोले, "ऐ ख़ातून, ... देखें ... आपका बेटा ... यह है।" फिर उन्होंने यूहन्ना बिन ज़बदी से कहा, "देख, ... तेरी ... माँ ... यह है।"[1]

मरियम ने बड़े ग़ौर से उनकी आँखों में झाँका। ऐसी जान-कनी में भी उन्हें दूसरों की फ़िकर थी। आइंदा यह शागिर्द माँ की निगहदाश्त करेगा। वह जल्दी से बोली, "यूहन्ना, क्या हो रहा है? तारीकी ... अंधेरा लग रहा है ... मुझे तो हज़रत ईसा भी मुश्किल से नज़र आ रहे हैं।"

यूहन्ना ने बुज़ुर्ग मरियम को बाँहों में थाम लिया, "चलो माँ ... मैं आपको घर ले चलूँ।" मरियम ने अपने मरते हुए बेटे पर आख़िरी निगाह डाली। उसकी निगाह थोड़ी देर तक वहीं जमी रही। लेकिन जब उसके जज़बात उस पर ग़ालिब होने लगे तो उसने ख़ुद को सँभाला और यूहन्ना के साथ इस दहशतनाक जगह से चली गई।

दोपहर का वक़्त था कि गुलगुता पर एक ख़ौफ़नाक तारीकी छा गई। तीन घंटों तक यही आलम रहा। इस दौरान हज़रत ईसा ख़ामोश रहे। इबलीस और उसकी क़ुव्वतें पूरे ज़ोर से उनको दबा रही थीं। अब उनको महसूस हो रहा था कि दुनिया का तमाम गुनाह मुझ पर लाद दिया गया है। वह सारा गुनाह जो ज़मानों के शुरू से किया गया और आइंदा किया जाएगा। चूँकि वह पाक और बेगुनाह थे इसलिए यह ऐसा

1 यूहन्ना 19:26-27

तजरिबा था जिसे कोई इनसान समझ नहीं सकता। उस वक़्त ख़ुदा बाप ने अपना चेहरा अपने बेटे से फेर लिया, और पहली बार हज़रत ईसा ने अपने आसमानी बाप से जुदाई को महसूस किया। जब तीन घंटों के बाद तारीकी उठ गई तो हज़रत ईसा की आवाज़ फ़िज़ा को चीरती हुई उभरी, "ऐ मेरे ख़ुदा, … ऐ मेरे ख़ुदा, … तूने मुझे … क्यों … तर्क कर दिया है?"[1] अगरचे लगता था कि बाप ने मुझे छोड़ दिया है तो भी वह उन्हें थामे रहा। इन तीन घंटों के बाद भी अल्लाह उनका बाप रहा।

तब हज़रत ईसा को तसल्ली मिली कि इनसान की नजात का काम मुकम्मल हो गया है। उनकी आरज़ू थी कि मैं बुलंद आवाज़ से अपनी फ़तह का एलान करूँ। लेकिन उनकी हालत बेहद कमज़ोर थी और प्यास की शिद्दत बेबयान। यूहन्ना बिन ज़बदी उसी लमहे गुलगुता वापस पहुँचा जब हज़रत ईसा ने हाँपकर कहा, "मुझे … प्यास … लगी … है।"

चंद रोमियों ने एक स्पंज को सिरके में भिगोया और ज़ूफ़े की शाख़ पर रखकर उनके मुँह से लगाया है। जब हज़रत ईसा ने वह सिरका पिया तो कहा, "काम मुकम्मल हो गया है।"[2] उनकी आवाज़ उखड़ी हुई और साँस दिक़्क़त से आ रही थी तो भी यह अजीब फ़तह का नारा बुलंद हुआ।

---

1 मरक़ुस 15:34
2 यूहन्ना 19:28-30

बैतुल-मुक़द्दस से नरसिंगों और तुरहियों की पुरमुसर्रत आवाज़ें गुलगुता तक पहुँचने लगीं। बड़ी संजीदगी से लेलों को ज़बह करने का काम शुरू हो गया। लेकिन अब से यह क़ुरबानियाँ अल्लाह को क़बूल न रहीं। पाक कलाम फ़रमाता है, "जब मसीह एक बार सदा के लिए ख़ैमे के मुक़द्दसतरीन कमरे में दाख़िल हुआ तो उसने क़ुरबानियाँ पेश करने के लिए बकरों और बछड़ों का ख़ून इस्तेमाल न किया। इसके बजाए उसने अपना ही ख़ून पेश किया और यों हमारे लिए अबदी नजात हासिल की।"[1]

जब हज़रत ईसा ने पुकारा, "तमाम हुआ" तो उन्होंने दीदनी और ना-दीदनी दोनों दुनियाओं के सामने फ़तह का एलान किया। शैतान और उसकी फ़ौजों को अपनी शिकस्त तसलीम करनी पड़ी। मुहब्बत ने फ़तह पाई थी।

एक बार फिर हज़रत ईसा की आवाज़ सुनाई दी, "ऐ बाप, मैं अपनी रूह तेरे हाथों में सौंपता हूँ।"[2] यह कहकर उन्होंने दम छोड़ दिया।

हज़रत ईसा के फ़तह के नारे के साथ ही ज़लज़ले की महीब आवाज़ गूँजी, चटानें तड़क गईं और क़ब्रें खुल गईं। इस अज़ीम नज़ारे ने सबको दहशतज़दा कर दिया, यहाँ तक कि सूबेदार ग्लौकुस और उसके साथियों ने भी महसूस किया कि यह हज़रत ईसा ही के सबब हुआ है। कोई कभी

1 इबरानियों 9:12
2 लूक़ा 23:46

इस तरह नहीं मरा था। उन्होंने भी तसलीम किया, “यह सचमुच अल्लाह का फ़रज़ंद था।”[1]

जब भीड़ ने यह माजरा देखा तो उनके होश ठिकाने आ गए। वह मातम करते और छाती पीटते हुए यरूशलम को लौट गए। हमने इस रास्तबाज़ हज़रत ईसा के साथ क्या किया! इस सवाल की तलख़ी उनका पीछा नहीं छोड़ती थी। अगरचे हज़रत ईसा उनकी दुनियावी तवक़्क़ोआत पर पूरे नहीं उतरे थे मगर एक रास्तबाज़ की मौत ज़रूर मरा था बल्कि अल्लाह ने तारीकी और ज़लज़ला भेजकर इस बात की तसदीक़ कर दी थी।

दाऊद भी ज़ार ज़ार रोने लगा। बोला, “अब्बा जान, कैसा इनसान था!” और इफ़राईम ने सर हिलाया। उसे अपनी आवाज़ पर एतमाद नहीं था। वह जज़बात की शिद्दत से काँप रहा था। बदी और नफ़रत किसी तरह भी हज़रत ईसा पर ग़लबा नहीं पा सकी थी। वह सरापा मुहब्बत रहे थे।

नीकुदेमुस और अरिमतियाह के यूसुफ़ का दिल भी काँप उठा था। नीकुदेमुस बोला, “सब कुछ ख़त्म हो गया है। लेकिन हम अब भी हज़रत ईसा के लिए कुछ न कुछ कर सकते हैं। आओ उनके कफ़न-दफ़न का इंतज़ाम करें।”

---

1 मत्ती 27:54

यूसुफ़ ने सर हिलाया, "यहाँ नज़दीक ही मेरा एक बाग़ है। उसमें नई क़ब्र खुदी हुई है। अब हज़रत ईसा उसमें दफ़न करें।"

दोनों मुअज़्ज़ज़ आदमी शहर को रवाना हुए। उन्हें जल्दी थी। हज़रत ईसा को दफ़नाने के लिए पीलातुस से इजाज़त ज़रूरी था। कतानी कपड़ा और मुर और ख़ुशबूदार मसालों का मुरक्कब भी ख़रीदना था। यहूदी दस्तूर के मुताबिक़ साढ़े छह बजे सूरज ग़ुरूब होने से पहले पहले कफ़न-दफ़न का काम ख़त्म करना ज़रूरी था। यूसुफ़ ने एतराफ़ किया, "मैं अपने साथियों के सामने इक़रार करने से डरता था कि मैं भी हज़रत ईसा का हामी बल्कि दोस्त हूँ। लेकिन अब मुझे परवा नहीं कि लोग क्या कहते या सोचते हैं। आज मालिक ने मुझे दिलेरी और जुर्रत के मानी सिखा दिए हैं।"

नीकुदेमुस ने उससे इत्तफ़ाक़ किया, "मेरा भी यही हाल है।" उसने पीछे को दो सलीबों की तरफ़ इशारा किया जिन पर लटके दोनों मुजरिम अभी तक मौत से ज़ोर-आज़माई कर रहे थे। उनके दरमियान हज़रत ईसा का बदन लटक रहा था। गरदन नीचे को छाती की तरफ़ ढलक गई थी। नीकुदेमुस याद करने लगा, "एक रात मैं उनसे मिला था। आज मुझे उनके अलफ़ाज़ याद आ रहे हैं। उस वक़्त यह अलफ़ाज़ एक मुअम्मा थे। मेरी समझ में कुछ नहीं आया। आज उनकी एक बात सच साबित हुई। उन्होंने कहा था कि 'जिस तरह मूसा ने रेगिस्तान में साँप को लकड़ी पर लटकाकर ऊँचा कर दिया उसी तरह ज़रूर है कि इब्ने-आदम को

भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए।'[1] उन्हें पता था कि वह सलीब पर जान देंगे। लेकिन इसकी ज़रूरत क्या थी? आख़िर क्यों?"

यूसुफ़ ने बड़े दुख के साथ कहा, "अब वह मर चुके हैं। हमें इस सवाल का जवाब कभी नहीं मिलेगा। वह तो चले गए!"

शहर में पहुँचकर उन्हें इल्म हुआ कि लोग एक अजीब ख़बर से हिरासाँ हो रहे हैं। ज्योंही हज़रत ईसा ने दम दिया था बैतुल-मुक़द्दस का मोटा परदा ऊपर से लेकर नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया था। यह परदा पाक मक़ाम और पाकतरीन मक़ाम को एक दूसरे से अलग करता था। वह इनसान की हथेली के बराबर मोटा था। उस परदे के साथ ऐसा माजरा क्योंकर पेश आ सकता था? सिर्फ़ इमामे-आज़म उस परदे के अंदर जा सकता था, और वह भी साल में सिर्फ़ एक बार कफ़्फ़ारे के दिन। इस मौक़े पर वह क़ौम के गुनाहों के कफ़्फ़ारे के लिए क़ुरबानी का ख़ून अहद के संदूक़ पर छिड़कता था। जब गुलगुता पर हज़रत ईसा की मरते वक़्त की पुकार गूँजी तो एक इमाम पाक मक़ाम में ख़िदमत का काम कर रहा था। उसने परदा फटने की आवाज़ सुनी तो निहायत ख़ौफ़ज़दा हो गया। इतना मोटा परदा यों फट गया जैसे नादीदा हाथों ने खींचकर फाड़ दिया हो। उसकी आँखों के सामने वह परदा दो टुकड़े हो गया और पाकतरीन मक़ाम साफ़ नज़र आने लगा। यहाँ सदियों से अल्लाह की हुज़ूरी सुकूनत करती थी। इमाम घबरा गया कि अब मैं मर

---

1 यूहन्ना 3:14

जाऊँगा, क्योंकि मैंने पाकतरीन मक़ाम को देख लिया है। वह समझ न सका कि अब से लेकर अल्लाह की हुज़ूरी सिर्फ़ इसी जगह तक महदूद न रहेगी। हज़रत ईसा ने अपनी मौत से वह परदा फाड़ दिया है और इसके साथ ही ख़ुदा की हुज़ूरी में जाने की तमाम रुकावटें दूर कर दीं। परदे के फट जाने से बहुत-से इमाम सोच में पड़ गए। कई कहने लगे कि ज़लज़ला इसका ज़िम्मेदार है। लेकिन अगर ज़लज़ला था तो इमारत को कोई नुक़सान क्यों नहीं पहुँचा।

इधर सूरज ग़ुरूब होने को था। शाम के पाँच बज रहे थे। एक बार फिर नीकुदेमुस और यूसुफ़ चंद नौकरों के हमराह जल्दी से शहर से रवाना हुए। यूसुफ़ ने हज़रत ईसा को दफ़न करने की इजाज़त हासिल कर ली थी। उन्होंने तक़रीबन पचास किलो ख़ुशबूदार मसाले और ऊद ख़रीद लिया था। वह लाश को नहलाने के लिए बरतन और लपेटने के लिए कतानी कपड़ा और कफ़न-दफ़न के लिए दीगर ज़रूरी चीज़ें भी साथ ले गए।

कुछ लोग अभी तक गुलगुता पर मौजूद थे। वह उन्हें घूर घूरकर देखने लगे। "हैं! सदरे-अदालत के दो मुअज़्ज़ज़ अर्कान ईसा को दफ़नाने लगे हैं। क्या यह भी उसके हामी हैं?" वह सरगोशियाँ करने लगे, "देखो। अरिमतियाह का यूसुफ़ सूबेदार को एक रुक़्क़ा दिखा रहा है। ज़रूर पीलातुस की तरफ़ से ईसा की लाश के बारे में इजाज़तनामा है।"

सूबेदार ग्लौकुस ने सर की जुंबिश से इजाज़त दे दी। लेकिन हज़रत ईसा की लाश इन अफ़राद के हवाले करने से पेशतर उसने उसकी पसली में भाला मारा तो ख़ून और पानी बह निकला।

शमाऊन कुरेनी अभी तक गुलगुता पर मौजूद था जब यह मुअज़्ज़ज़ अफ़राद नौकरों की मदद से लाश उठाकर ले गए। जब उसे मालूम हुआ कि यह कौन हैं तो वह हैरान रह गया। कैसी अजीब बात है! यसायाह नबी की पेशगोई के ऐन मुताबिक़ हज़रत ईसा को अमीर आदमी की क़ब्र मिली।

नीकुदेमुस, यूसुफ़ और उनके साथी अपने काम में लग गए। जल्दी की बहुत ज़रूरत थी क्योंकि सूरज रफ़्ता रफ़्ता ग़ुरूब हो रहा था। सबत शुरू हुआ चाहता था। बड़े ग़म के साथ वह ख़ूनआलूदा लाश को नज़दीकी बाग़ की तरफ़ ले गए जहाँ यूसुफ़ की अपनी क़ब्र थी। मग्दलीनी और हज़रत ईसा की माँ मरियम भी अपने मालिक की लाश के साथ साथ जा रही थीं। इस छोटे-से गुरोह ने बिलकुल ख़याल नहीं किया कि बाग़ में बहार की आमद आमद है और सैंकड़ों ग़ुंचे और फूल खिले हुए हैं। ज़िंदगी से भरपूर मौसम इस हौलनाक मौत से और हज़रत ईसा की नहीफ़ लाश से बिलकुल मेल नहीं खा रहा था। बड़ी अक़ीदत से दोनों आदमियों ने लाश को दफ़नाने के लिए तैयार किया। ख़ून से जुड़े हुए बालों से काँटों का ताज उतारा। फिर बरतन से पानी लेकर लाश को नहलाया। फिर ख़ुशबूदार मुर और दूसरे मसाले और ऊद लगा

लगाकर कतानी कपड़े में लपेटा। यह मसाले और जड़ी-बूटियाँ लाश को गलने-सड़ने से बचाने के लिए थीं। सर को एक अलग कपड़े में लपेट दिया गया। बाज़ुओं को जिस्म के साथ रखकर उन पर कस के कपड़ा लपेट दिया गया। आख़िर उसे क़ब्र के अंदर ले गए और पत्थर के चबूतरे पर रख दिया। यह क़ब्र एक चटान में खोदी हुई थी।

आख़िर में उन्होंने एक बड़ा गोल पत्थर क़ब्र के मुँह पर रख दिया। दोनों औरतें रोते हुए सब कुछ देखती रहीं। मौसमे-बहार की ख़ूबसूरती और फूट फूटकर निकलती हुई ज़िंदगी उनके दिलों पर बरछियाँ चला रही थी। ज़िंदगी अपने मामूल के मुताबिक़ किस तरह जारी रह सकती है जबकि ज़िंदगी का नूर बुझ गया है। अब औरतों ने इरादा कर लिया कि हम भी जल्दी से शहर में जाकर ख़ुशबूदार चीज़ें और मसाले ख़रीद लें ताकि सबत गुज़रने के बाद लाश को लगाएँ।

उस रात जब यहूदी फ़सह की ईद का लेला खा रहे थे तो बहुतों का ज़मीर उन्हें मलामत कर रहा था। हमने हज़रत ईसा पर कितना ज़ुल्म किया है! लेकिन उसने आख़िर तक मुहब्बत ही मुहब्बत दिखाई।

इस बड़े ग़म में इफ़राईम, रूत और दाऊद एक बड़े सवाल पर ग़ौर कर रहे थे कि “आख़िर कौन-सी बात थी जो हज़रत ईसा को सलीब तक ले आई?”

दाऊद कहने लगा, “बेशक एक वजह तो लीडरों का हसद था।”

उनके बाप इफ़राईम बोला, “बेशक, लेकिन एक और वजह पीलातुस की बुज़दिली थी।” उसने बड़े ग़म से कहा, “और इसमें हमारी बुज़दिली भी शामिल है। मेरी, नीकुदेमुस की, यूसुफ़ की बुज़दिली। हम सब बुज़दिल हैं। हमने ख़ौफ़ के मारे अपने मुँह बंद रखे।”

रूत को भी दुख था, “लोगों की ख़ुदग़रज़ी भी उन्हें सलीब तक ले आई। वह चाहते थे कि हज़रत ईसा हमारी दुनियावी ख़ाहिशात पूरी करें।”

बुज़दिली, ख़ुदग़रज़ी और हसदो-नफ़रत कैसे घिनौने नतीजे तक पहुँच सकते हैं। हज़रत ईसा के पैरोकारों की सारी उम्मीदें ख़ाक में मिल गई थीं। उनका आक़ा मर चुका था। इस ग़म की हालत में वह छोटी छोटी टोलियों में गुज़श्ता वाक़ियात पर अफ़सोस करते हुए घरों में छिपे बैठे रहे।

लेकिन ज़ैतून पहाड़ के पीछे से चाँद इतने शान से निकला जैसे कुछ हुआ ही न हो। सारे शहर पर रुपहली चाँदनी फैल गई। शहर से बाहर तीन ख़ाली सलीबें चाँदनी के इस हुस्नो-जमाल के मुक़ाबले में अजीब बेढब मंज़र पेश कर रही थीं। लेकिन अरिमतियाह के यूसुफ़ के बाग़ पर अनोखा इतमीनान और चैन छाया हुआ था। वहाँ की एक चटानी क़ब्र में ईदे-क़ियामत का भेद बहार की पूरी क़ुव्वत से फूट निकलने का मुंतज़िर था।

मौत पर फ़तह

पुंतुस पीलातुस अपनी रिहाइशगाह के बाग़ीचे पर नज़रें जमाए फ़रहतबख़्श हवा से लुत्फ़अंदोज़ हो रहा था। खजूरों के पत्ते सुबह के हलके हलके झोंकों में लहरा रहे थे और फ़व्वारे दिलफ़रेब मौसीक़ी पैदा कर रहे थे। बहार के मौसम का एक शानदार दिन तुलू हो रहा था। पीलातुस को ख़ुश होना चाहिए था, लेकिन उसका मुजरिम ज़मीर उसके दिल पर कचोके लगा रहा था। शिकस्त का एहसास उसे बेचैन कर रहा था। वह रात-भर सो नहीं सका। उस गलीली क़ैदी के मुक़ाबले में वह अपने आपको निहायत बुज़दिल पाता था। बिस्तर पर करवटें बदलते बदलते वह सोचता रहा कि नासरी की नेक ज़िंदगी ही उसके ज़वाल का सबब बनी है। नेकी, मुहब्बत और सच्चाई की ज़िंदगी ने उसे बरबाद कर दिया है। इस दुनिया की अफ़रा-तफ़री में से बड़ी होशियारी और चालाकी से रास्ता तलाश करना पड़ता है। ईसा नासरी इसमें कामयाब नहीं हुआ और उसे बड़ी भारी क़ीमत अदा करनी पड़ी है। इसका कोई

देवता उसे बचाने नहीं आया। पीलातुस ने आह खींची। उसे अपनी बीवी याद आई। वह इस उस्ताद की मौत के बारे में बड़ी परेशान थी, क्योंकि वह उसे रास्तबाज़ आदमी समझती थी। और चूँकि उसके ख़ावंद ने मौत के परवाने पर दस्तख़त किए थे इसलिए उसे डर थी कि यहूदियों का ख़ुदा बदला लेगा। आह। पीलातुस को अपनी बीवी की परेशानी से बड़ा दुख हुआ, क्योंकि वह उसका बहुत दिल-दादा था। उसे यहूदी लीडरों पर सख़्त ग़ुस्सा आने लगा। उन्होंने ही मुझे इस शख़्स से बेइनसाफ़ी करने पर मजबूर किया, और मैं जो रोमी गवर्नर हूँ, कैसा डरपोक साबित हुआ! पहले एलान किया कि यह बेगुनाह है और फिर उसे सज़ाए-मौत दे दी! यह सब लोग मेरा कितना मज़ाक़ उड़ाते होंगे कि मैं यहूदियों के हाथ में कठपुतली बन के रह गया हूँ।

उसी वक़्त नौकर ने इत्तला दी कि इमामे-आज़म और दीगर लीडर मिलने आए हैं। पीलातुस ग़ुस्से से बोला, “फिर आ धमके हैं?” फिर भी वह उनसे मिलने बाहर निकला। उसने उन पर अपने ग़ुस्से का खुल्लम-खुल्ला इज़हार भी कर दिया। “हाँ कायफ़ा! अब क्या चाहते हो?” उसने तुंदी से पूछा।

इमामे-आज़म ने गवर्नर के मिज़ाज को भाँपकर बड़ी ताज़ीम से सलाम किया। फिर कहने लगा, “आलीजाह, उस धोकेबाज़ झूठे ईसा …”

पीलातुस ने उसे टोक दिया, “हम उसके बारे में और कुछ नहीं सुनना चाहते। वह गलीली मर चुका है।”

इमामे-आज़म ने बड़ी लजाजत से फिर कहा, “हुज़ूरवाला, बराहे-करम हमारी अर्ज़ सुन लीजिए। हमें याद आया कि जब वह धोकेबाज़ अभी ज़िंदा था तो उसने कहा था, ‘तीन दिन के बाद मैं जी उठूँगा।’ इसलिए हुक्म दें कि क़ब्र को तीसरे दिन तक महफ़ूज़ रखा जाए। ऐसा न हो कि उसके शागिर्द आकर उसकी लाश को चुरा ले जाएँ और लोगों को बताएँ कि वह मुरदों में से जी उठा है। अगर ऐसा हुआ तो यह आख़िरी धोका पहले धोके से भी ज़्यादा बड़ा होगा।”[1]

पीलातुस ने त्योरी चढ़ाई। यह नासरी पहले से भी ज़्यादा इनके आसाब पर सवार दिखाई देता था। बहुत ख़ूब! इनको भी कुछ दबाव महसूस करना चाहिए। लेकिन क्या अब से यह लोग हमेशा मुझे मजबूर करते रहेंगे कि इनके इशारों पर नाचा करूँ? चलो, उनसे छुटकारा कराने के लिए उनकी मान लेता हूँ। उसने कहा, “पहरेदारों को लेकर क़ब्र को इतना महफ़ूज़ कर दो जितना तुम कर सकते हो।”[2]

जल्द ही चंद सिपाही अपने कप्तान के साथ शहर के शिमाली दरवाज़े से निकलकर यूसुफ़ के बाग़ को रवाना हो गए। यहूदी लीडर अपनी अहमियत की तरंग में उनके आगे आगे चलने लगे। पहले तो तीनों

1 मत्ती 27:63-64
2 मत्ती 27:65

हौलनाक सलीबों ने उनका इस्तिक़बाल किया। वहाँ से आगे बढ़कर वह बाग़ में पहुँच गए।

फाटक खनकते हुए खुल गया। कायफ़ा बहुत झुँझलाया हुआ था। कहने लगा, “भई, मुझे यक़ीन नहीं आ रहा। यूसुफ़ ग़द्दार निकला। और नीकुदेमुस भी। नाक़ाबिले-यक़ीन! सदरे-अदालत के दो मुअज़्ज़ज़ रुकन और हज़रत ईसा के पैरोकार! आख़िर राज़ खुल गया है।”

हन्ना भी अफ़सोस करने लगा, “ऐसे आलिम और ज़ी-मरतबा आदमी! यक़ीन नहीं आता! यूसुफ़ को इस गलीली से इतनी क्या मुहब्बत थी कि अपनी क़ब्र उसे दे दी! उसने इस शख़्स के लिए अपने जज़बात का यों अलानिया इज़हार करके सदरे-अदालत की कितनी बेइज़्ज़ती की है!”

अब वह क़ब्र पर आ गए। बाग़ का अमनो-सुकून दरहम-बरहम हो गया। सिपाहियों ने क़ब्र के इर्दगिर्द अपनी अपनी जगह सँभाल ली। लीडरों ने अपने हाथों से क़ब्र के मुँह पर पड़े हुए पत्थर पर मोहरें लगाईं। मुतमइन होकर वह एक दूसरे से कहने लगे, “अब हर चीज़ महफ़ूज़ और हमारे क़ाबू में है। अब हम हज़रत ईसा को हमेशा के लिए भुला सकते हैं।”

लीडर चले गए तो सिपाहियों ने यूसुफ़ के बाग़ में रात आराम से गुज़ारने के बंदोबस्त शुरू कर दिए। एक हँसा, “ऐसी अच्छी असामी तो कभी नसीब नहीं हुई कि मुरदे पर पहरा दिया जाए।”

उसके साथी ने गिरह लगाई, “कोई बा-मक़सद काम होता तो बात भी थी। मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि दो दिन बाद इस बाग़ से निकलने पर हम ख़ुश होंगे। उस वक़्त तक बदबू नाक़ाबिले-बरदाश्त होगी।” इस तरह पूरा दिन फ़राग़त से गुज़र गया। रात हुई तो उन्होंने एक मशाल जलाकर ज़मीन में गाड़ दी। ठंडी रात के लिए उन्होंने एक अलाव रौशन कर लिया।

फिर किसी को क़ब्र में पड़े शख़्स की याद आई, “उस्ताद नेक आदमी था। जिस अंदाज़ से उसने मौत बरदाश्त की ... सूबेदार ग्लौकुस भी मुतअस्सिर हुए बग़ैर न रह सका।” हवा से मशाल की लौ काँपी।

एक और सिपाही ने फिर यही मौज़ू छेड़ दिया। “अच्छा दोस्त, जिस वक़्त वह मरा मैं भी गुलगुता पर मौजूद था। कैसी बेवक़्त तारीकी और कैसा ज़बरदस्त ज़लज़ला! और यह सब कुछ सलीब पर मरते हुए उस एक इनसान की वजह से हुआ। भई, कैसा दहशतनाक मंज़र था। चटानें उड़ रही थीं और क़ब्रें खुल गईं। ऐसा लगता था कि क़ुदरत उन लोगों को होश में लाने पर तुली हुई है। किस तरह उस्ताद को ठट्ठों में उड़ाते थे लेकिन उसने जवाब देने को एक बार भी मुँह न खोला।”

तीसरे मुहाफ़िज़ ने अपने नेज़े पर झुकते हुए अपना ख़याल पेश किया, “फ़र्ज़ करो कि उसका ख़ुदा उसे ज़िंदा कर दे जैसा कि उसने दावा किया था। और फ़र्ज़ करो कि क़ुदरत फिर से क़ब्र को खोल दे। तो हमारा क्या हाल होगा! कैसी मुसीबत में पड़ जाएँगे! एक बात यक़ीनी

है। उसके शागिर्द लाश चुराने कभी नहीं आएँगे। वह तो न जाने कहाँ कहाँ छिपे बैठे हैं!”

आख़िर उनके एक ख़ामोश-तबा साथी ने अपना चोग़ा अपने गिर्द लपेटा और कहने लगा, “फ़र्ज़ किया यह आदमी अल्लाह का फ़रज़ंद है। फिर तो कोई क़ब्र उसे बंद नहीं रख सकती। न रोमी न यहूदी उसे क़ब्र में क़ैद रख सकते हैं।” उसने सर हिलाया, “लेकिन ऐसा तो यक़ीनन कभी नहीं हो सकता। मुरदा तो मरा ही रहता है।”

चाँद ग़ुरूब हो रहा था। दूर मुर्ग़ के बाँग की आवाज़ सुनाई दी। चंद आदमी ज़ोर ज़ोर से जमाइयाँ ले रहे थे। वह ख़ुश थे कि एक और दिन निकल रहा है। मुरदे पर पहरा देते हुए सिपाही भी कुछ न कुछ ख़ौफ़ महसूस कर रहे थे, हालाँकि यह चाँदनी रात थी।

गुफ़्तगू में बेदिली आ गई। थकन अपना रंग दिखाने लगी। किसी ने फिर से ताज़गी पैदा करने की कोशिश की। कहने लगा, “मेरा ख़याल है कि ...” लेकिन दूसरों को उसके ख़यालात का इल्म न हो सका। अचानक ज़मीन हिलने लगी, और ख़ुदावंद का फ़रिश्ता कौंधती बिजली की तरह आसमान से उतरा। मुहाफ़िज़ थर-थर काँप उठे। वह डर के मारे भागना चाहते थे, उन पर सकता तारी हो गया था। वह एक अज़ु तक हिलाने से क़ासिर थे। क्या हो रहा है? यह फ़रिश्ता क्या करने को है? हमें नुक़सान तो नहीं पहुँचाएगा? उनकी आँखें उस आसमानी

हस्ती पर जमी रहीं जो बा-मक़सद क़दमों से क़ब्र की तरफ़ बढ़ी और बड़े आराम से क़ब्र के मुँह से पत्थर लुढ़काकर उस पर बैठ गई।

आहिस्ता आहिस्ता मुहाफ़िज़ों की समझ में आने लगा कि क्या हो रहा है। वह उठे, अपने हवास जमा किए और सर पर पाँव रखकर बाग़ से भाग निकले। मशाल और अलाव वहीं रह गया। वह गिरते-पड़ते जा रहे थे कि एक मुहाफ़िज़ हाँपते हुए बोला, "तो यह बात है। उसने जो कुछ ... जो कुछ कहा था सच निकला ... वह ज़िंदा हो गया है ... क़ब्र ख़ाली ... ख़ाली है। मैंने देखी है। लेकिन ... लेकिन किस वक़्त ... कब ... क़ब्र से बाहर निकला?"

परेशानहाल सिपाही शहर में आए तो सीधे कायफ़ा को ख़बर करने चले गए। अब जब उनके हवास दुरुस्त हो गए थे तो उन्हें एक नया ख़ौफ़ दामनगीर हुआ। हज़रत ईसा की लाश ग़ायब हो गई। कहीं इसकी क़ीमत हमें अपनी जान से अदा न करनी पड़े!

इस अरसे में हज़रत ईसा के शागिर्द सचमुच बंद दरवाज़ों के पीछे छिपे बैठे थे। शमाऊन पतरस तो परेशानहाली का मुजस्समा दिखाई दिया। वह दिन-रात अपने आपको कोसता रहा कि मैंने अपने ख़ुदावंद का इनकार किया है। वह अकसर ग़म की अथाह गहराइयों में डूबा रहता था। बल्कि तमाम शागिर्द मायूस थे कि हम भी यहूदाह इस्करियोती से किसी तरह अच्छे नहीं। हम सबने उस्ताद को आड़े वक़्त छोड़ दिया।

ग़मगीनमिज़ाज तोमा तो पता नहीं कहाँ ग़ायब हो गया था। वह अपने ग़म और दुख में तनहा रहना चाहता था। सिर्फ़ ख़वातीन शागिर्द मसरूफ़ थीं। उनका ग़म भी बहुत गहरा था। लेकिन वह लाश को लगाने के लिए मसाले और ख़ुशबुएँ तैयार करने में लगी हुई थीं।

इतवार की सुबह-सवेरे अभी अंधेरा ही था कि मग्दलीनी, सलोमी और क्लियुपास की बीवी क़ब्र पर जाने के लिए तैयार हुईं। उन्हें फ़िकर थी कि क़ब्र के मुँह पर से भारी पत्थर कौन लुढ़काएगा। उन्होंने यह अफ़वाह भी सुनी थी कि क़ब्र पर पहरा लगा हुआ है। क्या पता कि अपने मालिक की लाश पर मसाले लगा भी सकें या न! मग्दलीनी फूट फूटकर रोने लगी, "यह वहशी इनसान हज़रत ईसा को क़ब्र में भी आराम से रहने नहीं देते।"

सलोमी ने दिलासा दिया, "बहनो! अपने आपको सँभालो। हमारे सामने एक बड़ा काम है। जल्दी निकल चलें।"

तीनों जल्दी जल्दी बाहर निकलीं। इस फाटक को देखकर उनके आक़ा की कई यादें ताज़ा हो गईं। वह लहू-लुहान और अधमुए-से इसी फाटक से शहर से निकल गए थे। मग्दलीनी थरथरा गई, "मुझे तो यह सलीबें ज़हर दिखाई देती हैं।"

उसके क़दम रुक गए। दूसरी औरतें भी रुक गईं। ज़मीन हिल रही थी। "एक और ज़लज़ला," वह घबराकर बोलीं। थोड़ी ही दूर आगे बढ़कर वह फिर चौंक पड़ीं। अब दौड़ते हुए क़दमों की आवाज़ें आईं।

उन्होंने कान खड़े किए। जोशीली-सी आवाज़ें सुनाई दीं। कुछ सिपाही क़ब्र से भागे आ रहे थे। वह तेज़ी से पास से गुज़रे तो एक कह रहा था, “कायफ़ा कभी नहीं मानेगा।”

औरतें बाग़ के फाटक पर पहुँचीं तो दंग रह गईं। यह क्या हुआ था?

सलोमी बोली, “शुक्र है कि सिपाहियों ने हमें कुछ नहीं कहा। और देखो, फाटक खुला है। कोई मुहाफ़िज़ भी नहीं। ख़ुदावंद की तारीफ़ हो!” क्या अजब। बाग़ में एक भी सिपाही नहीं था। लगता था कि वह अफ़रा-तफ़री में बड़ी तेज़ी से भाग गए थे। मशाल और अलाव अभी तक जल रहे थे।

वह क़ब्र की तरफ़ चलीं तो मग्दलीनी जल्दी जल्दी उनसे आगे निकल गई। उसकी बुलंद चीख़ से सलोमी और क्लियुपास की बीवी चौंक उठीं।

सलोमी सर हिला हिलाकर कहने लगी, “मग्दलीनी क्या कह रही है? कि क़ब्र खुली है? बेचारी बहुत परेशान है। उसे ज़रूर ग़लती लगी है।” यह बात ख़त्म करते ही मग्दलीनी ने एक और चीख़ मारी।

मरियम क्लियुपास काँपने लगी, “अब इस लड़की ने मुझे डरा ही दिया है। क़ब्र के अंदर चली गई है। सलोमी सुनो! क़ब्र ख़ाली है!”

उन्होंने मग्दलीनी को बड़ी तलख़ी से रोते सुना। सलोमी को बड़ी फ़िकर लग गई। वह बोली, “कोई उसकी लाश को चुरा ले गया है! पतरस और यूहन्ना को बताना चाहिए। ख़ुदाया! इस मग्दलीनी को क्या हो गया है? इसका दिमाग़ चल तो नहीं गया?” इससे पेशतर कि

दोनों औरतों को पता चलता कि क्या हुआ है मग्दलीनी बाग़ के फाटक की तरफ़ लपकी।

सलोमी भी बेचैन हो गई थी। लेकिन उसने पुरसुकून आवाज़ में अपने आपको और मरियम को तसल्ली दी, "आओ मरियम, देखें। मग्दलीनी को ज़रूर ग़लती लगी है। वह तो हमेशा ऊँची हवाओं में उड़ती रहती है!" चंद ही लमहों बाद वह भी ख़ाली क़ब्र के अंदर झाँक रही थीं। सलोमी ने आहिस्ता से कहा, "मुरदाचोर!" और मरियम क्लियुपास सिसकियाँ लेने लगी। उसका रंग पीला पड़ गया और चेहरा बिलकुल खिच गया।

वह अभी उलझन में वहाँ खड़ी थीं कि अचानक दो मर्द उनके पास आ खड़े हुए जिनके लिबास बिजली की तरह चमक रहे थे। औरतें दहशत खाकर मुँह के बल झुक गईं, लेकिन उन मर्दों ने कहा, "तुम क्यों ज़िंदा को मुरदों में ढूँड रही हो? वह यहाँ नहीं है, वह तो जी उठा है। वह बात याद करो जो उसने तुमसे उस वक़्त कही जब वह गलील में था। 'लाज़िम है कि इब्ने-आदम को गुनाहगारों के हवाले कर दिया जाए, मसलूब किया जाए और कि वह तीसरे दिन जी उठे।'"

फिर उन्हें यह बात याद आई। और क़ब्र से वापस आकर उन्होंने यह सब कुछ ग्यारह रसूलों और बाक़ी शागिर्दों को सुना दिया। लेकिन उनको यह बातें बेतुकी-सी लग रही थीं, इसलिए उन्हें यक़ीन न आया।[1]

1 लूक़ा 24:4-9,11

ताहम मग्दलीनी के कहने पर पतरस और यूहन्ना क़ब्र पर जाने को तैयार हो गए। जब वह मग्दलीनी के साथ जल्दी जल्दी चल दिए तो यूहन्ना जो निसबतन जवान था दौड़कर पहले क़ब्र पर पहुँचा। बाहर ही से उसने देख लिया कि क़ब्र सचमुच ख़ाली है। मगर जब शमाऊन पतरस पहुँचा तो वह सीधा क़ब्र के अंदर चला गया। यूहन्ना भी उसके पीछे अंदर आ गया। शमाऊन पतरस ने उन पट्टियों की तरफ़ इशारा किया जो हज़रत ईसा की लाश पर लपेटी गई थीं और बोला, "अजीब मुरदाचोर!" पट्टियाँ तरतीब से एक तरफ़ पड़ी थीं और जिस रूमाल से सर बाँधा था वह अलग पड़ा था। वह बोला, "यूहन्ना, इसका क्या मतलब है?"

यूहन्ना पर मायूसी छा गई थी, "यह तो देख ही रहे हैं कि उसे ले गए हैं। लेकिन क्यों? और बग़ैर कफ़न के किस लिए? मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा।"

चंद लमहों के बाद शमाऊन पतरस ने बड़े दुख से कहा, "इस इलज़ाम में हमीं धर लिए जाएँगे। बेहतर है कि जिस घर में रह रहे हैं उसके दरवाज़े और भी मज़बूती से बंद किए जाएँ। मुमकिन है हाकिम हमारी तलाश शुरू कर दें।" शमाऊन ने अपनी कनपटियों पर हाथ रख लिए। उसका सर दर्द से फटने लगा था। वह फ़रियाद करने लगा, "सारी बातें क्यों इतनी उलझती जा रही हैं। हमें तो ग़म में तसल्ली और दिलासे की ज़रूरत है। इसकी बजाए उलझन पर उलझन!"

यूहन्ना कहने लगा, "मग्दलीनी और मरियम क्लियुपास की बातों का क्या मतलब! वह इसरार करती हैं कि हमने क़ब्र पर फ़रिश्तों को देखा, और उन्होंने तुम्हारे लिए पैग़ाम भी दिया। उनके मुताबिक़ हज़रत ईसा मुरदों में से जी उठे हैं। क्या उन के सर पर वहम सवार हुआ है? बोलो, शमाऊन पतरस?"

"उनका दिमाग़ ग़म के बोझ से ठिकाने पर नहीं।"

उधर जब इमामे-आज़म को सिपाहियों का पैग़ाम मिला तो उसे महसूस हुआ कि अब हज़रत ईसा को रोके और दबाए रखने की ताक़त मेरे हाथ से निकल गई है। क़ब्र ख़ाली रहेगी। अब यह बहाना नहीं चल सकता कि कुछ हुआ ही नहीं। उसने बुज़ुर्गों का एक इजलास तलब किया कि जो नई बात हुई है उसके बारे में सलाह-मशवरा करें। बड़ी बहस के बाद उन्होंने एक ख़ासी बड़ी रक़म सिपाहियों को दी और कहा, "तुमको कहना है, 'जब हम रात के वक़्त सो रहे थे तो उसके शागिर्द आए और उसे चुरा ले गए।' अगर यह ख़बर गवर्नर तक पहुँचे तो हम उसे समझा लेंगे। तुमको फ़िकर करने की ज़रूरत नहीं।" चुनाँचे पहरेदारों ने रिश्वत लेकर वह कुछ किया जो उन्हें सिखाया गया था। उनकी यह कहानी यहूदियों के दरमियान बहुत फैलाई गई और आज तक उनमें रायज है।[1]

1 मत्ती 28:13-15

मुहाफ़िज़ों की शहादत के बाइस कायफ़ा और बुज़ुर्गों को एक बार फिर हज़रत ईसा का सामना करना पड़ गया। उन्हें एक और मौक़ा दिया गया कि उनकी ज़ात के बारे में संजीदगी से सोचें। लेकिन वह अपनी हट पर क़ायम रहे कि नासरत का बढ़ई कभी अपनी क़ौम को छुड़ानेवाला अल-मसीह नहीं हो सकता।

शागिर्द तो चले गए, लेकिन मरियम मग्दलीनी क़ब्र पर ठहरी रही। वह ज़ारो-क़तार रोती रही। रोते रोते झुककर उसने क़ब्र के अंदर झाँका, तो क्या देखती है कि दो फ़रिश्ते सफ़ेद लिबास पहने हुए वहाँ बैठे हैं जहाँ पहले हज़रत ईसा की लाश पड़ी थी, एक उनके सिरहाने और दूसरा वहाँ जहाँ पहले उनके पाँव थे। उन्होंने मरियम से पूछा, "ऐ ख़ातून, तू क्यों रो रही है?"

उसने कहा, "वह मेरे ख़ुदावंद को ले गए हैं, और मालूम नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रख दिया है।"

फिर उसने पीछे मुड़कर हज़रत ईसा को वहाँ खड़े देखा, लेकिन उसने उन्हें न पहचाना। हज़रत ईसा ने पूछा, "ऐ ख़ातून, तू क्यों रो रही है, किस को ढूँड रही है?"

यह सोचकर कि वह माली हैं उसने कहा, "जनाब, अगर आप उन्हें ले गए हैं तो मुझे बता दें कि उन्हें कहाँ रख दिया है ताकि उन्हें ले जाऊँ।"

अब हज़रत ईसा ने उससे कहा, "मरियम!"

वह उनकी तरफ़ मुड़ी और बोल उठी, "रब्बूनी!" (इसका मतलब अरामी ज़बान में उस्ताद है)।

हज़रत ईसा ने कहा, "मेरे साथ चिमटी न रह, क्योंकि अभी मैं ऊपर, बाप के पास नहीं गया। लेकिन भाइयों के पास जा और उन्हें बता, 'मैं अपने बाप और तुम्हारे बाप के पास वापस जा रहा हूँ, अपने ख़ुदा और तुम्हारे ख़ुदा के पास।'"[1]

मरियम मग्दलीनी हैरान रह गई। ख़ुदावंद सबसे पहले मुझे मिला है। मुझे, एक आजिज़ और हक़ीर औरत को, जिसमें से सात बदरूहें निकाली गई हैं। अपने दोस्तों के पास वापस जाते हुए उसे एहसास हुआ कि हज़रत ईसा अब बदल गए हैं। लगता है कि हमारी दोस्ती का एक बाब बंद हो गया है और एक आला सतह की रिफ़ाक़त का आग़ाज़ हो रहा है। जिस ना-दीदनी दुनिया में हज़रत ईसा हैं वहाँ की मोहर उन पर लगी महसूस होती है। उनका जिस्म फ़रक़ है। वह ज़ाहिर भी हो सकते हैं और ग़ायब भी।

1 यूहन्ना 20:11-17

ज़ुहूरात अल-मसीह

ज़ायरीन और यरूशलम के बाशिंदों में अभी तक हज़रत ईसा का चर्चा हो रहा था—मौत के सामने उनका ग़ैरमामूली रवैया, उनकी ज़ालिमाना मौत और मौत पर अजीब निशानात। ख़ाली क़ब्र की अफ़वाहों ने लोगों के तजस्सुस को और बढ़ा दिया। बाज़ों ने कहा कि अब हज़रत ईसा बैतुल-मुक़द्दस में आ मौजूद होकर अपनी बादशाही क़ायम करेंगे। औरों का ख़याल था कि सदरे-अदालत हज़रत ईसा की लाश पेश करके तमाम अफ़वाहों का ख़ातमा कर देगी। कई लोगों को उम्मीद थी कि हज़रत ईसा के पैरोकारों को फ़ौरन गिरिफ़्तार कर लिया जाएगा। लेकिन बेशुमार लोगों को यक़ीन था कि ख़ाली क़ब्र का हज़रत ईसा के शागिर्दों से कोई ताल्लुक़ नहीं। वह तो गली में अपनी शक्ल दिखाने से भी डरते थे। फिर वह सिपाहियों के ज़ेरे-निगरानी क़ब्र से लाश कैसे चुरा सकते थे!

दाऊद और उसका बाप इसी ख़बर के बारे में बातचीत कर रहे थे। इफ़राईम कहने लगा, "मेरी बात याद रखो, अगर हज़रत ईसा की लाश कहीं होती, तो कायफ़ा ज़रूर पेश कर देता।"

"अब्बा जान, इन मुहाफ़िज़ों ने जो गवाही दी है, इससे ज़्यादा मज़हकाख़ेज़ बात मैंने कभी नहीं सुनी।" दाऊद कमरे में इधर-उधर टहल रहा था। अचानक बाप के सामने रुक गया, "कहा जाता है कि मुहाफ़िज़ अपने फ़र्ज़ की अदायगी के दौरान सो रहे थे! इतने में हज़रत ईसा के शागिर्दों ने लाश चुरा ली!" दाऊद बड़ी तंज़ से हँसा। "अब्बा, अगर कोई सिपाही अपने फ़र्ज़ की अदायगी से इतनी ग़फ़लत बरते तो इसकी क़ीमत उसे अपनी जान से अदा करनी पड़ती है। लेकिन मुहाफ़िज़ों को तो कुछ नहीं कहा गया। दाल में ज़रूर कुछ काला है।"

"बिलकुल दुरुस्त। अगर उन मुहाफ़िज़ों की बात में रत्ती-भर सच्चाई भी होती तो कायफ़ा पहला आदमी होता जो उनके लिए सज़ाए-मौत का मुतालबा करता।" इफ़राईम ने अपना सफ़ेद सर हिलाया, "बेटा, सोए हुए मुहाफ़िज़ों की शहादत की क्या क़दर हो सकती है? उनको तो पूरी तरह बेदार होना चाहिए था। तब कहीं क़ब्र पर शागिर्दों को पहचानने का बयान दे सकते थे। लेकिन उन्होंने छँगुली तक न हिलाई। कैसा मज़ाक़ है!" अचानक बुज़ुर्ग का मिज़ाज धीमा पड़ गया। "मुझे तो अरिमतियाह के यूसुफ़ पर तरस आता है। अब पता लग गया है कि वह हज़रत ईसा का ख़ुफ़िया हामी है। इसलिए हमारे लीडर सारा इलज़ाम उसी के सर

थोपने की कोशिश करेंगे, ख़ुसूसन इसलिए कि लाश उसी के बाग़ में थी। हो सकता है कि यह भी कह दें कि उसने मुहाफ़िज़ों को रिश्वत देकर लाश ग़ायब करा दी है।”

लोगों को तो एक नया शोशा हाथ आ गया था। लेकिन ईस्टर के इस पहले रोज़ और बहुत कुछ होनेवाला था।

उस दिन क्लियुपास अपने बेटे तूबियाह के साथ यरूशलम से वापस अपने गाँव इम्माउस को चल रहा था। अब उनकी सिर्फ़ एक ख़ाहिश थी कि पिछले दिनों की सारी ग़मनाक यादें यरूशलम शहर ही में छोड़ जाएँ। सात मील के इस सफ़र के दौरान वह अपने मालिक की बातें करते गए। हज़रत ईसा के बग़ैर ज़िंदगी बेमानी लगता था। हर क़दम बोझल लग रहा था। वह आहिस्ता आहिस्ता चल रहे थे। बातचीत पर अफ़सुरदगी तारी थी।

क्लियुपास ने पीछे मुड़कर यरूशलम की तरफ़ इशारा किया, “अच्छा हुआ कि हमने घर जाने का इरादा कर लिया। हज़रत ईसा के मरने के बाद यरूशलम तो काटने को दौड़ता है।” उसने अपने बेटे की तरफ़ देखा। “तूबियाह, क्या अल्लाह को ऐसे नेक नबी की फ़िकर न थी? फिर उसने उन्हें दुश्मनों के हाथों से बचाने को क्यों कुछ न किया?”

“अब्बा जान! ऐसे ही सवाल मुझे भी परेशान कर रहे हैं। लेकिन ख़ासकर एक बात मुझे तंग करती रहती है : हज़रत ईसा ने पहले ही

अपने शागिर्दों को क्यों ख़बरदार किया कि मैं सलीबी मौत मरूँगा? लगता था कि उस्ताद इसे अल्लाह की तरफ़ से समझते थे।

कुछ दूर से एक अजनबी उनके पीछे पीछे चलते नज़र आया। अब वह उनके पास आ पहुँचा और साथ साथ चलने लगा। उसने बड़ी दिलचस्पी से पूछा, "यह कैसी बातें हैं जिनके बारे में तुम चलते चलते तबादलाए-ख़याल कर रहे हो?"

क्लियुपास और उसका बेटा ग़मगीन-से खड़े हो गए और अजनबी को ग़ौर से देखने लगे। आख़िर में क्लियुपास ने कहा, "क्या आप यरूशलम में वाहिद शख़्स हैं जिसे मालूम नहीं कि इन दिनों में क्या कुछ हुआ है?"

मुसाफ़िर ने और भी दिलचस्पी दिखाई और पूछा, "क्या हुआ है?"

तूबियाह ने जवाब दिया, "वह जो ईसा नासरी के साथ हुआ है। वह नबी थे जिन्हें कलाम और काम में अल्लाह और तमाम क़ौम के सामने ज़बरदस्त क़ुव्वत हासिल थी। लेकिन हमारे राहनुमा इमामों और सरदारों ने उन्हें हुक्मरानों के हवाले कर दिया ताकि उन्हें सज़ाए-मौत दी जाए, और उन्होंने उन्हें मसलूब किया।"

क्लियुपास बड़े ग़म से अजनबी को देखने लगा, "लेकिन हमें तो उम्मीद थी कि वही इसराईल को नजात देंगे। इन वाक़ियात को तीन दिन हो गए हैं।"

उन दोनों को अजनबी से कोई उलझन नहीं हो रही थी। वह बड़े ध्यान से उनकी बातें सुन रहा था। उन्हें एहसास हुआ कि हम अपने

दिल की बातें उसको बता सकते हैं। क्लियुपास ने अपनी मायूसी का बयान किया तो अपने आपको हलका महसूस किया। “जनाब! एक और बात भी हुई है,” वह कहने लगा। “हममें से कुछ ख़वातीन ने भी हमें हैरान कर दिया है। वह आज सुबह-सवेरे क़ब्र पर गईं तो देखा कि लाश वहाँ नहीं है!”

तूबियाह बोल उठा, “लेकिन जनाब, वह रोती और मातम करती हुई वापस न आईं। नहीं, इसके बरअक्स वह जोश से भरी हुई आईं और कहने लगीं कि हम पर फ़रिश्ते ज़ाहिर हुए जिन्होंने कहा कि हज़रत ईसा ज़िंदा हैं।”

क्लियुपास ने मज़ीद बताया, “हममें से कुछ क़ब्र पर गए और उसे वैसा ही पाया जिस तरह उन औरतों ने कहा था। लेकिन उन्हें ख़ुद उन्होंने नहीं देखा।”

अब अजनबी ने सर हिलाया और उनको बेयक़ीनी की नज़रों से देखा। वह कहने लगा, “अरे नादानो! तुम कितने कुंदज़हन हो कि तुम्हें उन तमाम बातों पर यक़ीन नहीं आया जो नबियों ने फ़रमाई हैं। क्या लाज़िम नहीं था कि मसीह यह सब कुछ झेलकर अपने जलाल में दाख़िल हो जाए?”

क्लियुपास और तूबियाह ग़ौर से अजनबी के चेहरे को देखने लगे। वह जाना-पहचाना लगता था। उसकी बातें उन्हें किसी ऐसे शख़्स की याद दिला रही थीं जिसे वह अच्छी तरह जानते हों। यह कौन है? क्लियुपास

सोच में पड़ गया। “जनाब, क्या आपका सचमुच मतलब है कि नबियों ने उनकी ज़ालिमाना मौत की पेशगोइयाँ की थीं ... और जी उठने के बारे में भी?”

अजनबी ने इसबात में सर हिलाया। “ज़रूर। यह सब कुछ ज़रूरी था। अल्लाह ने फ़रमाया था कि अल-मसीह के वसीले से मैं तमाम इनसान के लिए नजात की राह तैयार करूँगा। वह वक़्त याद करो जब आदम और हव्वा ने इबलीस की बात मानकर वह फल खा लिया जिसके खाने से ख़ुदा ने मना किया था।”

“जी। अल्लाह ने आदम और हव्वा को अपनी हुज़ूरी यानी फ़िरदौस से निकाल बाहर किया, क्योंकि उसकी हुज़ूरी में गुनाहगार क़ायम नहीं रह सकता।”

“बिलकुल सही फ़रमाया। लेकिन उन्हें निकालने से पहले ख़ुदा ने आदम और हव्वा की मौजूदगी में शैतान से कहा कि ‘मैं तेरे और औरत के दरमियान दुश्मनी पैदा करूँगा। उसकी औलाद तेरी औलाद की दुश्मन होगी। वह तेरे सर को कुचल डालेगी जबकि तू उसकी एड़ी पर काटेगा।’”[1]

तूबियाह बोला, “पाक कलाम की इस आयत में इनसान के लिए वादा है। उससे पता चलता है कि अल-मसीह शैतान का सर कुचलेगा लेकिन ऐसा करने में शैतान उसकी एड़ी पर काटेगा।”

1 पैदाइश 3:15

क्लियुपास क़दरे घबरा गया। “क्या यह पेशगोई अल-मसीह की सलीब पर मौत की तरफ़ इशारा करती है? लेकिन ऐसा नहीं हो सकता!”

उनका हमसफ़र मुसकराया, “लेकिन इससे यह तो ज़रूर ज़ाहिर होता है कि अल-मसीह बुरी तरह ज़ख़मी होगा। दोस्तो! अल-मसीह के बारे में कुछ और मालूम करें। तौरेत में लिखा है कि अल-मसीह इब्राहीम की नसल से होगा, क्योंकि अल्लाह ने इब्राहीम से यह वादा किया कि ‘तेरी नसल के वसीले से ज़मीन की सब क़ौमें बरकत पाएँगी।’[1] यह बात सिर्फ़ अल-मसीह के वसीले से पूरी हो सकती है।”

तूबियाह ने सर हिलाया, “अल-मसीह को यहूदाह के क़बीले से आना है जिस तरह हज़रत याक़ूब ने फ़रमाया : “शाही असा यहूदाह से दूर नहीं होगा बल्कि शाही इख़्तियार उस वक़्त तक उसकी औलाद के पास रहेगा जब तक वह हाकिम न आए जिसके ताबे क़ौमें रहेंगी।”[2]

“बिलकुल दुरुस्त,” अजनबी ने ताईद की। “ज़रा और तलाश करो। कोई 700 साल हुए यसायाह नबी ने रोया में देखा कि ‘अंधेरे में चलनेवाली क़ौम ने एक तेज़ रौशनी देखी, मौत के साय में डूबे हुए मुल्क के बाशिंदों पर रौशनी चमकी।’”[3] उसने बारी बारी तूबियाह और क्लियुपास की तरफ़ देखा और फिर विज़ाहत करने लगा, “नबी ने उन

1 पैदाइश 18:22
2 पैदाइश 49:10
3 यसायाह 9:2

लोगों पर बड़ी रौशनी चमकते देखी जो तारीकी में रहते हैं। लेकिन फिर उसने देखा कि एक बच्चा पैदा होगा : ‘हमारे हाँ बच्चा पैदा हुआ, हमें बेटा बख़्शा गया है। उसके कंधों पर हुकूमत का इख़्तियार ठहरा रहेगा। वह अनोखा मुशीर, क़वी ख़ुदा, अबदी बाप और सुलह-सलामती का शहज़ादा कहलाएगा।’”[1]

तूबियाह बड़े तजस्सुस से अजनबी को देखने लगा।

उनका साथी जल्दी से बयान करता गया, “मेरा मतलब है कि अल-मसीह यानी हज़रत ईसा सचमुच ‘अनोखे’ थे। उनकी पैदाइश अनोखी थी। उनकी आमद का एलान फ़रिश्तों ने किया। यसायाह ने यह पेशगोई भी की थी कि वह कुँवारी से पैदा होंगे : ‘कुँवारी उम्मीद से हो जाएगी। जब बेटा पैदा होगा तो उसका नाम इम्मानुएल रखेगी।”[2] अजनबी ने मज़ीद विज़ाहत की, “हज़रत ईसा अपनी जवानी में भी बेहद अनोखे थे। और सबसे अजीब बात उनकी कामिल बेगुनाही है।”

अजनबी ज़रा रुका तो क्लियुपास ने बड़े शौक़ से बात आगे बढ़ाई, “यसायाह ने देखा कि अल-मसीह के और भी बड़े बड़े नाम होंगे क्योंकि वह बताता है कि ‘वह अनोखा मुशीर, क़वी ख़ुदा, अबदी बाप और सुलह-सलामती का शहज़ादा कहलाएगा।’”[3]

---

1 यसायाह 9:6
2 यसायाह 7:14
3 यसायाह 9:6

उसका हमसफ़र मुसकराया, “हाँ। जब यसायाह ने यह देखा तो उस पर रौशन हो गया कि अल-मसीह में ख़ुदा का ज़ुहूर होगा। वह इम्मानुएल होगा जिसका मतलब है अल्लाह हमारे साथ।” अजनबी ने भी तजस्सुस के साथ दोनों पर नज़र डाली, “मेरे दोस्तो! क्या इनसान को इम्मानुएल की सख़्त ज़रूरत नहीं ताकि इनसान की ख़ुदग़रज़ाना फ़ितरत के ख़िलाफ़ उनकी जंग में मदद करे?”

क्लियुपास ने आह भरी। “आदम और हव्वा के गुनाह के नतीजे में तमाम इनसान शैतान के इख़्तियार में आ गए। हम भी।”

“मैं आपका मतलब अच्छी तरह समझता हूँ,” तूबियाह ने थके थके लहजे में कहा। “हमारी गुनाहआलूदा फ़ितरत हमें हमेशा ख़ुदा और उसके पाक रास्ते से दूर हटाने की कोशिश में रहती है। मैं जो कुछ भी करता हूँ, लगता है कि उसके पीछे मेरी ख़ुदग़रज़ी ही है।” उसने आह भरी। “बड़ी कशमकश और जिद्दो-जहद रहता है।”

उनके साथी ने इत्तफ़ाक़ किया, “जी हाँ। गुनाह करने से इनसान की सूरत बिगड़ गई। अब वह अपने ख़ालिक़ की शबीह पर न रहा। इनसान अल्लाह के साथ अपनी सुकूनत भी खो बैठा। अल-मसीह तो इन दोनों को बहाल करने को तैयार था। लेकिन बहाली की क़ीमत बहुत ही भारी थी।”

तूबियाह ने अजनबी की बात काटी, “मैं जानता हूँ कि बग़ैर ख़ून बहाए गुनाह की माफ़ी नहीं। गुनाह एक हौलनाक चीज़ है। इसलिए हम

इतने सालों से जानवर क़ुरबान करते आ रहे हैं। लेकिन हम समझते हैं कि जानवरों का ख़ून हमारे गुनाह नहीं धो सकता। किसी बेहतर चीज़ की ज़रूरत है।” उसने ज़रा ताम्मुल किया। फिर पूछा, “अगर अल-मसीह के लिए मुक़र्रर था कि वह अपने ख़ून से हमारे गुनाहों की क़ीमत अदा करे तो उसे ऐसी ज़ालिमाना और शर्मनाक मौत मरने की क्या ज़रूरत थी?”

जल्दी से क्लियुपास भी बोला, “क्या सचमुच कोई और तरीक़ा नहीं था जिससे अल्लाह का अदल पूरा हो सकता?”

“बिलकुल नहीं।” लमहे-भर को हैरतअफ़्ज़ा ख़ामोशी तारी रही। इसके बाद अजनबी ने विज़ाहत की, “अल-मसीह की सलीबी मौत कोई हंगामी हादिसा न था। दोस्तो! मुद्दतों पहले नबियों ने बताया था। यसायाह ने अल-मसीह के बारे में कहा था कि ‘उसे हक़ीर और मरदूद समझा जाता था। दुख और बीमारियाँ उसकी साथी रहीं, और लोग यहाँ तक उसकी तहक़ीर करते थे कि उसे देखकर अपना मुँह फेर लेते थे। हम उसकी कुछ क़दर नहीं करते थे। लेकिन उसने हमारी ही बीमारियाँ उठा लीं, हमारा ही दुख भुगत लिया। तो भी हम समझे कि यह उसकी मुनासिब सज़ा है, कि अल्लाह ने ख़ुद उसे मारकर ख़ाक में मिला दिया है। लेकिन उसे हमारे ही जरायम के सबब से छेदा गया, हमारे ही गुनाहों की ख़ातिर कुचला गया। उसे सज़ा मिली ताकि हमें सलामती हासिल

हो, और उसी के ज़ख़मों से हमें शफ़ा मिली।'[1] यसायाह की निगाहें मुस्तक़बिल पर जमी हुई हैं। वह देखता है कि अल्लाह के क़ुद्दूस को लेले की तरह ज़बह करने को ले जाते हैं। हम पढ़ते हैं कि 'उस पर ज़ुल्म हुआ, लेकिन उसने सब कुछ बरदाश्त किया और अपना मुँह न खोला, उस भेड़ की तरह जिसे ज़बह करने के लिए ले जाते हैं। जिस तरह लेला बाल कतरनेवालों के सामने ख़ामोश रहता है उसी तरह उसने अपना मुँह न खोला।'"[2]

क्लियुपास रुक गया, "मुहतरम, अल-मसीह के बारे में आपने जितनी पेशगोइयाँ बयान की हैं, उनमें से एक एक हज़रत ईसा में पूरी हुई। हम किस तरह इतने अंधे हो गए और उन्हें न पहचाना?"

तूबियाह बोला, "अब जब मैं इन बातों पर सोचता हूँ तो मुझे भी एक आयत याद आती है। यसायाह नबी पर ज़ाहिर हुआ कि अल-मसीह बड़ी ज़ालिमाना मौत मरने को था। वह कहता है कि 'उसका ज़िंदों के मुल्क से ताल्लुक़ कट गया है।'"[3]

उनके साथी ने इत्तफ़ाक़ किया, "दुरुस्त! दानियाल नबी ने भी अल-मसीह के बारे में नबुव्वत करते हुए कहा कि 'अल्लाह के मसह किए गए बंदे को क़त्ल किया जाएगा।'"[4]

---

1 यसायाह 53:3-5
2 यसायाह 53:7
3 यसायाह 53:8
4 दानियाल 9:26

वह फिर आगे बढ़ने लगे। अजनबी ने ज़ोर देकर कहा, “अल-मसीह की मौत की और भी तफ़ासील दी गई हैं। दाऊद ने कहा कि ‘मेरा दोस्त भी मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ है। जिस पर मैं एतमाद करता था और जो मेरी रोटी खाता था, उसने मुझ पर लात उठाई है।’”[1]

तूबियाह बोल उठा, “यह तो यहूदाह इस्करियोती की तस्वीर है। ज़रा तसव्वुर करें कि 900 साल पहले हज़रत दाऊद पर ज़ाहिर हुआ कि अल-मसीह का अपना एक शागिर्द ही उसे धोका देगा।”

“हाँ। यसायाह नबी पर यह भी ज़ाहिर हुआ कि अल-मसीह के कोड़े मारे जाएंगे और उस पर थूका जाएगा। वह अल-मसीह के बारे में कहता है कि ‘मैंने मारनेवालों को अपनी पीठ और बाल नोचनेवालों को अपने गाल पेश किए। मैंने अपना चेहरा उनकी गालियों और थूक से न छिपाया।’”[2]

क्लियुपास ने एतराफ़ किया, “हम इन हवालों को जानते तो थे लेकिन ख़याल करते थे कि इन हौलनाक बातों का इतलाक़ ख़ुदा के ममसूह पर नहीं हो सकता। तो भी यह सब कुछ हज़रत ईसा पर बीता!”

“हाँ। पाक कलाम के मुताबिक़ इन बातों का पूरा होना ज़रूर था। दाऊद नबी ने तो उनकी मौत के अंदाज़ को भी जान लिया था। वह उसके बारे में कहता है कि ‘वह मेरे हाथ और मेरे पाँव छेदते हैं।’ दाऊद ने रोया में साफ़ देखा कि राहगीर अल-मसीह को ठट्ठों में उड़ा रहे हैं। वह

1 ज़बूर 41:9
2 यसायाह 50:6

हज़रत ईसा के बारे में कहता है, 'वह सब जो मुझे देखते हैं मेरा मज़हका उड़ाते हैं।' वह यह भी कहता है कि सिपाही उसके कपड़े आपस में बाँट रहे हैं। चुनाँचे कहता है, 'वह मेरे कपड़े आपस में बाँटते हैं और मेरी पोशाक पर क़ुरा डालते हैं।'"

तूबियाह ने सर हिलाया, "मैं तो हैरान हूँ। ज़बूर 21:69 में दाऊद कहता है कि 'मुझे सिरका पिलाया जब प्यासा था।' हज़रत ईसा की मौत के बारे में तो एक एक बात की पेशगोई की गई थी।"

अजनबी ने संजीदगी से सर हिलाया। "दाऊद के हस्सास कानों ने तो हज़रत ईसा की दुख भरी पुकार भी सुन ली कि 'ऐ मेरे ख़ुदा, ऐ मेरे ख़ुदा, तूने मुझे क्यों तर्क कर दिया है?'[1] हाँ उसने उनके मरते वक़्त के अलफ़ाज़ भी सुन लिए थे, 'मैं अपनी रूह तेरे हाथों में सौंपता हूँ।'"[2]

क्लियुपास क़दरे बेदिल-सा होकर कहने लगा, "इन सारी पेशगोइयों में अल-मसीह की मौत के बारे में बयान हुआ है। लेकिन इससे आगे क्या होगा वह मेरी समझ में नहीं आता। हज़रत ईसा तो मर गए हैं।" तूबियाह ने भी इससे इत्तफ़ाक़ किया। दोनों का ग़म गहरा होता जा रहा था।

लेकिन उनके साथी ने ज़रा तीखी नज़रों से देखकर उन्हें झिड़का। "दरअसल तुम पाक कलाम से वाक़िफ़ ही नहीं। सुनो। नबियों की रोया सलीब और क़ब्र से कहीं आगे जाती है। उन्होंने जी उठने की पेशगोई भी

---

1 ज़बूर 22:1
2 ज़बूर 31:5

तो की थी बल्कि उनके आसमान पर जाने और उनकी आख़िरी फ़तह के बारे में भी बताया है।”

दोनों आदमी फिर पुरउम्मीद नज़र आने लगे। उन्होंने दरख़ास्त की कि “मेहरबानी करके हमें इन बातों के बारे में बताइए।”

“ज़बूर 10 में दाऊद नबी अल-मसीह के बारे में कहता है कि ‘तू मेरी जान को पाताल में नहीं छोड़ेगा, और न अपने मुक़द्दस को गलने-सड़ने की नौबत तक पहुँचने देगा। तू मुझे ज़िंदगी की राह से आगाह करता है। तेरे हुज़ूर से भरपूर ख़ुशियाँ, तेरे दहने हाथ से अबदी मुसर्रतें हासिल होती हैं।’” फिर उसने ज़ोर देकर समझाया। “वह मुक़द्दस हस्ती कभी सड़-गल नहीं सकती। ज़रूर था कि वह मुरदों में से जी उठें।” उसने ज़रा ताम्मुल किया। फिर बात जारी रखी। “यसायाह नबी भी अल-मसीह के मुताल्लिक़ कहता है, ‘जब वह अपनी जान को क़ुसूर की क़ुरबानी के तौर पर देगा तो वह अपने फ़रज़ंदों को देखेगा, अपने दिनों में इज़ाफ़ा करेगा। हाँ, वह रब की मरज़ी को पूरा करने में कामयाब होगा। इतनी तकलीफ़ बरदाश्त करने के बाद उसे फल नज़र आएगा, और वह सेर हो जाएगा।’[1] इन आयात से पता चलता है कि बहुत-से लोग अल-मसीह पर ईमान लाएँगे। और उसकी नसल यानी उसके फ़रज़ंद बन जाएँगे। वह उसकी बादशाही में शामिल होंगे। लेकिन बिल-

1 यसायाह 53:10-11

आख़िर अल-मसीह इस दुनिया की अदालत करने आएगा। वह मुंसिफ़ भी होगा और बादशाह भी। ”

इस मौज़ू पर अब क्लियुपास को भी कुछ याद आ गया। वह कहने लगा, “ज़करियाह नबी ने भी रोया में देखा था कि ‘उस दिन उसके पाँव यरूशलम के मशरिक़ में ज़ैतून के पहाड़ पर खड़े होंगे। … तब रब मेरा ख़ुदा आएगा, और तमाम मुक़द्दसीन उसके साथ होंगे। … रब पूरी दुनिया का बादशाह होगा।’”[1]

अजनबी ने इत्तफ़ाक़ किया, “बहुत-से नबियों ने अल-मसीह का रोया देखा कि वह इज़्ज़त और जलाल का ताज पहने, बादशाहों का बादशाह है।”

यह आदमी बातों में ऐसे मगन थे कि उन्हें पता ही नहीं चला कि कितना फ़ासला तय कर आए हैं। जब इम्माउस का गाँव नज़र आने लगा तो मुसाफ़िर हैरान हो गए। धुँधलका फैल रहा था। क्लियुपास और उसका बेटा ख़ुश थे कि अपने घर पहुँचनेवाले हैं। अब उनको पहली बार ख़याल आया कि मालूम नहीं हमारे साथी को कहाँ जाना है? उसके अंदाज़ से लगता था कि आगे बढ़ना चाहता है। क्लियुपास ने बड़े तपाक से दावत दी, “जनाब बहुत देर हो चुकी है। अगर आप हमारे साथ ठहरें तो हमारी इज़्ज़तअफ़्ज़ाई होगी।”

---

1 ज़करियाह 14:4,5,9

अजनबी ने दावत क़बूल कर ली। क्लियुपास और तूबियाह को उम्मीद थी कि शाम का वक़्त बहुत ख़ुशगवार गुज़रेगा। लेकिन पहले उन्हें रात का खाना पकाना था। बाप-बेटा अच्छा-सा खाना तैयार करने में लग गए। आख़िर तीनों दस्तरख़ान पर बैठ गए। उन्होंने अपने साथी मुसाफ़िर को मेज़ पर इज़्ज़त की जगह दी कि वह मेज़बान के फ़रायज़ अंजाम दे। उसने रोटी ली। और शुक्र करके तोड़ी और उनको दी।

उसी लमहे तूबियाह पुकार उठा, “हज़रत ईसा!? हमारे आक़ा!? …”

क्लियुपास की आँखें हैरत से बाहर को उबल पड़ीं। “वह चले गए … हज़रत ईसा ग़ायब हो गए हैं … देखो! अभी … अभी … तो वह … यहाँ थे!”

तूबियाह काँपने लगा, “अब वह चले गए हैं।” अब तक क्लियुपास सँभल गया था। उसकी आँखें ख़ुशी से चमकने लगीं। तमाम उदासी जाती रही। वह बोला, “हज़रत ईसा ज़िंदा हैं! बेटा! क्या हमारे दिल जोश से न भर गए जब वह रास्ते में हमसे बातें करते करते हमें सहीफ़ों का मतलब समझा रहे थे?”[1]

“अब्बा! अब्बा! हज़रत ईसा मुरदों में से जी उठे हैं। चलो जल्दी से वापस यरूशलम चलें और दूसरों को भी बताएँ। अब उनको मातम करने की कोई ज़रूरत नहीं। हज़रत ईसा जी उठे हैं।”

---

1 लूक़ा 24:32

सऊदे-आसमानी

यरूशलम की बल खाती गलियों में सफ़र का आख़िरी हिस्सा तो जैसे ख़त्म होने ही में नहीं आ रहा था। आख़िर क्लियुपास और तूबियाह अपने दोस्तों के दरवाज़े को ज़ोर ज़ोर से खटखटाने लगे। यह लोग दरवाज़ा खोलने में इतनी देर क्यों लगा रहे हैं! कुंडियों के खुलने और अड़बंगों के हटाने का शोर हुआ और दरवाज़ा खुला। खोलनेवाले का चेहरा ख़ौफ़ से ज़रद था। "क्या किसी ख़तरे से भाग रहे हो? इतनी देर से आने की क्या ज़रूरत?" अब उसने उनको सामने से देखा तो चौंक पड़ा। "तुम दोनों तो ख़ुशी से फूले नहीं समा रहे। क्या बात है?"

दोनों जल्दी से उसके पास से गुज़र गए। "अभी सब कुछ बताते हैं। लेकिन पहले दूसरों से भी मिल लें।" इम्माउस से आनेवाले यह दोनों आदमी सबको ख़ुशी की ख़बर सुनाने को तड़प रहे थे। लेकिन उनके बोलने से पहले ही वहाँ मौजूद दोस्तों ने बताया कि "ख़ुदावंद जी उठा है। और शमाऊन पतरस को दिखाई दिया है।" फिर क्लियुपास और

तूबियाह ने जो कुछ राह में हुआ था बताया और यह भी कि उन्हें किस तरह पहचाना।

वह अभी बातें कर ही रहे थे कि ख़ुद हज़रत ईसा अचानक उनके दरमियान आ मौजूद हुए। बातें बंद हो गईं। चेहरे ज़रद पड़ गए। इसी तनाव भरी ख़ामोशी में सबकी आँखें उस मानूस मगर अजनबी शख़्सियत पर जमी थीं। क्या सचमुच यह हमारा प्यारा आक़ा है या कोई भूत-प्रेत?

उनके मुलाक़ाती ने सर हिलाया और पूछा, “तुम क्यों परेशान हो गए हो? क्या वजह है कि तुम्हारे दिलों में शक उभर आया है? मेरे हाथों और पाँवों को देखो कि मैं ही हूँ। मुझे टटोलकर देखो, क्योंकि भूत के गोश्त और हड्डियाँ नहीं होतीं जबकि तुम देख रहे हो कि मेरा जिस्म है।”

ख़ामोशी तारी रही। मुलाक़ाती ने एक एक पर नज़र दौड़ाई। बाज़ आँखों की उदासी जाती रही थी और उसकी जगह उम्मीद ने ले ली थी। “क्या यहाँ तुम्हारे पास कोई खाने की चीज़ है?” उसने पूछा।

“हाँ। ज़रूर है। क्यों नहीं?” कई लोग एक साथ उठ खड़े हुए। लेकिन नतनेल बोला, “मैं लाता हूँ।” थोड़ी ही देर में वह भुनी हुई मछली का एक क़तला ले आया। “जनाब, यह लें। उम्मीद है पसंद फ़रमाएँगे।” नतनेल कनखियों से अपने मुलाक़ाती की हरकात भी देख रहा था। उस अजीब मुलाक़ाती का अंदाज़ बिलकुल पुरसुकून था। “शुक्रिया। नतनेल, तुम नहीं भूले कि मुझे भुनी हुई मछली कितनी पसंद है।” बड़े

मज़े से वह खाने लगे। इस पर सारा तनाव ख़त्म होने लगा। अब हज़रत ईसा उनसे मुख़ातिब हुए, “यही है जो मैंने तुमको उस वक़्त बताया था जब तुम्हारे साथ था कि जो कुछ भी मूसा की शरीअत, नबियों के सहीफ़ों और ज़बूर की किताब में मेरे बारे में लिखा है उसे पूरा होना है। ... कलामे-मुक़द्दस में यों लिखा है, मसीह दुख उठाकर तीसरे दिन मुरदों में से जी उठेगा। फिर यरूशलम से शुरू करके उसके नाम में यह पैग़ाम तमाम क़ौमों को सुनाया जाएगा कि वह तौबा करके गुनाहों की माफ़ी पाएँ। तुम इन बातों के गवाह हो। ... तुमको आसमान की क़ुव्वत से मुलब्बस किया जाएगा। उस वक़्त तक शहर से बाहर न निकलना।” हज़रत ईसा उनकी आँखों का जायज़ा ले रहे थे। उनकी बेयक़ीनी ग़ायब हो गई थी। उनके आक़ा को तसल्ली हुई कि अब मैं उनको छोड़ सकता हूँ। “तुम्हारी सलामती हो”[1] यह कहकर वह ग़ायब हो गए।

एकदम सबकी ज़बानें खुल गईं, और वह इन अजीब वाक़ियात पर बातचीत करने लगे। शमाऊन पतरस की आँखें डबडबा आईं। उसका सर झुका हुआ था। अब तक उसे दिली रंज था कि मैंने अपने मालिक और उस्ताद का इनकार किया था। अब तक वह अपने आपको कोसता रहा। अगरचे ज़िंदा होने के बाद हज़रत ईसा उस पर भी ज़ाहिर हुए थे लेकिन उनके दरमियान वह पुरानी बात नहीं रही थी। शमाऊन पतरस

1 लूक़ा 24:36-49

के अंदर कोई चीज़ टूट गई थी। उसकी ख़ुदएतमादी पाश पाश हो चुकी थी।

सबसे ज़्यादा ख़ुश और जोशीला यूहन्ना बिन ज़बदी था। वह बोला, “दोस्तो! हज़रत ईसा में सचमुच ज़िंदगी है। जब वह हमारे साथ चलते थे तो लगता था कि अल्लाह का दम है। जब उन्होंने सलीब पर अपने दुश्मनों को माफ़ कर दिया तो ज़ाहिर था कि उनकी मुहब्बत कभी मर नहीं सकती। और जब उन्हें क़ब्र में रखा गया तो मुझे लगता था कि उनकी मुहब्बत क़ब्र को भी फाड़ डालेगी। हम जो उनके साथ रहे हैं जानते हैं कि वह कामिल इनसान थे। इंतहाई अज़ियत के वक़्त भी उनकी तबीयत में कोई फ़रक़ न आया। तो इसमें हैरानी की क्या बात है कि मौत उन्हें अपने क़ब्ज़े में न रख सकी?”

मत्ती ने उसके घुटने पर हाथ मारा, “यह बात हुई ना, यूहन्ना। मौत इसलिए क़ब्ज़े में न रख सकी कि हज़रत ईसा बेगुनाह और कामिल हस्ती हैं।”

अब शमाऊन पतरस बोला, “आज रात उस्ताद ने जो बात कही, क्या तुम लोग वह भी समझे? हम दुनिया की इंतहा तक उनके गवाह होंगे। हमें सारी दुनिया में बिशारत देनी होगी। यह उस्ताद का हमारे लिए बहुत बड़ा मनसूबा है। हमारे लिए! हम जो इस वक़्त बंद दरवाज़ों के पीछे छिपे बैठे हैं!”

मत्ती ने इस बेदिल शागिर्द की गरदन में बाज़ू डालकर कहा, "शमाऊन पतरस, बेदिल मत हो। उस्ताद ने वादा किया है कि आसमान से हमें क़ुव्वत मिलेगी।" मत्ती की इस बात ने उन सबको ख़ुशी और सुकून का एहसास दिलाया। वह कहने लगा, "हमारे ख़ुदावंद अपने कमज़ोर शागिर्दों को जानते हैं। वह जानते हैं कि हम अपनी ताक़त से इतना बड़ा काम नहीं कर सकते। इसलिए वह हमारे लिए एक मददगार भेजेंगे।"

याकूब बिन ज़बदी इस बात से परेशान था कि मालिक ने हमारी बेएतक़ादी पर हमें झिड़का है। उसने ठंडी आह भरी, "हम यह बात मानने में कितने सुस्त हैं कि हमारे ख़ुदावंद सचमुच जी उठे हैं! उन्हें अपने जी उठने का यक़ीन दिलाने के लिए हम पर बार बार ज़ाहिर होना पड़ता है।" वह रुका। उसके माथे पर बल पड़ गए। "मुझे अभी ख़याल आया है कि तोमा को ख़बर नहीं कि ख़ुदावंद जी उठे हैं। काश वह हमारे साथ यहाँ होता। उसे तलाश करके यह अज़ीम ख़बर सुनानी चाहिए।"

उम्मीद थी कि तोमा इस ख़बर से बहुत ख़ुश होगा। मगर उन्हें मायूसी हुई। उसने ख़ुशख़बरी लानेवालों को बड़ी उदास निगाहों से देखकर कहा, "मुझे यक़ीन नहीं आता। पहले मुझे उसके हाथों में कीलों के निशान नज़र आएँ और मैं उनमें अपनी उँगली डालूँ, पहले मैं अपने हाथ को उसके पहलू के ज़ख़म में डालूँ। फिर ही मुझे यक़ीन आएगा।"[1]

1 यूहन्ना 20:25

हज़रत ईसा के पैरोकारों पर अभी तक ख़ौफ़ छाया हुआ था। वह अब तक बंद दरवाज़ों के पीछे छिपे रहते थे। लेकिन हज़रत ईसा की राह में बंद दरवाज़े कोई रुकावट न थे। आठ दिन बाद वह अचानक फिर उन पर ज़ाहिर हुए। इस बार तोमा उनके साथ था। उन्होंने कहा, "तुम्हारी सलामती हो।" वह ख़ुश थे कि इस बार मेरे शागिर्द मुझे देखकर पुरसुकून हैं। लेकिन वह ख़ास तोमा की बेएतक़ादी दूर करने आए थे। चुनाँचे उन्होंने उससे मुख़ातिब होकर कहा, "अपनी उँगली को मेरे हाथों और अपने हाथ को मेरे पहलू के ज़ख़म में डाल और बेएतक़ाद न हो बल्कि ईमान रख।"

तोमा ने नफ़ी में सर हिलाया। अब ऐसा करने की ज़रूरत न रही थी। हज़रत ईसा की हुज़ूरी उस पर ग़ालिब आ गई थी। वह पुकार उठा, "ऐ मेरे ख़ुदावंद! ऐ मेरे ख़ुदा!"

हज़रत ईसा क़दरे उदासी से बोले, "क्या तू इसलिए ईमान लाया है कि तूने मुझे देखा है? मुबारक हैं वह जो मुझे देखे बग़ैर मुझ पर ईमान लाते हैं।"[1]

फ़सह की ईद की तक़रीबात आठ दिन जारी रहती थीं। इसके बाद ज़ायरीन यरूशलम से चले जाते थे। ग्यारह शागिर्द भी गलील को वापस जाने के लिए रवाना हुए। उनको घर की याद सताने लगी थी। यरूशलम में उनका चलना-फिरना महदूद होकर रह गया था। सिवाए-लोगों की

1 यूहन्ना 20:26-29

शक भरी नज़रों से छिपने के वह कुछ नहीं कर सकते थे। और क़ब्र पर फ़रिश्ते ने उन्हें गलील को जाने की हिदायत भी तो की थी। गलील के एक मख़सूस पहाड़ पर हज़रत ईसा उन्हें और अपने दूसरे पैरोकारों को मिलने को थे।

अब ख़ुदावंद सफ़र में ज़ाहिरी तौर से उनके साथ नहीं थे। तो भी सब बहुत ख़ुश थे, क्योंकि वह जानते थे कि हमारे आक़ा ना-दीदनी तौर पर हमारे साथ हैं। लेकिन अभी तक उनमें इतनी दिलेरी न थी कि यह ख़ुशख़बरी दूसरों को भी सुनाते। अपने आक़ा की ज़ाहिरी हुज़ूरी के बग़ैर वह ख़ौफ़ज़दा-से रहते थे।

जब वह गलील वापस पहुँचे तो शशो-पंज में पड़े रहे। हमारी आइंदा ज़िंदगी कैसी होगी? फ़िलहाल उनको अपने ख़ुदावंद के हुक्म पर अमल करना नामुमकिन नज़र आता था। अब तक उनको ख़ुदावंद का जी उठना हक़ीक़त से ज़्यादा ख़ाब लग रहा था। अगर उन्हें उम्मीद थी कि जहाँ से हमने अपनी पुरानी ज़िंदगी छोड़ दी थी वहीं से उसे दुबारा जारी रखेंगे तो वह ग़लती पर थे। हज़रत ईसा के साथ साथ रहने के बाद अब उन्हें अपनी पुरानी ज़िंदगी ख़ाली ख़ाली लगती थी।

एक दिन सात शागिर्द शमाऊन पतरस के घर पर जमा हुए। थोड़ी देर बातें करने के बाद शमाऊन ने एलान किया, “मैं मछली पकड़ने जा रहा हूँ।” दूसरों को भी यह बात पसंद आई। वह यकज़बान होकर बोले, “हम भी साथ जाएँगे।” उन्होंने सोचा कि शायद इस तरह हमारी तबीयत

बहाल हो जाए। कम-से-कम यह ऐसा काम था जिसे वह अच्छी तरह कर सकते थे। रात-भर झील पर ताज़ा हवा में रहेंगे तो ज़हन साफ़ हो जाएगा और अगर बहुत-सी मछलियाँ हाथ आ गईं तो हमारी ख़ुदएतमादी भी क़दरे बहाल हो जाएगी।

इसी रूह में वह निकल पड़े। शमाऊन पतरस बोला, "आज तो बहुत उम्दा रात है। अंधेरा ऐसा है कि मछलियों को हमारी ख़बर ही नहीं होगी। बहुत शिकार हाथ आएगा। लेकिन ज्यों-ज्यों वक़्त गुज़रता गया उनके दिल बुझते गए। कुछ भी हाथ न आया। क्या हम इतना सादा-सा काम भी करने के क़ाबिल नहीं रहे? ख़ासकर शमाऊन पतरस तो बहुत ही उदास होने लगा। वह हमेशा मज़बूत और पुरएतमाद होता था। वह काम में तेज़ और मर्दे-कामयाब होता था। उसने आह भरी। अब वह अपनी हक़ीक़त समझने लगा था। ओह। मैं तो बेकार और बुज़दिल इनसान हूँ। अपने उस्ताद का बेवफ़ा! मैं उनकी मुसीबत की घड़ी में उनके साथ न जाग सका, न उनका साथ दे सका।

तोमा ने बुलंद आवाज़ से कहा, "जाल तो अभी तक ख़ाली है। पौ फटनेवाली है। कुछ और कोशिश करें?"

शमाऊन पतरस ने सर हिलाया, "बेहतर है घर चलें। बड़ी मायूसी हुई।"

उसी वक़्त किसी ने साहिल की तरफ़ देखा तो बोला, "वहाँ, उधर कोई आदमी खड़ा है। लगता है पुकारकर हमें कुछ कह रहा है। शायद

दूसरे किनारे जाने के लिए सवारी चाहता है।" वह ख़ामोश रहे। अब उस आदमी की आवाज़ आई। "बच्चो, क्या तुम्हें खाने के लिए कुछ मिल गया?"

सबने पुकारकर जवाब दिया, "नहीं, कुछ नहीं।"

मुलाक़ाती ने मशवरा दिया, "अपना जाल कश्ती के दाएँ हाथ डालो, फिर तुमको कुछ मिलेगा।"

यूहन्ना बिन ज़बदी मुसकराया। उसे वह दिन याद आया जब ख़ुदावंद ने भी ऐसा ही कहा था। उस वक़्त तो बेशुमार मछलियाँ पकड़ी थीं। लेकिन उसका एक साथी बुड़बुड़ाने लगा, "इसे मछली के शिकार का क्या पता! रात के इतने बेहतरीन वक़्त में एक फ़ज़ूल-सी मछली भी हाथ न आई। और अब हम ..." उसके साथियों ने उसकी बात काटी। कोशिश करके देखने में क्या हर्ज है। उन्होंने जाल डाला और देखते ही देखते जाल इतना भारी हो गया कि उसे कश्ती पर खींच न सके। सबसे पहले अंदरियास को एहसास हुआ। वह पुकार उठा, "देखो, साथियो! जाल इतना भर गया है कि फटने को है। क्या हो रहा है? यह तो मोजिज़ा है!"

शागिर्दों को अपनी आँखों पर यक़ीन नहीं आ रहा था। लेकिन भरा हुआ जाल उन्हें क़ायल कर रहा था कि जो कुछ देख रहे हैं हक़ीक़त है। सबने मिलकर जाल को खींचने की कोशिश की। तोमा ने दबी आवाज़ में कहा, "सारी रात कुछ भी हाथ न आया और अब इतने ज़्यादा!"

शमाऊन पतरस पसीने में शराबोर था। उसने तेज़ तेज़ साँस लेते हुए कहा, "मेरी समझ में तो कुछ नहीं आ रहा। लेकिन किसी न किसी तरह इसका ताल्लुक़ उस आदमी से है जो साहिल पर मौजूद है। वह अभी तक वहीं है। भला कौन होगा?"

यूहन्ना भी यही बात सोच रहा था। फिर अचानक बड़ी अक़ीदत से पुकारा, "यह तो ख़ुदावंद हैं।"

शमाऊन पतरस ने साहिल पर खड़े आदमी की तरफ़ नज़र दौड़ाई। उसकी आँखें फैल गईं। "यूहन्ना, ठीक कहते हो। एक ही शख़्स ऐसे मोजिज़े कर सकता है और वह है हमारे ख़ुदावंद।" उसने जल्दी से कपड़े पहनने शुरू कर दिए क्योंकि काम के लिए कपड़े उतार रखे थे। दूसरों को अभी पता भी न चला कि क्या हो रहा है कि शमाऊन पानी में कूद पड़ा और पूरी क़ुव्वत से किनारे की तरफ़ तैरने लगा। वह तड़प रहा था कि हज़रत ईसा के साथ पुरानी रिफ़ाक़त और शिराकत बहाल हो जाए। लेकिन साहिल की तरफ़ बढ़ते हुए उसे ख़याल आया कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। अकेला किस तरह हज़रत ईसा का सामना करूँगा? फिर यह देखकर ख़ुश हुआ कि कश्ती मेरे पीछे पीछे चली आ रही है। अपने साथियों की आवाज़ों से उसने अंदाज़ा लगाया कि उन्होंने जाल को ऊपर खींचने की कोशिश तर्क कर दी है ताकि वह फट न जाए। वह उसे पानी ही में खींचते हुए पतरस के साथ ही साहिल पर आ पहुँचे।

किनारे पर पहुँचकर उन्होंने हज़रत ईसा के पास कोयलों की आग और उस पर मछली और रोटी रखी हुई देखी। उन्होंने कहा, "उन मछलियों में से कुछ ले आओ जो तुमने अभी पकड़ी हैं।" शमाऊन पतरस सरासर भीगा हुआ था। वह पायाब पानी में से जल्दी जल्दी आगे बढ़ा। कश्ती पर चढ़ा, जाल को किनारे पर खींच ले आया और जल्दी जल्दी चंद बड़ी बड़ी मछलियाँ लेकर ख़ुदावंद के पास आया। वह हज़रत ईसा के साथ नज़रें मिलाने से कतराता रहा। फिर वह बेढंगेपन से ज़मीन पर बैठ गया। उसके साथियों ने जल्दी जल्दी मछलियाँ गिनीं। 153 बड़ी बड़ी मछलियाँ। और बड़ी हैरानी की बात यह थी कि जाल फटा नहीं! लेकिन शमाऊन पतरस इन सारी बातों के बावुजूद ख़ुश नज़र नहीं आ रहा था। भुनी हुई मछलियों की ख़ुशबू बहुत मज़ेदार थी। बहुत उम्दा नाश्ता तैयार हो रहा था। लेकिन उसे अच्छे नाश्ते से कोई दिलचस्पी न थी। उसे अपना पेट सख़्त महसूस होने लगा। हलक़ ख़ुश्क हो गया। ख़ामोशी से वह हज़रत ईसा के पास बैठा रहा। उस्ताद को अपने शागिर्द की ज़बूनहाली का पता था। लेकिन इसे बाद में देखा जाएगा। अभी इनको नाश्ते की ज़रूरत है। उन्होंने सबको बुलाया, "आओ, नाश्ता कर लो।"

उनके खाना खाते हुए सूरज तुलू होने लगा। हर चीज़ पर सुनहरी किरणें अजब बहार दिखा रही थीं। छोटी छोटी लहरें जगमगाती हुई साहिल की तरफ़ आती रहीं।

सुर्ख़ दहकते फूल अजब बहार दिखा रहे थे। लगता था कि क़ुदरत भी ईस्टर की ख़ुशियों में शामिल हो गई है। जी उठे अल-मसीह की ख़ुशी शागिर्दों के दिलों में भी मौजज़न थी। क्या इससे भी बड़ी कोई बात हो सकती है कि ख़ुदावंद हज़रत ईसा के साथ फिर मिलाप हो जाए!

लेकिन उनके दरमियान अभी एक शख़्स ऐसा था जो दूसरों की इस ख़ुशी की लहर में हिस्सेदार नहीं हो सकता था। और यह था शमाऊन पतरस। अगरचे वह ख़ुद अपने ख़ुदावंद को मिलने के लिए बेताब होकर आगे बढ़ा आया था लेकिन उसकी रूह शर्मसार थी। जो कुछ उसने ख़ुदावंद हज़रत ईसा से किया था, उसको वह नहीं भूल सकता था। वह जो सारे ग्रूप का लीडर था, उसने अपने आक़ा का साथ छोड़ दिया था। उसके और हज़रत ईसा के दरमियान कोई मोटी-सी दीवार आ खड़ी हुई थी। लगता था कि पहली-सी रिफ़ाक़त कभी बहाल नहीं हो सकती। न बहार का हसीन मंज़र और न अपने उस्ताद की मौजूदगी उसे ख़ुश कर रही थी। उधर हज़रत ईसा को जो इनसानी दिलों का हाल जानते हैं, यह सब कुछ मालूम था। लेकिन शमाऊन को शफ़ा देने के लिए उसके ज़ख़म को दुबारा खोलना ज़रूरी था, और यह बहुत दर्दनाक अमल था।

चुनाँचे नाश्ते के बाद हज़रत ईसा ने शमाऊन पतरस से कहा, "शमाऊन, क्या तू इनकी निसबत मुझसे ज़्यादा मुहब्बत करता है?" यह सवाल शमाऊन को तीर की तरह लगा। ख़ुदावंद कितने नरमदिल हैं। उन्होंने कोई इलज़ाम नहीं लगाया। लेकिन फिर भी शमाऊन ने चुभन-

सी महसूस की। क्या वह यही नहीं सोचते हैं कि मैं दूसरों से बढ़कर हज़रत ईसा से मुहब्बत रखता हूँ? सलीबी मौत से पहले उसने कहा था कि "ख़ाह यह सारे आपका इनकार करें, मैं कभी आप का इनकार नहीं करूँगा।" अब उसने आजिज़ी से जवाब दिया, "जी ख़ुदावंद, आप तो जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।" हज़रत ईसा ने उससे कहा, "फिर मेरे लेलों को चरा" (यानी मेरे पैरोकारों की निगहबानी कर)।

थोड़ी देर के लिए ख़ामोशी रही। तमाम शागिर्द महसूस कर रहे थे कि उनका साथी इस वक़्त कैसा दुख महसूस कर रहा है। लेकिन ज़्यादा देर नहीं गुज़री, ख़ुदावंद की आवाज़ ने फिर सवाल पूछकर शमाऊन को चौंका दिया, "शमाऊन यूहन्ना के बेटे, क्या तू मुझसे मुहब्बत करता है?"

शमाऊन के होंट हिले मगर आवाज़ न निकली। आख़िर वह आहिस्ता से बोला, "जी ख़ुदावंद, आप तो जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।" वह कितना उदास हो रहा था। किस तरह हज़रत ईसा को यक़ीन दिलाए कि मेरे दिल में अभी तक तेरी मुहब्बत की आग रौशन है!

हज़रत ईसा ने कहा, "फिर मेरी भेड़ों की गल्लाबानी कर।" सबने देखा कि हज़रत ईसा की साफ़ और तेज़ निगाहें अपने शागिर्द का जायज़ा ले रही हैं। तब उन्होंने तीसरी बार सवाल किया, "शमाऊन यूहन्ना के बेटे, क्या तू मुझे प्यार करता है?" अब शमाऊन पतरस

बहुत ही ग़मगीन हुआ, “ख़ुदावंद, आपको सब कुछ मालूम है। आप तो जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।”

हज़रत ईसा ने जवाब दिया, “मेरी भेड़ों को चरा। मैं तुझे सच बताता हूँ कि जब तू जवान था तो तू ख़ुद अपनी कमर बाँधकर जहाँ जी चाहता घूमता-फिरता था। लेकिन जब तू बूढ़ा होगा तो तू अपने हाथों को आगे बढ़ाएगा और कोई और तेरी कमर बाँधकर तुझे ले जाएगा जहाँ तेरा दिल नहीं करेगा।” उन्हों ने इन बातों से इशारा कर दिया कि वह किस तरह की मौत से अल्लाह का जलाल ज़ाहिर करेगा। फिर बोले, “मेरे पीछे हो ले।”[1] शमाऊन पतरस ने तीन बार ख़ुदावंद का इनकार किया था। अब ख़ुदावंद ने उसे मौक़ा दिया कि अपने साथियों के सामने तीन बार अपनी मुहब्बत का इक़रार करे। इस तरह उन्होंने उसे उनके दरमियान इज़्ज़त के मक़ाम पर बहाल कर दिया।

उस दिन से शमाऊन पतरस का दिल बेबयान ख़ुशी से भर गया। उसके साथी शागिर्द इस मुसर्रत को उसके चेहरे से छलकती, उसकी बातों में खनकती और उसकी हरकतों में झलकती देख सकते थे। अब वह एक नया इनसान बन गया था। लेकिन उसे इस बात की ज़्यादा ख़ुशी थी कि चंद ही दिनों बाद हम सब और हज़रत ईसा के बहुत-से और पैरोकार एक पहाड़ पर उनसे ख़ुसूसी मुलाक़ात करेंगे। उसने अपने

1 यूहन्ना बाब 21

भाई अंदरियास से पूछा, "इस मुलाक़ात के वक़्त उस्ताद क्या कुछ बताएंगे?"

अंदरियास ने ज़रा ग़ौर करके जवाब दिया, "शायद यह ज़ाहिर करें कि मैं इस ज़मीन पर अपनी बादशाही क़ायम करने के लिए कब आ रहा हूँ या शायद रूहुल-क़ुद्स के मुताल्लिक़ कुछ और भी बताएँ।" वह सिर्फ़ अंदाज़ा ही लगा सकते थे कि क्या होगा।

जिस दिन शागिर्द हज़रत ईसा से पहाड़ पर मिलने गए हज़रत ईसा उनके दरमियान ऐसे ही बैठ गए जैसे गुज़रे दिनों में। सब महसूस कर रहे थे कि ख़ुदावंद हमसे कोई बहुत ही ज़रूरी बात करनेवाले हैं। वह ख़ामोशी से उनकी सुनने के मुंतज़िर हुए। हर एक महसूस कर रहा था कि वह हमें कितने प्यार करते हैं। हम उनके नज़दीक कितने बेशक़ीमत हैं। फिर हज़रत ईसा उनसे कहने लगे, "आसमान और ज़मीन का कुल इख़्तियार मुझे दे दिया गया है। इसलिए जाओ, तमाम क़ौमों को शागिर्द बनाकर उन्हें बाप, फ़रज़ंद और रूहुल-क़ुद्स के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें यह सिखाओ कि वह उन तमाम अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारें जो मैंने तुम्हें दिए हैं। और देखो, मैं दुनिया के इख़्तिताम तक हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।"[1]

1 मत्ती 28:18-20

ईमानदारों के दिलों को बहुत इतमीनान हासिल हुआ। हज़रत ईसा ने उनको यक़ीन दिलाया था कि इस दुनिया से चले जाने के बाद मैं ज़ाहिरी तौर पर तो तुम्हारे साथ नहीं हूँगा। लेकिन ना-दीदनी तौर पर हर वक़्त तुम्हारे साथ रहूँगा।

पहाड़ से उतरते वक़्त यूहन्ना बिन ज़बदी ने शमाऊन पतरस से कहा, "हमारे उस्ताद ने हमें कितना भारी काम सौंपा है कि सारी दुनिया को शागिर्द बनाएँ।"

शमाऊन पतरस को कोई फ़िकर न थी। "यूहन्ना, याद रखो कि यह काम शुरू करने से पहले हमें यरूशलम वापस जाकर रूहुल-क़ुद्स की आमद का इंतज़ार करना है। वह हमारा इलाही मददगार होगा।" यूहन्ना ने उसके साथ इत्तफ़ाक़ किया मगर सोचने लगा कि रूहुल-क़ुद्स किस तरह आएगा। ख़ामोशी से आएगा या बहुत शोर के साथ? क्या वह ज़ाहिरी सूरत में आएगा? और किस तरह हमारी मदद करेगा?

शमाऊन पतरस ने उसे सलाह दी, "फ़िकर मत करो। हम यके-बाद-दीगरे आहिस्ता आहिस्ता क़दम उठाएँगे। कल तो मालिक की हिदायत के मुताबिक़ यरूशलम को वापस चलेंगे। जल्द ही वह ज़ाहिरी तौर से हमसे जुदा होनेवाले हैं। अगला क़दम उनको अलविदा कहना है।"

वह ख़ामोशी से चलते गए। अपने मालिक के बग़ैर दिन गुज़ारने के ख़याल से वह परेशान हो रहे थे। लेकिन थोड़ी देर बाद यूहन्ना को तसल्ली हुई। "उस वक़्त की फ़िकर क्यों करें जब उस्ताद जिस्म में

हमारे साथ नहीं होंगे। हमने देख लिया है कि वह जी उठे हैं। उन्होंने वादा किया है कि बाद में भी वह हममें से एक एक के साथ रहेंगे।”

हज़रत ईसा के जी उठने के तक़रीबन पाँच हफ़्ते बाद शागिर्द यरूशलम को वापस आए। हज़रत ईसा की माँ और दीगर ख़वातीन भी उनके हमराह थीं। सफ़र के चौथे दिन वह ज़ैतून पहाड़ के शिमाल में पहुँचे। ख़ामोशी से वह शहर को देखने लगे। पूरा शहर शाम के धुँधलके में डूबा हुआ था। आख़िर तोमा ने ख़ामोशी को तोड़ा, “इस शहर के साथ कैसी तलख़ यादें वाबस्ता हैं! मुझे अपने उस्ताद की मौत याद आती है और ... हाँ अपनी बेएतक़ादी भी। मैं शुक्रगुज़ार हूँ कि मायूसी और बेएतक़ादी की तारीकी से निकलने में उस्ताद ने मेरी मदद की है। अब रौशनी में आ चुका हूँ।”

लगता था कि शमाऊन पतरस भी पछता रहा है। उसे वह रात फिर याद आ रही थी जब उसने हज़रत ईसा का इनकार किया था। उसने आँसू पोंछे और सीधा खड़ा हो गया। “ख़ुदावंद नहीं चाहता कि हम ऐसे ग़मनाक ख़यालात से चिमटे रहें। उन्होंने सब कुछ माफ़ कर दिया है। अब हम ईस्टर के मोजिज़े पर ख़ुशी मना सकते हैं। अब हमें उस दिन का इंतज़ार है जब वह सबका बादशाह बनकर आएँगे।”

आख़िर वह शहर में दाख़िल हो गए। उन मानूस गलियों ने माज़ी की यादें ताज़ी कर दीं जहाँ वह हज़रत ईसा के साथ आया-जाया करते

थे। वह बालाखानेवाले मकान पर पहुँचकर ख़वातीन दूसरों से अलग हो गईं। उन्हें अपने अज़ीज़ों के साथ क़ियाम करना था। सिर्फ़ ग्यारह शागिर्द बालाखाने में रहे।

चंद दिनों के बाद तमाम शागिर्द इकट्ठे होकर नाश्ता कर रहे थे कि हज़रत ईसा उनके साथ रिफ़ाक़तो-शिराकत के लिए आ मौजूद हुए। उनकी बातों से उनके दिल जोश से भर गए। उस्ताद ने उन्हें बताया कि वह यरूशलम में रहें जब तक वह रूहुल-क़ुद्स के आने से क़ुव्वत न पाएँ। फिर वह सबसे पहले यरूशलम के बाशिंदों को उनके जी उठने की गवाही दें जिन्होंने उनको मरते देखा था। अब उनके जी उठने की अज़ीम ख़बर भी पहले इन्हीं को मिलनी चाहिए।

शागिर्दों के साथ रिफ़ाक़त के बाद, हज़रत ईसा उन्हें शहर से बाहर ले गए। ज़ैतून पहाड़ को जाते हुए सबके ज़हनों में एक बड़ा सवाल सर उठा रहा था। क्या हज़रत ईसा के ज़मीन पर दुबारा आने का वक़्त बहुत जल्दी होगा? यूहन्ना ने हज़रत ईसा से पूछा, "ख़ुदावंद, क्या आप इसी वक़्त इसराईल के लिए उसकी बादशाही दुबारा क़ायम करेंगे?"[1] सब ख़ामोशी से जवाब के इंतज़ार में रहे।

हज़रत ईसा ने जवाब दिया, "उन वक़्तों और मियादों का जानना जिन्हें बाप ने अपने ही इख़्तियार में रखा है तुम्हारा काम नहीं।" वह रुके और उन सब पर ऐसी नज़र डाली जैसे कोई बहुत ही अहम बात

1 आमाल 1:6

बताना चाहते हों। कोई ऐसी बात जिसे वह ज़रूर याद रखें। फिर वह बोले, “लेकिन तुम्हें रूहुल-क़ुद्स की क़ुव्वत मिलेगी जो तुम पर नाज़िल होगा। फिर तुम यरूशलम, पूरे यहूदिया और सामरिया बल्कि दुनिया की इंतहा तक मेरे गवाह होगे।”[1]

अब वह ज़ैतून पहाड़ पर पहुँच गए। शागिर्दों को एहसास हुआ कि अब उनके चले जाने का वक़्त आ गया है। उनके दिल काँप उठे। एक बार फिर उन्होंने बड़ी मुहब्बत से शागिर्दों की आँखों में झाँका। फिर हाथ उठाकर उनको बरकत दी। बरकत देते हुए वह उनके देखते देखते ऊपर उठा लिए गए। फिर एक बदली ने उन्हें उनकी नज़रों से छिपा लिया। शागिर्दों की नज़रें ऊपर ही उठी हुई थीं कि शायद उनकी एक और झलक देख लें कि अचानक दो आदमी उनके पास आ खड़े हुए। दोनों सफ़ेद लिबास पहने हुए थे। उन्होंने कहा, “गलील के मर्दो, आप क्यों खड़े आसमान की तरफ़ देख रहे हैं? यही ईसा जिसे आपके पास से आसमान पर उठाया गया है उसी तरह वापस आएगा जिस तरह आपने उसे ऊपर जाते हुए देखा है।”[2]

उनका ग़म ख़ुशी में बदल गया कि हमारे ख़ुदावंद आसमान पर गए हैं ताकि ख़ुदा के दहने हाथ वह मक़ाम हासिल करें जिसके हक़दार हैं और जहाँ से वह अबद तक सलतनत करेंगे। ख़ुदा बाप ने उन्हें मुरदों में से जिलाकर और आसमान पर उठाकर इस बात की तसदीक़ कर

---

1 आमाल 1:8
2 आमाल 1:9-11

दी है। सलीब पर उन्होंने शैतान और गुनाह पर फ़तह पाई। आज वह फ़ातेह की हैसियत से आसमान को वापस पहुँचे हैं। हज़रत ईसा तलवार से नहीं बल्कि मुहब्बत से अपनी बादशाही हासिल करेंगे। और हम जो उनके शागिर्द हैं उनके एलची होंगे ताकि तमाम इनसानों को उनकी बादशाही में शरीक होने की दावत दें। कितनी ख़ुशी की बात कि ख़ुदावंद हमें आसमान से क़ुव्वत अता करेंगे, वरना हम इस अज़ीम ख़िदमत के बिलकुल लायक़ नहीं हैं।

शागिर्द जानते थे कि अगरचे हज़रत ईसा अपने आसमानी बाप के पास चले गए तो भी वह हमारे साथ हैं। किसी ने कहा, "उस्ताद घर चले गए हैं। किसी दिन हम भी उनके पीछे पीछे जाएँगे। उन्होंने हमारे साथ वादा किया है कि 'फिर आकर तुम्हें अपने साथ ले लूँगा ताकि जहाँ मैं हूँ तुम भी हो।" इस ख़याल से उन्हें बेबयान इतमीनान हासिल हुआ। वह दिन आएगा जब हम सब उनके साथ मिल जाएँगे। तब तक हम इस ज़मीन पर उनकी इज़्ज़त और जलाल के लिए ज़िंदगी बसर करेंगे। यों एहसासे-तनहाई के बावुजूद हज़रत ईसा के शागिर्द अब बड़ी उम्मीदों के साथ मुस्तक़बिल को देखने लगे।

रूहुल-क़ुद्स का नुज़ूल

पंतिकुस्त की ईद नज़दीक थी। सारी दुनिया से ज़ायरीन एक बार फिर यरूशलम में जमा हो रहे थे। पंतिकुस्त को “पचासवाँ” भी कहते थे, क्योंकि यह फ़सह की ईद के पचासवें दिन होती थी। इस ईद पर भी यरूशलम में अगर ज़्यादा नहीं तो फ़सह की ईद जितने लोग जमा हुआ करते थे। मौसम बहुत ख़ुशगवार था, और सफ़र के लिए हालात भी साज़गार। फ़सल जमा की जा चुकी थी, और सब लोग बेहद ख़ुश थे। फ़सह की ईद जो फ़सल के आग़ाज़ में होती थी, इस मौक़े पर तक़रीबन पौने तीन लिटर जौ अल्लाह के हुज़ूर नज़र की क़ुरबानी के तौर पर चढ़ाया जाता था। आज पंतिकुस्त के मौक़े पर फ़सल की कटाई के शुक्राने के लिए अल्लाह के हुज़ूर दो रोटियाँ नज़र चढ़ाई जाएँगी। यह ईद इस बात की याद में मनाई जाती थी कि उस रोज़ ख़ुदा ने सीना पहाड़ पर मूसा को शरीअत दी थी।

बैतुल-मुक़द्दस में सवेरे ही नरसिंगे बजाए गए। उनकी आवाज़ सुनकर इबादतगुज़ार बैतुल-मुक़द्दस में जमा होने लगे। आज कायफ़ा और यहूदियों के दीगर लीडर बहुत इतमीनान महसूस कर रहे थे। अब हज़रत ईसा कभी बैतुल-मुक़द्दस में आकर दख़लंदाज़ी नहीं कर सकेंगे और न हुजूम को अपने पीछे लगाएँगे! हरगिज़ नहीं। उनको ख़याल था कि हम यह तहरीक को ख़त्म करने में पूरे तौर से कामयाब हो गए हैं। उसके पैरोकार हर तरफ़ तित्तर-बित्तर हो चुके हैं। शायद उनमें से किसी को अब बैतुल-मुक़द्दस में आने की भी जुर्रत न हो। लेकिन जल्द ही पता चलनेवाला था कि वह किस क़दर ग़लती पर थे।

इफ़राईम, यशुअ और दाऊद आहिस्ता आहिस्ता बैतुल-मुक़द्दस की तरफ़ जा रहे थे। बूढ़े आदमी को चलना कुछ मुश्किल था, लेकिन उसका ज़हन अभी चौकस था। कुछ सोचते हुए वह कहने लगा, “यह देखकर बड़ी ख़ुशी होती है कि हज़रत ईसा के पैरोकार एक दूसरे से बड़े मेल-मिलाप से रहते हैं। अकसर कोई 120 अफ़राद इकट्ठे रहते हैं तो भी कभी लड़ते-झगड़ते नहीं देखे गए। उनमें ख़ुदापरस्ती इतनी गहरी है कि ताज्जुब होता है।” ज़रा ताम्मुल के बाद फिर बोला, “चूँकि रूत भी हज़रत ईसा की पैरोकार है इसलिए मैं ज़ाती तजरिबे से यह बात कह रहा हूँ।”

दाऊद ने ताईद की, “अब्बा जान! मैंने एक और बात भी देखी है। जब से हज़रत ईसा मुरदों में से जी उठे हैं इन लोगों में ज़बरदस्त तबदीली

आ गई है। जब उनके आक़ा को दफ़नाया गया तो किस क़दर सहमे हुए थे। लेकिन अब बहुत दिलेर और पुरएतमाद हैं। यह तो यक़ीनी बात है कि वह हज़रत ईसा के जी उठने का क़िस्सा घड़ नहीं सकते थे बल्कि उनको तो यक़ीन ही नहीं आता था कि वह कभी ज़िंदा हो जाएँगे। लेकिन उनके मौजूदा रवैये से मानना पड़ता है कि हज़रत ईसा सचमुच ज़िंदा हो गए हैं।”

इफ़राईम ने लंबी साँस खींची। उसकी आरज़ू थी कि वह तीनों भी आख़िरी क़दम उठाकर हज़रत ईसा को अपना नजातदहिंदा क़बूल कर लें। बड़े रश्क से कहने लगा, “मुझे अकसर हैरानी होती है कि इन लोगों के नज़दीक हज़रत ईसा कितनी ठोस हक़ीक़त हैं। उनको मुसलसल हुज़ूरी का कैसा यक़ीन है! और अब जबकि वह आसमानी क़ुव्वत का इंतज़ार कर रहे हैं तो वह वक़्त को बड़ी उम्दगी से गुज़ार रहे हैं। बड़ी दिलसोज़ी से दुआएँ माँगते हैं। उनको खाना-पीना बल्कि वक़्त का एहसास भी भूला होता है। वह अल्लाह के पाक कलाम का मुतालआ करते और हर मामले में एक दूसरे से सलाह-मशवरा करते रहते हैं। लगता है कि वह अपने ना-दीदनी ख़ुदावंद को हर क़ीमत पर ख़ुश करना चाहते हैं।” लमहे-भर की ख़ामोशी के बाद बुज़ुर्ग ने बात जारी की, “मैं अकसर सोचता हूँ कि मालूम नहीं कि आसमानी क़ुव्वत यानी ख़ुदा का रूह जिसका वादा किया गया है, वह कब नाज़िल होगा। लगता है किसी को भी पता नहीं।”

यशुअ कहने लगा, “अब्बा जान! आपने बिलकुल दुरुस्त फ़रमाया है। आज मैं उस दिन को याद कर रहा था जब हमारी क़ौम को शरीअत दी गई। उस वक़्त आग और धुआँ और बादल सीना पहाड़ पर छाए हुए थे। तब अल्लाह मूसा को शरीअत देने के लिए पहाड़ पर उतरा। उसकी आवाज़ इतनी हैबतनाक थी कि लोग घबरा गए, यहाँ तक कि हज़रत मूसा से दरख़ास्त करने लगे कि आप ही अल्लाह से बात करें। मेरा ख़याल है कि ख़ुदा का रूह भी इसी तरह नाज़िल होगा। ख़ौफ़नाक अंदाज़ में ताकि सब देख और सुन सकें। अब्बा जान! हम भी तक़रीबन ईमान ला ही चुके हैं कि हज़रत ईसा ही अल-मसीह हैं। हमें भी यक़ीन है कि वह हमारी ख़ातिर मुए और यह कि अल्लाह ने उन्हें ज़िंदा किया ताकि फिर आसमान पर जाएँ। मुझे पूरी उम्मीद है कि जब रूहुल-क़ुद्स नाज़िल होगा तो हमारे तमाम शुकूक दूर हो जाएँगे।”

जब इफ़राईम और उसके बेटे बैतुल-मुक़द्दस के सहन में दुआ कर रहे थे, उसी वक़्त हज़रत ईसा के पैरोकार बालाखाने में अल्लाह का कलाम सुन रहे थे। सुबह कोई नौ बजे का वक़्त था कि आसमान से यकायक बड़ा शोर सुनाई देने लगा। यरूशलम में जमा लोगों की भीड़ सख़्त डर गई। लगता था कि एक ख़ौफ़नाक आँधी इस शोर को उड़ाए लिए आ रही है। लोग एकदम गलियों में निकल आए ताकि इस पुरअसरार चीज़ का पता करें कि क्या है? कहाँ उतरी है? आवाज़ उस बालाखाने की तरफ़ लोगों की राहनुमाई करने लगी जहाँ हज़रत ईसा के पैरोकार जमा

थे। देखते ही देखते हज़ारों अफ़राद उस घर के बाहर आ जमा हुए। आवाज़ बंद हो गई। उसका मक़सद लोगों को उस जगह लाना था जहाँ रूहुल-क़ुद्स नाज़िल हुआ है। यह हौलनाक आवाज़ उसकी क़ुव्वत का निशान थी। हज़रत ईसा ने ख़ुद भी तो रूह की आमद को हवा के चलने से तशबीह दी थी। इस ज़ोरदार आवाज़ से हर कोई समझ सकता था कि यह फ़ौक़ुल-फ़ितरत क़ुव्वत है।

लेकिन इतना ही नहीं हुआ। एक एक ईमानदार रूहुल-क़ुद्स से भर गया। अब यहया नबी की पेशगोई पूरी हो रही थी कि "मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन एक आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है। . . . वह तुम्हें रूहुल-क़ुद्स और आग से बपतिस्मा देगा।[1] और सचमुच हज़रत ईसा के पैरोकारों के सरों के ऊपर शोलों की शक्ल में आग दिखाई देने लगी। देखनेवाले हैरान हुए, क्योंकि आग की यह ज़बानें भी आसमान और फ़ौक़ुल-फ़ितरत क़ुव्वत का इज़हार थे। आज तक तो रूहुल-क़ुद्स सिर्फ़ चंद लोगों में और वह भी महदूद अरसे के लिए सुकूनत करता था। लेकिन पंतिकुस्त पर रूहुल-क़ुद्स इसलिए नाज़िल हुआ कि वह हमेशा तक ईमानदारों के दिलों में बसेरा करे।

भीड़ यह देखकर और भी ज़्यादा ताज्जुब करने लगी कि रूहुल-क़ुद्स लोगों में कैसी कैसी तबदीलियाँ पैदा कर रहा है। उनको बेबयान ख़ुशी हुई, और उनमें बड़ी दिलेरी आ गई। वह उठकर मुनादी करने लगे कि

---

1 लूक़ा 3:16

नजात सिर्फ़ हज़रत ईसा मसीह के वसीले से है। वह अजनबी ज़बानें यों बोलने लगे जैसे वह उनकी मादरी ज़बान हो। लोगों को उनके कलाम की इतनी अच्छी तरह समझ आने लगी कि उनके दिलों में उतरने लगा।

वह कहने लगे, "क्या यह सब गलील के रहनेवाले नहीं हैं? तो फिर यह किस तरह हो सकता है कि हममें से हर एक उन्हें अपनी मादरी ज़बान में बातें करते सुन रहा है जबकि हमारे ममालिक यह हैं : पारथिया, मादिया, ऐलाम, मसोपुतामिया, यहूदिया, कप्पदुकिया, पुंतुस, आसिया, फ़रूगिया, पंफ़ीलिया, मिसर और लिबिया का वह इलाक़ा जो कुरेन के इर्दगिर्द है। रोम से भी लोग मौजूद हैं। यहाँ यहूदी भी हैं और ग़ैरयहूदी नौमुरीद भी, क्रेते के लोग और अरब के बाशिंदे भी। और अब हम सबके सब इनको अपनी अपनी ज़बान में अल्लाह के अज़ीम कामों का ज़िक्र करते सुन रहे हैं।" सब दंग रह गए। उलझन में पड़कर वह एक दूसरे से पूछने लगे, "इसका क्या मतलब है?" लेकिन कुछ लोग उनका मज़ाक़ उड़ाकर कहने लगे, "यह बस नई मै पीकर नशे में धुत हो गए हैं।"[1]

तब शमाऊन पतरस खड़े होकर हाज़िरीन से मुख़ातिब हुआ, "सुनें, यहूदी भाइयो और यरूशलम के तमाम रहनेवालो! जान लें और ग़ौर से मेरी बात सुन लें! आपका ख़याल है कि यह लोग नशे में हैं। लेकिन ऐसा नहीं है। देखें, अभी तो सुबह के नौ बजे का वक़्त है। अब वह कुछ हो

---

1 आमाल 2:5-13

रहा है जिसकी पेशगोई योएल नबी ने की थी, ‘अल्लाह फ़रमाता है कि आख़िरी दिनों में मैं अपने रूह को तमाम इनसानों पर उंडेल दूँगा। तुम्हारे बेटे-बेटियाँ नबुव्वत करेंगे, तुम्हारे नौजवान रोयाएँ और तुम्हारे बुज़ुर्ग ख़ाब देखेंगे। उन दिनों में मैं अपने रूह को अपने ख़ादिमों और ख़ादिमाओं पर भी उंडेल दूँगा,और वह नबुव्वत करेंगे। मैं ऊपर आसमान पर मोजिज़े दिखाऊँगा और नीचे ज़मीन पर इलाही निशान ज़ाहिर करूँगा ... और फिर रब का अज़ीम और जलाली दिन आएगा। उस वक़्त जो भी रब का नाम लेगा नजात पाएगा।’”

फिर उसने उन्हें हज़रत ईसा के बारे में याद दिलाया जिन्हें वह जानते थे। उन्हें उनके ज़बरदस्त मोजिज़े याद थे और यह भी कि वह मोजिज़ों से कभी अपनी बड़ाई नहीं चाहते थे। क्या यह हक़ीक़त साफ़ ज़ाहिर नहीं थी कि अल्लाह हज़रत ईसा पर अपनी मोहर लगा रहा है? कि ख़ुदा ही हज़रत ईसा के वसीले से यह अजीब काम और बड़े बड़े मोजिज़े कर रहा है।

यह सुनकर बहुत-से लोगों की आँखें खुल गईं और वह पहचानने लगे कि हक़ीक़त में हज़रत ईसा कौन हैं।

शमाऊन पतरस ने उनको मज़ीद समझाया कि “अल्लाह को पहले ही इल्म था कि क्या होना है, क्योंकि उसने ख़ुद अपनी मरज़ी से मुक़र्रर किया था कि ईसा को दुश्मन के हवाले कर दिया जाए। चुनाँचे आपने बेदीन लोगों के ज़रीए उन्हें सलीब पर चढ़वाकर क़त्ल किया। लेकिन

अल्लाह ने उन्हें मौत की अज़ियतनाक गिरिफ़्त से आज़ाद करके ज़िंदा कर दिया, क्योंकि मुमकिन ही नहीं था कि मौत उन्हें अपने क़ब्ज़े में रखे।”[1]

इन बातों से उनके दिलों पर सख़्त चोट लगी। उन्हें एहसास होने लगा कि जिस नबी की बड़ी क़ुदरत से अल्लाह ने अलानिया तसदीक़ की उसी को हमने क़त्ल कर डाला! हमने अल्लाह की तसदीक़ और मोहर का यह जवाब दिया! अब बहुत-से लोग समझ गए कि ख़ुदा ने सलीब पर हज़रत ईसा को छोड़ नहीं दिया था। वह इन तमाम बातों को रोक सकता था। यह दुनिया को बचाने का उसका मनसूबा था। अब उन पर रौशन हो गया कि हम तो अल्लाह के मुख़ालिफ़ थे। हमने तो हज़रत ईसा का काम तमाम कर दिया लेकिन उसने उन्हें ज़िंदा किया! हमने उन्हें मसलूब कर दिया लेकिन ख़ुदा ने मौत के बंधन तोड़ दिए। हम पर अफ़सोस! अफ़सोस!

पहले तो शमाऊन पतरस ने यह हक़ीक़त बयान की कि मुमकिन न था कि हज़रत ईसा मौत के क़ब्ज़े में रहता। फिर वह इस बात का दाऊद नबी की नबुव्वत से सबूत देने लगा। उसने कहा, “दाऊद फ़रमाता है कि ‘तू मेरी जान को पाताल में नहीं छोड़ेगा,और न अपने मुक़द्दस को गलने-सड़ने की नौबत तक पहुँचने देगा। तूने मुझे ज़िंदगी की राहों से आगाह कर दिया है,और तू अपने हुज़ूर मुझे ख़ुशी से सरशार करेगा।’

1 आमाल 2:14-24

मेरे भाइयो, अगर इजाज़त हो तो मैं आपको दिलेरी से अपने बुज़ुर्ग दाऊद के बारे में कुछ बताऊँ। वह तो फ़ौत होकर दफ़नाया गया और उसकी क़ब्र आज तक हमारे दरमियान मौजूद है। लेकिन वह नबी था और जानता था कि अल्लाह ने क़सम खाकर मुझसे वादा किया है कि वह मेरी औलाद में से एक को मेरे तख़्त पर बिठाएगा। मज़कूरा आयात में दाऊद मुस्तक़बिल में देखकर मसीह के जी उठने का ज़िक्र कर रहा है, यानी कि न उसे पाताल में छोड़ा गया, न उसका बदन गलने-सड़ने की नौबत तक पहुँचा। अल्लाह ने इसी ईसा को ज़िंदा कर दिया है और हम सब इसके गवाह हैं। अब उसे सरफ़राज़ करके अल्लाह के दहने हाथ बिठाया गया और बाप की तरफ़ से उसे मौऊदा रूहुल-क़ुद्स मिल गया है। इसी को उसने हम पर उंडेल दिया, जिस तरह आप देख और सुन रहे हैं।”[1]

सामईन में आवाज़ उभरी, “दाऊद बादशाह की क़ब्र हमारे दरमियान है और इस बात की तसदीक़ करती है कि उसने पेशगोई के यह अलफ़ाज़ अपने बारे में नहीं बल्कि अल-मसीह के बारे में कहे थे।”

शमाऊन पतरस ने विज़ाहत की, “दाऊद ख़ुद तो आसमान पर नहीं चढ़ा, तो भी उसने फ़रमाया, ‘रब ने मेरे रब से कहा, मेरे दहने हाथ बैठ जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँवों की चौकी न बना दूँ।’ चुनाँचे पूरा

1 आमाल 2:25-33

इसराईल यक़ीन जाने कि जिस ईसा को आपने मसलूब किया है उसे ही अल्लाह ने ख़ुदावंद और मसीह बना दिया है।”[1]

अब यह अलमनाक हक़ीक़त बहुतों पर रौशन होने लगी कि हम तो अल्लाह के मसीह को मसलूब करने के ज़िम्मेदार हैं। यह बातें सुनकर उनके दिलों पर सख़्त चोट लगी। वह शमाऊन पतरस और बाक़ी शागिर्दों से पूछने लगे कि “भाइयो, फिर हम क्या करें?”

शमाऊन पतरस ने जवाब दिया, “आप में से हर एक तौबा करके ईसा के नाम पर बपतिस्मा ले ताकि आपके गुनाह माफ़ कर दिए जाएँ। फिर आपको रूहुल-क़ुद्स की नेमत मिल जाएगी। क्योंकि यह देने का वादा आपसे और आपके बच्चों से किया गया है, बल्कि उनसे भी जो दूर के हैं, उन सबसे जिन्हें रब हमारा ख़ुदा अपने पास बुलाएगा।”[2]

जब एक तरफ़ तो उन्हें अपने गुनाह का और दूसरी तरफ़ अल्लाह की मुहब्बत का एहसास हुआ तो उनके दिल गहरी तौबा की तरफ़ मायल हुए। आइंदा वह कभी गुनाह के बारे में बेपरवाई नहीं करेंगे। क्योंकि हर गुनाह का तो गोया हज़रत ईसा के मुँह पर एक और तमाँचा मारने के बराबर होगा जिन्होंने उन सबको गुनाह की क़ुव्वत से रिहा कराने के लिए अपनी जान तक दे दी। उसी दिन तीन हज़ार अफ़राद ईमान ले आए कि हज़रत ईसा मसीह हमारे नजातदहिंदा हैं।

---

1 आमाल 2:34-36
2 आमाल 2:37-39

आख़िर इफ़राईम, यशुअ और दाऊद भी क़ायल हो गए कि हज़रत ईसा ही दुनिया के नजातदहिंदा अल-मसीह हैं। इफ़राईम ने आँसू भरी आँखों से कहा, "मुझे अब भी वह छिदे हाथों और पाँवों के साथ सलीब पर लटके नज़र आ रहे हैं। वह मेरी ख़ातिर मुए। कैसी बेमिसाल मुहब्बत!"

दाऊद ने एलान किया, "अब से हज़रत ईसा मेरी ज़िंदगी के मालिक होंगे। मुझे जो ख़ुशी हज़रत ईसा के रास्ते पर चलने से होगी वह और किसी बात से नहीं होगी। अब से मैं उनका हर हुक्म बजा लाऊँगा।"

यशुअ ख़ामोश रहा। उसे अफ़सोस था कि मैंने अपने नजातदहिंदे को पहचानने में इतनी देर क्यों कर दी।

अब नए ईमान लानेवाले सब अफ़राद बपतिस्मा पाने को तैयार थे। इफ़राईम और उसके बेटे भी उनमें शामिल हुए। बपतिस्मा लेते हुए जब लमहे-भर के लिए पानी उनके सरों के ऊपर से बहने लगा तो यह इस बात का ज़ाहिरी निशान था कि अब से हमारी पुरानी ज़िंदगी दफ़न हुई है। आज से एक नई ज़िंदगी शुरू हुई है। यह ज़िंदगी मसीह के साथ साथ होगी। अब से वह रूहुल-क़ुद्स के वसीले से हमारे अंदर सुकूनत करेंगे और रोज़मर्रा ज़िंदगी में हमारी मदद करेंगे। वह अपनी राहें हमें सिखाएँगे। जब हम बेपरवा होंगे तो हमें झँझोड़ेंगे। जब थके-माँदे और बेदिल होंगे तो हमें तसल्ली देंगे।

जो लोग अभी अभी ईमान ले आए थे वह बाक़ी ईमानदारों के साथ क़रीबी रिफ़ाक़त रखने लगे। बाहर के लोग भी उनकी इज़्ज़त करते थे। उस वक़्त शागिर्दों से बहुत-से मोजिज़े और निशान भी ज़ाहिर होते थे।

इन वाक़ियात से यहूदी लीडर घबरा उठे। क्या यह नासरी ज़िंदगी-भर हमारा पीछा करता रहेगा? उसकी यह तहरीक तो बड़ी तेज़ी से फैलती जा रही है। पंतिकुस्त के एक ही दिन में तीन हज़ार अफ़राद इसमें शामिल हो गए हैं, और हर रोज़ नए नए लोग इनमें आ मिलते हैं। उनमें बड़े आलिम बल्कि इमाम और फ़रीसी भी शामिल हो गए हैं। यहूदी लीडरों को यह हक़ीक़त तसलीम करनी पड़ी कि हम हज़रत ईसा को हमेशा के लिए मार डालने में कामयाब नहीं हुए। अब उन्हें याद आया कि उन्होंने एलान किया था कि एक दिन मैं तुम्हारे मुंसिफ़ के तौर पर वापस आऊँगा। अगर हज़रत ईसा ही अल-मसीह हैं तो उनका काम रुकेगा नहीं।

कायफ़ा ने ऐसे ख़यालात को झटक दिया। वह सदूक़ी था, और सदूक़ी मुरदों की क़ियामत पर यक़ीन नहीं रखते। अब उसका सबसे बड़ा मसला यह था कि हज़रत ईसा की तहरीक से कैसे ख़लासी कराई जाए। चुनाँचे उसने इस मक़सद के लिए फ़ौरन मनसूबाबंदी शुरू कर दी।

दिलों की तबदीली

लीडरों की मुख़ालफ़त के बावुजूद हज़रत ईसा के पैरोकारों की तादाद रोज़ बरोज़ बढ़ती ही जा रही थी। सब लोग उनको पसंद करते और उनकी इज़्ज़त करते थे। उनमें ऐसी मुहब्बत, रवादारी और नरममिज़ाजी थी जिसे नज़रंदाज़ नहीं किया जा सकता था। उनमें से कई लोग अपनी जायदादें बेच बेचकर अपने हाजतमंद भाइयों की ज़रूरियात पूरी करते थे। दूसरों ने अपने घरों के दरवाज़े खोल दिए ताकि लोग वहाँ जमा होकर इबादत करें, मिलकर खाएँ-पिएँ और रिफ़ाक़तो-शिराकत रखें।

यूहन्ना मरक़ुस के घर में लोग बैतुल-मुक़द्दस की तीन बजेवाली इबादत के लिए तैयार हो रहे थे। यूहन्ना मरक़ुस की माँ मरियम बैत-अनियाह की मर्था की मदद से जल्दी जल्दी घर को ठीक-ठाक कर रही थी। वह कहने लगी, “बावरचीख़ाने में तुम्हारी मदद के लिए तो मैं बहुत ही शुक्रगुज़ार हूँ। तुम्हारे तेज़ और माहिर हाथों का मुक़ाबला तो पाँच

बावरची भी नहीं कर सकते, और तुम्हारे हाथों का पका खाना खाकर तो सारे उँगलियाँ चाटते रह जाते हैं।"

मर्था भी ख़ुश होकर कहने लगी, "मुझे खाना पकाना हमेशा ही से पसंद है। मुझे ख़ुशी है कि इस तरह से हज़रत ईसा की ख़िदमत करने का मौक़ा मिला। मैं हमेशा इंतज़ार करती थी कि कब वह आएँ और मैं उनकी ख़िदमत करूँ। लेकिन मुझे अफ़सोस भी है कि गुज़रे दिनों में मेरे पास उनकी बातें सुनने का वक़्त नहीं होता था। बस, इसी बात से ख़ुशी होती थी कि इधर-उधर काम करती फिरूँ। मेरी बहन मरियम उनकी मौजूदगी का ख़ूब फ़ायदा उठाया करती थी। वह तो बस बैठी उनकी बातें सुनती रहती थी। लेकिन मुझे बैठना पसंद नहीं था। मैं उस पर बुड़बुड़ाती और हज़रत ईसा से शिकायत किया करती थी कि उसे बावरचीख़ाने में भेज दें।" मर्था ने आह भरी, "लेकिन अब हज़रत ईसा ने मेरी ज़िंदगी बदल दी।"

मरियम ने मुसकराकर सर हिलाया और मेज़पोश बिछाने के बाद कहने लगी, "मुझे बहुत ख़ुशी है कि स्तिफ़नुस हमारे दरमियान है। कितनी मदद करता है। बहुत दाना और रूहुल-क़ुद्स से मामूर है। मैंने देखा कि वह जी उठे ख़ुदावंद की ख़ुशख़बरी सुनाने को हर वक़्त तैयार रहता है।"

मर्था ने ताईद की, "आपने दुरुस्त कहा। स्तिफ़नुस का दिल हज़रत ईसा के लिए जोश से भरा हुआ है। चाहता है कि एक एक शख़्स हमारे ख़ुदावंद को जान ले।"

यूहन्ना मरक़ुस उधर से गुज़र रहा था। मरियम ने उसे रोक लिया, "बेटा यह टोकरी बावरचीख़ाने में रख दो और हमारा इंतज़ार करना। हम भी बैतुल-मुक़द्दस को जाने के लिए बस तैयार ही हैं।"

"ज़रूर अम्मी जान, मैं अज़र को भी साथ ले जाना चाहता हूँ। उसने साथवाला कमरा ठीक कर दिया है।"

मरियम ने इस बात की मंज़ूरी में सर हिलाया, "मेरे लिए तो अज़र बिन हूर जीता-जागता मोजिज़ा है। हज़रत ईसा ने उसकी ज़िंदगी बदलकर रख दी है। पहले यह नौजवान अंधा था। लेकिन अब बीनाई पाकर कितना शुक्रगुज़ार है।"

थोड़ी देर बाद वह सब बैतुल-मुक़द्दस के लिए रवाना हुए। उनके आगे आगे शमाऊन पतरस और यूहन्ना बिन ज़बदी चलते हुए नज़र आए। उनको देखकर यूहन्ना मरक़ुस की आँखें चमक उठीं। नौजवानी के जोश में वह उन दोनों की जुर्रत की तारीफ़ करने लगा। अचानक वह रुक गया और बोला, "अम्मी! अम्मी! देखें वह सामने कुछ हो रहा है।"

बैतुल-मुक़द्दस का एक दरवाज़ा 'ख़ूबसूरत' कहलाता है। वहाँ बैठा एक माज़ूर भिकारी शमाऊन पतरस और यूहन्ना बिन ज़बदी से भीख माँग रहा था। शमाऊन पतरस ने उस पर ग़ौर से नज़र करके कहा,

“हमारी तरफ़ देख।” भिकारी ने उनसे कुछ मिलने की उम्मीद पर ऐसा ही किया। मगर शमाऊन कहने लगा, “सोना और चाँदी तो मेरे पास है नहीं। लेकिन जो कुछ है वह दिए देता हूँ। हज़रत ईसा के नाम में उठ और चल-फिर।” साथ ही उसका दाहिना हाथ मज़बूती से पकड़कर उसे उठाया। मफ़लूज के पाँव और टख़ने एकदम मज़बूत हो गए। वह ख़ुशी और जोश से काँपने लगा। वह पैदाइशी लँगड़ा था। हर रोज़ लोग उसे उठाकर उस दरवाज़े पर डाल जाते थे। अब चालीस साल बाद वह बदहाल ज़िंदगी ख़त्म हुई थी, एक नई ज़िंदगी शुरू हुई। अब वह चलकर बैतुल-मुक़द्दस में भी जा सकता था। वह ख़ुशी और हैरत में डूबा हुआ शमाऊन पतरस और यूहन्ना के साथ साथ फिरने लगा।

थोड़ी ही देर बाद वह बैतुल-मुक़द्दस में दाख़िल हुए और सुलेमान के बरामदे में पहुँच गए। चलते चलते वह साबिक़ माज़ूर बुलंद आवाज़ से अल्लाह की तारीफ़ करने लगा। उसकी सेहतयाबी की ख़बर चारों तरफ़ फैल गई। लोग दौड़ दौड़कर उसे देखने और उसकी कहानी सुनने को आने लगे। हर कोई उस भिकारी को जानता था। सब उसे इतनी मुद्दत से बैतुल-मुक़द्दस के दरवाज़े पर देखते आ रहे थे।

शमाऊन पतरस ने इस मौक़े को भी जी उठे ख़ुदावंद की गवाही देने के लिए इस्तेमाल किया। वह कहने लगा, “इसराईल के हज़रात, आप यह देखकर क्यों हैरान हैं? आप क्यों घूर घूरकर हमारी तरफ़ देख रहे हैं गोया हमने अपनी ज़ाती ताक़त या दीनदारी के बाइस यह किया है

कि यह आदमी चल-फिर सके? यह हमारे बापदादा के ख़ुदा, इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब के ख़ुदा की तरफ़ से है जिसने अपने बंदे ईसा को जलाल दिया है। यह वही ईसा है जिसे आपने दुश्मन के हवाले करके पीलातुस के सामने रद किया, अगरचे वह उसे रिहा करने का फ़ैसला कर चुका था। आपने उस क़ुद्दूस और रास्तबाज़ को रद करके तक़ाज़ा किया कि पीलातुस उसके एवज़ एक क़ातिल को रिहा करके आपको दे दे। आपने ज़िंदगी के सरदार को क़त्ल किया, लेकिन अल्लाह ने उसे मुरदों में से ज़िंदा कर दिया। हम इस बात के गवाह हैं। आप तो इस आदमी से वाक़िफ़ हैं जिसे देख रहे हैं। अब वह ईसा के नाम पर ईमान लाने से बहाल हो गया है, क्योंकि जो ईमान ईसा के ज़रीए मिलता है उसी ने इस आदमी को आपके सामने पूरी सेहतमंदी अता की। मेरे भाइयो, मैं जानता हूँ कि आप और आपके राहनुमाओं को सही इल्म नहीं था, इसलिए आपने ऐसा किया। ... अब तौबा करें और अल्लाह की तरफ़ रुजू लाएँ ताकि आपके गुनाहों को मिटाया जाए। फिर आपको रब के हुज़ूर से ताज़गी के दिन मुयस्सर आएँगे और वह दुबारा ईसा यानी मसीह को भेज देगा जिसे आपके लिए मुक़र्रर किया गया है। लाज़िम है कि वह उस वक़्त तक आसमान पर रहे जब तक अल्लाह सब कुछ बहाल न कर दे, जिस तरह वह इब्तिदा से अपने मुक़द्दस नबियों की ज़बानी फ़रमाता आया है। क्योंकि मूसा ने कहा, 'रब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हारे वास्ते तुम्हारे भाइयों में से मुझ जैसे नबी को बरपा करेगा। जो भी बात वह

कहे उसकी सुनना। जो नहीं सुनेगा उसे मिटाकर क़ौम से निकाल दिया जाएगा।’ और समुएल से लेकर हर नबी ने इन दिनों की पेशगोई की है। आप तो इन नबियों की औलाद और उस अहद के वारिस हैं जो अल्लाह ने आपके बापदादा से क़ायम किया था, क्योंकि उसने इब्राहीम से कहा था, ‘तेरी औलाद से दुनिया की तमाम क़ौमें बरकत पाएँगी।’ जब अल्लाह ने अपने बंदे ईसा को बरपा किया तो पहले उसे आपके पास भेज दिया ताकि वह आप में से हर एक को उसकी बुरी राहों से फेरकर बरकत दे।”[1]

बैत-अनियाह की मर्था ने आहिस्ता से यूहन्ना मरक़ुस की माँ से कहा, “बहुत ख़ूब! शमाऊन पतरस ने तमाम सुननेवालों को याद दिलाया है कि हम चुनी हुई क़ौम हैं। लेकिन हुक़ूक़ के साथ साथ ख़ुसूसी फ़रायज़ भी होते हैं।” मर्था रुक गई। फिर क़दरे बेचैनी से कहने लगी, “लो, बैतुल-मुक़द्दस के मुहाफ़िज़ों का कप्तान आ रहा है। यह बंदा इमामे-आज़म का दहना हाथ है। उसके साथी सिपाही और बुज़ुर्ग भी हैं। बहुत नाराज़ नज़र आ रहे हैं।”

यूहन्ना मरक़ुस ने बड़े एतमाद से कहा, “यह लोग शमाऊन पतरस और यूहन्ना को नहीं डरा सकते। मुझे यक़ीन है कि कप्तान सिर्फ़ यह मालूम करना चाहता है कि इतने लोग क्यों जमा हो गए हैं। आख़िर

1 आमाल 3:12-26

बैतुल-मुक़द्दस के इलाक़े में अमनो-अमान क़ायम रखना उसकी ज़िम्मेदारी है।"

माज़ूर की सेहतयाबी की ख़बर क़ौम के बुज़ुर्गों को भी पहुँच गई थी। सदूक़ी इस बात पर नाराज़ थे कि शागिर्द हज़रत ईसा के जी उठने की मुनादी कर रहे थे। ख़ुद वह तो मुरदों की क़ियामत का इनकार करते थे। उन्होंने शमाऊन पतरस और यूहन्ना को गिरिफ़्तार करके अगले दिन तक हवालात में रखा क्योंकि शाम हो चुकी थी। ताहम जितनों ने शमाऊन पतरस की मुनादी सुनी उनमें से बहुतेरे हज़रत ईसा पर ईमान ले आए।

अगले दिन सदरे-अदालत का इजलास तलब किया गया और शागिर्दों को उनके सामने पेश किया गया। शफ़ायाफ़्ता माज़ूर को भी पेश किया गया। उसके सरापा से वह ख़ुशी फूट रही थी जो हज़रत ईसा के उसकी ज़िंदगी में आने से हासिल हुई थी। लीडरों के तेवर ख़तरनाक थे। उन्होंने शागिर्दों को घूरकर देखा और पूछने लगे, "तुमने यह काम किस क़ुव्वत और नाम से किया?"

पतरस ने रूहुल-क़ुद्स से मामूर होकर उनसे कहा, "क़ौम के राहनुमाओ और बुज़ुर्गो, आज हमारी पूछ-गछ की जा रही है कि हमने माज़ूर आदमी पर रहम का इज़हार किसके वसीले से किया कि उसे शफ़ा मिल गई है। तो फिर आप सब और पूरी क़ौम इसराईल जान ले कि यह नासरत के ईसा मसीह के नाम से हुआ है, जिसे आपने मसलूब

किया और जिसे अल्लाह ने मुरदों में से ज़िंदा कर दिया। यह आदमी उसी के वसीले से सेहत पाकर यहाँ आपके सामने खड़ा है। ईसा वह पत्थर है जिसके बारे में कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, 'जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने रद किया वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया।' और आप ही ने उसे रद कर दिया है। किसी दूसरे के वसीले से नजात हासिल नहीं होती, क्योंकि आसमान के तले हम इनसानों को कोई और नाम नहीं बख़्शा गया जिसके वसीले से हम नजात पा सकें।"[1]

बुज़ुर्ग चंद लमहे ख़ामोश रहे। यह आदमी तो मछलियाँ पकड़ा करता था। आज तो इसने हमें हैरान कर दिया है। उसने किसी आला दरसगाह से तालीम नहीं पाई। लेकिन अच्छी तक़रीर करना जानता है। बड़ी जुर्रत और एतमाद से बात करता है। बुज़ुर्गों की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। मोजिज़े से इनकार मुमकिन न था, क्योंकि तनदुरुस्त होनेवाला जीता-जागता सबूत था। अब उन्हें यह मसला दरपेश था कि हज़रत ईसा की इस ताक़त को कैसे रोका जाए? हज़रत ईसा के पैरोकारों को कैसे ख़ामोश कराया जाए? तय पाया कि शागिर्दों को डराएँ और धमकाएँ कि आइंदा हज़रत ईसा के नाम का चर्चा न करें। उनको ख़बरदार किया गया कि अगर ना-फ़रमानी की तो तलख़ नतायज का सामना करना पड़ेगा।

1 आमाल 4:7-12

मगर शमाऊन पतरस ने जवाब दिया, “तुम ही इनसाफ़ करो आया अल्लाह के नज़दीक यह वाजिब है कि हम ख़ुदा की बात से तुम्हारी बात ज़्यादा सुनें। क्योंकि मुमकिन नहीं कि जो हमने देखा और सुना है, वह न कहें।” बुज़ुर्गों के लिए यह बरदाश्त करना मुश्किल था। लेकिन उस वक़्त वह शागिर्दों को सज़ा देने की जुर्रत न कर सके, क्योंकि उस माज़ूर की सेहतयाबी पर तमाम लोग अल्लाह की तारीफ़ कर रहे थे। आख़िर में उन्होंने शमाऊन और यूहन्ना को कुछ और धमकाकर छोड़ दिया।

शागिर्द लोगों से भरी हुई गलियों से गुज़रे तो एक नई क़ुव्वत और ख़ुशी से भर गए। शमाऊन पतरस कहने लगा, “हमारे बुज़ुर्ग हमें कुचल सकते हैं। लेकिन मैं हरगिज़ ख़ौफ़ज़दा नहीं जैसे पहले हुआ करता था। रूहुल-क़ुद्स मुझे यक़ीन दिलाता रहता है कि हम अपने मक़सद में नाकाम नहीं हो सकते। फ़तह ख़ुदावंद की है। जहाँ तक आख़िरी फ़तह का सवाल है इसमें किसी क़िस्म का शक नहीं।”

“तुम ठीक कहते हो,” यूहन्ना ने जवाब दिया। “हम अपनी ताक़त से दिलेर और निडर नहीं हैं। हज़रत ईसा का रूह हममें काम करता है। यह रूहुल-क़ुद्स हमारा अज़ीम मददगार है। यह कितनी अज़ीम बात है कि हमें अगले क़दम के लिए फ़िकर नहीं करनी पड़ती, क्योंकि रूहुल-क़ुद्स क़दम क़दम पर हमारी राहनुमाई करता है। इसलिए बेहतर है

कि हम इन बुज़ुर्गों की धमकी को भूलकर अपनी जमात के काम पर तवज्जुह लगाए रखें।”

यूहन्ना मरक़ुस ने पहले इन दोनों आदमियों को अपने घर की तरफ़ आते देखा। यहाँ बहुत-से अफ़राद उनके लिए दुआ कर रहे थे। उसने बड़ी ख़ुशी से एलान किया, “शमाऊन पतरस और यूहन्ना वापस आ गए हैं।” सारे लोग उनको मिलने के लिए दौड़ पड़े।

शागिर्दों ने लीडरों के साथ अपना तजरिबा चंद अलफ़ाज़ में बयान किया। उनसे सबकी हौसलाअफ़्ज़ाई और ईमान में तक़वियत हुई। वह जानते थे कि आगे भी मुसीबतों का सामना होगा, लेकिन वह लीडरों का हुक्म मानने के लिए तैयार न थे।

किसी ने कहा कि “अल्लाह जिसने सारी चीज़ों को पैदा किया और अपनी बड़ी क़ुदरत से सब कुछ सँभालता है, वह हमारे साथ है। हम किसी से क्यों डरें। आख़िरकार ख़ुदा सब पर ग़ालिब रहेगा।”

शमाऊन पतरस मुसकराया, “दोस्तो! यह है सही जज़बा। याद रखें कि ख़ुदावंद ईसा को किस तरह आज़माया गया। उन्होंने कैसे कैसे दुख बरदाश्त किए लेकिन बिल-आख़िर फ़तहमंद हुए। वही हमारे मालिक हैं। लेकिन यह सब कुछ बरदाश्त करने के लिए जो ताक़त उन्हें मिली वह हमें भी मिलती है। हम उनकी फ़तह में शरीक हैं। मेरी सलाह है कि अब हम दिलेरी के लिए दुआ किया करें क्योंकि हम ख़ूब जानते हैं कि अपनी ताक़त से इन हालात का मुक़ाबला नहीं कर सकते।”

तब ईमानदारों ने दिलसोज़ी से दुआ की और इन अलफ़ाज़ से दुआ ख़त्म की, “ऐ रब, अब उनकी धमकियों पर ग़ौर कर। अपने ख़ादिमों को अपना कलाम सुनाने की बड़ी दिलेरी अता फ़रमा। अपनी क़ुदरत का इज़हार कर ताकि हम तेरे मुक़द्दस ख़ादिम ईसा के नाम से शफ़ा, इलाही निशान और मोजिज़े दिखा सकें।” जब वह दुआ कर चुके तो जिस मकान में जमा थे वह हिल गया और वह सब रूहुल-क़ुद्स से भर गए और अल्लाह का कलाम दिलेरी से सुनाते रहे।[1]

सब ईमानदार जानते थे कि जो सुलूक इन दो शागिर्दों से किया गया है वह हमसे भी हो सकता है। लेकिन उन्होंने पुख़्ता इरादा कर लिया कि दुनिया को दिखा देंगे कि हम किसके हैं और कौन हमारी मारिफ़त काम करता है। शागिर्दों के वसीले से और भी मोजिज़े और अजीब निशान ज़ाहिर होते हुए। उस वक़्त ईमानदार सुलेमान के बरामदे में जमा हुआ करते थे। किसी ग़ैरको जुर्रत न होती थी कि उनमें आ मिले। लोग उनका बहुत एहतराम करते थे। और हर रोज़ कई मर्द और औरतें ईमान लाकर उनमें शामिल हो जाते थे।

जब यह बात मशहूर हो गई कि हज़रत ईसा के शागिर्द मोजिज़े करते हैं तो यरूशलम के आस-पास के देहात से लोगों का तानता बँध गया। बहुत बीमारों और बदरूहों में गिरिफ़्त लोगों को शफ़ा दी गई।

---

1 आमाल 4:29-31

लेकिन एक दिन कायफ़ा और दूसरे लीडर हसद के मारे उठे और यह सारा काम रोक दिया। उन्होंने शागिर्दों को क़ैद कर दिया। लेकिन वह अब भी ख़ौफ़ज़दा न हुए। हज़रत ईसा उनके साथ थे, इसलिए वह क़ैदख़ाने में भी ख़ुद को ऐसा ही महफ़ूज़ महसूस करते जैसा किसी और जगह। मत्ती अपने साथियों से कहने लगा, "मुझे यक़ीन है कि हमारी गिरिफ़्तारी और क़ैद से ख़ुदावंद फिर कोई ऐसा काम करना चाहता है जिससे यह लीडर और यरूशलम के बाशिंदे हैरान रह जाएँगे।"

नतनेल ने उससे इत्तफ़ाक़ किया। "बात तो अजीब-सी है लेकिन मुझे यों लगता है कि ख़ुदावंद अब भी इन सरकश लीडरों को जीत लेने की कोशिश कर रहा है।"

रात हो गई। वह सब गहरी नींद सो गए। लेकिन सुबह होने से थोड़ी देर पहले अंदरियास चौंककर उठ बैठा। किसी चीज़ ने उसे जगा दिया था। शायद उसे ग़लती लगी थी। उसने जमाई ली और फिर लेटने लगा कि उसकी नज़र जगानेवाले पर पड़ गई। सफ़ेद लिबास पहने एक शख़्स उसे इशारे से बुला रहा था। उसे मालूम हो गया कि ख़ुदावंद का फ़रिश्ता हमें छुड़ाने आया है। उसने बाक़ी शागिर्दों को भी झँझोड़ा। जल्द ही पूरा गुरोह इस आसमानी एलची के पीछे पीछे चल पड़ा। फ़रिश्ता जेलख़ाने के एक दरवाज़े के बाद दूसरा दरवाज़ा खोलता हुआ उन्हें बाहर ले आया। उन्हें महसूस हो रहा था कि हम ख़ाब देख रहे हैं। सुबह की ठंडी ठंडी हवा से उन्हें पूरी तरह होश आया। दुबारा आज़ाद फ़िज़ा में साँस लेना

कितना अच्छा लग रहा था! लेकिन फ़रिश्ते के पास उनके लिए एक पैग़ाम था। उसने कहा, "जाओ, बैतुल-मुक़द्दस में खड़े होकर लोगों को इस नई ज़िंदगी से मुताल्लिक़ सब बातें सुनाओ।" उनको पता था कि इस हुक्म के मानने से लीडर हमारे लिए पहले से भी ज़्यादा मुसीबत खड़ी कर देंगे। मगर वह फ़ौरन बैतुल-मुक़द्दस की तरफ़ चल पड़े।

कायफ़ा तमाम वाकिये से बेख़बर था। उसने सुबह को सदरे-अदालत का इजलास बुलाया और आदमी भेजे कि रसूलों को क़ैदख़ाने से लाकर पेश करें। प्यादे घबराए हुए वापस आए और बताया कि "जब हम पहुँचे तो जेल बड़ी एहतियात से बंद थी और दरवाज़ों पर पहरेदार खड़े थे। लेकिन जब हम दरवाज़ों को खोलकर अंदर गए तो वहाँ कोई नहीं था!" सदरे-अदालत और बैतुल-मुक़द्दस के मुहाफ़िज़ों का कप्तान हैरानो-परेशान हो गए। इसका अंजाम क्या होगा? अभी वह सोच ही रहे थे कि क्या किया जाए कि किसी ने आकर ख़बर दी, "बात सुनें, जिन आदमियों को आपने जेल में डाला था वह बैतुल-मुक़द्दस में खड़े लोगों को तालीम दे रहे हैं।" तब सरदार प्यादों के साथ जाकर उन्हें ले आया। लेकिन ज़बरदस्ती नहीं, क्योंकि वह लोगों से डरते थे कि हमको संगसार न करें।

कायफ़ा उनसे मुख़ातिब हुआ। उसका लहजा सख़्त था। "हमने तो तुमको सख़्ती से मना किया था कि इस आदमी का नाम लेकर तालीम न दो। इसके बरअक्स तुमने न सिर्फ़ अपनी तालीम यरूशलम की हर

जगह तक पहुँचा दी है बल्कि हमें इस आदमी की मौत के ज़िम्मेदार भी ठहराना चाहते हो।"

शमाऊन पतरस ने बड़ी बेख़ौफ़ी से इमामे-आज़म की आँखों में आँखें डालकर जवाब दिया, "लाज़िम है कि हम पहले अल्लाह की सुनें, फिर इनसान की। हमारे बापदादा के ख़ुदा ने ईसा को ज़िंदा कर दिया, उसी शख़्स को जिसे आपने सलीब पर चढ़वाकर मार डाला था। अल्लाह ने उसी को हुक्मरान और नजातदहिंदा की हैसियत से सरफ़राज़ करके अपने दहने हाथ बिठा लिया ताकि वह इसराईल को तौबा और गुनाहों की माफ़ी का मौक़ा फ़राहम करे। हम ख़ुद इन बातों के गवाह हैं और रूहुल-क़ुद्स भी, जिसे अल्लाह ने अपने फ़रमाँबरदारों को दे दिया है।"

यह सुनकर अदालत के लोग तैश में आकर उन्हें क़त्ल करना चाहते थे। मगर जमलियेल नामी एक मशहूर फ़रीसी उस्ताद ने अदालत में खड़े होकर हुक्म दिया कि इन आदमियों को थोड़ी देर के लिए बाहर कर दो। रसूलों की क़ैदख़ाने से रिहाई के बाइस जमलियेल भी सोचने लगा था कि शायद हज़रत ईसा ही अल-मसीह हैं। उसने लीडरों से कहा, "मेरे इसराईली भाइयो, ग़ौर से सोचें कि आप इन आदमियों के साथ क्या करेंगे। ... मेरा मशवरा यह है कि इन लोगों को छोड़ दें, इन्हें जाने दें। अगर इनका इरादा या सरगरमियाँ इनसानी हैं तो सब कुछ ख़ुद बख़ुद ख़त्म हो जाएगा। लेकिन अगर यह अल्लाह की तरफ़ से है तो आप इन्हें

ख़त्म नहीं कर सकेंगे। ऐसा न हो कि आख़िरकार आप अल्लाह ही के ख़िलाफ़ लड़ रहे हों।

सदरे-अदालत ने उसकी बात मान ली। उन्होंने उनको बुलाकर पिटवाया और छोड़ने से पहले ताकीद की कि "ईसा का नाम लेकर बात न करना।" तब वह अदालत से इस बात पर ख़ुश होकर चले गए कि हम इस नाम की ख़ातिर बेइज़्ज़त होने के लायक़ तो ठहरे। लेकिन लीडरों की इन धमकियों के बावुजूद वह इस बात का चर्चा करने से बाज़ न आए कि हज़रत ईसा ही अल-मसीह है।[1]

इफ़राईम और उसका ख़ानदान ईमानदारों में शामिल हो चुका था। उन्होंने मसीह में नई ज़िंदगी का मज़ा चख लिया था, और अब वह ज़िंदा ख़ुदावंद के बारे में और ज़्यादा जानने के ख़ाहिशमंद थे। जब शमाऊन पतरस ने बताया कि बुज़ुर्ग फ़रीसी जमलियेल जो सदरे-अदालत का रुकन है किस तरह ग़ैरमुतवक़्क़े तौर पर उनका मददगार बन गया तो इफ़राईम मुसकराकर कहने लगा, "जमलियेल अज़ीम इनसान है। न सिर्फ़ वह शरीअत का मुअज़्ज़ज़ आलिम है बल्कि लोग भी उससे बड़ी मुहब्बत रखते हैं। उसे 'हुस्ने-शरीअत' कहकर याद करते हैं।" फिर एक आह भरकर उसने बात जारी रखी, "काश ख़ुदावंद उसकी आँखें खोले ताकि ईसा मसीह में जो नई ज़िंदगी है उसे पहचाने।"

1 आमाल 5:12-42

शमाऊन पतरस ने इत्तफ़ाक़ किया, “अगर जमलियेल हमारी हिमायत न करता तो बाक़ी सारे ज़रूर हमारे ख़िलाफ़ सख़्त हथकंडे इख़्तियार करते।”

लेकिन इफ़राईम ने बड़े एतमाद से कहा, “ख़ुदावंद अपने लोगों को बचाने के लिए हर क़िस्म के अफ़राद को इस्तेमाल करता है। जब तक ख़ुदावंद चाहता है कि हम ज़िंदा रहें, कोई चीज़ हमें नुक़सान नहीं पहुँचा सकती। दुनिया की कोई क़ुव्वत हमारी जान नहीं ले सकती।”

यूहन्ना बोला, “लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं कि हम जान-बूझकर ख़तरे में कूदें। ख़ुदावंद जब तक ज़मीन पर था उसने भी कभी ऐसा नहीं किया। मगर जब उसे पता होता कि यह मेरे बाप की मरज़ी है तो ख़तरा होता या न, वह अपने काम को आगे बढ़ाने में कभी न हिचकिचाता था। चुनाँचे हम भी उसके नमूने की पैरवी करेंगे।”

दाऊद किसी ना-ख़ुशगवार ख़याल में उलझा हुआ था। आख़िर वह बोला, “जमलियेल! वह ऐसा आदमी है जो अल्लाह की शरीअत को बड़ी अच्छी तरह पेश कर सकता है। लेकिन उसका एक शागिर्द है, तरसुस का साऊल जो बिलकुल मुख़्तलिफ़ है। वह बड़ा लायक़ है और मेरा ख़याल है कि वह अपने तौर पर दिलो-जान से ख़ुदा की ख़िदमत करना चाहता है लेकिन है शरीअत का बड़ा कट्टर। उसमें ऐसी सख़्ती है जिसका ख़ुदा के रूह से कोई वास्ता नहीं। यह आदमी मसीह की जमात का सख़्त मुख़ालिफ़ होता जा रहा है।”

इफ़राईम मुसकराया। लगता था उसे कोई परेशानी नहीं हुई। "मसीह के बहुत-से दुश्मन हैं। बस यह बात याद रखो कि अल्लाह मज़बूत से मज़बूत शख़्स को भी अपने लिए जीत लेने पर क़ादिर है। हमें किसी चीज़ से डरने की ज़रूरत नहीं। हमारी ज़िंदगी हमारे आसमानी बाप के क़ादिर हाथों में है। हमारा मालो-असबाब बिलकुल बेहक़ीक़त है। और हम भी अपनी जान हज़रत ईसा की ख़ातिर क़ुरबान करने को तैयार हैं।"

अचानक दरवाज़ा ज़ोर से खुला और यूहन्ना मरक़ुस लड़खड़ाता हुआ अंदर दाख़िल हुआ। वह घबराया हुआ था। आते ही कहने लगा, "स्तिफ़नुस मर गया ... संगसार कर दिया गया।" उसका चेहरा डरावना हो रहा था। "और मैं साऊल को क़सम खाकर कहते सुना कि वह आज ही हज़रत ईसा के तमाम माननेवालों को ढूँड निकालेगा। और एक एक को चुन चुनकर ख़त्म कर देगा।"

पतरस ने उसे बिठाया और उसकी गरदन में बाज़ू डालकर उसे तसल्ली दी, "बेटा, अब बताओ कि क्या हुआ?"

पहले आहिस्ता आहिस्ता, फिर विज़ाहत से यूहन्ना मरक़ुस ने सारा दर्दनाक वाक़िया बयान किया। "आप तो जानते हैं कि स्तिफ़नुस जमात की ख़बरगीरी करनेवाले सात अफ़राद में से एक था। अल्लाह ने उसे ख़ास नेमत से नवाज़ा था। वह लोगों के दरमियान बड़े बड़े मोजिज़े करता था। उसे उन लोगों की ख़ास फ़िकर होती थी जो बुतपरस्त माहौल से

आए हैं। सरदार उससे नाराज़ हो गए थे, क्योंकि बहस के दौरान वह उसकी हिकमत और दानाई का मुक़ाबला नहीं कर सकते थे। आज उन्होंने उसके ख़िलाफ़ झूठे गवाह खड़े कर दिए जिन्होंने बयान दिया कि 'यह आदमी बैतुल-मुक़द्दस और शरीअत के ख़िलाफ़ बातें करने से बाज़ नहीं आता। हमने इसके मुँह से सुना है कि ईसा नासरी यह मक़ाम तबाह करेगा और वह रस्मो-रिवाज बदल देगा जो मूसा ने हमारे सुपुर्द किए हैं।'"[1]

यूहन्ना मरक़ुस ने कपकपाते हाथ से आँखें पोंछीं। "एक फ़रीसी के शागिर्द से मुझे पता चला की स्तिफ़नुस ने सदरे-अदालत में क्या कहा। मेरे दोस्त ने बताया कि बोलते वक़्त उसका चेहरा फ़रिश्ते के चेहरे की मानिंद चमक उठा। उसे रत्ती-भर ख़ौफ़ नहीं था। बड़ी दिलेरी से उसने हमारी उम्मत के ख़ुदा से बाग़ियाना रवैये की मज़म्मत की। "

यूहन्ना मरक़ुस ने ज़रा दम लिया। फिर बोला, "मेरे दोस्त ने बताया कि स्तिफ़नुस को तो जैसे उनके ग़ुस्सावर चेहरे नज़र ही नहीं आ रही थीं। अचानक उसका चेहरा और चमकने लगा और उसने आसमान की तरफ़ नज़र उठाकर कहा, 'देखो, मुझे आसमान खुला हुआ दिखाई दे रहा है और इब्ने-आदम अल्लाह के दहने हाथ खड़ा है!' मगर उन्होंने बड़े ज़ोर से चिल्लाकर अपने कान बंद कर लिए।"[2]

1 आमाल 6:12-14
2 आमाल 7:56-58

लगता था कि नौजवान अपनी यादों से मग़लूब हो रहा है। “मैंने देखा कि वह जल्दी जल्दी स्तिफ़नुस को शहर से बाहर धकेल ले गए। मैं भीड़ में खड़ा उसकी मौत का मंज़र देखता रहा। मुझसे देखा न जाता था। लेकिन एक बात से हैरान रह गया। जब स्तिफ़नुस पर पत्थर बरस रहे थे तो उसने दुआ की, ‘ऐ ख़ुदावंद ईसा, मेरी रूह को क़बूल कर।” फिर घुटने टेककर उसने ऊँची आवाज़ से कहा, “ऐ ख़ुदावंद, उन्हें इस गुनाह के ज़िम्मेदार न ठहरा।’[1] मुझे लगा कि यह अलफ़ाज़ कहते वक़्त वह ख़ासकर तरसुस के साऊल की तरफ़ ग़ौर से देख रहा था जो पूरे दिल से स्तिफ़नुस के क़त्ल पर राज़ी था।”

शमाऊन पतरस ने यूहन्ना मरक़ुस की तरफ़ झुककर पूछा, “स्तिफ़नुस को मरने में बहुत देर तो नहीं लगी?”

नौजवान ने सर हिलाया, “लगता था कि वह अचानक गहरी नींद सो गया है।”

शमाऊन पतरस की आँखों में आँसू भर आए। बड़े जज़बात से कहने लगा, “स्तिफ़नुस मसीह का पहला शहीद है। उसने अपने ख़ुदावंद की तरह ही अपने दुश्मनों के लिए दुआ माँगी। हम उसे कभी नहीं भूलेंगे। शुक्र है कि वह ख़ुदावंद ही के पास है।”

इफ़राईम ने भड़ककर कहा, “साऊल जैसे लोग ग़ुस्से में अंधे होकर इनसान को चुटकी बजाते ही क़त्ल कर डालते हैं। उन्हें स्तिफ़नुस को

---

1 आमाल 7:59-60

मार डालने का कोई हक़ न था। अगर यह बात पीलातुस के कानों तक पहुँची तो कायफ़ा को ज़रूर जवाब देना पड़ेगा।”

उसी लमहे बड़ा ज़बरदस्त हंगामा सुनाई दिया। तेज़ी से ऊपर चढ़ते क़दमों और औरतों के चीख़ने-चिल्लाने की आवाज़ें सुनाई देने लगीं। थोड़ी देर बाद ईमानदारों की एक जमात शमाऊन पतरस और दूसरे शागिर्दों के सामने खड़ी हुई। वह पुकार पुकारकर कहने लगे, “बड़ी ईज़ारसानी शुरू हो गई है। साऊल हज़रत ईसा के माननेवालों को ढूँड निकालने के लिए शहर का कोना कोना छान रहा है। कुछ तो जान बचाकर भाग गए हैं। जो पकड़े गए, क्या मर्द, क्या औरतें, सबको क़ैदख़ाने में डाल दिया गया है। अब हम क्या करें?”

शमाऊन पतरस ने बेझिझक जवाब दिया, “शहर से भाग जाओ। निकल जाओ। ख़ुदावंद तुम्हारे साथ हो। लेकिन हम बारह तो यरूशलम में ही रहेंगे।”

इफ़राईम ने भी यरूशलम में रहने का फ़ैसला किया। लेकिन यशुअ को कफ़र्नहूम के लिए रवाना होना पड़ा, क्योंकि कारोबार के सिलसिले में उसको वहाँ होना ज़रूरी था। उसे हज़रत ईसा की ना-दीदनी हुज़ूरी का वाज़िह एहसास था, और यह उसके लिए एक नया तजरिबा था। दाऊद, रूत और अपने बाप से जुदा होते वक़्त उसके दिल में पूरी तसल्ली थी, हालाँकि उनकी ज़िंदगियों को हर लमहे ख़तरा था।

शमाऊन पतरस, नीकुदेमुस और अज़र उसे अल्लाह हाफ़िज़ कहने आए। यरूशलम पर अभी रात की तारीकी छाई हुई थी कि यशुअ रवानगी की तैयारी करने लगा। शहर के फाटक से निकलने के लिए यह वक़्त मौज़ूँ था, क्योंकि मुहाफ़िज़ अभी पूरी तरह बेदार नहीं होंगे और ज़्यादा पूछ-गछ नहीं करेंगे। जिस कमरे में यह छोटा-सा गुरोह जमा था एक मशाल से रौशन था। चंद मुर्ग़ नए दिन की आमद की ख़बर दे रहे थे।

यशुअ ने हाज़िरीन को बताया, “यह आज़माइश का वक़्त है लेकिन इस घड़ी मुझे तजरिबा हो रहा है कि हज़रत ईसा पर मेरा ईमान और भरोसा कैसी अजीब चीज़ है। उस ज़िंदा ख़ुदावंद की ख़िदमत करना कितना बड़ा एज़ाज़ है जो हर वक़्त हमारे साथ है। उसने हमसे ऐसी मुहब्बत रखी कि अपनी जान हमारी ख़ातिर दे दी।”

दाऊद बोला, “लोग हमारे साथ वही सुलूक कर रहे हैं जो हमारे आक़ा के साथ करते थे। क्या हम इसका जवाब नफ़रत से दें? हरगिज़ नहीं। हमारे ख़ुदावंद ने सिखाया है कि मुहब्बत नफ़रत से ज़्यादा ज़ोरावर है। इसके अलावा उसके सब्र के नमूने से भी जानते हैं कि ऐसे वक़्त में हमारा रवैया क्या होना चाहिए।”

शमाऊन पतरस ने हैरानी से कहा, “जब मैं अपनी बीवी नओमी के बारे में सोचता हूँ तो दंग रह जाता हूँ। यह औरत तो हर वक़्त डरी-सहमी रहती थी, लेकिन जब से उसने हज़रत ईसा को मरते देखा और जी उठने

के बाद उनसे मुलाक़ात की है, वह तो एक नया शख़्स बन गई है। जब से पंतिकुस्त के दिन से रूहुल-क़ुद्स उसके अंदर सुकूनत करने लगा है मुझे उसकी कोई फ़िकर ही नहीं रही। बच्चों की ख़ातिर उसे कफ़र्नहूम में रहना पड़ता है, और जमात की ख़ातिर मेरा यहाँ रहना ज़रूरी है। लेकिन इसके बावुजूद हम मुतमइन हैं। ख़ुदावंद जो हर रोज़ उसके साथ है, वह मेरा भी ख़ुदावंद है।" इस अज़ीम हक़ीक़त से मुतअस्सिर होकर शमाऊन पतरस की आँखें डबडबा आईं।

अज़र ने गुफ़्तगू जारी रखी, "क्या नजातदहिंदा हज़रत ईसा से बढ़कर भी किसी के पास कोई चीज़ हो सकती है? जिसने ख़ुद तनहाई बरदाश्त की वह दूसरों की तनहाई को भी ख़ूब समझता है। जो ख़ौफ़ और दबाव में से गुज़रा वह हमारे ख़ौफ़ और दबाव को भी जानता है। वह जिसे ठट्ठों में उड़ाया गया, बेदर्दी से पीटा गया और कीलों के साथ सलीब पर जड़ दिया गया, वह हमारे दुख-दर्द और बेइज़्ज़ती को भी समझता है। उसने तो मौत का मज़ा भी चखा है।" और आँखों में एक अजीब चमक के साथ अज़र ने बात ख़त्म की, "हज़रत ईसा यक़ीनन हमारा अज़ीम इमामे-आज़म है जो ख़ुदा बाप के दहने हाथ है और हमारी शफ़ाअत करता है।"

यह छोटा-सा गुरोह उस गाड़ी के पास आ जमा हुआ जिसमें यशुअ कफ़र्नहूम जाने को था। इफ़राईम की आवाज़ जज़बात से भर्रा गई। वह कहने लगा, "बेटा, इस वक़्त हम हज़रत ईसा की ख़ातिर अपनों के

दरमियान ग़ैरों जैसी ज़िंदगी बसर कर रहे हैं।” वह मुसकराया, “कौन समझ सकता है कि हज़रत ईसा कितनी क़ीमती चीज़ है जिसकी ख़ातिर हम अपनी जान तक देने को तैयार हैं!” उसे पुरानी बातें याद आने लगीं। “मेरे बाप सुलेमान को नजातदहिंदे को देखने की कितनी आरज़ू थी। उसकी मुराद बर न आई। हम कैसे ख़ुशक़िसमत हैं कि न सिर्फ़ उसे देखा बल्कि हमें रूहुल-क़ुद्स भी मिला है जो हर वक़्त हमारी मदद करता है कि हम हज़रत ईसा के नमूने पर ढलते जाएँ। यह जानना कितना बड़ा एज़ाज़ है कि वह हर वक़्त हमारे नज़दीक है!” इफ़राईम ने इक़रार किया, “मैं कभी तसव्वुर भी नहीं कर सकता था कि इनसान को बेयक़ीनी और ख़तरे में ज़िंदगी गुज़ारते हुए भी ज़हनी सुकून और दिली इतमीनान हासिल हो सकता है।”

रूत ने बड़े अदब से बाप को याद दिलाया कि “अब्बा जान! वह भी ज़माना था कि आपकी ज़िंदगी में सिवाए-अपने ख़ानदान और कारोबार के किसी बात की अहमियत ही न थी। उस वक़्त आप ख़ुदावंद ईसा मसीह को नहीं जानते थे। लेकिन जब से हम उसे जान गए हैं, हमारी ज़िंदगी उसी के गिर्द घूमती है।”

नीकुदेमुस ने बड़ी हैरानी से कहा, “मुझे अपनी इज़्ज़त और महफ़ूज़ ज़िंदगी पर बड़ा नाज़ था। लेकिन अब हज़रत ईसा की ख़ातिर इन बातों की कोई परवा नहीं, हालाँकि बुढ़ापे में इन बातों का बड़ा ख़याल होता है। बेशक मेरी सारी जायदाद छिन सकती है बल्कि आज ही मुझे क़ैदख़ाने

में डाला जा सकता है। लेकिन अपने साथियों की तरह मेरे दिल में भी बड़ा इतमीनान है। हज़रत ईसा में मुझे वह सब कुछ हासिल है जिसकी मुझे ज़रूरत है। क्योंकि उसने ख़ुद हमारी सारी ज़रूरियात मुहैया करने का वादा किया है।" उसकी आँखें चमकने लगीं। उसने बात जारी रखी, "और ख़ुदावंद हमारे लिए आसमान पर घर तैयार कर रहा है।"

दाऊद भी बड़े जोश से बोला, "हाँ, लेकिन जब तक वह हमें अपने पास न बुलाए अभी बहुत-सा काम करना बाक़ी है। हमारे अपने मुल्क में बेशुमार लोग हैं जो नहीं जानते कि दरअसल हज़रत ईसा कौन है। और कितनी क़ौमें हैं जिन्होंने यह ख़ुशख़बरी अभी नहीं सुनी कि वह उनकी ख़ातिर मर गया ताकि अल्लाह और इनसान में मेल करा दे।"

हलकी-सी मुसकराहट के साथ इफ़राईम कहने लगा, "हज़रत ईसा की ख़ुशख़बरी की मुनादी के ज़िक्र से मुझे वह ईमानदार याद आते हैं जिनको यरूशलम से भागना पड़ा। लगता है कि हमारा ख़ुदावंद इस ईज़ारसानी को भी अपने नेक मक़सद के लिए इस्तेमाल कर रहा है। ख़बरें आई हैं कि यहूदिया और सामरिया के जिन लोगों के दरमियान ईमानदार जा बसे हैं उनको अब ख़ुशख़बरी सुनाने लगे हैं। ख़ुदावंद तमाम क़ौमों में से लोगों को बुला रहा है ताकि वह उनको गुनाहों की माफ़ी और अबदी ज़िंदगी से नवाज़े।"

अब यशुअ की रवानगी का वक़्त आ गया। वह आबदीदा होकर हर एक से बग़लगीर हुआ और गाड़ी पर सवार होकर जल्द ही नज़रों से ओझल हो गया।